अंकुर

असतो मा सद्गमय

पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज, नई दिल्ली

आज़ादी का अमृत महोत्सव

G20 भारत 2023 INDIA
वसुधैव कुटुम्बकम्

YEARS 1922-2022

200वीं महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती 1824-2024

पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय

(दिल्ली विश्वविद्यालय)

नेहरू नगर, नई दिल्ली-110065

खड़ी पंक्ति (बाएं से दाएं):

डॉ. चैनसिंह मीणा (सह–संपादक– हिंदी), **डॉ. प्रमिता मिश्रा** (सह–संपादक– संस्कृत),
डॉ. रेशमा तबस्सुम (सह–संपादक– अंग्रेजी), **डॉ. अनुभूति मिश्रा** (सह–संपादक– अंग्रेजी),
डॉ. संदीप कुमार रंजन (संपादक– हिंदी)

बैठी पंक्ति (बाएं से दाएं):

प्रो. गिरिधर गोपाल शर्मा (संपादक– संस्कृत), **डॉ. गरिमा गौड़ श्रीवास्तव** (पुस्तकालयाध्यक्ष),
प्रो. कृष्णा शर्मा (प्राचार्य), **डॉ. सुषमा चौधरी** (मुख्य संपादक), **रेणु कपूर** (संपादक– अंग्रेजी)

अंकुर

असतो मा सद्गमय

पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय

(दिल्ली विश्वविद्यालय)
नेहरू नगर, नई दिल्ली-110065

www.pgdavcollege.edu.in
email:pgdavcollege.edu@gmail.com

वर्ष : 2022-23 | अंक : 71

विषय सूची (Contents)

Editorial Board		6
प्राचार्य की कलम से...	प्रो. (डॉ.) कृष्णा शर्मा	7
महाविद्यालय के नाम संदेश	श्रीयुत् पूनम सूरी	8
संपादकीय	डॉ. सुषमा चौधरी	10

संस्कृत खण्ड

सम्पादकीयम्	डॉ. गिरिधर गोपाल शर्मा डॉ. प्रमिता मिश्रा	14
धर्मस्य प्रथमः स्कन्धः	डॉ. प्रमिता मिश्रा	15
स्वामी विवेकानन्द की दृष्टि में 'राजयोग'	डॉ. वंदना रानी	19
वसन्तपञ्चमी	डॉ. रोहित कुमार	23
पञ्चकोशः होलिस्टिक डेवलपमेंट ऑफ पर्सनैलिटी	डॉ. राजेश कुमार	25
पञ्चमहायज्ञाः	शिवानी साहू	29
गुरुमहिमा	वर्षा कुमारी	30
भगवदवतारस्य प्रयोजनम्	गौरव कुमार	32
मम मनसः केचन भावाः	बोधानन्द झा	34
''यज्ञस्यार्थः''	कुमारी स्नेहा	35
कारुण्यं भवभूतिरेव तनुते	कुमारी पूजा	36
भारतीयदर्शनम्	शुभम सिंह	38
प्राचीन काल में ऋषियों का संस्कृत में अतुलनीय योगदान एवं आधुनिक युग में संस्कृत का महत्व	गोलू कुमार	39

हिंदी खण्ड

गद्य खण्ड

सम्पादकीय	डॉ. चैनसिंह मीणा डॉ. संदीप कुमार रंजन	44
वर्तमान सामाजिक परिदृश्य : संस्कृति के सरोकार	डॉ. इन्दु दत्ता	46
मणिपुर यात्रा : अनुभवों से अनुभूति का सफर	डॉ. प्रकाश	50
भक्त-कवियों की सांस्कृतिक चेतना	गौरव वर्मा	54
स्वातंत्र्योत्तर भारत के विघटित राजनीतिक मूल्यों का दस्तावेज: 'घासीराम कोतवाल'	नरेन्द्र गुर्जर	62

अमृत नारीवाद से आज़ादी	साक्षी शर्मा	68
दासनी	शिव कुमार यादव	73
डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम	शबनम बानो	76
युवा यदि यत्न करें, तो क्या नहीं कर सकते हैं...	गुफरान	79
इतिहास, इतिहासकार और धारणाएँ	आयुष कुमार पाल	81
टैक्सी ड्राइवर	मनीष कुमार	89

पद्य खण्ड

मेरे-तुम्हारे बारे में	अमन कमार झा	94
एस्पायरेंट ऑफ अखण्ड भारत	मृदुल सक्सेना	94
मार्ग दर्शन	मृदुल सक्सेना	95
बिंदी	निशा कुमारी	95
फर्ज	निशा	96
नेता जी (सुभाष चंद्र बोस)	ऋतिक रैना	96
पिता जी की डायरी	रहीसुद्दीन अंसारी	97
गुलाम	रहीसुद्दीन अंसारी	97
पिता	रितिका पांडेय	98
ये वो भारत है	रितिका पांडेय	98
वो पुराना समय	रितिका पांडेय	99
कल को खूबसूरत बनाना है	शिवांश द्विवेदी	100
माँ	अंजलि कुमारी	102
एक शर्म का पर्दा	अंजलि कुमारी	102
कदम बढ़ाती बेटियाँ	अंजलि कुमारी	103
काश तुम चेत जाते	आयुष कुमार पाल	104
ये कैसा न्याय है?	सुमन सिंह	105
एम्स की हवा	शबनम बानो	106
मेरे सपनों का भारत	मनीष कुमार	107

English Section

Editorial	Renu Kapoor	110
The World is Heating Up: Are You Feeling the Burn	Shivangi Rawat	111
Life	Isha	111
Vellichor: The Strange Wistfulness of Used Bookstores	Vani Khera	112

Haiku	Khushi	113
You	Anvi Mehrotra	113
Dive	Shivang Joshi	113
Parallel Universe	Anamika Pandey	114
One for My Paw Baby	Priyambada Soibam	115
Memories	Niharika Kumari	115
How life changes!	Anushka Sharma	116
Obedience of Satan	Nipush Tanwar	117
Don't Be a Fossil Fool	Nipush Tanwar	117
That's That, That's It!	Prachi Madaan	118
Forgive Me!	Hardik Sharma	120
The Outside World	Vartika	121
Not Just Gory	Vartika	122
Maimed	Abhishek Riyal	123
Taboo	Ananya Shrivastava	124
Body of Clay	Sanskriti	125
Memories	Ishika Saxena	127
My Experience at the Placement Cell as a President	Gouri Nagpal	128
How to Build a Chair 101	Vani Khera	130
Traverse	Sanskriti	132
From the Eyes of a Tree	Vartika Singh	134
Film Review: Gangubai Kathiawadi	Priyanshi Gautam	136
Parasite: A Critical Analysis	Isha Smriti	137
Can Gossip Be Therapeutic?	A Survey by Students' Editorial Team	139
Zora 'the Joyful'	Dr. Anubhuti Mishra	144
In the Memory of Those Brave Men	Dr. Anish Kumar. K	146
Travel Photo Feature	Nancy Khera	148
Musings on Masks	Renu Kapoor	149
Forget Me (Not)	Dr. Om Prakash Gupta	150

Department and Society Reports

IQAC Report	156
Library Report	157

National Cadet Corps (NCC)	159
Azadi Ka Amrit Mahotsav	163
National Service Scheme (NSS)	164
Diligentia - The Entrepreneurship Cell	168
Hyperion - The Cultural Society	172
Enactus	189
Satark	191
Kaizen - Career Counselling Club	194
Placement Cell	196
Bharat Ratna Dr. B.R. Ambedkar Memorial Lecture Series, 2023	198
संस्कृत विभाग	199
हिंदी विभाग	201
भारतीय संस्कृति सभा	203
Eclectica - Department of English	206
Commercium - Department of Commerce	208
Ecolibrium - Department of Economics	212
Sankhyiki - Department of Statistics	216
Dharohar - Department of History	218
Anant - Department of Mathematics	220
Samvaad - Department of Political Science	222
Geo-Crusaders - Department of Environmental Studies	225
Parikalan - Department of Computer Science	230
Department of Physical Education & Sports Science	232
Alumni Association	236
North-East Cell	238

आवरण पृष्ठ:

प्राकशाईन पामकोव दास

बी.ए. (आनर्स) तृतीय वर्ष

Patron
Prof. (Dr.) Krishna Sharma

Chief Editor
Dr. Sushma Choudhary

Editors
Prof. Giridhar Gopal Sharma (Sanskrit)
Dr. Sandeep Kumar Ranjan (Hindi)
Renu Kapoor (English)

Co - Editors
Dr. Pramita Mishra (Sanskrit)
Dr. Chain Singh Meena (Hindi)
Dr. Reshma Tabassum (English)
Dr. Anubhuti Mishra (English)

Student Editors
Versha Kumari (Sanskrit)
Sneha Kumari (Sanskrit)
Ayush Kumar Pal (Hindi)
Nidhi Shukla (Hindi)
Swastika and Vartika Singh (English)
Vaidehi Nautiyal and Vani Khera (English)

Publisher
Ms. Garima Gaur Srivastava

Printer
Ess Pee Printers

प्राचार्य की कलम से...

मेरे प्रिय विद्यार्थियों, दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय की रचनात्मक दुनिया में आपका स्वागत है।

हमारे महाविद्यालय के विद्यार्थियों की रचनात्मकता को पल्लवित करने वाली 'अंकुर' पत्रिका का नया अंक अब आपके हाथों में है। यह पत्रिका कालांतर से नई प्रतिभाओं को निखारने और आरम्भिक मंच देने का महत्वपूर्ण पड़ाव रही है। हिंदी की रचनात्मक दुनिया से जुड़े कई लेखकों की आरंभिक रचनाएं 'अंकुर' में ही छपी हैं। आज वह रचनाकार देश-विदेश में साहित्य लेखन के लिए जाने जाते हैं। मुझे उम्मीद है कि आपकी रचनात्मक यात्रा में 'अंकुर' एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

21वीं सदी में युवा ही नए भारत की शक्ति हैं। उस शक्ति का केंद्र दिल्ली विश्वविद्यालय है। आप सभी राष्ट्र निर्माण के कर्णधार हैं। आपकी प्रतिभा, ऊर्जा और शक्ति को आकार देने का कार्य यह महाविद्यालय करेगा। उसी कड़ी में यह पत्रिका भी है।

महाविद्यालय विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के लिए अनेक अकादमिक कार्यक्रम समय-समय पर आयोजित करता रहता है, जिसके अंतर्गत वर्कशॉप, व्याख्यान, सेमिनार, प्रतिष्ठित व्यक्तियों के साक्षात्कार आदि प्रमुख हैं। इसके साथ ही महाविद्यालय विद्यार्थियों को अपने भावों को अभिव्यक्त करने के लिए अनेक मंच प्रदान करता है। वह अपनी रचनात्मक प्रतिभा को उन मंचों के माध्यम से निखार और संवार सकते हैं।

इसलिए समय-समय पर काव्य प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता, वाद-विवाद प्रतियोगिता जैसे अनेक कार्यक्रम महाविद्यालय के स्तर पर आयोजित किए जाते हैं। इनके माध्यम से विद्यार्थी अपनी रचनात्मक प्रतिभा का लोहा अपनी अर्जित उपलब्धियों से मनवा सकते हैं।

'अंकुर' पत्रिका भी युवा पीढ़ी के लिए एक ऐसा मंच है, जहाँ वे अपनी रचनात्मक अनुभूति को अभिव्यक्त कर सकते हैं। इस पत्रिका में आप हिंदी, अंग्रेजी और संस्कृत तीनों भाषाओं में अपनी रचनात्मक कौशल का परिचय दे सकते हैं।

आशा है आप सभी को 'अंकुर' पत्रिका के ये शब्द चित्र बेहद पसंद आएंगे और निश्चित तौर पर आपकी रचनात्मकता को उड़ान देने में 'अंकुर' निर्णायक मंच साबित होगी।

कृष्णा शर्मा

प्रो. कृष्णा शर्मा
प्राचार्य

पद्मश्री श्रीयुत् पूनम सूरी का महाविद्यालय के नाम संदेश

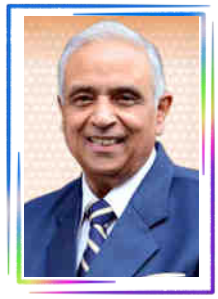

''विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आ सुव''
(हे परमेश्वर! हम सभी के दुर्गुणों को दूर कर सद्गुण प्रदान करें।)

पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय की नई शक्ल और सूरत देखकर मुझे अत्यंत खुशी हो रही है। महाविद्यालय को देखकर हृदय के भाव सहज ही प्रस्फुटित हो रहे हैं-

'होगी ये ईमारत ईंट-पत्थरों की औरों के लिए,
मैंने तो इसके गलीचों से खुदा का नूर टपकते देखा है।'

इसके लिए मैं महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो. कृष्णा शर्मा जी को हृदय से बधाई देता हूँ। यह वर्ष स्वामी दयानंद सरस्वती जी के जन्म का द्विशताब्दी वर्ष है। इस द्विशताब्दी वर्ष के उत्सव को मनाने की जिम्मेदारी भारत सरकार ने हमारे साथ मिलकर अपने हाथों में ली है। हमें पूरा विश्वास है कि 'आर्य समाज' और भारत सरकार के सहयोग से स्वामी दयानंद जी का स्थान पूरे विश्वपटल पर वहाँ तक पहुंचेगा, जहाँ उन्हें अब तक होना चाहिए था।

नैतिक शिक्षा सभी मनुष्यों के लिए अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि व्यक्तित्व और राष्ट्र-निर्माण में इसकी अपरिहार्य भूमिका है। आज विज्ञान किसी भी तरह की मशीन बनाने में सक्षम है, परंतु क्या वह ऐसी मशीन बनाने में सक्षम है, जिससे गलत राह पर चलता हुआ मनुष्य बटन दबाते ही सही राह पर चलने लगे? इसका जवाब नहीं है। क्योंकि इस कार्य के लिए 'मनुष्यता' आवश्यक है। इसके लिए विद्या पर धर्म का अंकुश भी आवश्यक है, नहीं तो विद्या, अविद्या भी हो सकती है। परंतु यह ध्यान रहे यहाँ धर्म का अर्थ कर्त्तव्य है। जैसे सूर्य का धर्म है, सुबह उगना और शाम को अस्त होना। अतः यह भी आवश्यक है कि डी.ए.वी. का हर शिक्षक एक धर्म शिक्षक हो। डी.ए.वी. की स्थापना ही स्वामी दयानंद जी के विचारों को आगे बढ़ाने के लिए हुई है। वर्तमान में डी.ए.वी. में 34 लाख विद्यार्थी अध्ययनरत और एक लाख कर्मचारी कार्यरत हैं।

आज भारत में दो चीजों की बहुत कमी है, पहला देशभक्ति और दूसरा प्रभुभक्ति। ये दोनों ही मनुष्य के पतन के मुख्य कारक हैं। अथर्ववेद में देशभक्ति का पहला गुण 'सत्य' है। मुण्डक उपनिषद् में प्रभुभक्ति का पहला गुण भी 'सत्य' ही है। यहां 'सत्य' का तात्पर्य सिर्फ 'सच बोलना' नहीं है। 'सत्य' है- सत्य आहार, सत्य विचार, सत्य आचार, सत्य व्यवहार और सत्य आधार। सत्य आधार का अर्थ है, वह खाओ जो आपके लिए

हितैषी और मर्यादा में हो। सत्य विचार से तात्पर्य है, विचार को हमेशा सत्य रखें और नकारात्मक विचार को तुरंत दूर करें। सत्य आचार का व्यापक अर्थ है, जैसा व्यवहार आप दूसरे के साथ करेंगे, वैसा ही व्यवहार समाज से आपको भी मिलेगा। सत्य व्यवहार का तात्पर्य है- सत्यम्, शिवम्, सुंदरम्। अर्थात् सत्य व्यवहार का अर्थ सिर्फ सच बोलना नहीं है। यदि आपके झूठ से किसी का कल्याण हो रहा है, तो वह भी सत्य व्यवहार है। सत्य आधार अर्थ है, जो कभी न खत्म हो। जो कभी साथ न छोड़े। जैसे जल का आधार समुद्र है। हमारे डी.ए.वी. के शिक्षकों का कार्य इसी आधार की तरह होना चहिए। धन्यवाद!

-श्रीयुत् पूनम सूरी
(डी.ए.वी. प्रबंध समिति के अध्यक्ष)

संपादकीय

डॉ. सुषमा चौधरी
हिंदी विभाग

'अंकुर' पत्रिका हमारे महाविद्यालय की संपूर्ण गतिविधियों से कहीं प्रत्यक्ष और कहीं अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ी हुई है। कॉलेज में व्याप्त सांस्कृतिक, साहित्यिक, शारीरिक शिक्षा, पर्यावरण से संबंधित, एनसीसी या एनएसएस से किसी न किसी रूप में जुड़ी हुई है या यों कहिए महाविद्यालय के स्तर पर हमारा और हमारे छात्रों का वर्ष भर के मूल्यांकन का प्रतिबिंब **'अंकुर'** पत्रिका में समाहित होता है। सब कुछ तो इसमें दिखाया नहीं जा सकता इसलिए कुछेक झांकी मात्र प्रस्तुत किया जाता है।

सामाजिक, राजनीतिक और अकादमिक पटल पर भी विश्वविद्यालय की गतिविधियों से हम अछूते नहीं रह पाते, वहाँ भी हम अपनी महत्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज करवाते हैं। दिल्ली विश्वविद्यालय के शताब्दी समारोह का भव्य समापन कार्यक्रम हो, जहाँ पहली बार माननीय प्रधानमंत्री जी ने अपना वक्तव्य दिया हो। ऐसे महत्वपूर्ण अवसर पर भी हमारे छात्रों और हमारे सहकर्मियों ने महत्वपूर्ण भागीदारी निभाई है। G-20 से संबंधित कार्यक्रम का सबसे पहले आयोजन भी हमारे महाविद्यालय में किया गया, जिसकी भूरि-भूरि प्रशंसा अनेक समाचार पत्रों में की गई। इसके अतिरिक्त आर्यसमाज के संस्थापक युग प्रवर्तक स्वामी दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती समारोह का आयोजन भी किया गया। असंख्य कष्ट और संघर्ष के उपरांत हमें आजादी प्राप्त हुई। इस आजादी के महत्व को समझाने लिये आजादी के अमृत महोत्सव से जुड़े विभिन्न व्याख्यान मालाओं का आयोजन किया गया। जब देश विकास के पथ पर अग्रसर हो रहा है और वह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिष्ठा बढ़ा रहा हो तो उनसे सम्बन्धित सेमिनार, व्याख्यान और भव्य कार्यक्रम का आयोजन होना निश्चित है। ये तो कुछ ही आकर्षण के बिन्दु हैं, जिन पर बरबस ही हमारा ध्यान केन्द्रित हो गया। इसके अतिरिक्त अनेक भव्य कार्यक्रमों का आयोजन भी किया गया।

शिक्षित होने का उद्देश्य केवल पाठ्यक्रम में निर्धारित पुस्तकों तक सीमित होकर रह जाना नहीं है, बल्कि महाविद्यालय में व्याप्त अन्य गतिविधियों से भी छात्रों के व्यक्तित्व का और अधिक विकास होता है। वे अन्य मुद्दों पर भी अपने विचारों को स्पष्टता से रखने में सक्षम होने लगते हैं, उनके आसपास ऐसा वातावरण बनाने का उद्देश्य यही रहता है कि वे नवीनतम विषयों से स्वयं को जुड़ा हुआ अनुभव कर सकें।

'अंकुर' पत्रिका के इस अंक के सम्पादन का कार्य इस वर्ष मुझे सौंपा गया, जिसका मुझे अत्यंत गर्व है क्योंकि हमारा महाविद्यालय परंपरा की नींव पर खड़ा होकर भी आधुनिकता की इमारत बनाए हुए है। यहाँ हम छात्रों का स्वागत आर्य समाज की परम्परा अनुसार हवन करके, उनके मस्तक पर चन्दन तिलक लगाकर करते हैं, वहीं दूसरी ओर सबसे अधिक छात्रों को रोजगार उपलब्ध करवाकर समय के साथ कदम-ताल करने में भी सक्षम हैं। पी.जी.डी.ए.वी. एक ऐसी संस्था है, जहाँ बिना किसी भेद-भाव के छात्रों का मार्गदर्शन किया

जाता है ताकि वे मात्र शिक्षित न हो बल्कि देश के एक कर्तव्यनिष्ठ और सभ्य नागरिक बनकर उभरें, जिन पर हमें सदैव गर्व हो सके।

अपने छात्रों को 'शब्द' की शक्ति से परिचित करवाना ही हमारा उद्देश्य है। वे जान सकें कि शब्द ब्रह्म है, शब्द की शक्ति अपरिमित है। इनका प्रभाव चिरस्थायी है, इसलिए इन का प्रयोग बेहद सतर्कता और सहजता से करना चाहिए ताकि वे सदैव व्याप्त हो सकें, क्योंकि इनका प्रभाव अमिट है। जैसे साहित्य में अनेक लेखक कबीर, सूरदास, तुलसी, मीराबाई आज भी अपना महत्व रखते हैं। केवल अपने शब्दों के माध्यम से।

आज मीडिया के इतने साधन उपलब्ध हैं, जहाँ छात्र आसानी से पहुँच जाते हैं, जो बहुत आसान है, पर हमें देखना यह है कि वे बहाव में मात्र बह रहे हैं या युग का निर्माण करने में सहायक हो रहे हैं। क्योंकि आज एक ट्वीट मात्र से क्रान्ति को लाया जा सकता है। सोच की दिशा और दशा को बदला जा सकता है इसीलिए आधुनिक युग में शब्दों की महत्ता सबसे अधिक है, ऐसा नहीं है कि शब्द अब प्रभावी हुए है, पहले भी शब्द ही थे जो मंत्र बनकर अमर हो गए और साहित्य में तो अनेक रचनाकार हैं जो समय की सीमा से परे अपनी प्रतिष्ठा रखते हैं। इसीलिए छात्रों के आस-पास जब इतनी सारी गतिविधियाँ चल रही होती हैं, तो उनके मनः स्थल पर अनेक प्रश्न उभरते हैं, उन प्रश्नों का निराकरण वे अपने शब्दों में ढूंढने का प्रयास करते हैं। **'अंकुर'** पत्रिका उन्हें वह मंच प्रदान करती है, जहाँ वे अपने हृदय के भावों को शब्दों के माध्यम से अभिव्यक्त कर सकते हैं। क्योंकि आज का युग सोशल मीडिया का है, जहाँ छात्रों का ध्यान मात्र देखने और सुनने पर केंद्रित न हो जाये बल्कि उन्हें ऐसे समय में रचना धर्मिता के महत्व को समझाने का कार्य यह पत्रिका कर रही है। अपने लेख के प्रभाव और विस्तार को देखकर वे सृजन के महत्व को समझने लगते हैं।

इस वर्ष भी गत वर्ष की तरह कई सहयोगियों ने, जो कि अध्येता भी हैं, उन्होंने भी अपने शोध-परक लेख को **'अंकुर'** पत्रिका के लिए भेजकर इसकी गरिमा को बढ़ाया है। उन सभी का मैं हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ।

इसके साथ ही पत्रिका के विभिन्न खंडों के संपादन करने में मेरे कई सहयोगियों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। सबसे पहले संस्कृत खण्ड के सम्पादन में प्रो. गिरिधर गोपाल शर्मा और डॉ. प्रमिता मिश्रा का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, जिसके लिए उनका साधुवाद। अंग्रेजी खंड के लिए डॉ. रेणु कपूर जी, डॉ. अनुभूति और डॉ. रेशमा का हृदय की गहराइयों से आभार व्यक्त करती हूँ। हिंदी खंड के लिए डॉ. संदीप कुमार रंजन और डॉ चैनसिंह मीणा के सहयोग के लिए अत्यंत आभारी हूँ। लेख संकलन के लिए सुश्री गरिमा गौड़ श्रीवास्तव जी का हृदय तल से आभार व्यक्त करती हूँ। छात्र-संपादकों ने भी अपनी भूमिका को बेहद निष्ठा और ईमानदारी से निभाया है। सभी का यह प्रयास सराहनीय रहा है।

इन सब के अतिरिक्त मुख्यतः प्राचार्य प्रो. कृष्णा शर्मा जी के दिशा-निर्देश के कारण ही यह कार्य अत्यंत सरलता से पूर्ण हो सका। उनका भी अनंत धन्यवाद। आप सभी सुधीजन की शुभकामनाओं का प्रतिफल है यह **'अंकुर'** पत्रिका।

आशा है इस वर्ष की **'अंकुर'** पत्रिका का यह अंक आप सभी के लिए बहुत उपयोगी साबित होगा। तभी तो सबका प्रयास सार्थक होगा।

अज्ञस्य दु:खौघमयं ज्ञस्यानन्दमयं जगत् ।
अन्धं भुवनमन्धस्यप्रकाशंतु सुचक्षुषाम्॥

(वराहोपनिषद् २२)

जैसे अन्धे के लिये जगत् अन्धकारमय है और अच्छी आँखों वाले के लिये प्रकाशमय है, वैसे ही अज्ञानी (जगत् को भगवान् से रहित विषयमय देखने वाले) के लिये जगत् दु:खों का समूहमय है और ज्ञानी (समस्त जगत् में भगवान् से पूर्ण देखने वाले)- के लिये आनन्दमय है।

निद्राया लोकवार्त्तायाः शब्दादेरात्मविस्मृतेः।
क्वचिन्नावसरं दत्त्वा चिन्तयात्मानमात्मनि॥

(अध्यात्मोपनिषद् ५)

नींद, लोकचर्चा, इन्द्रियों के शब्दादि विषय और आत्मविस्मृति (परमात्मा का स्मरण न करना) - इन (चारों) को कहीं तनिक-सा भी अवसर न देकर मनसे निरन्तर आत्मा (परमात्मा) - का चिन्तन करो।

यच्च किञ्चिज्जगत्सर्वं दृश्यते श्रूयतेऽपि वा।
अन्तर्बहिश्च तत्सर्वं व्याप्य नारायणः स्थितः॥

(नारायणोपनिषद्)

जो कुछ जगत् देखने या सुनने में आता है, उस सबको भीतर और बाहर से व्याप्त करके नारायण स्थित हैं।

संस्कृत खण्ड:

सम्पादकीयम्

डॉ. गिरिधर गोपाल शर्मा
संस्कृत-विभाग

डॉ. प्रमिता मिश्रा
संस्कृत-विभाग

नूतनशिक्षानीतेः प्रथमसत्रं समाप्तौ अस्ति। अपि च, CUET मार्गेण प्रवेशस्य प्रथमं वर्षम् आसीत्। अस्मिन् सत्रे एतेषां परिवर्तनानां सकारात्मकं प्रभावं द्रष्टुं प्राप्तवन्तः।

भारतीयभाषाणां भारतीयज्ञानपरम्परायाः च पुनरुत्थानाय नूतनशिक्षानीत्या निर्मितनीतिषु संस्कृतभाषायां तस्याः अध्ययने च सर्वाधिकः प्रभावः अभवत्। अस्माकं प्राचीनं महत्त्वपूर्णं च ज्ञानं अधुना पुस्तकेभ्यः बहिः आगत्य सामान्यजनपर्यन्तं प्रविशति। अस्मिन् विषये छात्रेषु रुचिः अपि वर्धिता अस्ति यतोहि ते एतत् ज्ञानं स्वमातृभाषायाः माध्यमेन प्रथमपर्यन्तं प्राप्नुवन्ति अनन्तं च तेषां रुचिः स्वयमेव तस्मिन् जागरति।

बहवः छात्राः ये पूर्वं केवलं शिक्षणमाध्यमस्य भाषायाः कारणात् पूर्वमेव त्यजन्ति स्म अथवा केवलं उच्चशिक्षामाध्यमस्य भाषा तेषां कृते अवगन्तुं कठिना इति कारणेन उच्चशिक्षणात् भीताः आसन्। भारतीयभाषायाः अपेक्षया विदेशीयभाषाभ्यः अधिकं महत्त्वं दत्त्वा वयं स्वस्य समृद्धज्ञानात् दूरं गच्छन्तः आसन्। आङ्ग्लभाषां प्रत्येकस्य शिक्षाव्यवस्थायाः महत्त्वपूर्णं भागं कृत्वा अनेकेषां छात्राणां अभिभावकानां च उच्चशिक्षाव्यवस्थायाः भागः भवितुं कठिनं जातम्।

एतानि सर्वाणि विषयाणि नूतनशिक्षानीतौ मनसि कृत्वा तानि सर्वाणि महत्त्वपूर्णानि परिवर्तनानि कृताः ये अस्माकं राष्ट्रस्य गौरवपूर्णं इतिहासं कार्यरूपेण स्थापयितुं समये समये आवश्यकाः आसन्। यूजीसी इत्यस्य अध्यक्षः श्रीमान् एम. जगदीशकुमारः अपि घोषितवान् यत् अधुना छात्राः भारतीयज्ञानपरम्परायाः विविधपरिमाणानां ज्ञानेन वेदपुराणादिविशेषज्ञानद्वारा च अतिरिक्त 'क्रेडिट्' इति अर्जयितुं शक्नुवन्ति।

अस्याः नीतेः अन्तर्गतं अष्टादश प्रमुखाः विद्याः अथवा सैद्धान्तिकविषयाः तथा चतुःषष्टिः कलाः, अनुप्रयुक्तविज्ञानानि अथवा व्यावसायिकविषयाः शिल्पाः च सूचीबद्धाः सन्ति। तेषु चत्वारः सहायकवेदाः, आयुर्वेदः, धनुर्वेदः, गन्धर्ववेदः तथा शिल्पपुराणः, न्यायः, मीमांसा, धर्मशास्त्रम्, वेदाङ्गः, षड् सहायकविज्ञानानि ध्वनिविज्ञानम्, व्याकरणम्, छन्दशास्त्रम्, खगोलशास्त्रम्, संस्कारः, दर्शनं च अन्तर्भवन्ति।

एते प्राचीनभारते अष्टादशविज्ञानानाम् आधारः भवन्ति। भारतीयज्ञानपरम्परायाः विकल्पः अधुना विद्यालयस्तरस्य शिक्षायां अपि उपलभ्यते। एतादृशेन परियोजनायाः माध्यमेन अस्माकं वर्तमानसर्वकारः छात्रान् अधिकाधिकं भारतीयज्ञानपरम्परां प्रति प्रेरयति तथा च अस्माकं राष्ट्रं पुनः विश्वगुरुत्वं प्रति गच्छति।

धर्मस्य प्रथमः स्कन्धः

डॉ. प्रमिता मिश्रा
संस्कृत-विभाग

यो धर्मस्कन्धा यज्ञोऽध्ययनं दानमिति प्रथमस्तप एव द्वितीयो ब्रह्मचर्याचार्यकुलवासी तृतीयः। अत्यन्तमात्मान-माचार्यकुलेऽवसादयन्। सर्व एते पुण्यलोका भवन्ति, ब्रह्मसंस्थोऽमृतत्वमेति। (छान्दोग्य० २।२३। १)

धर्म के तीन भाग हैं। यज्ञ, स्वाध्याय और दान मिलकर प्रथम स्कन्ध या भाग होता है। तपस्या ही दूसरा भाग है। आचार्यकुल में रहता हुआ अपने को जो तपस्वी बनाता है, यह तीसरा भाग है। वे सभी पुण्यलोक वाले होते हैं; परंतु इनमें से ब्रह्मनिष्ठ मुक्ति को पाता है।

यज्ञ

यज्ञ के सम्बन्ध में मुण्डकोपनिषद् में उपदेश है-

यदा लेलायते ह्यर्चिः समिद्धे हव्यवाहने।
तदाज्यभागावन्तरेणाहुतीः प्रतिपादयेत्।।

'जब अग्नि भलीभाँति जलायी जा चुके और उसमें लौ उठने लगे तब उसमें घी, सामग्री आदि की आहुतियाँ श्रद्धापूर्वक देनी चाहिये।'' क्योंकि हवन को जलानेवाली अग्नि 'हव्यवाहन' है अर्थात् हवि को सूक्ष्म करके वायुमण्डल में फैला देती है। इससे वायु शुद्ध होकर रोग के कीटाणु नष्ट हो जाते हैं और स्वास्थ्य को लाभ पहुँचता है। यज्ञ के रसायनशास्त्र (Chemistry) के अनुसारlidehydes नामक वायु (Gas) पैदा होती है, जो रोगों को दूर करने वाली तथा स्वास्थ्यवर्द्धक होती है।

आश्वलायन गृह्यसूत्र में यज्ञ के ये लाभ बतलाये हैं-

ॐ अयंत इध्म आत्मा जातवेदस्तेन इध्यस्व वर्धस्व च इद्धय वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन अन्नाद्येन समेधय स्वाहा। (१। १०। १२)

'हे अग्नि ! तू प्रज्वलित होकर हमको प्रज्वलित कर। तू बढ़ और हमको भी बढ़ा, प्रजया अर्थात् संतान से, पशुओं से, आत्मज्ञान से तथा अन्न से। यज्ञ से इन चारों पदार्थों की प्राप्ति हो जाती है।'

यज्ञ से हव्य पदार्थ सूक्ष्म होकर रोगों को नाश करते हुए, पुष्टिदायक पदार्थों से शरीर को पुष्ट करते हैं। पहले हलवाई कभी भी दुबले नहीं देखे जाते थे। क्योंकि वे कढ़ाई के पास बैठकर असली घी की वाष्प को बराबर

ग्रहण करते रहने से पुष्ट हो जाते थे। यह है घी के वाष्प का प्रभाव। जब यह वाष्प अन्य ओषधियों तथा सौम्य पदार्थों के वाष्प से युक्त होकर शरीर में प्रवेश करेगी तो उसके लाभ से शरीर तथा मस्तिष्क पुष्ट होगा और मन शान्त होगा। इसके शान्त होने पर उपर्युक्त लाभ अर्थात् सन्तान, पशु आदि ऐश्वर्यशाली पदार्थों की प्राप्ति होती ही है।

मुण्डकोपनिषद् में कहते हैं-

यस्याग्निहोत्रमदर्शमपौर्णमासमचातुर्मास्यमनाग्रयणमतिथिवर्जितं च।
अहुतमवैश्वदेवमविधिना हुतमासप्तमांस्तस्य लोकान् हिनस्ति॥
काली कराली च मनोजवा च सुलोहिता या च सुधूम्रवर्णा।
स्फुलिङ्गिनी विश्वरुची च देवी लेलायमाना इति सप्त जिह्वाः॥
एतेषु यश्चरते भ्राजमानेषु यथाकालं चाहुतयो ह्याददायन्।
तं नयन्त्येताः सूर्यस्य रश्मयो यत्र देवानां पतिरेकोऽधिवासः॥
एह्येहीति तमाहुतयः सुवर्चसः सूर्यस्य रश्मिभिर्यजमानं वहन्ति।
प्रियां वाचमभिवदन्त्योऽर्चयन्त्यएष वः पुण्यः सुकृतो ब्रह्मलोकः॥ (१।२।३-६)

'यज्ञ कई प्रकार के हैं। अग्निहोत्र जिसका नित्य सायं और प्रातः करने का विधान है। दूसरी दर्श- इष्टि, जो अमावस्या को की जाती है और पौर्णमास- इष्टि, जो पूर्णिमा को की जाती है। तीसरी चातुर्मास्य इष्टि, जो वर्षा ऋतु में की जाती है। चौथी आग्रयण-इष्टि, पाँचवाँ अतिथि-यज्ञ, छठा वैश्वदेव यज्ञ है। जो गृहस्थ इन यज्ञों को नहीं करता, उसके सात लोक नष्ट हो जाते हैं। काली, कराली, मनोजवा, सुलोहिता, सुधूम्रवर्णा, स्फुलिङ्गिनी, विश्वरुची-ये अग्नि की सात जिह्वाएँ हैं। जो लोग इस प्रकार प्रदीप्त अग्नि में आहुतियाँ देते हैं, उनकी आहुतियों को सूर्य की किरणें उस स्थान पर पहुँचा देती हैं, जहाँ देवों के पति अर्थात् ब्रह्म का निवास है। ये आहुतियाँ सूर्य की किरणों के साथ चलती हुई मानो यजमान को बड़ी मीठी बोली में पुण्यलोक की ओर बुलाती हैं। तात्पर्य यह है कि नित्य श्रद्धा के साथ यज्ञ करने से जीवन पवित्र होता है और परलोक बनता है।'

अध्ययन

तैत्तिरीय उपनिषद् में शिक्षा का विषय मुख्यतया प्रतिपादित किया है। उसमें स्वाध्याय के विषय में लिखा है-

ऋतं च स्वाध्यायप्रवचने च। तपश्च स्वाध्यायप्रवचने च। दमश्च स्वाध्यायप्रवचने च। शमश्च स्वाध्यायप्रवचने च। अग्नयश्च स्वाध्यायप्रवचने च। अग्निहोत्रं च स्वाध्यायप्रवचने च। अतिथयश्च स्वाध्यायप्रवचने च। मानुषं च स्वाध्यायप्रवचने च। प्रजा च स्वाध्यायप्रवचने च। प्रजनश्च स्वाध्यायप्रवचने च। प्रजातिश्च स्वाध्यायप्रवचने च। सत्यमिति सत्यवचा राथीतरः। तप इति तपोनित्यः शिष्टिः। स्वाध्यायप्रवचने एवेति नाको मौद्गल्यः। तद्धि तपस्तद्धि तपः॥ (१/९/१)

'ऋत अर्थात् सृष्टि के नियमों को यानी विज्ञान (Science) को पढ़ो-पढ़ाओ। स्वाध्याय कहते हैं स्वयं पढ़ने को

एवं प्रवचन कहते हैं दूसरों के पढ़ाने को। तप के साथ पढ़ो पढ़ाओ। तप कहते हैं सात्त्विक श्रम को। इन्द्रियों को वश में रखते हुए पढ़ो पढ़ाओ। शान्तिपूर्वक पढ़ो - पढ़ाओ। अग्नि (शक्ति 'Power' अर्थात् भौतिक विज्ञान एवं इंजिनियरिंग) - को पढ़ो - पढ़ाओ। अग्निहोत्र को करते हुए पढ़ो - पढ़ाओ। अतिथि की सेवा करते हुए पढ़ो - पढ़ाओ। मनुष्यमात्र के कल्याण पर विचार करते हुए पढ़ो - पढ़ाओ। प्रजा अर्थात् सर्वसाधारण के हित का ध्यान करते हुए पढ़ो - पढ़ाओ। प्रजन अर्थात् सन्तानवृद्धि की समस्याओं पर विचार करते हुए पढ़ो पढ़ाओ। इसके अन्तर्गत केवल मनुष्य ही नहीं अपितु पशु-पक्षी तथा वृक्षादि की उत्पत्ति और वृद्धि के नियम भी आ जाते हैं। अपनी जाति के हित की कामना से पढ़े। राथीतर आचार्य का मत है कि सत्यभाषण सबसे बड़ी चीज है। सत्यभाषण कभी न छोड़ना चाहिये। पौरुशिष्टि आचार्य का कथन है कि तप मुख्य है, तप पर बल देना चाहिये। मुद्गल आचार्य के शिष्य नाक स्वाध्याय और प्रवचन पर बहुत बल देते हैं।'

स्वाध्याय से मस्तिष्क वृद्धि के साथ-साथ आत्मिक उन्नति भी होती है। जैसा मन सोचता है, वैसा बोलता है। जैसा बोलता है, वैसा करता है। दूसरे, पुराना अनुभव बराबर प्राप्त होता रहता है और हमें क्षेत्र मिलता है कि उन अनुभवों में हम वृद्धि कर सकें। जहाँ पठन-पाठन की क्रिया नहीं है, वहाँ पैतृक अनुभव न प्राप्त होने से क्रमशः ज्ञानवृद्धि रुक जाती है। यही ऋषि ऋण है, जो तीन ऋणों में से एक है; जिसके पालनार्थ हम यज्ञोपवीत धारण करते हैं। गृहस्थियों को प्रतिदिन थोड़ा-थोड़ा स्वाध्याय करते रहना चाहिये। कभी छोड़ना नहीं चाहिये।

दान

धर्म की तीसरी शाखा दान है। उपनिषदों में आया है - **श्रद्धया देयम्। अश्रद्धया देयम्। श्रिया देयम्। हिया देयम्। भिया देयम्। संविदा देयम्।**

'श्रद्धा से देना चाहिये, अश्रद्धा से देना चाहिये। सौन्दर्य से देना चाहिये। लोक-लज्जा से देना चाहिये। भय अर्थात् पाप-पुण्य के विचार से देना चाहिये। संविदा अर्थात् ज्ञानपूर्वक दो।' अर्थात् जैसा ऊपर कहा जा चुका है कि मनुष्यमात्र के कल्याण को समझकर देना चाहिये। दान पापों की वृद्धि करनेवाला न हो।

धर्म का दूसरा स्कन्ध तप है अर्थात् इन्द्रियदमन के साथ-साथ आत्मोन्नति के लिये घोर परिश्रम करना तप है। तीसरा स्कन्ध है कि नियम के साथ आचार्यकुल में नियमित समय के लिये निवास करना। गृहस्थ अपनी सन्तान तथा अन्य बालकों को शिक्षा-दान कराकर इस नियम का पालन कर सकते हैं।

आध्यात्मिक मार्ग में अग्रसर होने के लिये आहार-शुद्धि से चलना चाहिये और अपने अंदर दया, दान एवं इन्द्रियदमन की भावना को बढ़ाना चाहिये। निरन्तर यज्ञ करते हुए अध्ययन को भी बराबर करते रहना चाहिये। आहारशुद्धि, यज्ञ और दान कर्म हैं, जिनको प्रयत्न से कर सकते हैं। दया स्वयं आहारशुद्धि से पैदा होने लगती है। आहार का प्रभाव इन्द्रियदमन पर पड़ता है। दूसरे, अध्ययन मनोविचारों को भी शुद्ध करता है। स्वामी दयानन्द से जब बंगाल प्रसिद्ध नेता अश्विनीकुमार ने ब्रह्मचर्य के साधनों पर प्रश्न करते हुए पूछा कि 'महाराज! आपने यह ऊँची स्थिति किस साधना और किस उपाय से प्राप्त की है।' तो उन्होंने बड़ा ही सुन्दर उत्तर दिया कि

'इसका उपाय बड़ा सरल है। मैं कभी अपने मन को खाली नहीं रहने देता। मैं हर समय किसी-न-किसी काम में लगा रहता हूँ। कभी वेद-भाष्य, कभी वेदाङ्गप्रकाश लिखना, कभी दर्शकों के प्रश्नों का समाधान, कभी शास्त्रार्थ और कभी पत्रोत्तर लिखवाता हूँ। जब कोई और काम नहीं होता तो ओंकार का (भगवन्नाम का) जाप कर रहा होता हूँ। काम आता होगा तो मेरे मनकी ड्योढ़ी को बंद पाकर लौट जाता होगा।' अतः मन को खाली न रखना सबसे उत्तम ब्रह्मचर्य का साधन है।

इन साधनों को अपनाने से मनुष्य का कल्याण होता है और राष्ट्र का भी कल्याण होता है। एक विद्वान् धर्मात्मा योगी राष्ट्र की गतिविधि को बदल देता है। ऐसे पुरुष देवता हो जाते हैं। जिनमें दिव्य गुण हो, वे देवता हैं। धन्य है वह राष्ट्र जहाँ ऐसा देव-समाज प्रमुख हो। जहाँ असुर अर्थात् स्वार्थी, क्रूरकर्मा तथा दुराचारी व्यक्तियों का प्राधान्य है, वहीं कष्ट है, दुःख है और निश्चित पराभव है। हमारे राष्ट्र के नेता, हमारे राज्य के सूत्रधार इसी उपनिषद्-धर्म को पालन करते हुए राष्ट्र को परमोन्नत दशा में पहुँचा सकते हैं। **'ब्रह्मचर्येण तपसा राजा राष्ट्रं विरक्षति।'** वेद कहता है कि 'ब्रह्मचर्य और तप से राजा राष्ट्र की रक्षा करता है।' धर्म के इन नियमों पर चलना ही ब्रह्मचर्य है, तप है। ये ही नियम महाराज जनक की तरह व्यक्ति को विदेह बना सकते हैं।

अन्यच्छ्रेयोऽन्यदुतैव प्रेयस्ते उभे नानार्थे पुरुषः सिनीतः।
तयोः श्रेय आददानस्य साधुर्भवति हीयतेऽर्थाद्य उ प्रेयो वृणीते॥

कठोपनिषद् (१।२।१)

प्रेय और श्रेय दो पृथक्-पृथक् मार्ग हैं, ये दोनों विभिन्न फल देनेवाले साधन मनुष्य को बन्धनमें डालते हैं। प्रेय लोकोन्नति का मार्ग है और श्रेय परलोकोन्नतिका मार्ग है। इनमें से श्रेयके ग्रहण करने वाले का कल्याण होता है; प्रेय को ग्रहण करनेवाला पतित हो जाता है।

स्वामी विवेकानन्द की दृष्टि में 'राजयोग'

डॉ. वंदना रानी
संस्कृत-विभाग

सहस्र वर्षों से मनुष्य के अनेकों प्रयासों द्वारा ऐसी अलौकिक घटनाओं का पर्यवेक्षण किया गया है, उनके सम्बन्ध में विशेषरूप से चिन्तन करते हुए उनमें से कतिपय साधारण तत्त्व भी निकाले गये हैं, यहाँ तक कि मनुष्य की धर्मप्रवृत्ति की आधारभूमि पर भी विशेषरूपेण अत्यन्त सूक्ष्मतया विचार किया गया है। इस प्रकार समस्त चिन्तन और विचारों का परिणाम ही राजयोग-विद्या है।

जिस प्रकार मनुष्य की वासनाएँ और अभाव उसके अन्तर्मन में हैं, उसी प्रकार उसके मन के भीतर ही उन अभावों एवं उनके निवारण की शक्ति भी निहित है। मनुष्य की भावना उसके कार्य की शक्ति को कुछ परिणाम में प्रकट (उद्दीप्त) करती है, किन्तु उससे आध्यात्मिक अवनति भी आती है, जिससे मनुष्य की स्वयं की स्वाधीनता चली जाती है और भय व अन्धविश्वास अन्तर्मन में अधिकार स्थापित कर लेते हैं- मनुष्य स्वभाव से ही दुर्बल प्रकृति है। प्रकृति की दो अभिव्यक्तियां हैं- स्थूल (कार्य) व सूक्ष्म (कारण)। जहाँ स्थूल (अभिव्यक्तियाँ) सहज ही इन्द्रियों द्वारा उपलब्ध की जा सकती हैं, परन्तु सूक्ष्म (अभिव्यक्तियाँ) नहीं। राजयोग के अभ्यास से सूक्ष्मतर अनुभूति अर्जित होती रहती है।

मनुष्य का समस्त ज्ञान स्वानुभूति पर आधारित है, जिसे हम 'आनुमानिक ज्ञान' कहते हैं। इसी के द्वारा मनुष्य सामान्य (ज्ञान) से विशेष (ज्ञान) तक पहुँचने में सक्षम हो पाता है। यह विशेष ज्ञान ही निश्चित प्रामाणिक विज्ञान है, जिसका आधार स्वानुभूति है। इसकी सत्यता मनुष्य सहज ही समझ लेता है। उदाहरणार्थ- धर्म, दर्शनशास्त्र आदि। इनके प्रत्येक के मूल में जाकर प्रत्यक्ष स्वानुभूति स्थापित होती है। जो स्वयं के प्रत्यक्ष स्वानुभव पर आधारित है। ये अनुभव जिस विद्या के द्वारा प्राप्त होते हैं, उसका नाम है- योग। इन धर्मादि विषयों की सत्यता का जब तक अनुभव (स्वयं) नही किया जाए, तब तक इन विषयों पर बात करना पूर्णतः व्यर्थ है।

यदि ईश्वर आदि है, तो उनका साक्षात्कार करना ही होगा, उसकी अनुभूति करनी होगी, परानुभव के आधार पर विश्वास करने से बेहतर यही एकमात्र विकल्प है। जब मनुष्य स्वानुभूति द्वारा सत्य को धारण कर लेता है, तब वह सत्य का साक्षात्कार कर अन्तर्मन में उस शक्ति का अनुभव भी कर लेता है। तदोपरान्त उसके समस्त सन्देह, भ्रान्तियाँ आदि दूर हो जाते हैं, अनुभूति होती है कि वह अज्ञानरूपी अन्धकार से आलोक में जाने का मार्ग को प्राप्त कर चुका है, जो गहन अन्धकार से परे है, उसको भली प्रकार जानने पर ही वहाँ जाया जा सकता है, मुक्ति का अन्य कोई दूसरा विकल्प या उपाय नहीं है।

यह राजयोग-विद्या इस सत्य को प्राप्त करने के लिए मनुष्य के समक्ष यथार्थ, व्यावहारिक और साधनोपयोगी वैज्ञानिक प्रणाली रखने का प्रस्ताव करती है। प्रत्येक विद्या के अनुसन्धान एवं साधन की प्रणाली भिन्न-भिन्न है, यथा- खगोलशास्त्र, दर्शनशास्त्र, रसायनशास्त्र, आदि। इनके विषय में एक निर्दिष्ट प्रणाली का अनुसरण करना होगा। अतः धार्मिक या आध्यात्मिक होने के लिए साधना अपेक्षित है, क्योंकि कोई भी ज्ञान प्राप्त करने के लिए हम उसका साधारणीकरण करते हैं और यह साधारणीकरण घटनाओं का पर्यवेक्षण (observation) जब तक मनुष्य यह प्रत्यक्ष नहीं कर लेता कि उसके मन के भीतर क्या हो रहा है और क्या नहीं? तब तक वह अपने मन के सम्बन्ध में उसके मन आभ्यन्तरिक प्रकृति के सम्बन्ध में, उसके विचार के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं जान सकता। बाह्य-जगत् के व्यापारों का पर्यवेक्षण करना सहज है, क्योंकि उसके लिए हजारों यन्त्र निर्मित हो चुके हैं, परन्तु अन्तर्जगत् के व्यापार को समझने के लिए सहयोगी अन्य किसी यन्त्र का निर्माण नहीं हुआ है। फिर भी यह निश्चयपूर्वक हम जानते हैं कि किसी विषय का यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने के लिए पर्यवेक्षण (observation) अति आवश्यक है। राजयोग-विद्या मनुष्य को उसकी आभ्यन्तरिक अवस्थाओं के पर्यवेक्षण का उपाय बताती है कि मन ही वह पर्यवेक्षण यन्त्र है।

मनोयोग की शक्ति का सही-सही नियमन कर जब उसे अन्तर्जगत् की ओर परिचालित किया जाता है, तभी वह मन का विश्लेषण कर सकती है और तब उसके प्रकाश से हम यह भली प्रकार से समझ सकते हैं कि अपने मन के भीतर क्या घट रहा है? मन की शक्तियाँ यत्र-तत्र बिखरी हुई प्रकाश की किरणों के समान हैं। जब उन्हें केन्द्रीभूत किया जाता है, तब वे सब कुछ आलोकित कर देती हैं। यही ज्ञान का एकमात्र उपाय है। बाह्य जगत् में हो अथवा अन्तर्जगत् में, लोग इसी को प्रयोग में ला रहे हैं, परन्तु वैज्ञानिक जिस सूक्ष्म पर्यवेक्षण शक्ति का प्रयोग बहिर्जगत् में करता है, मनस्तत्त्वान्वेषी उसी का प्रयोग मन पर करते हैं। इसके लिए अधिक अभ्यास आवश्यक है। बाल्यकाल से ही मनुष्य ने केवल बाहरी वस्तुओं में मनोनिवेश करना सीखा है, अन्तर्जगत् में मनोनिवेश करने की शिक्षा नहीं प्राप्त की। इसी कारणवश मानव-समाज में से अधिकांश आभ्यन्तरिक क्रिया-विधि की निरीक्षण-शक्ति खो बैठे हैं। मन को अन्तर्मुखी करना, उसकी बहिर्मुखी गति को रोकना, उसकी समस्त शक्तियों को केन्द्रीभूत कर, उस मन पर ही उनका प्रयोग करना, जिससे कि वह अपना स्वभाव समझ सके, स्वयं का विश्लेषण करके देख सके, यह एक अत्यन्त कठिन कार्य है, किन्तु इस विषय में वैज्ञानिक प्रथा के अनुसार अग्रसर होने के लिए यही एकमात्र उपाय है।

इस ज्ञान की उपयोगिता क्या है?

प्रथमतः ज्ञान स्वयं ज्ञान का सर्वोच्च पुरस्कार है। द्वितीयतः इसकी उपयोगिता है कि यह मनुष्य के समस्त दुःखों का हरण करेगा। जब मनुष्य अपने मन का विश्लेषण करते हुए ऐसी एक वस्तु का साक्षात् दर्शन कर लेता है, जिसका किसी काल में नाश नहीं, जो स्वरूपतः नित्यपूर्ण और नित्य शुद्ध है, तब उसे कोई दुःख नहीं रह जाता, उस का समस्त विषादन जाने कहाँ विस्मृत हो जाता है। भय और अपूर्ण वासना ही समस्त दुःखों का मूल है। पूर्वोक्त अवस्था के प्राप्त होने पर मनुष्य समझ जाता है कि उसकी मृत्यु किसी काल में नहीं है, तब

उसे फिर मृत्यु भय नहीं रह जाता। अपने ऊपर असार वासनाएँ फिर नहीं रहतीं। पूर्वोक्त कारणद्वय का अभाव हो जाने पर फिर कोई दु:ख नहीं रह जाता। उसकी जगह इसी देह में परमानन्द की प्राप्ति हो जाती है।

इस ज्ञान की प्राप्ति के लिए एक मात्र उपाय है 'एकाग्रता'। रसायन विज्ञ अपनी प्रयोगशाला में जाकर अपने मन की समस्त शक्तियों को केन्द्रीभूत करके जिन वस्तुओं का विश्लेषण करता है, उन पर प्रयोग करता है; तदोपरान्त वह उनके रहस्य जान लेता है। खगोलशास्त्रज्ञ ज्यों ही अपने मन की समस्त शक्तियों को एकत्र करके दूरबीन के भीतर से आकाश में प्रक्षिप्त करता है, त्योंही सूर्य, चन्द्र और तारे अपने-अपने रहस्य उसके समक्ष उद्घाटित कर देते हैं।

स्वामी विवेकानन्द कहते हैं कि जिस विषय पर मैं यहाँ बात कर रहा हूँ, उस सन्दर्भ में मैं जितना मनोनिवेश कर सकूँगा, उतना ही उस विषय का गूढ़तत्त्व मानव-जगत के समक्ष प्रकट कर सकूँगा। अत: मनुष्य जितना इस विषय में मनोनिवेश करने में समर्थ होगा, मेरे कथन को उतना ही स्पष्ट रूप से धारण करने में भी समर्थ हो सकेगा।

मन की शक्तियों को एकाग्र करने के अतिरिक्त अन्य किस प्रकार संसार में ये समस्त ज्ञान उपलब्ध हुए हैं? प्रकृति के द्वार को कैसे खटखटाना चाहिए, उस पर कैसे आघात देना चाहिए, केवल यह ज्ञात हो जाए, तो यह प्रकृति अपना समस्त रहस्य उद्घाटित कर देती है। उस आघात की शक्ति एवं तीव्रता एकाग्रता से ही आती है। मानव-मन की शक्ति की कोई सीमित सीमा नहीं। वह जितना ही एकाग्र होता है, उतनी ही उसकी शक्ति एकलक्ष्य पर केन्द्रित होती है, यही रहस्य है।

मन को बाहरी विषयों में स्थिर करना अपेक्षाकृत सहज है, क्योंकि मन स्वभावत: बहिर्मुखी है, किन्तु धर्म, मनोविज्ञान अथवा दर्शन के विषय में ऐसा नहीं है। यहाँ तो ज्ञाता और ज्ञेय (विषयी और विषय) एक हैं। यहाँ प्रमेय (विषय) एक आन्तरिक वस्तु है- मन ही यहाँ 'प्रमेय' है। मनस्तत्त्व का अन्वेषण करना ही यहाँ 'प्रयोजन' है और मन ही 'मनस्तत्व के अन्वेषण' का कर्ता है। यह सर्वविदित है कि मन ही एक ऐसी शक्ति है, जिससे वह स्वयं के भीतर जो कुछ भी हो रहा है, उसे अनुभव कर सकता है, इसी को 'अन्तर्पर्यवेक्षण-शक्ति' कह सकते हैं। अर्थात मैं तुम से वार्तालाप कर रहा हूँ, फिर साथ ही मैं मानो एक और व्यक्ति होकर बाहर खड़ा हूँ और जो कुछ कह रहा हूँ, वह सभी कुछ जान व सुन रहा हूँ। हम एक ही समय में काम और चिन्तन दोनों कर रहे होते हैं, परन्तु हमारे मन का एक और अंश मानो बाहर खड़े होकर हम जो कुछ भी चिन्तन कर रहे हैं, उसे वह देख रहा है। मन की समस्त शक्तियों को एकत्र कर के मन पर ही उनका प्रयोग करना होगा। यथा सूर्य की तीक्ष्ण किरणों के समक्ष गहन अन्धकारमय स्थान भी अपने गुप्त तथ्य उद्घाटित कर देते हैं, तथैव यह एकाग्रमन अपने सभी अन्तरतम रहस्य प्रकाशित कर देगा। तब हम विश्वास के उस शाश्वत मूलाधार पर पहुंचेंगे। तभी हमें सम्यक्तया धर्म-प्राप्ति होगी। तभी आत्मा है या नहीं, जीवन केवल इस सामान्य जीवित काल तक ही सीमित है अथवा अनन्तकाल व्यापी है और संसार में कोई ईश्वर शक्ति है या नहीं, यह सब हम स्वयं देख सकेंगे। सब कुछ हमारे ज्ञानचक्षुओं के समक्ष उद्भासित हो उठेगा। अत: राजयोग हमें यही शिक्षा

प्रदान करता है। इसमें जितने उपदेश हैं, उन सबका उद्देश्य प्रथमत: मन की एकाग्रता का साधन है; तदोपरान्त उसके गम्भीरतम प्रदेश में कितने प्रकार के भिन्न-भिन्न कार्य हो रहे हैं, उन सभी का ज्ञान प्राप्त करना; और तत्पश्चात् उनसे साधारण सत्यों को निकालकर उनसे अपने एक सिद्धान्त पर उपनीत होना। अतएव राजयोग की शिक्षा किसी धर्म (सम्प्रदाय) विशेष पर आधारित नहीं है। हमारा धर्म अर्थात् सम्प्रदाय चाहे जो हो, हम चाहे आस्तिक हो या नास्तिक, यहूदी या बौद्ध या ईसाई, इससे कुछ भी बनता या बिगड़ता नहीं, हम मनुष्य हैं, केवल यही पर्याप्त एवं सत्य है। प्रत्येक मनुष्य में धर्मतत्त्व का अनुसन्धान करने की शक्ति है, उसे उसका अधिकार है। प्रत्येक व्यक्ति का, चाहे वह किसी भी विषय से सम्बन्धित क्यों न हो, कारण पूछने का अधि कार है और उसमें ऐसी शक्ति भी है कि वह स्वयं अपने भीतर से ही उन प्रश्नों के उत्तर को प्राप्त कर सके। परन्तु हाँ, उसे इसके लिए कुछ कष्टों का सामना करना होगा।

अन्तत: उपर्युक्त समस्त विवेचन से यह स्पष्टरूपेण विदित होता है कि इस राजयोग की साधना में किसी प्रकार के विश्वास की आवश्यकता नहीं। अत: स्पष्टतया 'राजयोग' यही शिक्षा देता है कि जब तक किसी भी बात का स्वयं ही प्रत्यक्षरूपेण साक्षात्कार न किया जाए, तब तक उस पर पूर्णतया विश्वास नहीं करना चाहिए।

ब्रह्म का स्मरण करो और आसक्ति का त्याग करो

अहो नु चित्रं यत्सत्यं ब्रह्म तद् विस्मृतं नृणाम्।
तिष्ठतस्तव कार्येषु मास्तु रागानुरञ्जना॥

अहो! यह बड़े आश्चर्य की बात है कि जो परब्रह्म परमात्मा नितान्त सत्य हैं, उन्हीं को मनुष्यों ने भुला दिया है। भाई! कर्मों में लगे रहने पर भी तुम्हारे मन में रागानुरञ्जना-उन कर्मों में आसक्ति नहीं होनी चाहिये।

वसन्तपञ्चमी

डॉ. रोहित कुमार
संस्कृत-विभाग

वसन्तो ग्रीष्मो वर्षाः शरद् हेमन्तःशिशिरश्चेति षड्ऋतवो भवन्ति। एतेषु षट्सु ऋतुषु वसन्तस्य अन्यतमं स्थानं वर्तते ''वसन्ति सर्वे ऋतवो यस्मिन् स वसन्तः'' इति विग्रहात्। अत एव वसन्तः ''ऋतुराजः'' इति नाम्नाऽपि सम्बोध्यते। अस्मिन्ऋतौ क्षेत्रेषु नवसस्यानि प्रजायन्ते। तैः क्षेत्रसौन्दर्यम् अतीव मनोहरं प्रतिभाति। हृदयावर्जकानि विविधपुष्पाणि विकसन्ति। पुष्पाणि परितः भ्रमरा गुञ्जायमाना भ्रमन्तोवसन्तस्य माहात्म्यं ख्यापयन्ति। आम्रवृक्षेषु नवमञ्जराणि समायान्ति। वृक्षेषु पिकामधुरं कूजन्तः वसन्तमहत्त्वं कीर्तयन्ति। यथोक्तम्- ऋतुसंहारनामके खण्डकाव्ये कविकुल शिरोमणिना कालिदासेन वसन्तर्तुवर्णनप्रसङ्गे-

द्रुमाः सपुष्पाः सलिलं सपद्मं, स्त्रियाः सकामाः पवनः सुगन्धिः।
सुखाः प्रदोषा दिवसाश्च रम्याः, सर्वं प्रियं चारुतरं वसन्ते॥ (ऋतुसंहारः- ६/२)

असौ वसन्तो ''मधुमासः, माधवमासः, ऋतुराजः पिकानन्दश्च'' इत्याख्यैः कीर्त्यते। एतेन वसन्तस्य प्रामुख्यं स्पष्टं भवति। अस्मिन् (वसन्ते) ऋतौ निखिलेऽपि देशे अनेकानि पर्वाणि आयोज्यन्ते। तेषु अन्यतमं भवति ''वसन्तपञ्चमी'' इति। वसन्तस्य पञ्चमी वसन्तपञ्चमीति। इयमेव केषाञ्चन मते ''ऋषिपञ्चमी श्रीपञ्चमी'' इत्याख्याभ्यामपि कीर्त्यते। वसन्तपञ्चमी माघमासस्य शुक्लपक्षस्य पञ्चम्यां तिथौ आयोज्यते। अस्यां तिथौ सोल्लासेन नृत्यगीतस्तोत्रघोषादिपुरस्सरं वाग्देव्याः सरस्वत्या आराधनं क्रियते, यतोहि अस्यामेव तिथौ विद्याप्रदायिन्या वीणापाणेः सरस्वत्याः प्रादुर्भावोऽभवद् इति पौराणिककथामाश्रित्य पौराणिका आमनन्ति। विद्याया वाण्याश्च अधिष्ठातृदेवी सरस्वती वर्तते। इयं विद्या- बुद्धिप्रदात्री वर्तते।

अतो ''वागीश्वरी, वाग्देवी, विद्यादात्री, विद्या-बुद्धिप्रदायिनी, शारदा, भगवती, वीणापाणिः, वीणावादिनी'' इति नामभिः पूज्यते। सङ्गीतम् अस्या एव समुद्भूतम् अतः सङ्गीतदेवी इत्यपि उच्यते। ऋग्वेदेऽपि सरस्वतीस्तुतिः प्राप्यते- **''प्रणो देवी सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती धीनामणित्रवतु** इति। शिक्षाविदः सङ्गीतनृत्यादिकलाविदः शिल्पिनः समेऽपि ''विद्या-बुद्धि-वागधिष्ठातृदेवतायाभगवत्याः श्रीसरस्वत्या आराधनां कुर्वन्ति। यथैव सैनिकाः क्षत्रियाश्च विजयदशम्यां शस्त्रपूजां कुर्वन्ति तथैव शिक्षकाः छात्रा अन्ये अध्येतारश्च शास्त्राणां ग्रन्थानां पुस्तकानाञ्च तदधिष्ठातृदेव्याः सरस्वत्याश्च पूजां कुर्वन्ति। यथोक्तम्-

''माघस्य शुक्लपञ्चम्यां महापूजां समाचरेत्।
नवैः प्रवालैः कुसुमैरनुलेपैर्विशेषतः॥

नीराजनोत्सवं कृत्वा भक्त्या संमान्य वैष्णवान्।
वसन्तरागं जनयन्गीतनृत्यादि कारयेत्॥''

इयं पञ्चमी मानवान् समस्तपापान्मोचयित्वा तेभ्यः सदसद्विवेकबुद्धिं प्रददाति। यथोक्तं मत्स्यसूक्ते–'वसन्तपञ्चमी नाम सर्वपापप्रमोचनी।' अस्यां तिथौ केचन लघुबालकानां विद्यारम्भम् (अक्षरारम्भम्)कारयन्ति। यतोहि विद्यारम्भनिमित्तं वसन्तपञ्चमी तिथिरतीव पवित्रतमा मन्यत इति शम्।

साधु का स्वभाव

नान्तर्विचिन्तयति किञ्चिदपि प्रतीपमाकोपितोऽपि सुजनः पिशुनेन पापम्।
अर्कद्विषोऽपि हि मुखे पतिताग्रभागास्तारापतेरमृतमेव कराः किरन्ति॥

चुगली खाने वाले दुष्ट मनुष्य के द्वारा क्रोध दिलाने पर भी साधु पुरुष उसके विरुद्ध अमङ्गलमय प्रतिशोध की बात अपने मन में नहीं लाते। राहु चन्द्रमा का सहज विद्वेषी है; किंतु चन्द्रमा की सुधामयी किरणें उसके मुख में पड़कर भी अमृत की ही वर्षा करती हैं।

पञ्चकोशः होलिस्टिक डेवलपमेंट ऑफ पर्सनैलिटी

डॉ. राजेश कुमार
संस्कृत-विभाग

उपनिषदों में पंचकोश का वर्णन मिलता है। जिसमें यह कहा गया है कि हमारी आत्मा पंचकोश के अंदर ढ़की हुई है। इसका तात्पर्य यह है कि मनुष्य अपने अस्तित्व के पांच आयामों में हर क्षण विचरण करता रहता है, उन पांच आयामों के अंदर ही सम्पूर्ण व्यक्तित्व एवं सम्पूर्ण शरीर रहता है।

व्यक्तित्व अंग्रेजी के ''पर्सनैलिटी'' शब्द का हिंदी अनुवाद है। पर्सनैलिटी शब्द की उत्पत्ति लैटिन के ''परसोना'' से हुई है। परसोना एक प्रकार का नकाब या मुखौटा को कहते हैं। जिसका उपयोग यूनानी नाटकों में भाग लेने वाले पात्र करते थे। मुखौटा को चेहरे पर लगा लेने से स्पष्ट पता चल जाता था कि नाटक में विभिन्न पात्रों के कार्य किस ढंग से होंगे। इस परसोना से ही पर्सनैलिटी बना है जिसका अर्थ बनावटी रूप होता है। इस शाब्दिक अर्थ में बाह्य रूप रेखा, वेशभूषा को ही व्यक्तित्व माना गया है। सामान्य तौर पर व्यक्तित्व का प्रयोग इसी अर्थ में होता है।

एक व्यक्ति जो देखने में सुंदर है उसकी पोशाक आकर्षक है। वह मृदुभाषी और फुर्तीला है। उसको अच्छे व्यक्तित्व वाला कहा जाता है। इसके विपरीत बेडौल नाक -नक्श वाले व्यक्ति को मैले कुचैले कपड़े वाले व्यक्ति को हम अच्छे व्यक्तित्व का नहीं मानते हैं। हमारे गुरुवर प्रो. एम. एम. अग्रवाल हमेशा पंच वकार की बात करते हैं जो इस प्रकार है-

पंच वकार

वाक्, वस्त्र, वपू (चरित्र), विद्या और वैभव हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि अच्छी वाणी, वस्त्र, चरित्र और विद्या एवं धन संपत्ति वाला व्यक्ति ही परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व में सुख शांति एवं आनन्द के वातावरण को सृजित कर सकता है। चरित्र निर्माण का सबसे अच्छा माध्यम शिक्षा है और सबसे अच्छा केन्द्र विद्यालय एवं महाविद्यालय हैं। इसीलिए छात्रों के व्यक्तित्व के समग्र विकास के लिए स्नातक के प्रथम वर्ष के छात्रों को -''पंचकोश'' के माध्यम से प्राचीन ग्रन्थों एवं परम्पराओं में उपलब्ध व्यक्तित्व निर्माण की समग्र दृष्टि को व्यवहार में लाने का प्रयास किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी इस बात को बार- बार दोहराया गया है कि सम्पूर्ण शिक्षा एवं अध्ययन का उद्देश्य व्यक्तित्व को गढ़ना है। तैत्तिरीय उपनिषद में व्यक्तित्व के समग्र विकास हेतु ''पंचकोश'' की जो संकल्पना ऋषियों ने दी है वही पूर्णता की ओर ले जाती है।

तैत्तिरीय उपनिषद् में
नैतिक शिक्षा-शिक्षा वल्ली में
पंचकोश चर्चा-ब्रह्मानन्द वल्ली में
पिता द्वारा ब्रह्म ज्ञान-भृगु वल्ली में है।

मनुष्य के शरीर की उत्पत्ति क्रम को बताते हुए उपनिषद में यह कहा गया है कि- सबसे पहले अंतर्यामी परमात्मा से आकाश तत्त्व उत्पन्न हुआ, आकाश से वायु तत्त्व, वायु तत्त्व से अग्नि, अग्नि तत्त्व से जल, जल से पृथ्वी उत्पन्न हुई पृथ्वी से नाना प्रकार की औषधियां, अनाज के पौधे हुए, जो मनुष्य का आहार हुए। इस प्रकार विश्व की सबसे जटिल मशीन हमारा शरीर है। जिसमें इतने सारे अंग हैं सबके अपने अपने कार्य हैं। अलग अलग कार्य करने के बाद भी सबमें एक समन्वय स्थापित है। कद-काठी, रूप रंग, सोचने समझने वाली विशेषताएं, और भी बहुत कुछ है। खुली आंखों से नजर आने वाली इस शरीर के अतिरिक्त भी कई शरीर इसमें हैं जो सूक्ष्म स्तर पर काम करती हैं।

इसके तीन रूपों की चर्चा उपनिषदों में की गई है, 1. स्थूल शरीर- हम सबका बाह्य शरीर और उसके अंग जैसे फेफड़े, किडनी, जिसमें समस्त इंद्रियां शामिल है। जिसको हम सब सहजता से महसूस कर सकते हैं, यह शरीर भोजन और जीवन ऊर्जा से जीवित रहता है समय के साथ परिवर्तित होता रहता है, और एक दिन समाप्त हो जाता है और उन्हीं पंच तत्वों में मिल जाता है जिससे यह शरीर बना होता है।

2. सूक्ष्म शरीर- जो भावनात्मक एवं तार्किक चिंतन करता है। यह खुली आंखों से नहीं दिखता है।

3. कारण शरीर-पूर्ण आरोग्य एवं आनन्दमय स्थिति।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि हम सबकी आत्मा पंचकोश के अंदर ढकी हुई है। पंच का अर्थ पांच और कोश का अर्थ होता है खजाना। जहां एक ही प्रकार की बहुत सारी चीजें एकत्रित होती है। वह स्थान कोश कहलाती है। जैसे मुद्रा का कोश - मुद्राकोष शब्दों का कोश- शब्दकोश। मय -का अर्थ है बना हुआ जो अन्न से बना है अन्नमय कोश कहलाता है। आत्मा पंचकोशों के साथ संयुक्त होती है। आत्म साक्षात्कार के लिए एक-एक कोश को भेदते हुए आगे की ओर बढ़ना पड़ता है। साधक अन्नमय कोश की साधना करते हुए आनंदमय कोश तक पहुंच जाता है। अन्त में परमानंद की अवस्था को प्राप्त कर लेता है। प्रत्येक कोश एक दूसरे से प्रभावित रहते हैं इसके साथ ही इन सभी का एक दूसरे से घनिष्ठ संबंध भी होता है। केले के तने की तरह या प्याज के छिलके की तरह ढ़के रहने के कारण आत्मा का प्रकाश हमारे अनुभव से सर्वथा भिन्न रहता है। हम वास्तविक स्वरूप को नहीं पहचान पाते हैं। यह भौतिक शरीर जो दिखाई देता है उसके साथ चार और शरीर हैं जो दिखाई नहीं देते हैं। इसलिए आत्मा के वास्तविक स्वरूप को जानने से ही हम सभी अपने आप को जान पाते हैं।

पांच कोश यह हैं-

1. अन्नमय कोश
2. प्राणमय कोश
3. मनोमय कोश
4. विज्ञानमय कोश
5. आनंदमय कोश

अन्नमय कोश- इस संसार में जो कुछ भी है वह अन्नमय है अन्न का हिस्सा है। जैसे हमारा शरीर भी अन्न. से बना हुआ है। जिसे हम खुली आंखों से देखते हैं वह सभी अन्नमय है। आत्मा शरीर रूपी चोला पहन कर देखती है और हम माया और अज्ञान के कारण शरीर को ही सब कुछ मान लेते हैं। यह शरीर जो जन्म लेता है बढ़ता है वृद्ध होता है। जीर्ण होकर समाप्त हो जाता है। वह पंचतत्व से बना उसी पंचतत्व में मिल भी जाता है। इसकी साधना से हमारा स्वस्थ्य ठीक रहता है। सात्विक आहार, उचित व्यवहार, षडकर्म औषधियों का सेवन करके इसको ठीक किया जाता है। प्राणमय कोश- वायु के रूप में प्राण हमारे शरीर में हमेशा रहता है परंतु यह दिखाई नहीं देता। हमारे शरीर में ऊर्जा बल और शक्ति के रूप में इसका अस्तित्व सदा बना रहता है। इसलिए प्राण सर्वश्रेष्ठ है, सर्वोत्तम है और सबसे बड़ा है। हमारी सारी इंद्रियों का कोई औचित्य नहीं रह जाता जब उसमें प्राण नहीं होता है। प्राणमय कोश को ठीक करने के लिए प्राणायाम किया जाता है। प्राण, अपान, व्यान, उदान और समान ये पंच वायु हैं।

प्राण- सामने गमन करने वाली और नाक के अग्र भाग पर रहने वाली वायु -प्राण है।

अपान- निम्न गमन वाली गुदादि स्थान में रहने वाली वायु अपान है।

व्यान- सब ओर गमन करने वाली संपूर्ण शरीर में वर्तमान जाने वाली वायु व्यान है।

उदान- ऊपर की ओर चलने वाली कंठ स्थानीय वायु उदान है।

समान- शरीर में खाए पिए हुए अन्नादि का चित्र परिपाक करने वाली वायु समान है।

कुछ लोग नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त और धनंजय नामक पांच अन्य वायु को भी मानते हैं। जिसमें वमनादि करने वाली वायु नाग, पलकों को खोलने तथा बंद करने वाली वायु को कूर्म, बुभुक्षा उत्पन्न करने वाली वायु कृकल, जम्हाई उत्पन्न करने वाली देवदत्त, तथा शरीर को पोषण करने वाली वायु धनंजय है। प्राण की बलिष्ठता के कारण ही एक ही रोग में एक व्यक्ति जल्दी ठीक होता है दूसरे व्यक्ति को ठीक होने में काफी समय लगता है। प्राण के ठीक होने पर शरीर का सारा सिस्टम ठीक से काम करता है। इसको ठीक करने के लिए प्राणायाम का अभ्यास जरूरी है।

मनोमय कोश- क्या तीसरा कोश है। सूक्ष्म शरीर का पहला कोश है। पहले दो कोश स्थूल शरीर के भाग थे।

इसके अंतर्गत ज्ञान का बोध होता है। यह इच्छा शक्ति से युक्त होता है। आत्मा इन्द्रिय तथा विषय का सानिध्य होने पर भी ज्ञान होना अथवा ना होना मन पर आश्रित होता है कई जगह ऐसी बात कही गई है कि मेरा मन अन्यत्र था इससे मैंने देखा नहीं। वह मन से ही देखता है तथा मन से सुनता है इस कारण मन को ही कारण रूप सिद्ध करता है। मन में ही सारी कल्पनाएं, विचार एवं संकल्प- विकल्प की इच्छा उत्पन्न होती है। इसलिए मन को नियंत्रित करने के लिए लगातार मेडिटेशन (ध्यान)का अभ्यास किया जाना चाहिए।

विज्ञानमय कोश- चौथा कोश है। यह सहज ज्ञान या अंतर्ज्ञान है। मनोमय कोश के बाद उचित और अनुचित का निर्णय इस कोश में हो जाता है। असत्य, मोह इत्यादि का नाश हो जाता है और भूत, वर्तमान और भविष्य को जानने समझने की क्षमता साधक में आ जाती है। विज्ञानमय कोश ऊँची स्थिति है। भाव यह है कि यह विज्ञान अर्थात बुद्धि के साथ तद्रूप हुआ जीवात्मा ही यज्ञों का अर्थात शुभ कर्म रूप पुण्य का विस्तार करता है।इसे भाव-संवेदना का स्तर कह सकते हैं। दयालु, उदार, सज्जन, सहृदय, संयमी, शालीन और परोपकार परायण ज्ञान के कारण ही होता है।

आनन्दमय कोश- आनंदमय कोश आत्मा की उस मूलभूत स्थिति की अनुभूति है जिसे आत्मा का वास्तविक स्वरूप कह सकते हैं। विज्ञानमय जीवात्मा से भिन्न , उसके भीतर एक दूसरा आत्मा है वह आनन्दमय परमात्मा है। सफलता-असफलता अनुभव करते रहते हैं। आनंदमय कोश जागृत होने पर जीव अपने को अविनाशी, ईश्वर सत्य, शिव, सुन्दर, मानता है। यह स्थिति ही आत्मज्ञान कहलाती है। यह उपलब्ध होने पर मनुष्य हर घड़ी सन्तुष्ट एवं उल्लसित पाया जाता है। जीवन मंच पर वह अपना अभिनय करता रहता है। उसकी संवेदनाएँ भक्तियोग, विचारणाएँ, ज्ञान और क्रियाएँ कर्मयोग जैसी उच्च स्तरीय बन जाती हैं।

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः।
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत्॥

श्रीमद्भगवद्गीता (१६।२१)

'काम, क्रोध और लोभ तीनों आत्मा के नाशक और नरक के द्वार हैं। इसलिये इनको त्यागना ही चाहिये।'

पञ्चमहायज्ञाः

शिवानी साहू
संस्कृत विशेष, तृतीय वर्ष

भारतीयसंस्कृतौ गृहस्थानां सर्वेषां कृते पञ्चमहायज्ञानुष्ठानं परमावश्यकम्। ब्रह्मयज्ञः, देवयज्ञः, पितृयज्ञः, भूतयज्ञः, अतिथियज्ञश्चैते पञ्चमहायज्ञाः सन्ति। तेषां मानवजीवने अतिमहत्त्वं विद्यते। अतः तेषां पञ्चानां यज्ञानां विवेचनं क्रियते।

ब्रह्मयज्ञ :- नित्यं स्वाध्यायः प्रवचनं च ब्रह्मयज्ञविधानम्। ब्रह्मचर्याश्रमे यत् ज्ञानम् अर्जितं तस्य स्मरणम् अन्येभ्यः वितरणं च ब्रह्मयज्ञस्य स्वरूपम्। "भारते सदैव आचार्याः निःशुल्कमेव वेदवेदाङ्गानां शिक्षां ब्रह्मचारिभ्यो दत्तवन्तः।" अनेन प्रकारेण प्राचीनभारते दीनहीनानामपि विद्यार्थिनां शिक्षा समभवत्। शतपथब्राह्मणानुसारेण ब्रह्मयज्ञेन स्वर्गप्राप्तिः भवति।

देवयज्ञ :- अग्निहोत्रं देवयज्ञः। अग्नौ मन्त्रपूर्वकं घृतस्य हवनसामग्रीणां च आहुतिप्रदानेन देवयज्ञः अनुष्ठीयते। देवानां कृपयैव जगति सुखं, शान्तिः, विकासः रक्षा च भवन्तीति च परम्परागता भारतीयमान्यता।

पितृयज्ञ :- भूतानां पूर्वजानां कृतज्ञताज्ञापनाय पितृयज्ञस्य अनुष्ठानं क्रियते। पितृयज्ञानुष्ठानेनैव पितृणां ऋणात् मुक्तिः इति पारम्परिकमतम्। पूर्वजानां कृते कृतज्ञताज्ञापनभावः पितृयज्ञस्य मूलहेतुः। जीवितानां वृद्धपुरुषाणां सेवाशुश्रूषा सन्तानस्य कर्तव्यम्। मतद्वयमिदं शास्त्रानुमतम्।

भूतयज्ञ :- भूतयज्ञः बलिवैश्वदेवयज्ञसञ्ज्ञया अपि वर्णितः। भूतयज्ञे पाकशालायां पक्वस्य भोज्यान्नस्य सर्वेषां प्राणिनां तृप्तये बलिः दीयते। छान्दोग्योपनिषदि भूतयज्ञस्य उपयोगितायाः महिमावर्णनमस्ति।

अतिथियज्ञ :- गृहमागतस्य अतिथेः सत्कारः अतिथियज्ञः। 'अतिथिदेवो भव' इति वेदवाक्यम्। अतिथिः सर्वदेवमयः प्रोक्तः। पञ्चमहायज्ञानुष्ठानं गृहस्थानां कृते अनिवार्यं कर्तव्यम्। यतो हि गृहस्थाश्रमः सर्वेषाम् आश्रमाणाम् आधारः। यः पञ्चमहायज्ञानुष्ठानं न करोति सः जीवने एव मृतः प्रोक्तः।

तदुक्तं च-

देवतातिथिभृत्यानां पितृणामात्मनश्च यः।
न निर्वपति पञ्चानामुच्छ्वसन्न स जीवति॥

गुरुमहिमा

वर्षा कुमारी
संस्कृत विशेष, तृतीय वर्ष

अस्माकं भारतीयसंस्कृतौ धर्मे चारम्भादेव गुरोः स्थानं सर्वश्रेष्ठं वर्तते। ब्रह्मणः कार्यं केवलं सृष्टिरचना परन्तु गुरोः कार्यं तु प्राणिनः कृते मनुष्यतायाः रूपप्रदानम्। अतः गुरोः स्थानं तु भगवतः अपि पूर्वमायाति। अस्मिन् विषये कबीरदासेन सम्यगेवाभिहितम्–

''गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काके लागूं पाए।
बलिहारी गुरु आपणे, गोविन्द दियो बताए॥''

अस्मिन् जगति यदि कश्चन दार्शनिकः वास्तविकरूपेण वर्तते चेद् गुरुरेव। यतो हि सम्पूर्णजगतः दर्शनं यः कारयति सः तु गुरुरेव। उक्तमपि–

''अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः॥''

गुरुशब्दस्य विषये यदा वयं गहनतया विचारयामः तदा गुरुशब्दस्य व्याख्या एतेन प्रकारेण क्रियते–

''गिरति अज्ञानान्धकारमिति गुरुः॥''

गुरुशब्दः अक्षरद्वयेन निष्पद्यते। गु तथा रु। गु इत्यस्य अर्थः अन्धकारः तथा रु इत्यस्य अर्थः निरोधकः। अतः अन्धकारं दूरीकृत्य प्रकाश प्रति यः नयति स गुरुः अर्थात् अज्ञानान्धकारस्य नाशं कृत्वा अस्मासु यः ज्ञानात्मकं दीपं प्रज्वालयति स एव गुरुः। गुरुशिष्ययोः सम्बन्धे तु सम्यक् एव अभिहितं कबीरदासेन–

"गुरु कुम्हार सिष कुम्भ है, गढ़ि गढ़ि काढ़े खोट।
भीतर हाथ सहार दे, बाहर बाहें चोट॥''

गुरोः अस्माकम् उपरि चरणच्छाया वर्तते चेत् तदैव अस्मिन् लोके परलोके च सुखं प्राप्तुं शक्नुमः। यदि गुरुः प्रसन्नः भगवान् स्वयम् अस्मासु प्रसन्नः। उक्तमपि भक्तिसन्दर्भे–

"यो मन्त्रः स गुरुः साक्षात् यो गुरुः स हरिः स्वयम्।
गुरुर्यस्य भवेत् तुष्टः तस्य तुष्टो हरिः स्वयम्॥''

गुरोः महिमा तु तस्य ज्ञानेन, शक्त्या च लक्ष्यते न तु शरीरेण, अतः गुरोः ज्ञाने तथा च शक्तौ अस्माकम् अनुरागः भवेत्। उक्तमपि आचार्यविनोवाभावेमहोदयेन– ''गुरु को हमने अगर देह रूप से जाना माना तो हमने गुरु से ज्ञान नहीं अज्ञान पाया।''

गुरोः निन्दा तु कुत्रापि कथञ्चित् अपि न सोढव्या न च श्रोतव्या। उक्तं च–

"गुरोर्यत्र परीवादो निन्दा वापि प्रवर्तते।
कर्णौ तत्र पिधातव्यौ गन्तव्यं वा ततोऽन्यतः॥

यदि कश्चन शिष्यः गुरोः निन्दां करोति तर्हि अग्रिमजन्मनि स निकृष्टयोनिं याति। उक्तं च–

"परिवादात्खरो भवति श्वा वै भवति निन्दकः।
परिभोक्ता कृमिर्भवति कीटो भवति मत्सरी॥''

गुरुः तु मनुष्यतायाः निर्माता।

''गुरु नहीं तो ज्ञान नहीं ज्ञान नहीं तो इन्सान नहीं॥''

अस्मात् भवसागरात् मुक्तेः साधनं किमपि वर्तते चेत् गुरोः चरणकमलच्छाया एव। उक्तं च–

"ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः पूजामूलं गुरोः पदम्।
मन्त्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरोः कृपा॥''

मनुस्मृतौ अपि उक्तम्–

"गुरुशुश्रूषया त्वेवं ब्रह्मलोकं समश्नुते।''

इति "श्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नमः।''

भगवदवतारस्य प्रयोजनम्

गौरव कुमार
संस्कृत विशेष, द्वितीय वर्ष

''यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदाऽऽत्मानं सृजाम्यहम्॥''

-(श्रीमद्भग. गीता- ४/७)

इति गीतावचनाद् वैदिकधर्मस्य ग्लानौ पाखण्डरूपस्य अधर्मस्योत्थाने च सति भगवान् आत्मानं सृजति। तत्रात्मानः सृष्ट्वा भगवान् किं किं साधयतीति जिज्ञासायां गीतायां स्वयम् एव आह-

''परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥''

-(श्रीमद्भग. गीता- ४/८)

एवं सुदेवप्रभृतीनां साधूनां रक्षणाय कंसप्रभृतीनां दुष्कृतां विनाशाय ''चोदनालक्षणोऽर्थो धर्मः-'' इति एतत् लक्षणलक्षितस्य धर्मस्य च संस्थापनाय श्रीभगवतः अवतारो जायते इति स्वमुखेनैव स्वावतारस्य प्रयोजनं भगवता प्रत्यपाद्यत, परन्तु परमहंसा भक्ता भगवदवतारस्य अन्यथैव प्रयोजनं प्रतिपादयन्ति। तथा च माता कुन्ती अमलात्मनां परमहंसानां महामुनीनां भक्तियोगविधानार्थं भगवतः अवतारस्य प्रयोजनं उक्तवती। तथा हि-

''तथा परमहंसानां मुनीनाममलात्मनाम्।
भक्तियोगविधानार्थं कथं पश्येम हि स्त्रियः॥''

-(श्रीमद्भागवत पुराण- १/८/२०)

अर्थात् येषां प्रत्यक्चैतन्याभिन्नविशुद्धब्रह्मणः अपरोक्षसाक्षात्कारो हि तस्य साक्षात्कारस्य भक्तियोगद्वारा सरसतां सुशोभां च रचयित्वा श्रीपरमहंसं विधातुं भवतः अवतारः अस्ति इति कृष्णम् उद्दिश्य कथयति, भवत् प्राप्तिं विना नैष्कर्म्यभावस्य शोभा नास्ति इति अत्र भागवतप्रमाणम्। तथा हि-

''नैष्कर्म्यमप्यच्युतभाववर्जितं, न शोभते ज्ञानमलं निरञ्जनम्।
कुतः पुनः शश्वदभद्रमीश्वरे, न चार्पितं कर्म यदप्यकारणम्॥''

-(श्रीमद्भागवत पुराण- १/५/१२)

रामायणे अपि तथैव तुलसीदासो भाषते यत्-

''रामप्रेम बिनु सोह न जाना'' इति।

एवं वेदान्तवेद्यः अदृश्यः अग्राह्यः परमात्मा अचिन्त्यदिव्यलीलाशक्त्या परममनोहरे सगुणे साकारे सच्चिदानन्दरूपे व्यक्तः सज्जनानाममलात्मनां परमहंसानां सेव्यमात्मानं रचयित्वा तेषां परं भक्तियोगं विदधाति। एवमेव भगवदवतारस्य बहूनि प्रयोजनानि सन्ति। तस्येयत्तां वर्णयितुं न कश्चन समर्थः। तथा चाह गोस्वामी तुलसीदासः यत्-

''हरि अवतार हेतु जेहि होई।
इदमित्थं कहि जाइ न सोई॥''

यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम्॥

श्रीमद्भगवद्गीता (१६।२३)

'जो वेद-शास्त्रविहित विधि को छोड़कर (कामना से प्रेरित होकर) मनमाना काम करते हैं, उनको न तो फल की सिद्धि होती है, न सुख मिलता है, न मोक्ष की ही प्राप्ति होती है।'

मम मनसः केचन भावाः

बोधानन्द झा
संस्कृत विशेष, द्वितीय वर्ष

- एकान्तं प्रेम्णा, तत् उत्पाद्यमानानां क्लेशानां मध्ये तस्मिन् परमैकान्ते आनन्दं कर्तु शिक्षन्तु।
- मौने बहु कोलाहलः भवति, यदा त्वं नेत्रे निमील्य तत् मौनं अन्तःकर्णेन शृणोषि तदा तव शरीरं तेन कोलाहलेन कम्पयिष्यति।
- आश्विनमासः समागममासः। वैशाखोदितानि तानि सर्वाणि अश्रूणि यदा अश्विनं मिलन्ति तदा ते शाश्वतं शान्तं पूर्णं च भवन्ति।
- अस्माकं आत्मा अस्मिन् एकस्मिन् शब्दे ''पिता'' निवसति, वयं अस्मिन् एव शब्दे विद्यते। अस्य शब्दस्य धारणं न सुकरं, ''पिता'' भवितुं न सुकरम्।

''रिक्त स्थानों के भीतर का शोर''

किन्ही के चले जाने के बाद उनका दुःख तो होता है ये सत्य है लेकिन वो दुःख समय के साथ कम हो जाता है, असल में उनके जाने के बाद जो रिक्त स्थान रह जाता है उसका दुःख, उसकी पीड़ा कभी खत्म नहीं होती, वो स्थान हर पल विलाप करता है। आप जब भी किसी रिक्त स्थान पे जाएंगे और एकांत में उसके साथ बैठेंगे तो अपको उसका रुदन प्रत्यक्ष सुनाई देगा!! उन रिक्त स्थानों की पीड़ा को शब्दों में बता पाना कठिन है!!

।। शून्य की स्थिति।।

शून्य को समझना थोड़ा सा कठिन है, शून्य इस भौतिक संसार से परे है, सारे संबंधों से परे है, शून्य पर किसी का कोई अधिकार नही है। शून्य एक स्थिति है जब कोई व्यक्ति अपने आप को सब कुछ से, सारे विषयों से परे कर लेता है और उस परम् एकांत में पूर्ण रूप से डूब जाता है तब उस क्षण को ''गहरा शून्य'' कहा जाता है। जहां कुछ नही होता है बस एक शांति होती है। और वो व्यक्ति जो इतने कष्टों को झेल कर उस एक ''तत्व'' की प्राप्ति के लिए पूर्ण रूप से विक्षिप्त होकर अपने आप को समर्पित कर देता है और जब उसे अपने ''तत्व'' की प्राप्ति हो जाती है तब वो व्यक्ति ''परमानंद'' की पराकष्ठा में विराजमान रहता है और उसके चक्षुओं से निरंतर ''परमानंद'' के ''अमृत'' समान अश्रु बहते रहते हैं और वो व्यक्ति सदा के लिए पूर्ण हो जाता है।

''यज्ञस्यार्थः''

कुमारी स्नेहा
संस्कृत विशेष, द्वितीय वर्ष

वैदिकधर्म प्रति आस्थायाः केन्द्रबिन्दुः यज्ञ एवासीत्। एतस्मादेव कारणादखिलवैदिकवाङ्मये यज्ञस्य अपरिमितो विस्तरः उपलभ्यते। यज्ञस्तु वस्तुतः विज्ञानमयं विधानं वर्तते।

"देवपूजासङ्गतिकरणदानाद्यर्थकाद् यज् धातोः नङ् प्रत्यये कृते 'यज्ञ' इति शब्दो निष्पद्यते। यज्ञस्य महत्त्वं भगवता श्रीकृष्णेन भगवद्गीतायामपि प्रतिपादितम्–

"अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः।
यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः॥

निरुक्तकारः यज्ञस्य स्वरूपं निरूपयन् कथयति–

यज्ञः कस्मात्? प्रख्यातं यजतिकर्मेति नैरुक्ताः। याच्ञो भवतीति वा बहुकृष्णाजिन इत्यौपमन्यवः यजूंष्येनं नयन्तीति वा। अयं तु यज्ञस्य वेदप्रतिपाद्योऽर्थः। यज्ञशब्दस्य कतिपयव्युत्पत्तिलभ्या अर्थाः एवं विधाः विद्वद्भिः स्वीक्रियन्ते–

(1.) येन सदनुष्ठानेन इन्द्रप्रभृतयो देवाः सुप्रसन्नाः सुवृष्टिं कुर्युस्तद् यज्ञपदाभिधेयम्।
(2.) येन सदनुष्ठानेन स्वर्गादिप्राप्तिः सुलभा स्यात् तद् यज्ञपदाभिधेयम्।
(3.) येन सदनुष्ठानेन सम्पूर्णं विश्वं कल्याणं भजेत् तद् यज्ञपदाभिधेयम्।
(4.) येन सदनुष्ठानेन आध्यात्मिक–आधिदैविक–आधिभौतिक तापत्रयोन्मूलनं सुकरं स्यात् तद् यज्ञपदाभिधेयम्।
(5.) मन्त्रैर्देवतामुद्दिश्य द्रव्यस्य दानं यागः।

देवपूजापक्षे तु इन्द्रादिदेवताम् उद्दिश्यद्रव्यत्यागो यागोऽभिधीयते। मत्स्यपुराणे यज्ञस्य लक्षणम् अस्य अङ्गान्याधृत्य प्रतिपाद्यते–

"देवानां देवहविषा ऋक्सामयजुषां तथा।
ऋत्विजां दक्षिणानां च संयोगो यज्ञ उच्यते।"

संङ्गतिकरणस्य कः आशयः? विश्वकल्याणाय मर्यादारक्षणाय च महापुरुषाणाम् एकत्र सम्मेलनमेव सङ्गतिकरणस्याशयः, अयमपि यज्ञपदस्यार्थः।

देशकालपात्रादिविचारपूर्वकं कृतो द्रव्योत्सर्गोऽपि दानपक्षे यज्ञपदस्यार्थः भवति। व्यक्तिगतविकासेन सह समाजस्य, राष्ट्रस्य किं बहुना विश्वस्य च कल्याणं यज्ञस्य वास्तविकोऽर्थः, अत एवोच्यते यज्ञो श्रेष्ठं कर्म। वैज्ञानिका अपीदं तथ्यं स्वीकुर्वन्ति यद् यज्ञेन न केवलं यजमानाः अपि तु यज्ञीयपरिसरस्य वायुमण्डलमपि विशुद्धं भवति। वैज्ञानिकेऽस्मिन् युगे भौतिकोन्नतिलिप्सायां सत्यां, विश्वशान्तेः, विश्वप्रेम्णः, विश्वधर्मस्य विश्वकल्याणादिकस्य च पूता भावना अनुदिनं क्षीयमाणा दरीदृश्यते। यदि मानवजातिः यज्ञविज्ञानं पुनराश्रयते अथ स्वीकरोति च तदैव तस्याः सर्वविधं कल्याणं सम्भविष्यतीति सुनिश्चितमेव।

कारुण्यं भवभूतिरेव तनुते

कुमारी पूजा
संस्कृत विशेष, द्वितीय वर्ष

भारतीयनाट्यशास्त्र-परम्परायां कः एतादृशः जनः येन आचार्यो भवभूतिः न ज्ञायते। कविरयं करुणरसनिस्यन्दने सर्वानपि कवीन् अतिशेते। विद्वद्भिरस्मै 'पदवाक्यप्रमाणज्ञः' इत्युपाधिरपि प्रदत्ता वर्तते। वेदेषूपनिषत्सु चान्येषु शास्त्रेष्वपि अस्य गतिः अव्याहतावलोक्यते अयं स्वयमेव समुद्घोषयति यद् वाग्देवी वश्येव तं समन्ववर्तत-

''यं ब्रह्माणमियं देवी वाग्वश्येवानुवर्तते''

करुणरसोद्रेकं विलोक्यैव कवेरेतस्य कृतिषु शास्त्रकारैः कृतानि बहूनि प्रशंसापराणि वचनानि अवलोक्यन्ते। तत्र 'आर्यासप्तशत्यां' श्रीगोवर्धनाचार्येण भवभूतेर्भारतीगौर्योपमीयते। अस्य कवेः कारुण्यं प्रेक्षं-प्रेक्षं ग्रावाणः अपि भृशं प्रलपन्ति-

"भवभूतेः सम्बन्धाद् भूधरभूरेव भारती भाति।
एतत्कृत-कारुण्ये किमन्यथा रोदिति ग्रावा॥"

अयं नूनमेव करुणरसप्रवाहे कालिदासमपि अतिरिच्यते।

किं कारुण्यमिति जिज्ञासायां करुणरसस्य प्रवाह एव कारुण्यमिति वक्तुं शक्यते। करुणरसदृष्ट्या यदि अस्य नाटकत्रयं परीक्ष्यते तर्हि 'उत्तररामचरितस्यैव' सर्वातिशायित्वमवगम्यते।

महाकविभवभूतिः सर्वेषां रसानां मूलं करुणरसम् एव अङ्गीकरोति। अतः तेन उक्तं तृतीयाङ्के-

"एको रसः करुण एव निमित्तभेदाद्, भिन्नः पृथक् पृथगिवाश्रयते विवर्तान्।
आवर्तबुद्बुतरङ्गमयान् विकारान्, अम्भो यथा सलिलमेव हि तत् समग्रम्॥''

संस्कृतवाङ्मये करुणरसाभिव्यक्तौ भवभूतेः तदेव विशिष्टं स्थानं वर्तते यत् शृङ्गारवर्णने महाकवेः कालिदासस्य नाटककाररूपेण। अनयोः द्वयोरेव प्रतिस्पर्द्धित्वं सर्वेषामपि विदितमेवास्ति।

भवभूतौ वैरदृष्ट्या साकं सूक्ष्म-अतिसूक्ष्म-अन्तरदृष्टिः अपि लभ्यते। आचार्यभवभूतेः कारुण्यप्लाविता रसधारा संसारस्य नश्वरतां प्रेक्षं-प्रेक्षं प्रसरति। प्रधानतया आचार्यो भवभूतिः सीतापरित्यागवृत्तान्तम् एव आश्रित्य स्वीयां करुणभावनां मूर्त्तरूपेण उपस्थापयति।

अयं कविः वनस्पतीनपि रोदयति, किं पुनःमानवान् छद्मप्रयोगेण रावणः यदा सीतामपहरत् तदा तद्वियोगविषण्णस्य रामस्यावस्थां विलोक्य ग्रावाणोऽपि निजां धीरतां मुञ्चन्त्येव वज्रस्यापि मानसं मार्दवं संश्रयते। तद् भवभूतेः पद्ये यथा–

''अथेदं रक्षोभिः कनकहरिणच्छद्मविधिना,
तथा वृत्तं पापैर्व्यथयति यथा क्षालितमपि।
जनस्थाने शून्ये विकलकरणैरार्यचरितै,
रपि ग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम्॥"

सीतापरित्यागसंतप्तस्य दाशरथेः तादृशी एवावस्था अजायत, यथा– पुटपाके कस्यचिद्धातोः। यथा–

"अनिर्भिन्नो गभीरत्वादन्तर्गूढघनव्यथः।
पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः॥"

रामस्य दुःखजामवस्थां कथमिव कविः सजीवत्वेन चित्रीकरोति। तस्य हृदयं शोकात् विदीर्यते परं द्वैधं न गच्छति, मोहमुपगतं चेतनतां न त्यजति, शोकेन देहः दह्यते परं च भस्मसात् भवितुं न क्षमते, धाता मर्मक्षतिं कुरुते किं च प्राणान् न अपनयति। तद्यथा–

"दलति हृदयं शोकोद्वेगाद् द्विधा तु न भिद्यते,
वहति विकलः कायो मोहं न मुञ्चति चेतनाम्।
ज्वलयति तनूमन्तर्दाहः करोति न भस्मसात्,
प्रहरति विधिर्मर्मच्छेदी न कृन्तति जीवितम्॥"

मर्यादापुरुषोत्तमः श्रीरामचन्द्रः प्रमत्तः एव लक्ष्यते तत्कृते समग्रमपि विश्वमन्धकारमयं प्रतीयते। मोहश्चेतनतां विस्तारयति हा किं वा शरणं का वा गतिः।

"हा हा देवि! स्फुटति हृदयं ध्वंसते देहबन्धः,
शून्यं मन्ये जगदविरलज्वालमन्तर्ज्वलामि।
सीदन्नन्धे तमसि विधुरो मज्जतीवान्तरात्मा,
विष्वङ्मोहः स्थगयति कथं मन्दभाग्यः करोमि॥''
अनेन प्रस्तुतभवभूतिगतवृत्तान्तेन इदमनुमीयते यत्–
"कारुण्यं भवभूतिरेव तनुते"

भारतीयदर्शनम्

शुभम सिंह
संस्कृत विशेष, द्वितीय वर्ष

दर्शनशब्दार्थ :- प्रेक्षणार्थकदृश् धातोः (दृशिर् प्रेक्षणे) ल्युट् प्रत्यये कृते दर्शनशब्दो निष्पद्यते। किं नाम दर्शनम्? दृश्यते अनेन इति दर्शनम्। येन साधनेन इदं विश्वम्, इदं वस्तुजातम्, ब्रह्म जीवात्मा प्रकृतिश्च यथार्थं दृश्यन्ते निरीक्ष्यन्ते परीक्ष्यन्ते समीक्ष्यन्ते विविच्यन्ते च तद् दर्शनम्। अतः समग्रमपि आध्यात्मिकम् आधिभौतिकं च विवेचनं दर्शनान्तर्गतं भवति। किं ब्रह्म? तस्य किं स्वरूपम्? कः ईश्वरः? के तस्य प्राप्तेरुपायाः? अस्मिन् जगति किं शाश्वतं तत्त्वम्? इयं सृष्टिः कुत आविर्बभूव? जीवात्मनः किं स्वरूपम्? कः पुनर्जायते? किं लिङ्गशरीरम्? जीवस्य कुतः उद्भूतिः? किं तस्य लक्ष्यम्? कथं मोक्षावाप्तिः? आत्मा चेतनोऽचेतनो वा? कः सृष्टेः कर्त्ता? किं जीवनस्य कर्तव्यम्? कश्च जीवनस्य साधिष्ठः पन्थाः इत्यादयोऽनुयोगा यत्र सुसूक्ष्मेण रूपेण विवच्यन्ते तद् दर्शनम् इत्यवगन्तव्यम्।

दर्शनानां वर्गीकरणम् -

भारतीयदर्शनानि स्थूलरूपेण द्विधा विभज्यन्ते-आस्तिकदर्शनानि, नास्तिकदर्शनानि च। यानि दर्शनानि वेदानां प्रामाण्यम् उरीकुर्वन्ति तानि आस्तिकदर्शनानि इति व्यपदिश्यन्ते। यानि च वेदानां प्रामाण्यं नोरीकुर्वते तानि नास्तिकदर्शनानि अभिधीयन्ते। चार्वाकजैनबौद्धदर्शनानि च नास्तिकदर्शनानि निर्दिश्यन्ते। विभाजनं चैतद् वेदानां प्रामाण्याप्रामाण्यमूलकमेवेति सम्यग् अवधारणीयम्।

दर्शनानां महत्त्वम् -

निखिलेऽपि भुवने पाश्चात्याः पौरस्त्याश्च विपश्चितो भारतीयदर्शनानां मुक्तकण्ठेन एकस्वरेण च महत्त्वं स्वीकुर्वन्ति। सत्यपि मतभेदे सत्यपि राष्ट्रियपक्षपाते, सत्यपि स्वोत्कर्षविचारे च भारतीयदर्शनानां महत्त्वविषये न कस्यापि विदुषो विप्रतिपत्तिः। विश्ववाङ्मये भारतीयदर्शनानि ज्ञानप्रभाभास्वरेण चिन्तनेन, स्वपरपक्षालोचननिपुणेन वैदुष्येण पूर्वाग्रहरहितेन, विश्लेषणेन, मनोज्ञया विवेचनशैल्या, हृदया भावाभिव्यक्त्या, रुचिरया पदावल्या च तरणिवत् तेजः समुच्चयेन चकासति।

प्राचीन काल में ऋषियों का संस्कृत में अतुलनीय योगदान एवं आधुनिक युग में संस्कृत का महत्व

गोलू कुमार
संस्कृत विशेष, तृतीय वर्ष

1. बौधायन शुल्बसूत्र (पाइथागोरस प्रमेय) (गणित क्षेत्र)-

वैदिक संस्कृत ग्रंथों का एक समूह है, जिसमें से बौधायन सूत्र के छह ग्रंथ हैं -

(1) बौधायन श्रौतसूत्र
(2) बौधायन कर्मान्तसूत्र
(3) बौधायन द्वैधसूत्र
(4) बौधायन गृह्यसूत्र
(5) बौधायन धर्मसूत्र
(6) बौधायन शुल्बसूत्र

बौधायन के छह ग्रंथों में से एक शुल्बसूत्र जिसमें पाइथागोरस प्रमेय का वर्णन मिलता है। ज्यामिति के विषय में प्रामाणिक मानते हुए सारे विश्व में यूक्लिड की ही ज्यामिति पढ़ाई जाती है मगर यह स्मरण रखना चाहिए कि महान यूनानी ज्यामिति शास्त्री यूक्लिड से पूर्व भारत में कई रेखागणितज्ञ ज्यामिति के महत्वपूर्ण नियमों की खोज कर चुके थे उन रेखागणितज्ञ में बौधायन का नाम सर्वोपरि है उस समय भारत में रेखागणित या ज्यामिति को शुल्बसूत्र भी कहा जाता है

(पाइथागोरस प्रमेय) -

बौधायन -

1. दीर्घस्याक्षणया रज्जुः पार्श्वमानी तिर्यकं मानी च।
   यत्पृथग्भूते कुरुतस्तदुभयांकरोति।।

   एक आयत का विकर्ण उतना ही क्षेत्र इकट्ठा बनाता है जितने कि उसकी लम्बाई और चौड़ाई अलग-अलग बनाती हैं।

2. चतुरश्रं मण्डलं चिकीर्षन्नक्ष्णयार्ध मध्यात्प्राचीमभ्यापातयेत्। यदतिशिष्यते तस्य सह तृतीयेन मण्डलं परिलिखेत् वर्ग के विकर्ण का आधा करो। यह वर्ग की भुजा से x बड़ा होगा जहाँ (x=a\2√2-a/2)

3. समस्य द्विकरणी प्रमाणं तृतीयेन वर्धयेत्तच्च चतुर्थेनात्मचतुस्त्रिंशोनेन सविशेषः।

वर्ग का विकर्ण (द्विकरणी)। (भुजा के) प्रमाण में उसके तिहाई भाग और फिर चौथाई भाग जोड़ दें, उसमें से इसके चौतीसवें भाग को घटा दें। अर्थात् विकर्ण का मान लगभग- √2~1+1/3+1/3.4-1@3.4.34= 577/408~414216

2. चरक संहिता (आयुर्वेद) (चिकित्सा क्षेत्र)

पुरातत्ववेत्ताओं के अनुसार संसार की प्राचीनतम पुस्तक ऋग्वेद है। विभिन्न विद्वानों ने इसका रचना काल ईसा के 3,000 से 50,000 वर्ष पूर्व तक का माना है। ऋग्वेद-संहिता में भी आयुर्वेद के अतिमहत्त्व के सिद्धान्त यत्र-तत्र विकीर्ण है। चरक, सुश्रुत, काश्यप आदि मान्य ग्रन्थ आयुर्वेद को अथर्ववेद का उपवेद मानते हैं। इससे आयुर्वेद की प्राचीनता सिद्ध होती है।

(प्रयोजनं चास्य स्वस्थस्य स्वास्थ्यरक्षणं आतुरस्यविकारप्रशमनं च।।) (चरकसंहिता, सूत्रस्थान ३०/२६)

आयुर्वेद का उद्देश्य ही स्वस्थ प्राणी के स्वास्थ्य की रक्षा तथा रोगी के रोग को दूर करना है।

1. कायचिकित्सा -

कायचिकित्सानाम् सर्वांगसंश्रितानां व्याधीनां ज्वररक्तपित्त-शोषोन्मादापस्मारकुष्ठमेहातिसारादीनामुपशमनार्थश्म्। (सुश्रुत संहिता १.३)

इसमें सामान्य रूप से औषधिप्रयोग द्वारा चिकित्सा की जाती है। प्रधानतः ज्वर, रक्तपित्त, शोष, उन्माद, अपस्मार, कुष्ठ, प्रमेह, अतिसार आदि रोगों की चिकित्सा इसके अंतर्गत आती है।

2. शल्यतन्त्र -

शल्यं नाम विविधतृणकाष्ठपाषाणपांशुलोहलोष्ठस्थिवालनखपूयास्रावद्रष्ट्व्राणां-तर्गर्भशल्योद्धरणार्थं यंत्रशस्त्रक्षाराग्निप्रणिधान्व्राण विनिश्चयार्थंच। (सु.सू. १.१)।

विविध प्रकार के शल्यों को निकालने की विधि एवं अग्नि, क्षार, यंत्र, शस्त्र आदि के प्रयोग द्वारा संपादित चिकित्सा को शल्य चिकित्सा कहते हैं। किसी व्रण में से तृण के हिस्से, लकड़ी के टुकड़े, पत्थर के टुकड़े, धूल, लोहे के खंड, हड्डी, बाल, नाखून, शल्य, अशुद्ध रक्त, पूय, मृतभ्रूण आदि को निकालना तथा यंत्रों एवं शस्त्रों के प्रयोग एवं व्रणों के निदान, तथा उसकी चिकित्सा आदि का समावेश शल्ययंत्र के अंतर्गत किया गया है।

3. शालाक्यतन्त्र -

शालाक्यं नामऊर्ध्वजन्तुगतानां श्रवणनयनवदनघ्राणादिसंश्रितानां व्याधीनामुपशमनार्थम्।

(सु.सू. १.२)।

गले के ऊपर के अंगों की चिकित्सा में बहुधा 'शलाका' सदृश यंत्रों एवं शस्त्रों का प्रयोग होने से इसे शालाक्यतंत्र कहते हैं। इसके अंतर्गत प्रधानतः मुख, नासिका, नेत्र, कर्ण आदि अंगों में उत्पन्न व्याधियों की चिकित्सा आती है।

3. चाणक्य (अर्थशास्त्र) राजनीति, कूटनीति क्षेत्र

चाणक्य द्वारा रचित अर्थशास्त्र नामक ग्रन्थ राजनीति, अर्थनीति, कृषि, समाजनीति आदि का महान ग्रंन्थ है। अर्थशास्त्र मौर्यकालीन भारतीय समाज का दर्पण माना जाता है।

'कौटिल्य अर्थशास्त्र' में ऐसी चर्चाओं को देखकर ही मुद्राराक्षसकार कवि विशाखादत्त चाणक्य को कुटिलमति (कौटिल्यः कुटिलमतिः) कहा है ।

यह ठीक है कि कौटिल्य ने शत्रुनाश के लिए अनैतिक उपायों के करने का भी उपदेश दिया है। परन्तु इस सम्बन्ध में अर्थशास्त्र के निम्न वचन को नहीं भूलना चाहिए एवं दूष्येषु अधार्मिकेषु वर्तेत, न इतरेषु। (5/2)

अर्थात्- इन कूटनीति के उपायों का व्यवहार केवल अधार्मिक एवं दुष्ट लोगों के साथ ही करे, धार्मिक लोगों के साथ नहीं। (धर्मयुद्ध में भी अधार्मिक व्यवहार सर्वथा वर्जित था। केवल कूट-युद्ध में अधार्मिक शत्रु को नष्ट करने के लिए इसका प्रयोग किया जा सकता था।)

4. नाट्यशास्त्र (भरत मुनि) (संगीत,नाटक, अभिनय, नृत्य इत्यादि क्षेत्र)

नाट्य (नाटक और नृत्य) को पाँचवाँ वैदिक शास्त्र होने दें। सद्गुण, धन, आनंद और आध्यात्मिक स्वतंत्रता की ओर उन्मुख एक महाकाव्य कहानी के साथ , इसमें हर शास्त्र का महत्व होना चाहिए, और हर कला को आगे बढ़ाना चाहिए।

नाट्यशास्त्रमिदं रम्यं मृगवक्त्रं जटाधरम्।
अक्षसूत्रं त्रिशूलं च विभ्राणा च त्रिलोचनम्।

नाट्य संबंधी नियमों की संहिता का नाम 'नाट्यशास्त्र' है। भारतीय परंपरा के अनुसार नाट्यशास्त्र के आद्य रचयिता स्वयं प्रजापति माने गए हैं और उसे 'नाट्यवेद' कहकर नाट्यकला को विशिष्ट सम्मान प्रदान किया गया है।

ऋषियों का योगदान	**आधुनिक काल उपयोग**
1. नाट्यशास्त्र -	फिल्म इंडस्ट्री में
2. अर्थशास्त्र -	भारतीय अर्थव्यवस्था में एवं कूटनीति एवं राजनीति इत्यादि क्षेत्र में

3. शुल्बसूत्र – गणित के क्षेत्र में
4. आयुर्वेद – चिकित्सा के क्षेत्र में

सन्दर्भ – बौधायन का शुल्बसूत्र, आयुर्वेद, अर्थशास्त्र नाट्यशास्त्र सभी उपयोग प्राचीन काल में ऋषियों द्वारा किये जाते थे लेकिन इन ऋषियों ने अपना श्रेय कभी नहीं लिया जिसके चलते उन्हें कुछ ही लोग जान पाये थे।

1835 में मैकाले शिक्षा पद्धति आने के बाद हमारी प्राच्य शिक्षा पद्धति को समाप्त कर दिया गया। टीबी मैकाले प्राच्य शिक्षा का घोर विरोधी था और प्राच्य शिक्षा के बारे में उसका कथन था कि "एक अच्छे यूरोपीय पुस्तकालय का केवल एक शेल्फ ही भारत और अरब के समूचे साहित्य के बराबर है।" वर्तमान समय में कुछ-कुछ परिवर्तन देखने को मिलता है लेकिन भारत में लम्बे समय तक मैकाले शिक्षा होने से उसका प्रभाव आज भी देखने को मिलता है।

हिंदी

खण्ड

संपादकीय

डॉ. चैनसिंह मीणा
हिंदी विभाग

डॉ. संदीप कुमार रंजन
हिंदी विभाग

पिछले कुछ वर्षों के विपरीत परिस्थितियों से निकलकर मानवीय समाज पुनः अपनी समग्रता में लौटा है। उल्लेखनीय है कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को कोरोना वायरस ने व्यापकता से प्रभावित किया। शिक्षण कार्य भी इस कोरोनाकालीन अवधि में बहुत अधिक प्रभावित हुआ। लेकिन विषम परिस्थितियों में बुरे अनुभवों के बीच जीवन की सार्थकता का आभास सभी को हुआ। प्राकृतिक संरक्षण और आपदा प्रबंधन की दिशा में पर्याप्त चिंतन-मनन हुआ। समाज सामूहिक जागरूकता की दिशा में आगे बढ़ा। प्रौढ़ पीढ़ी के साथ युवा पीढ़ी ने अपनी सक्रियता से मानवता के समक्ष उपस्थित संकट को दूर किया।

आज तकनीकी विकास ने असंभव को संभव किया है। अब मनुष्य आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के दौर में प्रवेश कर रहा है। इसकी संभावनाओं और चुनौतियों पर ध्यान केंद्रित करना होगा। भारत इस बार जी-20 की अध्यक्षता कर रहा है। निरंतर मजबूत होती अर्थव्यवस्था के चलते भारत आने वाले समय में समूचे विश्व के लिए आकर्षण का केंद्र रहेगा। युवा शक्ति भारत देश को और समृद्ध करेगी।

पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'अंकुर' (सत्र 2022-2023) का प्रकाशन अत्यंत हर्ष का विषय है। वस्तुतः यह पत्रिका वार्षिक गतितिविधियों के रूप में महाविद्यालय का दर्पण है। महाविद्यालय के सभी अनुशासनों से जुड़े प्राध्यापक और विद्यार्थी इस पत्रिका के माध्यम से निरंतर रचनात्मकता को विस्तार दे रहे हैं। जीवन-जगत से जुड़ी तमाम गतिविधियों को मौलिक रचनाओं के माध्यम से व्यापक धरातल पर चित्रित किया जा रहा है। यह अंक वैविध्यपूर्ण है। इस अंक में गद्य खण्ड के अंतर्गत एक तरफ वर्तमान सामाजिक मूल्यों की पड़ताल की गई है, तो दूसरी तरफ भक्त कवियों की सांस्कृतिक चेतना की। एक तरफ स्वातंत्रयोत्तर भारत के राजनीतिक परिदृश्य पर विचार किया गया है, तो दूसरी तरफ वर्तमान में युवाओं की भूमिका पर। पद्य खण्ड के अंतर्गत कविताओं द्वारा माता, पिता, बेटी, देश-प्रेम, कर्तव्य बोध एवं हिंदी भाषा आदि की सुंदर अभिव्यक्ति हुई है। आपके समक्ष 'अंकुर' का यह अंक प्रस्तुत है। सभी को हार्दिक बधाई!

गद्य खण्ड

वर्तमान सामाजिक परिदृश्य : संस्कृति के सरोकार

डॉ. इन्दु दत्ता
हिंदी विभाग

समकालीन समाज का रूप, आज का समाज, आज के समाज का वास्तविक रूप इत्यादि एक ही विषय हैं जो पर्यायवाची हैं – वर्तमान सामाजिक परिदृश्य के। 'समाज' से अभिप्राय है सामुदायिक जीवन की ऐसी अनवरत और नियामक व्यवस्था जिसका निर्माण व्यक्ति पारस्परिक हित और सुरक्षा के निमित्त जाने-अनजाने कर लेता है। दूसरे शब्दों में कहें तो 'समाज' व्यक्ति समूह से निर्मित, विशिष्ट उद्देश्य से बनाई गई संस्था है जिसका उद्देश्य व्यक्ति समाज की रक्षा है। यह उद्देश्य व्यक्तिपरक न होकर आवश्यक रूप से सार्वजनिक होता है। 'समाज' का उत्तरदायित्व है कि वह अपने बीच रहने वाले व्यक्तियों के मध्य पारस्परिक सहयोग का भाव विकसित करे ताकि उनमें एकता, शांति व सौहार्द्र स्थापित हो सके। शताब्दियों पहले 'समाज' के निर्माण के पीछे इसी प्रकार की भावना कार्यरत थी परंतु तब से अब तक 'समाज' की अवधारणा में अत्यधिक परिवर्तन आ चुका है जिसे मैं आगे बताने का प्रयास करूँगी। आज विश्व में विशिष्ट समुदाय या राष्ट्र मात्र ही 'समाज' की संज्ञा से अभिहित नहीं होते बल्कि वर्तमान परिस्थितियों में संपूर्ण विश्व ही 'समाज' का रूप धारण करता जा रहा है। 'समाज' की थोड़ी-सी परिभाषा जानने के बाद जरा संस्कृति को भी जान लें।

चूँकि व्यक्ति-समूह से समाज की निर्मिति होती है तो व्यक्ति सृष्टि का सर्वोत्तम प्राणी है। मानवेतर प्राणी आज भी रहन-सहन निवास, खान-पान आदि के संबंध में अभी अपनी आदिम अवस्था में ही है। मनुष्य ने अपने जीवन को आदिम अवस्था से विकसित कर आज के रूप तक लाने में बुद्धि, बल व अनथक प्रयत्नों का सहारा लिया जिसमें वह सफल भी हुआ। इसी विकसित जीवन पद्धति से संस्कृति का संबंध मोटे रूप से कहा जा सकता है।

'संस्कृति' शब्द 'कृ' धातु में 'सम्' उपसर्ग और 'क्तिन्' प्रत्यय जोड़कर 'सुट्' के आगम से निष्पन्न हुआ है जिसका अर्थ है परिष्करण या परिमार्जित करने का भाव। मोनियर विलियम्स ने 'संस्कृति' शब्द का अर्थ बताया है – ''तैयार करना'' संस्कार द्वारा पवित्र करना, रचना या प्रयत्न द्वारा कार्य की सम्पन्नता।''[1] संस्कार का अर्थ है- ''शुद्धि की धार्मिक क्रियाओं तथा व्यक्ति के दैहिकमानसिक व बौद्धिक परिष्कार हेतु किए जाने वाले अनुष्ठान जिनसे वह समाज का पूर्ण विकसित सदस्य बन सके।''[2] डॉ. मंगलदेव शास्त्री ने 'छांदोग्य उपनिषद्' से अंश उद्धृत करते हुए उसमें संस्कृति के विषय में कहा है- ''समस्त सामाजिक जीवन की समाप्ति संस्कृति में ही होती है। विभिन्न सभ्यताओं का उत्कर्ष तथा अपकर्ष संस्कृति द्वारा ही मापा जाता है।''[3] अतः कहा जा सकता है कि 'संस्कृति' शब्द का प्रयोग प्राचीन समय से होता रहा है पर इसमें वर्तमान संस्कृति के अर्थ की छाया भी है। यह भी सर्वविदित है कि हिंदी में यह 'कल्चर' का पर्याय रूप है।

संस्कृति का स्रोत आत्मिक चिंतन ही है जो मनुष्य के सामाजिक आचार-विचार, पर्व-त्यौहार, रीति-रिवाज, धर्म-नीति, अध्यात्म-कला आदि के माध्यम से प्रकट होता है। शंभुनाथ पांडे मानते हैं कि- ''संस्कृति का संबंध निर्दिष्ट समाज के विशिष्ट आचार-विचार, क्रियाकलाप तथा अनुचिंतन के साथ होता है जो मानवता के विकास के लिए मार्ग प्रशस्त करते हैं तथा प्रत्येक समाज का चिंतन भिन्न होता है। संस्कृति का मानव जीवन पर गहरा प्रभाव रहता है क्योंकि संस्कृति मानवता को असत्य से सत्य की ओर, अंधकार से ज्योति की ओर, अनैतिकता से नैतिकता की ओर अग्रसित करती है।''

समाज के रीति-रिवाजों व नियमों में ही मानव-जीवन का रहस्य निहित है। अत: अपने समाज को भली-भाँति समझ कर हम सरलतापूर्वक किसी भी काल की सभ्यता, संस्कृति, रहन-सहन, वेशभूषा, खान-पान आदि के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। भारतीय समाज बहुत पुराना व जटिल है। 5000 वर्ष पूर्व की ज्ञात सभ्यता से आज तक एक लंबी अवधि इस समाज में समाहित है। इसकी विविधता, जीवंतता व समृद्धि में इसकी मिली-जुली संस्कृति का भी योगदान है।

मूल्यों का निर्माण समाज या सामाजिक चेतना से संबद्ध है। मूल्य समाज के सामूहिक प्रयत्नों का परिणाम होते हैं जिन्हें समय-समय पर व्यष्टिहित से ऊपर उठकर समष्टिहित के लिए परिकल्पित करते रहते हैं। अत: सामाजिक मूल्य व्यक्तिगत प्रयास से उत्पन्न होकर भी समूह के हित के लिए होते हैं। मूल्यों का विकास मनुष्य ने परिश्रम से किया है। सत्य, अहिंसा, सहानुभूति आदि मूल्य उसे यदि परंपरागत समाज से प्राप्त हैं तो भी जीवन में उनकी परिणति प्रयत्न द्वारा ही संभव है। इन मूल्यों में प्रथम है - सांस्कृतिक मूल्य। ''सांस्कृतिक मूल्य समाज के भौतिक, भावात्मक तथा कलात्मक क्षेत्रों की वे उपलब्धियाँ हैं जो समस्त समाज तथा कई पीढ़ियों के सामहिक प्रयत्न का परिणाम होते हैं।''[4] अत: कह सकते हैं कि सांस्कृतिक मूल्य ऐसी मान्यताएँ हैं जो व्यक्ति तथा समूह के मंगल के लिए अनिवार्य होती हैं। सांस्कृतिक मूल्यों में धार्मिक-दार्शनिक मूल्य, ईश्वर, इहलोकवाद, भाग्यवाद, निष्काम कर्म, अहिंसा, सहिष्णुता व समन्वय, मोक्ष या निर्वाण आते हैं। सामाजिक-नैतिक मूल्यों में मर्यादा, पारिवारिक सौहार्द्र, प्रणय, नारी गरिमा, परहित, व्यक्ति व समाज का सामंजस्यपूर्ण संबंध इत्यादि आते हैं। राजनीतिक मूल्यों में शासन व्यवस्था, राजा-प्रजा के संबंध, शासक व शासित के दायित्व अधिकारों से संबद्ध पक्ष आते हैं। इसके अंतर्गत राजतंत्र, राष्ट्रवाद, जनहित, न्यायशक्ति इत्यादि आते हैं। आर्थिक मूल्यों में समृद्धि, श्रम, गरिमा आदि आते हैं। कला मूल्यों में रस, शिवम्, ईमानदारी, प्रयोगधर्मिता इत्यादि हैं। वर्तमान समाज के परिदृश्य में यह मूल्य आज अपने परिवर्तित तथा विकसित रूप में दृष्टिगत होते हैं।

सामाजिक मूल्यों से संबद्ध होकर वर्गों तथा मनुष्यों के पारस्परिक संबंध और इनके समस्त व्यवहार सामान्य रूप से स्वीकृत होकर संस्कृति का रूप खड़ा करते हैं। संस्कृति का अर्थ सर्जनात्मक अभिव्यक्ति भी है। व्यक्ति बाह्य-भौतिक जीवन तथा आंतरिक-मानसिक जीवन, दोनों दृष्टियों से सर्जनात्मकता में लीन रहता है। चूँकि संस्कृति का अर्थ परिपक्वता भी है अर्थात् नैतिक, बौद्धिक परिपक्वता व्यक्ति को नीतिसंगत निर्णय लेने व तद्नुसार आचरण के लिए प्रेरित करती है। ऐसा व्यक्ति दया, उदारता, सेवा आदि सद्गुणों को अपनाते हुए ऋषि, महात्मा या संत आदि कहलाता है। वह दुर्व्यसनों तथा दुर्व्यहारों से दूर रहता है।

संस्कृति जीवन से भागने का नहीं बल्कि समाज व जीवन से मानव को जोड़ने का प्रयास है। संस्कृति में समाज कल्याण व आध्यात्मिक जीवन की प्रगति की भावना सन्निहित रहती है। समाज विशेष की संस्कृति को सामाजिक आचार-विचार, गीत-संगीत, नृत्य, कला, साहित्य, रीति-रिवाज, व्रत, नीति धर्म, अध्यात्म आदि के माध्यम से सहज ही जाना जा सकता है। भारतीय संस्कृति का मूल बिंदु 'अध्यात्म' है जिसमें आत्मा को परमात्मा का अंश माना जाता है व हर कार्य करने से पहले 'परमात्मा की पूजा' की जाती है। इसमें धर्म से रहित कोई कार्य नहीं होता। हमारी संस्कृति में चार वर्गों की कल्पना की गई है - 'धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष'। 'कर्म' को हमारी संस्कृति में अत्यधिक महत्त्व दिया गया है। महाभारत में भी कहा गया है - ''कर्मण्येवाधि कारस्ते मा फलेषु कदाचन...।'' हमारे यहाँ संकीर्णता का स्थान नहीं है। स्वयं कष्ट उठाकर 'दूसरों की सहायता' करने पर बल दिया गया है। यह भावना केवल अपने परिवार, समाज, देश तक सीमित नहीं है बल्कि विश्व के सभी पशु-पक्षियों व मनुष्यों के लिए भी है। 'अतिथिदेवोभव' की भावना भी है। 'गुरु, माता-पिता के प्रति अनन्य भक्ति' का भाव मिलता है। 'मित्र के प्रति आस्था' भी मिलती है।

भारतीय संस्कृति का मुख्य तत्व रहा है 'अहिंसा'। हमारे यहाँ 'मनसा, वाचा, कर्मणा' से अहिंसा पर बल है। 'सहिष्णुता' पर बल दिया गया है। 'संयम' पर विशेष जोर है उच्छृंखलता पर नहीं। 'मितभाषिता' तथा 'मौन' का सूत्र भी यहीं मिलता है। क्रोध के लिए हमारी संस्कृति में कोई स्थान नहीं बल्कि 'क्षमा' की प्रतिष्ठा है। जो क्षमा करे वही उत्तम विद्वान है। हमारे यहाँ 'दान' की महिमा रही है। विद्या दान, गोदान, कन्या दान परलोकहित के साधन माने गए हैं। इन सबके अतिरिक्त कम में ही संतोषी हो जाना, बड़ों की सेवा व सम्मान करना,ग्रहण के स्थान पर त्याग को महत्त्व देना, कृतज्ञता ज्ञापन करना इत्यादि को भी पूरा-पूरा महत्त्व दिया गया है। इन सबके अतिरिक्त रेडियो, सिनेमा, टेलीविजन व इंटरनेट इत्यादि में भी भारतीय संस्कृति का अच्छा-बुरा रूप देखा जा सकता है।

'भूमंडलीकरण' का सीधा संबंध संस्कृति से जुड़ा है। सामाजिक, आर्थिक, राष्ट्रीय, सांस्कृतिक, धार्मिक इत्यादि मुद्दे भूमंडलीकरण से प्रभावित हुए हैं। व्यक्ति के स्तर पर भी भूमंडलीकरण ने पूरे विश्व को प्रभावित किया है। विश्व में खासतौर पर यूरोप में नारी को प्राप्त स्वतंत्रता व स्वावलंबन भारतीय नारी को प्रभावित करता है। आर्थिक व वैयक्तिक आजादी के लिए वह आज भी संघर्ष करती है। संयुक्त परिवार को भी भूमंडलीकरण से पूरी तरह नुकसान पहुँचा है। इसकी वजह से हमारे भारतीय समाज के मूल्यों का पतन हुआ। यह पतन जिस सीमा तक वर्तमान समय में हो रहा है उसके बारे में हमारे पूर्वजों ने भी नहीं सोचा होगा। उसमें चाहे नैतिक मूल्य हो, परिवार का बिखराव हो, भाई-बहन, संतान व माता-पिता के रिश्तों में दूरी हो, स्त्री-पुरुष संबंधों में तनाव हो, उनके संबंध-विच्छेद हों, युवा-वर्ग का देश व समाज के प्रति अलगाव और भटकाव हो या फिर परायेपन की भावना इत्यादि हो इन सबके माध्यम से भूमंडलीकरण का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है।

भूमंडलीकरण न केवल बाहरी प्रभाव को देश के स्तर पर ला रहा है वरन् भारतीय प्रभावों को भी विदेश ले जा रहा है। सांस्कृतिक धरातल पर भी पाश्चात्य प्रभाव निरंतर देखा जा सकता है। नग्नता, हिंसा आदि प्रवृत्तियों को प्रश्रय मिल रहा है। आर्थिक धरातल पर अमीर और अमीर तथा गरीब और गरीब होते जा रहे हैं। टेलीफोन,

मोबाईल, इंटरनेट इत्यादि के क्षेत्र में विकास के साथ-साथ नुकसान भी बहुत हुआ है। युवाओं पर काफी बुरा प्रभाव मल्टीमीडिया, मासमीडिया आदि के कारण पड़ा है। व्यवसाय पर भी इसका प्रभाव पड़ा। चाईनीज सामान का प्रभाव बड़े तबके पर पड़ा है। व्यापारों में ही नहीं मानव भी अपने निजी जीवन में मशीनी उपकरणों के प्रयोग से बचा नहीं रह पाया। इन सबके अलावा भूमंडलीकरण से अश्लीलता का रूप भी सामने आया है। आज के युवा वर्ग का परिधान इसका स्पष्ट उदाहरण है।

प्रसिद्ध विद्वान सी.एम. जोड़ ने लिखा है - ''जब मैं पैदा हुआ था तब मेरे देश में घर थे। अब जबकि मैं बूढ़ा होकर मर रहा हूँ तो मेरे देश में घर जैसी कोई चीज नहीं है। यदि है तो केवल मकान।'' बदलती सामाजिक तस्वीर से वे वृद्धावस्था में कितना दुखी थे, उनकी इस वेदना को उनका उपरोक्त कथन स्पष्टतः परिलक्षित करता है। आज भौतिक संस्कृति की चकाचौंध ने समाज को बुरी तरह प्रभावित किया है। फलस्वरूप 'दिखावे की संस्कृति' की पदचाप साफ-साफ सुनाई देने लगी है। आज जो वर्तमान पीढ़ी आँख बंद करके पाश्चात्य सभ्यता को अपनाने की होड़ में लगी है ऐसे में हमारा कर्तव्य है कि भारतीय संस्कृति के सामाजिक परिवेश को अक्षुण्ण बनाने में हम गंभीर प्रयास करें। आज आवश्यकता है वर्तमान समाज में मूल्यों पर बल देने की। मूल्यों के प्रति चेतना जाग्रत करने की। पाश्चात्य संस्कृति के दुष्प्रभावों से समाज की रक्षा करने की। भारतीय संस्कृति का पोषण करते हुए उसे अक्षुण्ण बनाए रखना प्रत्येक भारतवासी का कर्तव्य है क्योंकि संस्कृति ने हमें मानवता सिखाई है। सहिष्णुता, करुणा भाव, परोपकार इत्यादि भावों को गंभीर रूप से अंगीकार करने की आवश्यकता है तभी भारतीय संस्कृति विश्व पटल पर उच्चतम शिखर तक पहुँचने में कामयाब होगी।

अंत में भवानी प्रसाद मिश्र द्वारा रचित ऐतिहासिक खंडकाव्य 'कालजयी' की पंक्तियों से प्रस्तुत वाचन समाप्त करुँगी -

''बंधन हैं दुःख, सुख भी बंधन हैं
ये तट हैं जिनमें बहना पड़ता है,
जब तक सागर मिल जाए न धारा को,
तब तक अन्वेषण हैं,
हों एक छोर पर गति, दूसरे पर शांति,
व्याकुल अब इसके लिए प्राण-मन है।''

1 सर मोनियर विलियम्स, संस्कृत इंग्लिश डिक्शनरी, पृष्ठ - 1120-21
2 डॉ. राजबलि पांडेय, हिन्दू संस्कार, पृष्ठ - 19
3 डॉ. मंगलदेव शास्त्री, वैदिक धारा, पृष्ठ - 3-4
4 जी. आर. जाकायन, परिशोध, संपादक - इंद्रनाथ मदान, पृष्ठ - 22

मणिपुर यात्रा : अनुभवों से अनुभूति का सफर

डॉ. प्रकाश
हिंदी विभाग

यात्राएँ जीवनानुभव का महत्त्वपूर्ण हिस्सा होती हैं। जब आप किसी यात्रा पर होते हैं तो सिर्फ एक स्थान से दूसरे स्थान की दूरी भर तय नहीं कर रहे होते बल्कि जीवनानुभवों में बहुत कुछ जोड़ रहे होते हैं। इसी क्रम में यात्राएँ आपको समृद्ध करती जाती हैं। दुनिया के कई रहस्य यात्राओं से ही सुलझे और बहुत कुछ अनजाना यात्राओं से ही जाना गया। उन यात्राओं का अनुभव ही अलहदा होता है जहाँ आप बिना किसी योजना के चल पड़ते हैं। ऐसी यात्राएँ आपको वह अनुभव देती हैं जो और कहीं से नहीं मिल सकता है। ऐसी ही एक यात्रा पर आपको ले चलता हूँ। यह यात्रा भारत के उस हिस्से की है जिसको लेकर शेष भारत के लोगों की समझ अखबारों और अफवाहों से बनी है। अखबारों और अफवाहों में जो वहाँ का चित्रण है उसमें हिंसा, अलगाव है जबकि यह वहाँ की असल तस्वीर नहीं है। भारत का यह खूबसूरत हिस्सा अपनी संस्कृति, भाषा और प्राकृतिक सौंदर्य का अद्‌भुत केंद्र है। इसकी एक बड़ी पहचान सांस्कृतिक विविधता और सामुदायिक चेतना है। इसको समझे और महसूस किए बिना आप भारत के इस हिस्से को नहीं समझ सकते हैं। हिंदी पट्टी के पास इस हिस्से कीजो भी समझ है वह राजनैतिक पाठ के रूप में है। वह पाठ भी आधा-अधूरा ही है। यहाँ की संस्कृति, भाषा, रहन-सहन, खान-पान, जीवनचर्या, रीति-रिवाज, तीज-त्योहार आदि को लेकर कोई ठीक-ठीक समझ भी देखने को नहीं मिलती है। लोग इस सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक सौन्दर्य के अद्‌भुत केंद्र से अनभिज्ञ हैं। पर्यटन के लिए इधर का रुख कम ही लोग करते हैं। उसका कारण अज्ञानता, अफवाह और अखबारी समझ ही है। इससे बाहर निकलने के लिए यात्रा जरूरी है तभी आप भारत के इस रमणीय हिस्से पूर्वोत्तर को जान व समझ सकते हैं। इस यात्रा से पहले आपके यात्री की समझ भी नॉर्थ-ईस्ट को लेकर अखबारों की कतरन- और दिल्ली में पढ़ाई करने आने वाले नॉर्थ-ईस्ट के बच्चों के मार्फत ही बनी थी। उसमें सकारात्मक से ज्यादा नकारात्मक धारणा ही प्रबल थी लेकिन नॉर्थ-ईस्ट हमेशा मेरी रुचि का क्षेत्र रहा। उसे और गहरे से जानने व समझने की इच्छा रही। लिखने-पढने के साथ यात्राओं का चस्का जब से लगा तब से ही नॉर्थ-ईस्ट की यात्रा करना जहन में था लेकिन अब वह दिन आ चुका था।

यह यात्रा दिल्ली से तब आरंभ हुई जब नॉर्थ-ईस्ट का एक राज्य मणिपुर आदिवासी बिल को लेकर चल रहे आंदोलन के कारण सुर्खियों में बना हुआ था। इसी समय वहाँ ILP (Inner Line Permit) को लेकर भी आंदोलन चल रहा था। इन सारी स्थितियों के बावजूद मुझे नॉर्थ ईस्ट के इस राज्य को लेकर खासी दिलचस्पी थी। यह यात्रा मात्र एक पर्यटक की यात्रा भर नहीं थी बल्कि बहुत सारे सवालों और वहाँ के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक समीकरणों को जानने की जिज्ञासा से भरी हुई थी। दिल्ली में विजय नगर से रात

के तकरीबन 9.30 बजे निकलने के साथ ही यह यात्रा आरम्भ हो गई थी। 'ब्रह्मपुत्र मेल' की एस-5 में सीट नंबर 34 पर रात के 11.40 बजे पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन से निकलते ही दिमाग़ में बहुत कहा-अनकहा, सुना-अनसुना चलने लगा। इस ट्रेन से दीमापुर तक जाना था और फिर वहाँ से आगे की यात्रा तय करनी थी। दिल्ली से ट्रेन खुलने के साथ ही दिमाग भी खुलने लगा। दिल्ली से दीमापुर तक 44 घंटे और 2282 किलोमीटर के सफर में 50 से भी ज्यादा घंटे लग गए। इस ट्रेन की यह खासियत थी कि वह हर स्टेशनुमा जगह पर रुकती जरुर थी। दिल्ली से 53वां स्टेशन दीमापुर का है लेकिन यह ट्रेन करीब 80 स्टेशन पर तो रुकी ही होगी। खैर, 50 घंटे की इस थकावट वाली यात्रा के बाद रात के 2 बजे दीमापुर स्टेशन पर पहुँच ही गया। इस ट्रेन के ज्यादातर यात्री मणिपुर और नागालैंड के ही थे तो ट्रेन में सफर में ही मुझे कुछ-कुछ जानने-समझने को मिल गया था।

अब दीमापुर पहुँचने के बाद इम्फाल जाने के साधन के बारे में पता किया तो एक नाम सुनाई दिया 'विंगर'। सोचने लगा कि भला ये विंगर क्या बला है! खैर जब तक मैं इस बारे में सोचता तभी एक आदमी ने कहा "भैया चलीं, रेलवे स्टेशन के बाहर से मिलेगा, मुझे भी इम्फाल जाना है और मैं वहीं रहता हूँ"। साथ चलने का प्रस्ताव देने वाला यह व्यक्ति बिहार से था और इम्फाल में उसकी दुकान थी। इसके बाद विंगर में बैठ गया जिसमें 10 लोगों के अतिरिक्त 12 बत्तखें भी थी। इन 10 लोगों में 6 लोग मणिपुर के अलग-अलग जिलों से, 3 व्यक्ति बिहार से जो इम्फाल में काम करते थे और एक मैं रात के 3 बजे के आस-पास विंगर दीमापुर से चला तो सीधे नागालैंड पुलिस के एक चौक-पोस्ट पर रुका। घने जंगलों से पटा यह क्षेत्र अंधकारमय था लेकिन तभी एक वर्दीधारी आदमी ने विंगर के अंदर टॉर्च से देखा और आगे की सीट पर बैठे दोनों लोगों को आई कार्ड दिखाने को कहा। उन दोनों ने पहले से ही आई-कार्ड हाथ में रखा था और कहने से पहले ही दिखा दिया। इसके बाद टॉर्च का उजाला मेरी तरफ आया और मुझे देखते ही पुलिस के उस जवान ने कहा 'मयांग' (जो नॉर्थ ईस्ट से बाहर का आदमी हो) अपना परमिट दिखाओ। इस कहने में जोर थोड़ा ज्यादा था लेकिन मैंने उसी त्वरा के साथ कहा परमिट नहीं है। मुझे गाड़ी से बाहर निकलने को कहा गया और ऐसा कहते ही विंगर का चालक कहने लगा "अभी तो कितना टेंशन चल रहा है तुमको बिना परमिट के नहीं आना चाहिए। मैं आपके लिए नहीं वेट करूँगा"। मैंने ड्राइवर से कहा मुझे 5 मिनट दो अगर देर हुई तो चले जाना। यहाँ तक का किराया मैं आपको दे दूँगा। इस बात पर ड्राइवर थोड़ा शांत हुआ और मैं नीचे उतर कर उनके ऑफिसर से मिला। ऑफिसर ने मेरा पता, फोन नम्बर नोट करने और आई-कार्ड देखने के बाद कुछ हिदायतों के साथ जाने को कहा। यात्रा का अनुभव और रोमांच यहीं से आरम्भ हो गया था। इसके बाद तो घने जंगलों के बीच से विंगर सांय-सांय करते हुए निकल रहा था और मैं अगले किसी अनुभव के लिए खुद को तैयार कर रहा था। नागालैंड की सीमा खत्म हुई तो मणिपुर का पहला गाँव माओ आया। यहाँ सब यात्रियों ने चाय पी। मैंने चाय के साथ ही इस जगह के बारे में जानने में उत्सुकता दिखाई। चाय बना रही तकरीबन 50 वर्ष की महिला ने हिंदी के स्पष्ट लहजे में कहा यह मणिपुर का गेट और मेरा गाँव है। कुछ देर यहाँ रुकने के बाद विंगर फिर इम्फाल की ओर चल पड़ा।

माओ से तकरीबन 2 किलोमीटर ही निकले थे कि विंगर खराब हो गया। बहुत कोशिश करने के बाद भी ठीक न होने पर सब लोग अपनी-अपनी व्यवस्था से निकलने लगे। मैंने भी एक ट्रक को हाथ दिया और फिर आगे की यात्रा ट्रक से हुई। मुझे जाना इम्फाल था लेकिन ट्रक को सेनापति तक ही जाना था। सेनापति से बस के जरिए इम्फाल पहुँच गया। रात को इम्फाल पहुँचने के बाद अगले दिन तड़के सुबह यहाँ के प्रसिद्ध इमा कैथेल बाजार जाना हुआ। सड़क से लेकर बाजार और लोगों के व्यवहार तक में कहीं से वो बातें नहीं थी जो अक्सर नॉर्थ ईस्ट को लेकर गढ़ी जाती हैं। यह बाजार महिलाओं के प्रतिनिधित्व का बेहतरीन उदाहरण है। मणिपुर की महिलाओं की आत्मनिर्भरता और सशक्तिकरण का ही प्रतीक इमा कैथेल या नुपी कैथेल मणिपुर की राजधानी इंफाल के बीचों-बीच स्थित है। मणिपुरी भाषा में 'इमा' का मतलब 'माँ' और 'कैथेल' का मतलब 'बाजार' होता है। एक तरह से यह माताओं का बाजार है। इस नाम के पीछे का एक सीधा कारण जो मुझे नजर आया वह यह कि इस बाजार में सभी महिलाएँ लगभग 35 से 60 वर्ष के बीच की थीं। इस बाजार में 10 हजार से ज्यादा महिलाएँ काम करती हैं। महिलाओं के द्वारा संचालित यह बाजार अपनी एक अलग पहचान रखता है। दुनिया का शायद यह इकलौता बाजार होगा जहाँ सिर्फ और सिर्फ महिला दुकानदार ही हैं। इंफाल शहर के ख्वाईरंबन्द (Khwairamband) नामक इलाके में स्थित यह बाजार, पुराना बाजार, लक्ष्मी बाजार और नया बाजार नाम से बड़े-बड़े तीन कॉम्प्लेक्स में विभाजित है. इन तीनों में अलग-अलग वस्तुएँ मिलती हैं। जैसे नया बाजार में सब्जी, मछली और फल मिलते हैं तो वहीं लक्ष्मी बाजार में परंपरागत कपड़े और अन्य घरेलू सामान। इसके अंदर छोटी-छोटी पंक्ति में 15-16 दुकानें हैं। इस बाजार का अपना एक सिस्टम है। अंदर दुकानें लगाने के लिए लाइसेंस (license) का होना जरूरी है जोकि IMC (Imphal Municipal Council) जारी करती है। इसके लिए कुछ पैसे साल के किराए के तौर पर IMC को देने होते हैं। जिन महिलाओं के पास लाइसेंस नहीं होता वह बाजार के बाहर पटरी पर बैठकर सामान बेचती हैं। इनकी तादाद भी बहुत अधिक है। पटरी पर सामान बेचने वाली अधिकांश महिलाएँ इंफाल से दूर पहाड़ी जिलों जैसे-बिशनुपुर, उखरुल, सेनापति, चंदेल, तामेंगलोंग, चुराचांदपुर आदि से आती हैं। इनमें से कुछ महिलाएँ तो पटरी पर बैठकर अपना सामान खुद बेचती हैं तो कुछ महिलाएँ सारा सामान वहाँ दुकान वाली महिलाओं को बेचकर अपने घर चली जाती हैं। इसी संरचना के साथ यह बाजार चलता है।

अपने तरह के इस अनूठे बाजार के इतिहास के बारे में ठीक-ठीक जानकारी तो नहीं है कि ये कब और किन परिस्थितियों में अस्तित्व में आया परंतु इस बाजार पर अध्ययन करने वाले व कुछ इतिहास की किताबें बताती हैं कि यह मणिपुर के राजा के शासन काल से ही है। तब यह बाजार मणिपुर के व्यापार का मुख्य केंद्र था लेकिन समय के साथ कई परिवर्तन इस बाजार में भी आए हैं। मणिपुर के मानवाधिकार कार्यकर्ता धनावीर लाइशरम (Dr. Dhanabir Laishram) बताते हैं कि "यह बाजार आर्थिक गतिविधियों के साथ-साथ राजनैतिक गतिविधियों का भी बड़ा केंद्र है। मणिपुर के महिला आंदोलन का केंद्र भी इमा कैथेल है। यहाँ 'लंच' के समय महिलाएँ विभिन्न राजनैतिक, सामाजिक मुद्दों पर बात करती हैं। एक तरह से मणिपुरी महिलाओं की राजनैतिक चेतना की प्रयोगशाला के तौर पर इस बाजार को देखा जा सकता है। यहाँ एक आवाज पर कई

हजार महिलाएँ जमा हो जाती हैं लेकिन समय और राजनैतिक पार्टियों के 'इनवॉल्वमेंट' और 'इन्ट्रेस्ट' के कारण बाजार की एकता भी खंडित हुई है। अब मीटिंग से लेकर आंदोलनों में बाजार की एक तिहाई महिलाओं की भागीदारी ही होती है। आप देखिए इसी बाजार की उपज, मणिपुर का सबसे सशक्त महिला संगठन, 'मइरापाईबी' (meirapaibi) निकला है"। यह बाजार अपने आप में मणिपुर की महिलाओं की संघर्षगाथा का प्रतीक है। इस यात्री ने हिंदी पट्टी की नजर से जब इस बाजार को देखा तो कुछ अजूबा सा लगा लेकिन जब वहाँ सामान बेच रही महिलाओं से बात की तो समझ आया कि आत्मनिर्भर होने के मायने क्या हैं! हम जैसे पुरुषवादी बाजार संरचना के अभ्यस्त लोगों के लिए यह आश्चर्य और कौतूहल दोनों पैदा करने वाला था। इस बाजार के कुछ अलिखित नियम हैं जो इसकी खूबसूरती भी है। यहाँ यदि कोई कपड़ा बेच रहा है तो वह कपड़ा ही बेचेगा सब्जी या कुछ और नहीं बेच सकता। यह कोई लिखित कानून नहीं है पर इस बात का सब लोग ध्यान रखते हैं। कई महिला आंदोलनों का गवाह रहा यह बाजार मणिपुर की आर्थिक गतिविधियों के साथ-साथ राजनैतिक गतिविधियों का भी बड़ा केंद्र है।

पूर्वोत्तर का यह छोटा सा राज्य अपने भीतर असीम संभावनाएँ समेटे हुए है। जरूरत है तो यहाँ के लोगों और भौगोलिक स्थितियों को समझने की। शेष भारत से कटा यह राज्य अपनी सांस्कृतिक विरासत में श्रेष्ठ है। दुनिया को गोल्फ जैसा खेल देने वाला यह राज्य दिल्ली की सत्ता की उदासीनता को वर्षों से सहता आ रहा है। उत्सवधर्मी मणिपुर विभिन्न समुदायों (मैतेयी, नागा, कुकी) की साझी विरासत का बेजोड़ नमूना है। जिस मणिपुर को शेष भारत के लोग जानते हैं दरअसल वह टीवी की स्क्रीन और अखबार के पन्नों का मणिपुर है जबकि वास्तविक मणिपुर की तस्वीर उससे भिन्न है। पर्यटन के लिहाज से मणिपुर में 'लोकटक झील' का जिक्र बार-बार आता है लेकिन मणिपुर को समझने के लिए यहाँ के हाट, 'लैकई' (मोहल्ले) और बड़े-बड़े खेल के मैदानों को देखना चाहिए तभी मणिपुर की वास्तविक तस्वीर से रु-ब-रु हुआ जा सकता है। चारों तरफ से पहाड़ों से घिरा यह राज्य एक आस भरी नजर से हर दिल्ली से आने वाले को देखता है और उसका स्वागत करता है। 3 महीने की नॉर्थ ईस्ट यात्रा के 26 दिन इस यात्री के मणिपुर में बीते। इन 26 दिनों में ही नॉर्थ ईस्ट को लेकर जो छवि पहले से बनी थी वह धुंधली होने लगी और भारत के इस खूबसूरत राज्य को जितना जाना उतना ही इसकी सामाजिक, सांस्कृतिक परम्परा से परिचित होता गया। 'काश सभी इससे परिचित हो पाते' की टीस के साथ यहाँ से वापस कोहिमा के लिए विंगर ले लिया। वापसी में विंगर न खराब हुआ न किसी ने रोका-टोका। इसके बाद 18 दिन की यात्रा नागालैंड की रही। जिस पर फिर कभी...

भक्त-कवियों की सांस्कृतिक चेतना

गौरव वर्मा
हिंदी विभाग

भक्ति आंदोलन का सांस्कृतिक रूप- इस युग का सांस्कृतिक रूप एक उल्लेखनीय महत्त्व रखता है। हिंदू मुस्लिम-सम्बंध, मुस्लिम समाजों पर हिंदू संस्कृति का प्रभाव, हिंदू समाज पर इस्लाम संस्कृति का प्रभाव। ये दो संस्कृतियाँ दीर्घ काल तक संघर्षरत रहकर भी एक-दूसरे से अछूती न रह सकी जिसका परिणाम आगे चलकर सांस्कृतिक समन्वय के रूप में दृष्टि गोचर होता है। संस्कृति समन्वय के साथ ही दूसरी सर्वप्रधान घटना हिंदू-संस्कृति के नवीन जागरण की है। इस समन्वय के परिणाम स्वरूप दोनों ही समाजों ने एक-दूसरे की रीति-नीतियों सामाजिक प्रथाओं तथा उपासना-पद्धति की भी अनेक बातें सीखी। इस सम्पर्क में भारतीय ज्योतिष, गणित तथा दर्शन का विदेशों में प्रचार हुआ तथा ज्ञान-विज्ञान की अनेक बातों का प्रचार तथा प्रसार विदेशों से भारत में हुआ। इस संपर्क द्वारा एक नई जन भाषा का क्रमशः विकास हुआ जो आगे चलकर उर्दू कहलाई जिसकी लिपि फारसी है यह वस्तुतः खड़ी बोली हिंदी की एक शैली मात्र है। इस सांस्कृतिक समन्वय से वास्तुकला, संगीतकला, चित्रकला तथा साहित्य की अभिवृद्धि हुई है। समकालीन सांस्कृतिक जागरण जो कि देश के जन-जीवन के बीच भक्ति आंदोलन के रूप में उत्तर भारत में प्रसार पाता जा रहा था तथा दूसरे मुस्लिम शासकों तथा संगीतज्ञों द्वारा कलात्मक तथा सांस्कृतिक समन्वय का सतत् प्रभाव इस युग के इतिहास की सबसे महत्त्वपूर्ण घटना हिंदू धर्म तथा संस्कृति की जागृति के प्रतिनिधित्व करने वाले भक्ति-आंदोलन की है और उसने अध्यात्म-साधना तक ही नहीं प्रस्तुत समकालीन जीवन के सभी क्षेत्रों को प्रभावित करने के साथ ही भारतीय जनता को अमर आश्वासन भी प्रदान किया है।

निर्गुण और सगुण भक्त-कवियों की सांस्कृतिक चेतना-

दार्शनिक चिंतन के परिप्रेक्ष्य में- दर्शन का लक्ष्य बड़ा विराट है वह मानव को व्यापक धरातल प्रदान करता है उसे वैयक्तिक क्षुद्रता से ऊपर उठाता है इस संदर्भ में डॉ. देवराज का यह कथन रेखांकनीय है कि- 'दर्शन हमें जीवन की क्षुद्र स्थितियों से ऊपर उठाकर शिव-ब्राह्मण्ड की हलचल के केन्द्र में स्थापित कर देता है।'

अद्वैतवादी विचारधारा- शंकर के अद्वैतवाद का तात्पर्य है। आत्मा-परमात्मा की एकता। इस मतानुसार आत्मा और परमात्मा में कोई भेद नहीं है और यदि इस भेद की प्रतिति होती है तो अविद्या या अज्ञान के कारण शंकराचार्य ने ब्रह्म संत्य जगन्मिथ्या कहकर ब्रह्म की सत्यता तथा जगत के मिथ्यातत्व की व्यंजना की है। अद्वैत दर्शन में ब्रह्म को निर्गुण, निराकार, निरपेक्ष निर्विकार, सर्वव्यापी रेखांकित किया है जिसका प्रभाव निर्गुण काव्यधारा के संतमार्गी कवियों पर है।

विशिष्टताद्वैतवादी चिंतन- उन्होंने वेदान्त और वैष्णव धर्म के सेतु निर्मित करके भक्ति को सुदृढ़ दार्शनिक पीठिका प्रदान की। रामानुजाचार्य के अनुसार ब्रह्म चित् और अचित् (जड़-प्रकृति) दोनों तत्वों से संयुक्त है वहीं एक मात्र सत्ता है चित् और अचित् दोनों तत्वों को ब्रह्म के अधीन बताते हुए उन्हें ईश्वर की देह माना गया है। रामभक्ति शाखा इसी दर्शन से प्रभावित है।

रामानंद की विचारधारा- श्री सम्प्रदाय के स्वामी राघवानंद को रामानंद का गुरु माना जाता है। रामानंद ने अपने (रामावत सम्प्रदाय) में ब्राह्मण-शूद्र सभी को समान भाव से महिमा-गरिमा प्रदान की। रामानंद के सभी शिष्यों ने इसका अनुकरण किया।

जैन धर्म की धारणाएँ- जैन धर्म एवं साहित्य में वैदिक कर्मकाण्ड वर्ण भेद, बलि, ब्राह्मचार तथा ईश्वर की सत्ता का प्रबल विरोध मिलता है इसका प्रभाव संत कवियों पर पड़ा है।

सिद्धों के सिद्धांत- बौद्ध सिद्धों के सिद्धांत का भी प्रभाव हिंदी की निर्गुण काव्यधारा पर पड़ा है बौद्ध ध र्म दो शाखाओं में विभक्त हो गया- महायान और हीनयान। महायान से तन्त्रयान और तन्त्रयान वज्रयान में तथा वज्रयान सहज यान में परिणत हुआ। सहजयानी सिद्धों ने मूर्ति-उपासना, तीर्थव्रत तथा अन्याय धार्मिक बाह्यचारों का प्रबल विरोध और धर्म को सहज सरल तथा सर्वजन सुलभ बनाने का किया इनका भी प्रभाव संत कवियों पर पड़ा।

नाथ पंथ- 'नाथ' पंथ, शैव धर्म के अन्तर्गत आता है। हठयोग मूलक साधना-पद्धति, नैतिक उपदेश धर्म के नाम पर हो रहे अंधविश्वासों और पाखण्डों का डटकर विरोध किया कबीर आदि पर नाथ पंथ का भी प्रभाव है।

इस्लाम धर्म और सूफी सिद्धांत- इस्लाम धर्म एकेश्वरवाद का पोषक है कलमा पढ़ना, नमाज पढ़ना, रोजा रखना, हज, जकात आदि इस्लाम धर्म की प्रधान प्रवृत्तियाँ है। संतों की निर्गुण-उपासना और प्रेम-साधना पर इस्लामी एकेश्वरवाद और सूफियों पर प्रेम पद्धति का प्रभाव है। सूफी-संत-साधक-कवि इश्क मिजाजी से लेकर इश्क हकीकी की ओर जाते हैं। और अंत में रूपक तल के माध्यम से सम्पूर्ण कथा को आध्यात्मिक संकेत से अन्वित करते हैं।

सामाजिक चिंतन के परिप्रेक्ष्य- निर्गुण में संत काव्यधारा-साहित्य और समाज का संबंध बहुत गहरा है। संत काव्य में व्यंजित सामाजिक संस्कार और सामाजिक रीतियाँ। प्रत्येक समाज में विशिष्ट-विशिष्ट अवसरों-अवस्थाओं के लिए विशेष-विशेष संस्कार होते है ये संस्कार हमारी संस्कृति के बोधक-परिचायक होते हैं।

विवाह- कबीरदास विवाह के समय समग्र परिवेश (मंगलगान) ब्राह्मणों द्वारा मन्त्रोच्चारण भांवर आदि के बारे में लिखते हैं कि-

'दुलहनी गावहु मंगलचार
हम घरि आये हो राजा राम भरतार'

सूफी काव्य में समाज- प्रेमाख्यानक काव्यों में उल्लिखित सामाजिक प्रसंगों के आधार पर कहा जा सकता है कि रचनाकारों ने अपनी कृतियों को सामाजिक धरातल के दर्शन कराये हैं। उक्त कृतियों के माध्यम से कवियों ने मध्यकालीन भारतीय हिन्दू और मुस्लिम समाज के सामाजिक जीवन के विविध पक्षों को अत्यंत सहज रूप से अपने काव्यों में पिरोया है।

दीपावली- पद्मावत में तरुण स्त्रियों के द्वारा गीत गाने तथा अंगों को मोड़-मोड़कर झुमक कर गाते हुए दीपावली मनाने का उल्लेख हुआ है-

'सखि झूमक गावहिं अंग मोरी, हों झूरौ बिछरी जेहि जोरी
सखि मानहिं तेवहार सव गाइ देवारी खेलि'

रामकाव्य धारा का समाज- 'सर्वाधिक उल्लेखनीय बात यह है कि गोस्वामी तुलसीदास के रामचरितमानस ने हमारे आलोच्य युग से लेकर आज तक भारत के जनमानस को अनुप्राणित किया है।' रामकाव्य में संस्कृति और समाज का स्वरूप दो प्रकार से अभिव्यक्त हुआ है। एक तो आदर्श पक्ष है। दूसरे उसकी समकालीन वस्तु स्थिति है। तुलसी ने समकालीन समाज की आर्थिक विषमता प्रकाश डाला है। 'कवितावली' के वर्णन अपेक्षाकृत अधिक यथार्थपरक, वास्तविक और मार्मिक है। कलिकाल में दरिद्रता, दुर्भिक्ष, दुख और कुशासन दिनों-दिन दूने होते जा रहे हैं, सुख और अच्छे कार्य घटते जा रहे हैं-

'दिन-दिन दूनो देखि दारिदु, दुकालु, दुख,
दुरितु, दुराजु सुख-सुकृत सकोच है।'

कृष्ण काव्य का समाज- सूर ने जिस समाज की सृजना अपने काव्य में की वह स्पष्ट रूप से ग्रामीण तथा नगर जैसी दो संस्कृतियों में बँटा हुआ समाज है। नगर का प्रतिनिधित्व मथुरा नगरी करती है तथा ग्रामीण संस्कृति की व्याख्या नंदगाँव, बरसाना, गोकुल आदि के माध्यम से की गई है।

नागरिक समाज- सूर ने मथुरा तथा द्वारिका का वर्णन करते समय जिन ऊँचे-ऊँचे महलों, ऊँची-ऊँची हीरा रत्न से मणिमय युक्त भवनों का चित्रण किया है वे निश्चित रूप से उस सामंतवादी व्यवस्था द्वारा निर्मित नगरों की समृद्धि की ओर संकेत करते हैं-

'चितवन मन्दिर भए आवासा। महल-महल लागे मनि पासा।'

ग्रामीण समाज- कृष्ण का जन्म नन्द परिवार की ही खुशी का कारण नहीं है प्रत्युत पूरे गाँव के लिए हर्ष का विषय है तभी तो नन्द के घर मेला लगा हुआ है-

'आजु नन्द के द्वारै भीर
इक आवतं इक जात विदा, है, इक ठाढे मन्दिर कै तीर'

धर्म और अर्थ के परिप्रेक्ष्य में-

संत काव्यधारा- संतों के समय धर्म के वास्तविक स्वरूप का लोप हो गया था लोगों ने बाह्यचारों एवं बाह्यडम्बरों को ही धर्म का मूल रूप मान लिया था। इसलिए संतों ने ब्राह्यचारों एवं ब्राह्यडम्बरों के खण्डन से लोक मानस को धर्म के मूल रूप को समझने के लिए उद्‌बोधित किया, जातीय एकता की स्थापना की, कबीर ने लिखा है। निर्गुण संतों ने सत्य को सबसे बड़ा धर्म और पुण्य माना है ये संत की सबसे बड़ी तपस्या और असत्य को सबसे बड़ा पाप मानते हैं जिसके हृदय में सत्य है उसके हृदय में ईश्वर का निवास होता है यानी वह ईश्वर तुल्य होता है-

'साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप
जाके हिरदे साँच है, ताके हिरदे आप।'

आर्थिक जीवन- कबीर ने लिखा है कि उस समय बड़ा दुख होता है जब समाज का एक वर्ग तो भक्ति-भजन में निग्मन है और दूसरा वर्ग खूब परिश्रम करके (हरि स्मरण) छोड़कर भी अपने पूरे परिवार का पालन-पोषण नहीं कर पाता उसके परिवार वाले जब भूखे मरते हैं तो उन्हें दुख होता है-

'हरि का सिमरन छाडि कै पाल्यौ बहुत कुटंब
धंधा करता रहि गया, भाई रहा न बंधु।'

सूफी काव्यधारा- मध्ययुगीन प्रेमाख्यानक काव्यों में हिन्दू धर्म तथा उसमें प्रचलित विभिन्न मत का उल्लेख मिलता है विशेष रूप से जायसी इत्यादि कवियों ने तद्‌युगीन समय में प्रचलित पंथों को स्पष्ट रूप से निर्देश प्रस्तुत किया है।

धार्मिक ग्रंथ- पद्मावत में हीरामन सुग्गा गुरु के प्रतीकार्थ प्रयुक्त हुआ है। एक अवसर पर वह रत्नसेन से कहता है कि मैं चारों वेदों का पण्डित हूँ-

'चतुर वेद हौं पंडित हीरामनि नाँउ'

आर्थिक जीवन- मध्ययुगीन प्रेमाख्यानक काव्यों में कथानक का केन्द्र बिन्दु समाज का उच्च राजकीय वर्ग रहा है। तदयुगीन समाज के आर्थिक जीवन की झाँकी दिखाई पड़ती है। इन रचनाओं में व्यापार, उद्योग-धंधों, विभिन्न व्यवसायों का उल्लेख हुआ है।

रामभक्ति शाखा में धार्मिक जीवन- वेद-पुराण तथा श्रुति आदि शास्त्रों के प्रति भारत के आध्यात्मिक जीवन के अन्तर्गत श्रद्धाभावना का संस्कार चिरकाल से प्रतिष्ठित है। तुलसीदास ने लिखा है-

'तुलसी सुमिरत राम, सुलभ फलचारि
वेद-पुराण पुकारत, कहत पुरारि

आगम-निगम पुराण कहत करि लीक
'तुलसी रामनाम-कर सुमिरन नीक'

तीर्थराज प्रयाग तथा त्रिवेणी-संगम आदि के सांस्कृतिक परिदृश्य का वर्णन किया गया है।

'कासी विधि बसि तन तजै हठि तनु तजे प्रयाग
तुलसी जो फल सो सुलभ, रामनाम अनुराग'

राम काव्य में आर्थिक जीवन- 'मानस' के कलियुग-वर्णन के प्रसंग पर इनके जो निर्देश मिलते हैं उनके आधार पर किसान के पास खेती नहीं है। भिखारी को भीख नहीं मिलती, वणिक का व्यापार बंद है, चाकर को चाकरी नहीं मिलती। जीविका-विहीन होकर दुखी लोग इधर-उधर घूमते हुए एक-दूसरे से कह रहे हैं कहाँ जाएँ, क्या करें-

'खेती न किसान को, भिखारी को न भीख बलि
बनिक को बनिज, न चाकर को चाकरी
जीविका विहिन लोग सीद्यमान सोच बस
कहै एकएकन सो कहा जाई का करी'

सूर काव्य की धार्मिक भावना- मध्ययुग में सामान्य जनमानस में राम और श्री कृष्ण दोनों को भू-भार उतारने वाला परमब्रह्म का अवतार मानता था। सुर ने कृष्ण के अतिरिक्त ब्रह्म जो पौराणिक देवता है उनका भी वर्णन किया है 'बाल-वत्सहरण' प्रसंग में ब्रह्म-ब्रज के बछड़ों का हरण करके उन्हें ब्रह्मलोक पहुँचा देते हैं और ब्रह्म के अवतार कृष्ण उनकी पुनः सृष्टि करके ब्रह्म का गर्व हरते हैं-

'बाल- बच्छ हरे चतुरानन, ब्रह्म लोक पहुँचाए
सूरदास प्रभु गर्व विनासन, नवकृत फेरि बनाए।'

कृष्ण काव्य की आर्थिक व्यवस्था- पशुपालन भारत का प्राचीन व्यवसाय रहा है। सूर ने अनेक प्रसंगों में इसकी ओर संकेत किया है। गाँवों में बसने वाले गरीबों कृषकों के सुरक्षित जीवन का आधार गोधन ही होता है जिसके माध्यम से वे दधि-माखन का व्यवसाय किया करते थे। सूर की गोपियाँ तो दही बेचने प्रातः काल ही मथुरा शहर की ओर चल पड़ती हैं-

'ब्रज जुवतीं मिलि करतिं विचार
माखन, दधि धृत साजातिं मटुकी मथुरा जान बिचारै॥'

राजनीति के परिप्रेक्ष्य में- संत काव्यधारा मध्यकाल में शासन व्यवस्था दीवान, मंत्री और सूबेदारों के माध्यम से चलती थी। कबीर ने लिखा है कि गाँव का किसान पटवारी से आक्रांत रहता था। वह पटवारी बड़ा धूर्त है। वह बेगार लेता है और अनेक प्रकार से तंग करता है-

'हरि के लोगा मोकौ नीति डसै पटवारी
उपर भुजा करि मैं गुरु पहि पुकारा तिन हौ लिया उबारी'

सूफी काव्य- पद्मावत में कवि ने प्रतिनायक के रूप में अलाउद्दीन को प्रस्तुत किया है। शासन व्यवस्था ऐसी है कि अलाउद्दीन संकेत देते हुए कहता है कि सातों द्वीपों से चुन-चुन कर लाई गई स्त्रियाँ उसके महल में हैं। इनकी संख्या सोलह सौ बतलाई गई है।

'सप्त दीप महँ चुनि-चुनि आनी। मोरे सोरह सौ रानी'

रामकाव्य का राजनीतिक जीवन- भारतीय संस्कृति के इस पक्ष को राम काव्य के अन्तर्गत दो प्रकार से प्रस्तुत किया जा सकता है- राजनीतिक आदर्श, समकालीन परिस्थितियाँ। रामराज्य कोई आध्यात्मिक उपब्धि नहीं है वह ब्रह्मनन्द या अमृत सरोबर का रस पीने या परमसमाधि की स्थिति नहीं है वह संसार के दैहिक, दैविक, भौतिक तापों से मुक्त हो जाने की स्थिति है-

'दैहिक दैविक भौतिक तापा। रामराज्य काहुहिं नहिं व्यापा'

रामराज्य में अयोध्यावासी उदार परोपकारी ही नहीं है विप्रों के चरण सेवक भी हैं- 'सब उदार सब पर उपकारी, विप्र चरन सेवक नर नारि।।'

सूर काव्य में राजनीति-शासन- व्यवस्था में नंद को भी कंस ने दस गाँव दान में दे दिए, जिससे उन्हें वहाँ के स्थानीय निवासी सरदार कहकर बुलाते हैं-

'कंस दई यह लोक बड़ाई, गॉउ दसक सरकार कहाई'

संत काव्य की सांस्कृतिक चेतना- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने उनके सांस्कृतिक महत्त्व का जो समुचित मूल्यांकन किया है उनकी मुख्य बातें उल्लेखनीय हैं। 'इसमें सन्देह नहीं है कि कबीर ने ठीक मौके पर जनता के उस बड़े भाग को संभाला जो नाथ पंथियों के प्रभाव से प्रेम भाव और भक्ति रस से शून्य और शुष्क पड़ता जा रहा था। उनके द्वारा यह बहुत ही आवश्यक कार्य किया गया है। मनुष्यत्व की सामान्य भावना को आगे करके निम्न श्रेणी की जनता में उन्होंने आत्म-गौरव का भाव जगाया और उसे भक्ति के ऊँचे से ऊँचे सोपान की ओर बढ़ने के लिए बढ़ावा दिया। अशिक्षित और निम्न श्रेणी पर इन संतो-महात्माओं का बडा भारी उपकार है। आचारण की शुद्धता पर जोर देकर आडम्बरों का तिरस्कार करके आत्म गौरव का भाव उत्पन्न करके उन्होंने उसे ऊपर उठाने का प्रयत्न किया।' कहा जा सकता है आचार्य शुक्ल का ये कथन उनके युगानुरूप सांस्कृतिक जागरण तथा साधना क्षेत्रीय आन्दोलन का द्योतन करता है। जातिगत ऊँच-नीच की भेद-भावना की स्थिति में बल तथा प्रलोभन दोनों के द्वारा हिन्दू समाज के दुर्बल तत्व इस्लाम की ओर उन्मुख हो रहे थे और यह तत्कालीन भारत की राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक समस्या थी। अत: उनके निदान की दृष्टि से देखा जाए तो सन्त काव्य तथा उसके प्रेरणाओं द्वारा परवर्तित यह सांस्कृतिक एवं सामाजिक उत्क्रांति का नि:संदिग्ध रूप से ऐतिहासिक महत्त्व है।

सूफी काव्य की सांस्कृतिक चेतना– सांस्कृतिक समन्वय के कार्य में सूफी संतों का भी बहुत बड़ा हाथ रहा है सूफी संतो ने जहाँ इस्लाम के शान्तिपूर्ण प्रचार में योगदान किया। इसके साथ ही उनके प्रभाव से भारतीय हिन्दू जाति में भी पीरों के मजारों की पूजा होने लगी। अनेक सूफी कवियों ने अपनी रचनाओं द्वारा हिंदी भाषा और साहित्य को अलंकृत किया। प्रेम–साधना तथा सूफी प्रेमाख्यान काव्यधारा इन्हीं की देन कहा जा सकता है। इस हिन्दू–मुस्लिम दोनों ही समाजों ने एक–दूसरे की रीति–नीतियों, सामाजिक प्रथाओं तथा उपासना पद्धति की भी अनेक बातें सीखीं। वास्तु चित्र, नृत्य तथा संगीत आदि कलाओं से संबंधित विवेचन से यह युग भारतीय कलाओं के क्षेत्र में नवोन्मेष का रहा है। जिससे सभी कलाओं के विकास को समुचित अवसर मिला है। प्रेमाख्यानक काव्यों के आधार पर समकालीन संस्कृति के स्वरूप का जो विवेचन किया गया है उससे प्रकट है कि रचनाओं के अन्तर्गत मिलने वाले निर्देश अनेक ऐसे तथ्य भी प्रकाशित करते हैं जो कि इतिहास–ग्रंथों में स्थान पाने से अछूता ही रहे।

राम भक्ति काव्य की सांस्कृतिक चेतना– भारत में संस्कृतियों का जो विराट समन्वय हुआ है, रामकथा उसका अत्यन्त उज्ज्वल प्रतीक है। सबसे पहले तो बात यह है कि इस कथा से भारत की भौगोलिक एकता ध्वनित होती है। एक ही कथा–सूत्र में अयोध्या, किष्किंधा और लंका तीनों के बंध जाने के कारण सारा देश एक ही दिखता है, दूसरे इस कथा पर भारत का सभी प्रमुख भाषाओं में रामायणों की रचना हुई। जिनमें से प्रत्येक अपने–अपने क्षेत्र में लोकप्रिय रही। तुलसी आदि कवियों ने धार्मिक एवं सामाजिक कट्टरताओं पर कबीर आदि की भाँति तीक्ष्ण प्रहार न करते हुए उसके स्थान पर समन्वय की भावना खड़ी की तथा इस भावना को आधार बनाकर उन्होंने हिन्दू धर्म के अन्तर्गत प्रचलित विभिन्न सम्प्रदायों के द्वेष–भाव को समाप्त करने का प्रत्यन्न किया है। इन्होंने राम के चरित्र–चित्रण में एक सर्वांगीण सम्पन्न जीवन का चित्र अंकित किया है। साथ ही यह भी बताया है कि जीवन को हमें किस रूप में देखना चाहिए जीवन की पूर्णता का अनुभव और उसके प्रति कर्तव्य–भावना जागृत करने वाला आधुनिक युग के लिए तुलसी का सन्देश महत्त्वपूर्ण है। उनकी वाणी आज भी हमारे लिए प्रेरक है। संस्कृति की दृष्टि से अगर भाषा पर विचार किया जाए जन भाषा द्वारा ही रामचरित का गान प्रस्तुत किया और वह रचना सर्वजनोपयोगी बनी।

कृष्ण भक्ति काव्य की सांस्कृतिक चेतना– कृष्ण काव्यधारा में भक्त कवियों ने अपनी आध्यात्मिक विचारधारा में कृष्ण के लोक रंजनकारी स्वरूप को प्रतिष्ठित करते हुए जन साधारण को आध्यात्मिक अधिष्ठान प्रदान करके उसके कल्याण का मार्ग प्रस्तुत किया। अराध्य के बाल्य तथा मधुर रूपों की प्रधानता प्रतिष्ठा होने के कारण उसमें आकर्षण के साथ ही हृदय स्पर्शी सरसता विद्यमान है। जीवन की मान्यताएँ सत्संग तथा ब्रज भूमि के प्रति श्रद्धाभावना प्रदान की है। इस युग की राजनीतिक परिस्थितियाँ, राजकर्मचारियों के अनुकूल तथा जन–साधारण की सुख–समृद्धि के दृष्टिकोण से प्रतिकूल कही जा सकती है। समकालीन जन जीवन के पर्वोत्सवों, क्रीडा–विनोद, सामाजिक रहन–सहन एवं संस्कारों आदि सामान्य जनता के पारिवारिक जीवन के मनोरम दृश्यों, जन साधारण में प्रतिष्ठित कला के विविध लौकिक एवं स्थानीय रूपों के जैसे मार्मिक और विशद चित्र उनमें मिलते हैं। वे भावुक भक्तों को रसमग्न करने के साथ–साथ देश के सांस्कृतिक इतिहास के अनेक अपरिचित किन्तु महत्त्वपूर्ण तथ्यों को प्रकाश में लाते हैं। कह सकते हैं कि इस कारण इस धारा की

रचनाएँ केवल काव्य कला की उत्कृष्टता मार्मिकता अथवा भावुक भक्तों की रसमग्न करने वाली सरसता के ही दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण नहीं है, प्रत्युत उनका सांस्कृतिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

संदर्भ सूची :

1. संस्कृति का दार्शनिक विवेचन- डॉ. देवराज, पृष्ठ 38
2. कबीर ग्रन्थावली- डॉ. श्यामसुंदर दास, पद-1, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
3. पद्मावत- व्याख्याकार वासुदेव शरण अग्रवाल, नागमती वियोग-खण्ड, पृष्ठ 421-22, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 2010
4. मध्यकालीन हिंदी काव्य में भारतीय संस्कृति-मदनगोपाल गुप्त, पृष्ठ 377, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
5. लोकवादी तुलसीदास- विश्वनाथ त्रिपाठी, पृष्ठ 87, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
6. सूरसागर- सं. धीरेन्द्र वर्मा, दशम स्कंध-पद 3109, साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड, प्रकाशन इलाहाबाद, पंचम संस्करण, 1986
7. सूरसागर- सं. धीरेन्द्र वर्मा, दशम स्कंध-पद 15, साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड, प्रकाशन इलाहाबाद, पंचम संस्करण, 1986
8. कबीर ग्रंथावली- संपा. श्यामसुन्दर दास, पृष्ठ 79, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
9. कबीर ग्रंथावली- श्यामसुन्दर दास, साखी पद-169, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
10. पद्मावत- व्याख्याकार वासुदेव शरण अग्रवाल, स्तुति-खंड, पृष्ठ 12, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 2010
11. बरवै रामायण- तुलसीदास, बरवै संख्या-3
12. दोहावली, तुलसीदास, दोहा-14
13. लोकवादी तुलसीदास- विश्वनाथ त्रिपाठी, पृष्ठ 87, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
14. सूरसागर- सं. धीरेन्द्र वर्मा, दशम स्कंध, पद 436, साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड, प्रकाशन इलाहाबाद, पंचम संस्करण, 1986
15. सूरसागर- सं. धीरेन्द्र वर्मा, दशम स्कंध, पद-4148, साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड, प्रकाशन इलाहाबाद, पंचम संस्करण, 1986
16. कबीर ग्रथावली श्यामसुन्दर दास, पद-30, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
17. जायसी ग्रंथावली, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृष्ठ 580, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
18. लोकवादी तुलसीदास- विश्वनाथ त्रिपाठी, पृष्ठ 103, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
19. लोकवादी तुलसीदास- विश्वनाथ त्रिपाठी, पृष्ठ 105, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
20. सूरसागर- सं- धीरेन्द्र वर्मा, दशम स्कंध, पद-885, साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड, प्रकाशन इलाहाबाद, पंचम संस्करण, 1986
21. हिंदी साहित्य का इतिहास- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृष्ठ 60, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, तेइसवां संस्करण, 1990

स्वातंत्र्योत्तर भारत के विघटित राजनीतिक मूल्यों का दस्तावेज : 'घासीराम कोतवाल'

नरेन्द्र गुर्जर
हिंदी विभाग

विजय तेंदुलकर का नाटक 'घासीराम कोतवाल' एक ऐसा नाटक है जिसकी सामग्री इतिहास से ली गई है इस नाटक में तेंदुलकर ने राजनीतिक मूल्यों का किस प्रकार विघटन हो रहा है इस समस्या को उठाया है। किसी भी समाज के मूल्य उचित होने चाहिए क्योंकि अगर हमारे मूल्य ही उचित ना हो तो हमारा समाज कभी विकास नही कर सकता। ना केवल यह नाटक राजनीतिक मूल्यों के विघटन की बात करता है बल्कि इसी के साथ-साथ राजनीति की आड़ में हो रहे स्त्रियों के शोषण और वेश्यावृत्ति की समस्याओं को उजागर करता। नाटक में दिखाया गया है की सत्ता की ताकत को ये राजनीति करने वाले लोग कैसे मासूम बच्चियों को अपनी हवस का शिकार बनाते हैं और स्वार्थ पूरा होने पर उनकी हत्या करा देते हैं। कानून भी इन लोगों का साथ देता, चाहे ये कितने भी पाप और बलात्कार क्यों ना करें, इनकी इज्जत बरकरार रहती है। वह राजनीति करने के चक्कर में अपने अंदर की संवेदना को खो चुके हैं। अब उसके लिए राजनीति से बढ़ कर कुछ नहीं। यह नाटक आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना पहले था। स्वतंत्रता के पश्चात राजनीतिक मूल्यों का जो विघटन समाज में हुआ, उसका प्रभाव साहित्य पर भी पडा। स्वतंत्रता से पूर्व जो सपने लोगों ने संजोए, वह सब टूट गये। राजनीति और सत्ता के लालच ने व्याक्ति के मन में घृणित भाव की आग को भर दिया था। बेरोजगारी, संत्रास एवं अकेलेपन आदि ने लोगों के अंदर की संवेदना को खत्म कर दिया। जिसको भलि-भांति नाटक में तेंदुलकर ने अभिव्यक्त किया है।

बीज शब्द

स्वातंत्र्योत्तर, विघटित, राजनीति, मूल्य, कोतवाल, इतिहास, वेश्यावृत्ति, उजागर, उचित, मासूम।

प्रस्तावना

विजय तेंदुलकर मराठी साहित्य के सफलतम नाटककारों में से एक है। 'घासीराम कोतवाल' में उन्होंने इतिहास की सामग्री को मूल आधार बनाया है। परंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि यह इतिहास की पुनरावृत्ति मात्र है। किसी आलोचक का कथन है कि- "कोई इतिहास साहित्य नहीं हो सकता, हाँ साहित्य अवश्य ही इतिहास बन सकता है। इसका कारण यह है कि इतिहास केवल राजाओं, महाराजाओं के भोग-विलास, उनके क्रूर अत्याचार, युद्ध आदि की कहानी सुनाता है। परंतु यह कहानी नहीं है क्योंकि यह असत्य है। उसमें केवल पाशविक, प्रवृत्तियों का ही चित्रण है। जबकि साहित्य में मन की कोमल भावनाओं, सदवृत्तियों, उच्च विचारों को आधार बनाकर मानवीय चरित्र की विविधताओं को दर्शाया जाता है।"[1]

अनेक विद्वानों, आलोचकों ने साहित्य को समाज का दर्पण माना है। लगभग प्रत्येक साहित्य में लेखक अपने युग की परिस्थितियों का यथार्थ रूप में चित्रण करता है जो रचना समाज या युग से प्रभावित नहीं होती, वह चिर-स्थायी भी नही इस नाटक में विजय तेंदुलकर ने अपने समय को यथार्थ रूप में वर्णित किया है। जिसके लिए उन्होंने इतिहास का सहारा लिया है। उन्होंने ऐतिहासिक व्यक्तियों फडनवीस, घासीराम जैसे नामों का प्रयोग किया। विजय तेंदुलकर ने नाटक के वक्तव्य में कहा है- "फिर भी इस नाटक की सामग्री कच्चा माल इतिहास से बटोरी गई है। इतिहास का क्षीण-सा आधार अवश्य लिया गया है। पर इस नाटक का इतिहास से कोई संबंध नही है। और यह कच्चा मसाला भी ठीक उसी तरह इतिहास से लिया गया है, जिस तरह समसामयिक जीवन-परिस्थितियों से भी लिया जाता है। महाराष्ट्र में पेशवाओं का राजा था, फडनवीस पेशवा के प्रधान थे, कोई एक घासीराम था, ब्राह्मण था, मराठा सरदार थे और ये सब इकाईयां अपने-अपने दायरे से बंधी समय के प्रवाह में लकड़ी के लट्ठे की भांति कभी सटकर तो कभी हटाकर कभी परस्पर को छूती तो कभी टकराती प्रवाहित हो रही थी।"[2]

घासीराम कोतवाल में स्वातंत्र्योत्तर भारत के विघटित राजनीतिक मूल्यों का यथार्थ पूर्ण चित्रण किया है। किस प्रकार राजनीति में कुटिल चालों, नीतियों आदि के बल पर दूसरों को बलि का बकरा बनाया जाता है इसको अभिव्यक्त किया गया है। किस प्रकार से मूल्य टूट रहे हैं। यह नाटक टूटते राजनीतिक मूल्यों की कहानी को व्यंजित करता है। इस नाटक में घासीराम जहाँ साधारण स्तर से उठकर कोतवाली के पद पर पहुँचता है वहीं उसको अपने स्वार्थ के लिए उस पद पर पहुँचाने वाला पेशवा-प्रधान नाना साहब अपना स्वार्थ सिद्ध होते ही उसको मृत्यु-दण्ड देने का आदेश झिरी कर देता है। डॉ. जब्बार पटेल ने नाटक में निर्देशक का वक्तव्य में कहा है कि-"इस नाटक में घासीराम और नाना फडनवीस का व्यक्ति-संघर्ष प्रमुख होते हुए भी तेंदुलकर ने इस संघर्ष के साथ-साथ अपनी विशिष्ट शैली में तत्कालीन सामाजिक एवं राजनीतिक स्थिति का मार्मिक चित्रण किया है। वस्तुतः सत्ताधारी वर्ग और जन साधारण की सम्पूर्ण स्थिति पर काल अवस्थाओं के अंतर से विशेष वास्तविक अंतर नही पड़ता। घासी राम हर काल और समाज में होते है और हर उस काल और उस समाज में उसे वैसा बनाने वाले फडनवीस भी होते है।"[3]

जब हम घासीराम कोतवाल नाटक का यथार्थ दृष्टि से अवलोकन करते हैं तब हमारे समक्ष निम्न बिंदू उभर कर सामने आते हैं-

- स्वातंत्र्योत्तर भारत में मूल्यों का विघटन
- राजनीतिक कुचक्रों का यथार्थ चित्रण
- प्रतिशोध की भावना का यथार्थ चित्रण
- अत्याचार तथा अन्याय पर टिकी शासन व्यवस्था का यथार्थ वर्णन
- पतनोन्मुखी समाज का चित्रण
- टूटते राजनीतिक मूल्य और खत्म होती मानवीय संवेदनाएं

वस्तुतः यह नाटक मूलरूप से घासीराम और नाना फडनवीस के माध्यम से राजनीतिक संघर्ष को उजागर करता है। परंतु इन दोनों में प्रत्यक्ष रूप से संघर्ष नहीं होता बल्कि दोनों ही अपने-अपने कुटिल चालों से एक-दूसरे को अपने अधीन करना चाहते हैं। प्रतिशोध की यह भावना धीरे-धीरे राजनीति का इतना भयानक रूप अख्तियार कर लेती है कि एक बाप कोतवाली का पद पाने के लिए अपनी बेटी तक का इस्तेमाल करता है। यह कैसी घिनौनी राजनीति है, जिसमें अपने बच्चों तक को दांव पर लगा दिया जाता है। इस घिनौनी राजनीति का पर्दाफाश तेंदुलकर ने नाना और घासीराम के माध्यम से किया है। यह हमारी भारतीय राजनीति का यथार्थ चित्रण है, जिसे पाने के लिए लोग अपनों को ही हत्यारा बना कर अपनी राजनीति चमकाते हैं। जिसे नाटककार ने घासीराम के माध्यम से दिखाया है-"आ गया अब मेरी मुट्ठी में आ गया मेरी लाड़ली हैवान मगर मैं छोड़ूंगा नही। इस पूना शहर में सुअर राज कायम करके ही दम लूंगा।"[4]

घासीराम को लगता है कि अब उसने अपनी बेटी के माध्यम से नाना को अपने वश में कर लिया है मगर वह नहीं जानता कि नाना फडनवीस राजनीति का कुशल खिलाड़ी है। नाना ने उसे कोतवाली का पद दे कर अपने दो काम साधे हैं। एक तो कामुक नाना अब उन्मुक्त रूप से उसकी बेटी के साथ भोग-विलास कर सकेगा, दूसरा कि अब वह विरोधियों से निश्चिंत हो जाएगा। इसलिए वह कहता है- "अबे घसिए तू बहारी परदेशी हमने तुझे बख्शी यहाँ की सबसे ऊंची कुर्सी। जानते हैं क्यों? ताकि तमाम साजिशें खुद-ब-खुद कट जाएं, बलवाइयों की धज्जियां उड़ जाएं। ज्ज्स्तुम बाहरी आदमी हो परदेशी हो, हमारी दहलीज के टुकड़े खोर कुत्ते हो। तुम्हारी जंजीरे हमारे हाथ होंगी; तुम्हें भी तो जरूरत होगी। घासीराम तुम चितपावन ब्राह्मनों में बढ़कर ऐंठू होंगे, रोब गांठोगे, धाक जमाओगे। पुख्ता बंदोबस्त करोगे; यों हमारी फिक्र मिटाओगे। हमारी गलतियाँ भूलें तुम्हारे नाम होंगी, हम महफूज रहेंगे, बदनामियाँ तुम्हारी होंगी। करने को हम भुगतने को हमारा कोतवाल।"[5]

घासीराम कोतवाल में राजनीति के कुचक्रों का यथार्थ चित्रण किया गया है तथा उसमें व्याप्त विसंगतियों को उद्घाटित किया गया है। राजनीति, सत्ता और समाज के बीच का रिश्ता किस प्रकार संकुचित होता है यह घासीराम कोतवाल में साफ-साफ नजर आता है। वस्तुतः इस नाटक में एक योग्य स्वाभिमान व्यक्ति के अपमानित होने पर उसकी मनोदशा का यथार्थ चित्रण किया है। घासीराम जोकि मधुर भाषी व्यवहार कुशल व स्वाभिमानी व्यक्ति है। अपने भाग्य को आजमाने के लिए वह ऐसे समाज में पहुँच जाता है। जहाँ परिस्थिति उसे बदल देती है। वह कन्नौज से पूणा केवल धन कमाने व सम्मान प्राप्त करने के उद्देश्य से आता है। परंतु यहाँ पहुंचकर उसे केवल लोगों से अपमान व प्रताड़ना मिलती है। घासीराम के माध्यम से नाटक में दर्शाया गया है कि किस प्रकार पतनोन्मुख समाज में एक योग्य स्वाभिमानी व्यहवार कुशल व्यक्तियों का अपमान किया जाता है- "तू बाम्हन? दिखा तेरी चुटिया, कांधे की डुरिया, कहाँ है तेरे चंदन का टीका माथे का खौर? बोल क्या होता है वेद, चातुर्बनन के भेद? कोई उठाई गिरा दिखता है- चोर- उचक्का लगता है।"[6]

घासीराम के माध्यम से यह दिखाया गया है कि राजनीति में प्रतिशोध की भावना दूसरों के साथ-साथ व्यक्ति विशेष को भी समाप्त कर सकती है। पूना नगरी में अनेक बार अपमानित होने वाला घासीराम अब अपना

अपमान का बदला लेने के लिए दृढ़ संकल्प लेता है। यह संकल्प हिंसा का तांडव रूप धारण कर लेता है। हिंसा का यह तांडव सारी मानवीय संवेदना को तार-तार कर देता है। किसी भी काम के लिए परमिशन का होना जरूरी है यह कानून पारित कर दिया जाता है। जो कानून नहीं मानता तो उसे प्रताड़ना झेलनी पड़ती है। यथा- "लो आ गया ठिकान पर। काम ऐसा हो, पुख्ता। चोर और कुबूल न करे? ले जाओ इसको और दोनों हाथ काट के पटक दो शहर पूना की चौहद्दी के बाहर। स्साला बाम्हन और चोरी का पेशा। देखता हूँ कौन हिम्मत करता है चोरी करने की।"[7]

घासीराम युग में देखी जा सकती है कि- "कलयुग समाप्त भयो, घासीराम आ गयो।"[8]

इस नाटक में प्रतिशोध की हिंसा के दुष्परिणामों से परोक्ष रूप से उससे बचने का संकेत दिया गया है। प्रयाग शुक्ल के अनुसार- "तेंदुलकर के नाटकों में हिंसा-प्रतिहिंसा का खेल एक केंद्रीय थीम रहा है।"[9]

नाटक के वक्तव्य में ही स्पष्ट कर दिया गया है कि यह नाटक किसी विशेष स्थान व काल से नहीं जुड़ा है। बल्कि प्रत्येक स्थान व युग में वे घटनाएँ होती हैं जो कि आलोच्य नाटक चित्रित हैं। अत: यह कहा जा सकता है कि इस नाटक में अन्याय, अत्याचार की शासन व्यवस्था का चित्रण करके उसके दुष्परिणामों को दर्शकों के समक्ष प्रस्तुत किया गया है। और ऐसी शासन व्यवस्था से दूर रहने का संदेश दिया है जिसकी मानवीय संवेदना ही खत्म गई। ऐसी शासन व्यवस्था शक्ति का दुरुपयोग करती है और हर काम के लिए परमिट की बात करती है, चाहे इसमें किसी व्यक्ति की जान ही क्यों ना चली जाए। शासन का होना जरूरी है। यथा- "परमिट क्यों नहीं बनवाया? मालूमई नई था सिरकार की औरत के दिन रात में पूरे होएंगे। क्या? तेरी औरत और तू नहीं जानता कि कब जनेगी? औरत तेरी ही है न?"[10]

यह स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज की राजनीति का सच है जो इतना भयंकर रूप धारण कर चुकी है कि किसी की पीड़ा, वेदना, दुख, दर्द से उसे कुछ नहीं लेना बस उसे अपनी राजनीति बरकरार रखनी है। चाहे उससे लोगों को खुशी मिले या ना मिले ऐसी राजनीतिक व्यवस्था का यथार्थ रूप इस नाटक में प्रस्तुत किया गया है। शक्ति का ऐसा दुरुपयोग राजनीति में होता है। यह भली-भांति इसमें दिखाया गया है कि चाहे कोई गुनाह करें या ना करें जबरदस्ती अपनी बात कैसे मनवानी है। ये इस नाटक में दिखाया गया है। यह आज का भारतीय राजनीतिक यथार्थ है। जिसमें एक बार मनुष्य फँस जाए तो बाहर निकलना असंभव-सा है। स्वातंत्र्योत्तर भारत की राजनीति का यह रूप एकदम संवेदनहीन है जिसे मनुष्य के दुख व दर्द से कोई फर्क नहीं पड़ता। इसी को घासीराम कोतवाल में स्पष्ट रूप से दिखाया गया। राजनीति का ऐसा यथार्थ रूप प्रस्तुत किया है कि नाटक के आरंभ में ही यह राजनीति ऐसे घटिया तांडव को अभिव्यक्त करती चलती है। ब्राह्मण- गण चोरी छिपे बावनखनी में नर्तकी का नाच देखने जाते हैं। पूछने पर झूठ बोल कर अपने आप को बचाते पेशवा स्वयं वहाँ पहुँचकर समाज की पतितावस्था को सिद्ध करता है। पेशवा प्रधान नाना साहब फडनवीस को बावनखनी में नर्तकी गुलाबी के यहाँ चोरी छुपे जाते हुए दिखाया गया है। जोकि भारतीय राजनीतिक लोगों का यथार्थ सच है। यही लोग वेश्यावृत्ति को बढ़ावा देते हैं। चोरी छुपे भोग विलास के लिए रात में निकलते हैं ताकि किसी

को खबर तक ना हो उनका चरित्र एकदम दूध की तरह समाज के सामने धुला हुआ रहे। यथा-

"सूत्रधार: महाराज घर पर तै आय रहे?
ब्राह्मण: वै बावनखनी तौ जाय रहे-(चौंककर) लक्ष्मी हाय
हाय हाय हाय। गजब हो गयों ऐ-हमको अंबेर होय
रही दरसनन कौ। जाय रहे।"[11]

अत: समाज पूर्ण रूप से पतित हो चुका है। अंग्रेजी अधिकारियों की चाटुकारिता करना पारस्परिक द्वेष के चलते एक-दूसरे को झूठे आरोप में फंसाने का प्रयास करना आदि कार्यों से भारतीय राजनीति की पतनोन्मुखता पता चलता है। वस्तुत: विजय तेंदुलकर ने अपने नाटक में स्त्री के प्रति की गई हिंसा तथा सेक्स भावना को इसी व्यापक उद्देश्य के लिए एक रूपक या मुहावरे की तरह इस्तेमाल किया है। इस दृष्टि से विजय तेंदुलकर ने सत्ता या व्यवस्था के प्रति पुरुषों के मुकाबले स्त्रियों की त्रासदी का विश्लेषण किया। किस प्रकार से इस घिनौनी राजनीति में स्त्रियों का शोषण किया जाता है और उनसे ये राजनीतिक लोग अपनी कामवासना को पूर्ण होने पर उनकी हत्या तक कर देते हैं जिस प्रकार नाटक में नाना फडणवीस गोरी से अपनी कामवासना पूर्ण होने पर उसकी हत्या करवा देता है। जयदेव तनेजा का मत है- "एक ओर यह नाटक मध्यवर्ग की दमित वासनाओं वर्जनाओं और कुंठाओं से उत्पन्न होने वाली हिंसा के दायरे में जाने-अनजाने आ फंसी एक एक स्त्री की पीड़ा, छटपटाहट और यातना को उत्तेजक रूप में पेश करता है तो दूसरी ओर हमारे समाज में विविध स्तरों एवं स्थानों पर मौजूद पाखंड, ढोंग और दोगलेपन को भी तीव्रता के साथ उजागर करता है।"[12]

अत: कह सकते हैं कि घासीराम कोतवाल में सत्ताधारी वर्ग और जनसाधारण की संपूर्ण स्थिति का यथार्थ पूर्ण वर्णन किया गया है और यह दिखाया गया है कि हर काल और समाज में होते हैं, और मौका पाकर उसकी हत्या करने वाले भी होते हैं जो अपने राजनीतिक स्वार्थ के लिए दूसरों की हत्या तक करवा देते हैं और उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता। जो कि नाटक में एक जगह दिखाई देता है- "पुण्पत्तन निवासी नागरिकों! हमारी महानगरी पर छाया हुआ एक भयानक संकट आज टल चुका है। एक रोग मिट चुका है। आप सब लोगों को जिस नरकासुर ने लगातार परेशान किया, जीना दूभर कर दिया वह घासीराम कोतवाल अब मर चुका है, वध हो चुका है।"[13]

इस नाटक में सारा बल एक पतनशील राजनीति और विलासप्रिय व्यंग्य पर व्यंग करता है जो घासीराम कोतवाल को जन्म देता है वही अपनी स्वार्थ पूरा होने के बाद उसकी हत्या तक करवा देता है। यह एक ऐसी गंदी राजनीति है जिसमें कि मनुष्य की जान की कोई कीमत नहीं रह गई है। जिस राजनीति ने घासीराम कोतवाल को अपने स्वार्थ के लिए जन्मा उसी ने उसकी हत्या तक करवा दी यह स्वातंत्र्योत्तर भारत की राजनीति का एक घिनौना और यथार्थ पूर्ण सच है, जिसे नकारा नहीं जा सकता।

निष्कर्ष: कहा जा सकता है कि इस नाटक में भारतीय राजनीतिक मूल्यों और सामाजिक समस्याओं का यथार्थ पूर्ण चित्रण किया गया है। इस नाटक में दिखाया गया है कि किस प्रकार सत्ता अपने स्वार्थ के लिए किसी

भी व्यक्ति को फँसा कर, उसे काम निकल जाने पर उसकी हत्या करवा दी जाती है। यह नाटक मनुष्य को सतर्क रह कर, ऐसे सत्ताधारी लोगों से बचना चाहिए। अंततः कहा जा सकता है कि घासीराम कोतवाल नाटक एक स्वतंत्रता के पश्चात् विघटित राजनीतिक मूल्यों का दस्तावेज है।

संदर्भ सूची

1. भारतीय साहित्य, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, पृ.294
2. विजय तेंदुलकर, घासीराम कोतवाल, पृ.5
3. वहीं, पृ. 7
4. वहीं, पृ. 53
5. वहीं, पृ. 49
6. वहीं, पृ. 38
7. वहीं, पृ. 72
8. वहीं, पृ. 73
9. रंगतेंदुलकर, प्रयाग शुक्ल, पृ. 11
10. विजय तेंदुलकर, घासीराम कोतवाल, पृ. 28
11. वहीं, पृ. 62
12. आधुनिक भारतीय रंगलोक, जयदेव तनेजा, पृ. 91-92
13. विजय तेंदुलकर, घासीराम कोतवाल, पृ. 98

अमृत नारीवाद से आज़ादी

साक्षी शर्मा
बी.कॉम (आनर्स) तृतीय वर्ष

स्त्री और पुरुष में समानता ढूँढना ही सबसे बड़ी गलती है। एक गुलाब के फूल की पंखुड़ी एक स्त्री की ही भाँति होती है और उसकी रक्षा करती एक कांटेदार टहनी एक पुरुष की भाँति। अब पुरुष को इस बात से आपत्ति नहीं होगी कि उसे एक कठोर, चुभन देने वाली वस्तु से जोड़ा जा रहा है परंतु एक स्त्री को आपत्ति जरूर होगी कि उसे पंखुड़ी के जैसा कमजोर क्यूँ आँका जा रहा है। क्योंकि हमेशा से ही पुरुष स्त्री को सुरक्षा देने की कोशिश करते आए हैं। एक पिता अपनी बेटी को समाज की कुटिल, बेईमान, और कुदृष्टि से बचाने की कोशिश करता है, मगर बेटी इस सुरक्षा को बंधन समझने की भूल कर बैठती है और फिर न अपनी मर्यादा की परवाह करती है न तात के पगड़ी की स्त्री को गुलाब की पंखुड़ी जैसा समझना उसे कमजोर बताने के लिए नहीं है बल्कि कुछ अच्छे गुणों से उसे जोड़ने की है। इस उपमा को ध्यान से समझें तो पंखुड़ी निर्बलता नहीं, सुंदरता, सौम्यता, सुगंध, कोमलता, स्नेह, ममता, सुख और मासूमियत की सूचक है। और इन गुणों को सहेजने की और सुरक्षित रखने की जिम्मेदारी एक पुरुष कठोर कोटेदार बनकर निभाता है। अब अगर गुलाब की पंखुड़ियाँ खुद को कमजोर समझ कर ताकतवर बनना चाहे, बिल्कुल टहनी की ही तरह कांटेदार बनना चाहे तो इस समाज में ममता, मासूमियत भला कहाँ पाई जाएगी। 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:'

भारत के शास्त्रों में स्त्री को हमेशा से ही उत्तम दर्जे पर रखा गया है। नवरात्रों में कन्या पूजन, एक लड़की का जन्म मतलब घर में लक्ष्मी का आगमन, शिव शक्ति का नाम एक साथ जुड़ा रहना, कृष्ण के पहले राधा को पुकारना, हिन्दू समाज तो हमेशा से ही स्त्री को पूजनीय मानता है, मगर स्त्री इस उत्तम दर्जे को त्याग कर पुरुषों की भांति बनने की इच्छा रखने लगी है। प्रेम और सरलता से भरे जीवन को त्याग कर कठिन कामों में स्वयं को उलझाने को तैयार है, भला इसे हम नारीवाद कैसे कह सकते हैं जहाँ स्त्री अपना जीवन दुर्गम बनाने को आतुर है। पुरुषों ने कभी स्त्री की भांति स्वयं को पूजनीय बनाने की कोशिश नहीं की, मगर एक समझदार स्त्री पतिव्रता नारी पुरुष को पूजनीय सम्मान देने से पीछे नहीं हटती। और ये मानवीय रिश्तों को प्रेम और आदर से भरता है। पुरुष और प्रकृति को एक जैसा समझना या इनकी तुलना करना एक बड़ी गलती है. इसके बदले अगर इनकी भिन्नता को ध्यान मे रख कर दायित्व सौंपे जाएँ- तो समाज की समृद्धि कितनी सरल होगी। मातृत्व का कत्ल आधुनिकता की तरफ बढ़ता हमारा समाज ये भूल रहा है कि ये आधुनिकता हमें श्रेष्ठ नहीं बनाती बल्कि इसका बुरा प्रभाव हमारी संस्कृति, संस्कार, और हमारी विरासतों पर पड़ता है। इससे हमारी सोचने समझने की क्षमता प्रभावित होती है। हम आधुनिकता के दास बनने लगते हैं।

आज गर्भपात का निर्णय लेना एक सधवा स्त्री के लिए आज़ादी और खुले मिजाज होने का सूचक है। स्वयं

को स्वयं के शरीर का स्वामी समझ कर ऐसा निर्णय लेने को स्त्री समझदारी समझने लगी है। और इस तरह के नीच निर्णय को बढ़ावा देता है नारीवाद। मातृत्व के कत्ल को बढ़ावा देना नारीवाद का एक अहम मकसद है। ममता की हत्या भला नारीशक्ति का उदाहरण कैसे हो सकती है। संसार की सबसे बड़ी जिम्मेदारी है जननी बनना और ये केवल एक स्त्री ही निभाने की क्षमता रखती है तो क्या ये दायित्व एक स्त्री को अपने आप ही संसार में सबसे शक्तिशाली नहीं बनाता? इससे छुटकारा पाना भला समझदारी कैसे?

नारीवाद चीखने वाली महिलाओं को शिवाजी महाराज की माता, जीजाबाई की कहानी जरूर पढ़नी चाहिए। वह असल मे नारीशक्ति की उदाहरण हैं। उन्होंने शिवाजी महाराज के व्यक्तित्व का निर्माण किया था। शिवाजी महाराज ने अपने मस्तिष्क और सैन्य शक्ति का इस्तेमाल करके मुगलों को अच्छी धूल चटाई थी। आज शिवाजी महाराज के शौर्य को इतिहास में सुनहरे अक्षरों में लिखा जाता है और उनके इस शौर्य का श्रेय उनकी माता के दिए संस्कार और परवरिश को जाता है क्या ये एक असल नारीवाद नहीं? जहाँ एक स्त्री अपने पुत्र को इतना काबिल बनाने की क्षमता रखती है कि वह अपने राष्ट्र हित में इतने साहस भरे प्रदर्शन करे और अनेकों युद्ध में विजयी हो। एक स्त्री अपनी ममता और तेज बुद्धि से पूरे समाज का कल्याण करने की क्षमता रखती है। क्या स्त्रियों को अपने इस बल का सही प्रयोग नहीं करना चाहिए? नारीवाद स्त्रियों को कमजोर करने की एक साजिश है और उपहासनीय बात ये है कि इस साजिश में महिलायें स्वयं शामिल हैं।

पंडित रमाबाई का गुमराह करने वाला नारीवाद

नारीवाद के इतिहास में कई लोगों ने असल में नारियों के हित में काम किया है, मगर एक शख्सियत पंडिता रमाबाई रहीं जिन्हें नारीवाद की गलत समझ थी और इसकी आड़ में गलत फैसला भी लिया। उनका मानना था कि हिन्दू समाज में महिलायें प्रताड़ित की जाती हैं, और इसी कारण से उन्होंने स्वयं को ईसाई धर्म में परिवर्तित कर लिया। हिन्दू समाज में विधवा स्त्री का पुनर्विवाह न होना और सती प्रथा का प्रचलन उन्हें नहीं भाता था। उनका मानना था कि हिन्दू समाज एक विधवा स्त्री को दोबारा विवाह करने की अनुमति नहीं देता और सती जैसे कुप्रथा को जबरन थोपता है।

एक ब्राह्मण कन्या होने के बावजूद पंडिता ने कभी शास्त्र पढने की कोशिश नहीं कि बजाए इसके उन्होंने एक नारी को पूजने वाले धर्म का त्याग करना सही समझा। अथर्ववेद (9, 5, 27)

या पूर्व पति विश्वाऽथान्यं विन्दतेऽपरम् ।
पञ्चौदनं च तावर्ज ददातो न वि योषतः॥

पति की मृत्यु के बाद दूसरे पुरुष से विवाह करने वाली स्त्री को पंचदिन यज्ञ करना चाहिए। यह मंत्र स्पष्ट रूप से विधवा के पुनर्विवाह की बात करता है या पूर्व पति–

वित्त्वाऽथान्य विन्दतेऽपरम्।
पञ्चौदनं च तावजं ददातो न वि योषतः।

पति की मृत्यु के बाद दूसरे पुरुष से विवाह करने वाली स्त्री को पंचदिन यज्ञ करना चाहिए। यह मंत्र स्पष्ट रूप से विधवा के पुनर्विवाह की बात करता है पाराशर स्मृति (4.30)

नष्टे मृते प्रव्रजिते क्लीबे च पतिते पती।
पञ्चस्वापत्सु नारीणां पतिरन्यो विधीयते॥

इसमें कहा गया है कि ऐसे 5 मामले हैं जब एक महिला पुनर्विवाह कर सकती है। पति मर गया, सन्यासी हो गया, नपुंसक हो गया, धर्म से गिर गया, या भाग गया।

इसी तरह मनुस्मृति में भी महिला के पुनर्विवाह की बात की गई है–

प्रोषितो धर्मकार्यार्थं प्रतीक्ष्योऽष्टौ नरः समाः।
विद्यार्थी षड्यशोऽर्थं वा कामार्यं वस्तु वत्सरान्॥

महिलाओं को अलग-अलग समय अवधि के लिए इंतजार करना चाहिए (जैसा कि विभिन्न उद्देश्यों के लिए उल्लेख किया गया है। उसके बाद, वे किसी अन्य व्यक्ति को चुन सकते हैं। और अब अगर बात सती प्रथा की है तो ये पूर्ण रूप से महिलाओं के निर्णय पर निर्भर करता था की वह अपने पति के साथ अग्नि समाधि लेना चाहेगी या नहीं। उदाहरण के लिए हम महाभारत में पांडु की मृत्यु के बाद उनकी पहली पत्नी कुंती और दूसरी पत्नी मादी के अलग-अलग निर्णय को देख सकते हैं। मादी ने अपने पति की मृत्यु के बाद अपना देह त्याग दिया था मगर कुंती अपने 3 पुत्र और मादी के 2 पुत्रों का पालन-पोषण करने की जिम्मेदारी लेती है यहाँ उस पर सती होने का दबाव नहीं बनाया गया। बल्कि ऋग्वेद में एक कथा में पाया जाता है कि एक स्त्री जो अपनी इच्छा से सती होना चाहती थी उसको उसके रिश्तेदार और परिवार के लोग पूरी कोशिश करके रोकते हैं।

समाज में खोट ढूँढने के जगह अगर पंडिता ने शास्त्रों को पढ़ने की कोशिश की होती तो वह कितनी स्त्रियों के कल्याण का माध्यम बन सकती थीं।

भारत पुरुष प्रधान देश कभी नहीं था। भारत के इतिहास में शिव शक्ति कभी अलग नहीं पाए गए, न कभी नारायण लक्ष्मी बिन देखे गए। मगर दोष निकालने वाले तो हर जगह ही खोट पाते हैं। ऐसे में अमृत नारीवाद को बढ़ावा देने वाले लोगों से समझदारी की उम्मीद व्यर्थ ही होगी। एक स्त्री स्वयं को कितना भी शक्तिशाली समझे मगर सुरक्षा के लिए वह एक बार पुरुष की ओर देखती जरूर है। अपनी सुरक्षा के लिए स्त्री अपने बड़े या छोटे भाई, पिता, पति या दोस्त की तरफ जरूर देखती है। कॉलेज जाने वाली लड़कियां अपने भाई को कई बार साथ ले जाती हैं। मगर कभी कोई लड़का अपनी सुरक्षा हेतु अपनी बहन या पत्नी को दफ्तर नहीं ले जाता। इससे स्त्री कमजोर साबित नहीं होती अपितु इससे हम पुरुषों का स्त्री के जीवन में एक अहम महत्त्व समझ सकते हैं। कुछ समझदार लोगो का व्यंग भी हो सकता है कि क्या स्त्री लड़ना नहीं जानती? क्या स्वयं की रक्षा के लिए वह हमेशा ही पुरुष पर निर्भर रहती है? तो हाँ, ऐसा ही है अपने कठिन समय में स्त्री अपने आई पिता या पति की कमी महसूस जरूर करती है।

महिलायें सेना में भी भर्ती हो रही हैं मगर सेना में भर्ती होने के लिए वह कठिन परिश्रम, और प्रयासों के बाद उस काबिल बन पाती है, हर स्त्री इतना परिश्रम और प्रयास करने में सक्षम नहीं। मगर प्राचीन काल में भारतीय महिला शस्त्र और शास्त्र दोनों का ही ज्ञान रखती थी। असल में नारीवाद स्त्री को शक्तिशाली बनाने की तरफ होना चाहिए मगर आधुनिक नारीवाद स्त्री को हठी बनाने की तरफ जोर देता है नारीवाद का झंडा फहराने के लिए स्त्री स्वयं को मुसीबतों में डालना सही समझ रही है और इन मुसीबतों से अगर कोई पुरुष (पिता, भाई, पति आदि) उसे बचाना चाहे या रोकना चाहे तो वो उसे बंधन समझ कर आजादी पाने की कोशिश करने लगती है। अपनी मर्यादाओं को हाथों की हथकड़ी समझना आज के समय मे स्त्री की सबसे बड़ी गलती है।

एक हैरान करने वाली बात यह है कि जिस भारत पर पुरुष प्रधान होने का आरोप लगाया जाता है, उस भारत के साथ हमेशा माता शब्द ही जुड़ा मिलता है और उसी भारत का संविधान एक पुरुष को यौन उत्पीड़न का पीडित मानने से इंकार करता है। भारत की तमाम कचहरी हमेशा से महिलाओं द्वारा पुरुष के खिलाफ हुए अपराधों को नजरंदाज करती आई है। तलाक के बाद भी पुरुष चाहे विकलांग हो, बेरोजगार हो या किसी भी दुविधा में हो, मगर अपनी पत्नी को पैसे देना उसका दायित्व बन जाता है, और उसे उसके अपने बच्चों से भी मिलने की कई बार इजाजत नहीं होती। इतना सब कुछ हर रोज ही होता है इस ''पुरुष प्रधान समाज में और नारीवाद के झंडे फहराने वाली स्त्री या पुरुष इस मामले में कुछ भी नहीं बोलना चाहते।''

नारीवाद का मकसद नारियों का अधिकार न रहकर नारीत्व से छुटकारा पाना हो चुका है। कैसी विडंबना है कि आज नारी अपने अस्तित्व को त्याग कर अपने आप को नारीशक्ति समझने लगती है।

स्त्री द्वारा अपने असल अस्तित्व को त्याग कर पुरुष की भांति समाज में रहने की इच्छा सामाजिक संतुलन को बिगाड़ने का काम कर रही है, साथ ही हमारी जीजाबाई, कर्णावती, रानी लक्ष्मीबाई जैसी वीरांगनाओं के गौरव भरे उदाहरणों का उपहास बनाने का काम कर रही है। अपने भाई पिता या पति के जैसे बनने की इच्छा स्त्री को कमजोर करती जा रही है। स्त्री ये स्वयं साबित कर रही है की स्त्री होना एक कमजोरी है और इस कमजोरी से अर्थात् स्त्रीत्व से छुटकारा पाना ही इसका एकमात्र हल है।

पुरुषों की भांति कपड़े पहनने से नारी का नारीत्व खत्म नहीं होता, मगर पांच मीटर की साड़ी में प्रतिष्ठा बांध लेना सिर्फ उसी को ही आता है और इस सहज प्रथा को आगे बढ़ाना स्त्री का ही तो दायित्व है। एक समाज रूपी वाहन के दो चक्के हैं स्त्री और पुरुष, अब अगर स्त्री अपनी जगह छोड़ कर पुरुष की जगह रह कर वाहन को आगे बढ़ाना चाहे तो दुर्घटना लाजमी है। स्त्री और पुरुष में कर पुरुष की जगह रह कर वाहन को आगे बढ़ाना चाहे तो दुर्घटना लाजमी है। स्त्री और समानता ढूँढना ही सबसे बड़ी गलती है। पुरुष नारीवाद का मकसद पुरुष से बराबरी करना हमेशा से नहीं था। पहले महिलाएँ अपने अधिकार के लिए नारीवाद का सहारा लेती थीं और यह एक कारण था की स्त्रियों की सहायता के लिए देश विदेश के नागरिक उनका सहयोग करते थे आज भी कोई स्त्री अगर अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाए या किसी शोषण के खिलाफ खड़ा होना चाहे तो संसार के कोने-कोने से उसे तरह तरह के सहयोग मिलते हैं। परंतु क्या इसको एक अवसर बना कर पुरुषों के मुकाबले स्वयं को हर क्षेत्र में आगे हो जाना और पुरुषों को कम आंकना या उन्हें नीचा दिखाना सही है?

क्या नारीवाद के मुखौटे में महिलाओं का अपने पिता, पति या बड़े भाई आदि पुरुषों की गरिमा को ठेस पहुँचा कर स्वयं को नारीशक्ति का प्रतीक समझना सही है?

एक महिला अपने दम पर एक परिवार, एक समाज और पूर्ण एक राष्ट्र चलाने की शक्ति रखती है। मगर इसे साबित करने के लिए अकारण अपने पति से या अपने परिवार से अलग होना समझदारी नहीं। नारीवाद से समाज को तब तक खतरा नहीं जब तक महिलाएं अपने सही अधिकारों के लिए आवाज उठाएं। जिस क्षण से महिलाएँ इस संतुलित समाज को पुरुष प्रधान समाज मान कर इसमें महिला प्रधानता लाने की सोचने लगती हैं, समाज की वृद्धि में रुकावट निश्चित हो जाती है।

एक सफल गृहस्थी तब नहीं बस्ती जब घर में माता-पिता आपस में प्रधानता पाने को लड़ते रहे। वह तब सफल होती है जब माँ-पिता की बड़ी उम्र ज्यादा तजुर्बा और सही फैसले लेने की क्षमता का मान रख कर उनके कुछ फैसलों में मुस्कुरा कर हामी भरती है। माँ का चुपचाप मुस्कुरा कर सर हिला देना पिता की प्रधानता नहीं दर्शाता। यह दिखाता है माँ का पिता के सही निर्णय लेने की क्षमता पर विश्वास और ये विश्वास माँ को समाज की एक कमजोर स्त्री नहीं बनाता। यह विश्वास पिता को समाज का शक्ति संग पुरुष बनाता है, जिससे घर की सुरक्षा और वृद्धि की नींव डलती है।

ऐसा नहीं है कि मां का अहम फैसलों में बोलना अनिवार्य नहीं, परंतु हर बात पर पिता से बराबरी की इच्छा रखना एक तरह से बचपना भी है और दोनों के रिश्ते को कमजोर करने की कड़ी भी इस बात को समझना ज्यादा समझदार लोगों के लिए ज्यादा कठिन होगा मगर फिर भी एक कोशिश उन्हें समझाने की ऐसे भी की जा सकती है कि सूरज का सूरज बन कर चमकते रहने में ही भलाई है, अपना अस्तित्व त्याग कर अपने दायित्व को छोड़ना और चंद्र बनने की इच्छा रखना केवल उसके अस्तित्व का ही नहीं अपितु संपूर्ण सौर्य मंडल के विनाश का भी कारण बन सकता है।

माँ दुर्गा सम्पूर्ण संसार की जननी है, शक्तिशाली हैं, अनेक रूपों की स्वामिनी हैं मगर स्वयं की कभी भगवान शंकर से तुलना नहीं करती। माँ दुर्गा की अपनी भिन्न शक्तियाँ हैं और भगवान शिव की अपनी भिन्न शक्तियाँ ऐसे में दोनों की तुलना करना मला समझदारी कैसे? दोनों के मध्य कभी कोई प्रतिस्पर्धा नहीं होती और यही एक कारण है कि शिव शक्ति मिल कर इस संसार को संकट से बचाने में सक्षम है। अगर स्त्री और पुरुष एक-दूसरे से प्रतिस्पर्धा की भावना त्याग कर समाज कल्याण में मिल कर, अलग-अलग दायित्व उठायें तो मानव समाज हमेशा ही फलता-फूलता रहेगा।

दासनी

शिव कुमार यादव
बी.ए. (प्रोग्राम) द्वितीय वर्ष

तब की नारी, आज की नारी और कल की नारी, अरे अनुर्वर की कन्या कहाँ मर गई, गूंगी बोलती क्यों नहीं कि कहाँ मर रही है। कि सिर दर्द कर देने वाली आवाज से माजा देवी की रोजाना की तरह सुबह हुई अब माजा देवी को इसकी आदत हो गई थी। माजा देवी उठते ही रोजाना की तरह भगवान से दुआ करने लगी की आज दासनी को बचा लेना!

माजा देवी की सुबह की शुरूआत दासनी के लिए बचाने की दुआ मांगने से होती और रात को उसको शक्ति देना भगवान कि वह सुबह उठ सके। कला देवी की आवाज की अब परिवार के सभी लोगों को आदत सी हो गई थी। कला देवी जैसे ही गुस्से में आती सब को पता चल जाता था कि पिटाई तो दासनी की ही होगी।

दासनी ने गाय को सानी लगाने के बाद बकरी को जैसे ही पत्ते खाने को दे ही रही थी, वैसे ही कला देवी ने दासनी के हाथ को पकड़ते हुए अचानक से धक्का दिया। उसका सर लापेद में जाकर लगा, गाय जो सानी खा रही थी वह भी रुक गई मानो सब समझती हो। रुके भी क्यों नहीं, गाय को अपने बच्चे की तरह दासनी ने पाला और भूसी भी खड़ी हो गई! दासनी की बकरी जो उसकी बचपन की सहेली कहें तो यह बकरी पर दासनी के लिए तो उसकी बहन थी।

कला देवी का पूरा परिवार कला देवी के चीखने की आवाज सुनते ही दुरा पर आ गया। माजा देवी जो की जेठानी थी वह सबसे पहले आते हुए अपने दुरे से कला देवी की दुरे पर देखते हुए सोचा फिर आज डायन बेचारी को मारेगी, बेचारी की प्रभु रक्षा करना, दया राय जो माजा देवी का पति और कला देवी का जेठ था वह भी अपने दुरे पर से सब देख रहा था। कला देवी का पहला हाथ दासनी को लगते ही उसकी बेटी मृत्युजा आ गई और सोच रही थी कर्मजली मुझे भतीजा तो दे नहीं सकती, माँ के हाथ में रोज दर्द और देती है पता नहीं कब मरेगी?

कला देवी जो अपने पूरी ताकत से दासनी पे हाथ उठा रही थी और दासनी के मुँह से कुछ भी नहीं निकल रहा था, मानो उसके आँखों में सारा दर्द समा गया हो। थोड़ी देर में कला देवी का बेटा अनुर्वर भी आ गया। अपनी माँ की चिल्लाने की अवाप्त सुनकर दासनी ने आशा भरी और सहायता भरी नजरों से अपने पति अनुर्वर की ओर देखा, मानो उसकी आँखें चीख-चीख कर अनुर्वर से खुद को बचा लेने की भीख माँग रही हो।

अनुर्वर गुमशुदा मूर्ति की तरह खड़ा होकर सब कुछ देख रहा था! मानो उसका शरीर तो यहाँ है और उसका ध्यान कहीं और हो। दासनी को अपने पति में आज अपने पिता की छवि दिख रही थी। क्योंकि जब उसकी

विमाता उसे बिल्कुल ऐसी ही मारती तो वह अपने पिता की ओर भी ऐसे ही आशा-भरी आँखों से देखती थी। पर उसका कसूर क्या था, उसका उत्तर ना तो उस दिन मिला था ना ही आज जिला है? आचनक करुणा मृत्युजा की बेटी ने कलादेवी का हाथ पकड़ते हुए अरे मामी की जान ले लोगी क्या? अरे सुबह ही हुआ है अभी, अगर अभी से यह खटिया पर बैठ गई तो घर का काम कौन करेगा? करुणा की ऐसी बात सुनकर कला देवी के हाथ बरसना बंद तो गए पर दासनी से उठा नहीं जा रहा था। पर जैसे-तैसे दासनी हिम्मत करके उठी। किसी प्रकार वह उठी और सब के लिए चाय बनाने चली गई। सभी लोग अपने काम में जुटने के लिए तैयार हो रहे थे। दासनी जो खाना बनाने में लग गई। दासनी जो सोचती थीं चाहे कुछ भी क्यों न हो जाये, पर कोई घर से भूखा न जाये, क्योंकि अगर आप घर से खाना खाकर चलोगे तो ही बाहर भी खाना मिलेगा। अगर आप खुद भूखे घर से जाओगे तो बाहर भी खाना नहीं मिलेगा। दासनी जिसका रोजाना का संकल्प होता था न तो कोई घर से भूखा जाए और न ही कोई भूखा सोये। उधर माजा देवी ने भगवान का धन्यवाद किया की आपने दासनी को बचा लिया। उपर वह भी अपने काम में लग गई।

इधर अनुर्वर ने दासनी को आवाज लगाई। अरे पीठ कौन तेरा बाप रगड़ेगा? अनुर्वर कल पर नहा रहा था। री रोटी सेक दासनी आखिरी रोटी सेंक कर रखते हुए दौड़ी कल की तरफ। तभी अनुर्वर ने गुस्से में कहा इतनी देर क्यों हुई? चल पीठ रगड़। दासनी पीठ रगड़ने लगी। ज्यों ही पीठ रगड़ती त्यों ही पानी डालती ताकी मैल छूट सके परंतु उसके हाथ में जो फोका हो गया था रोटी सेकने से हाथ पर पानी पड़ते ही उसे दर्द होता मानो कोई सुई चुभा रहा हो। पर उसका हाथ एक बार भी नहीं रुकता। मानो कर्तव्य निष्ठा से भरी हो। यह कैसा कर्तव्य है? जो दर्द से बड़ा है। दासनी अब घास काटने जाने ही वाली थी। तभी माजा देवी की आवाज आ गई अरे दासनी घास काटने नहीं जाना था, आज फिर देवरानी के हाथ बरस गये। यह बात माजा देवी कला देवी को देखते कहती है और कला देवी माजा देवी को ऐसे देखती है मानो कला देवी वह बिल्ली हो यह कर भी माजा देवी जैसी चुहिया का शिकार नहीं कर सकती हैं, क्योंकि कला देवी नामक बिल्ली ने माजा देवी नामक चुहिया को जहर से भरी मिठाई देख रखा हो! ऐसे में बेचारी बिल्ली क्या करे? जब उसे पता हो जो चुहिया उसके सामने इतनी उछल रही है और उसे उकसा रही थी कि उसे खा ले। मगर बिल्ली उसे चाहकर भी नहीं खा सकती। क्योंकि नुकसान उसी का होगा। यहाँ जहर से तात्पर्य उस पाप या गलती से है जिसे माजा देवी जानती थी और कला देवी को अच्छी तरह पता था! अगर माजा देवी को कुछ भी कहे तो माजा देवी बहुत कुछ कह देगी जो कला देवी को गूंगी भी बना सकती थी। चलो दासनी आ गई और कला देवी और माजा देवी के आँखों से जो अतीत के पन्ने बयान कर रहे थे उसमें अचानक रुकावट सी आ गई। दासनी कहती है छोट की मायो चलवाई नाये घास कटाय -ल। माजा देवी कहती है अरे अपनी बहन (भूली) बकरी को तो खोल पहले, दासनी भूली (बकरी) खोलती है और माजा देवी के साथ घास काटने चलने लगती है। दासनी घास काटते हुए देखती है कि भूली घास नहीं चर रही है, तभी दासनी भूली के घास जाकर खाती है, अब पता चला महारानी घास क्यों नहीं चर रही! अरे लाई हूँ तेरे लिए रोटी, यह ले रोटी खा ले पर भूली ने मुँह उधर कर लिया। तू नाराज है दासनी ने कहा, भूली की आँखों में आँसू आ गये। दासनी ने कहा तू नहीं खायेगी तो मैं भी नहीं खाऊगी। माँ ऊपर देख रही होगी तो उन्हें कितना दु:ख होगा कि मैंने तेरा ख्याल

नहीं रखा। भूली की आँखें मानो यह कह रही हों कि मैंने तो अपनी माँ को नहीं देखा, मैंने तुझे ही माँ-बहन माना, मैं तुझे पिटते कैसे देख सकती हूँ! माँ मुझे तो देख रही होगी न वह माँ जिसने माँ की तरह प्यार दिया मैं उसकी बेटी को नहीं बचा सकती।

माजा देवी सोच रही थी दोनों को देखते हुए कि इस कलयुग में इंसान इंसान की भाषा नहीं समझता वहाँ एक जो बोल सकती है वह चुप है और जो नहीं बोल सकती उसकी भावना बहुत कुछ बोल रही है। माजा देवी दासनी को बुलाते हुए कहती है अरे तेरी बहन ने खा लीया तो हम से भी रोटी पूछ ले 'दासनी जी काकी'! दोनों खाना खा कर घास लेकर घर को आते हैं! दासनी कुट्टी काटती है और देखती है कि राधा (गाय) ने सुबह की सानी नहीं खाई है। दासनी सानी में घठा मिला देती और राधा के सिर हाथ रख कर कहती है 'खा ले ना माँ ऊपर से देख रही है' वह क्या कहेगी और राधा तुरंत खाने लगती है। भूली दासनी को अंदर जाते हुए देखती है और बैठ जाती है 'मानों कुछ सोच रही हो'! दासनी रात के खाने की तैयारी मे जुट जाती है! सभी ने खाना खाया और अंत मे दासनी को हमेशा की तरह सिर्फ मक्के की रोटी खा कर गुजारा करना पड़ा।

रात को सोने से पहले दासनी अनुर्वर के पैर को दबाती है फिर दिन भर की थकान में चूर होकर सो जाती है। थकान आधे पेट खाने से बड़ा था इसलिए अब आदत सी बन गई थी। माजा देवी सोने से पहले ईश्वर से दुआ करती है हे ईश्वर दासनी को सुबह उठने की शक्ति देना, प्रभु शक्ति देना। 365 दर्द भरे दिनों मे से एक दिन और कट गया।

''नारी की करुणा अंतर्जगत का उच्चतम विकास है, जिसके बल पर समस्त सदाचार ठहरे हुए हैं।''

''स्त्री जिससे प्रेम करती है, उसी पर सर्वस्व वार देने को प्रस्तुत हो जाती है।''

-जयशंकर प्रसाद

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

शबनम बानो
हिंदी (विशेष) तृतीय वर्ष

ब्रिटिश उपनिवेश भारत की मद्रास रेसीडेंसी में बंगाल की खाड़ी से सटे सबसे समुद्रीय जिले रामेश्वरम के 'धनुषकोडी गांव' में जैनुलाब्दीन और आशियम्मा के घर पांचवें और सबसे छोटे बच्चे का जन्म 15 अक्टूबर 1931 को हुआ। नाम रखा गया अब्दुल कलाम। कलाम का जन्म एक मध्यमवर्गीय तमिल मुस्लिम परिवार में हुआ था। उनके पिता समुद्र में मछली पकड़ने वाले मछुआरों को नाव किराए पर देने का कार्य करते थे। और नाव बनाकर बेचते थे। समुद्रीय लहरों में नावों के टूट जाने से घर की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं रही तो अब्दुल कलाम ने अपने चचेरे भाई की सलाह पर उनके साथ घर की आर्थिक स्थिति में सहायता देने के लिए 8 वर्ष की उम्र में अखबार बाँटने का कार्य किया।

अब्दुल कलाम की शिक्षा:

कलाम की पढ़ाई के प्रति लगन और कर्मठशीलता को देखते हुए आरंभिक शिक्षा गांव के पंचायती विद्यालय से पूर्ण करने के बाद उनके पिता ने उन्हें मद्रास भेज दिया। वहाँ कलाम ने 1950 में अंतरिक्ष विज्ञान में स्नातक के लिए 'मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलजी' में प्रवेश लिया। स्नातक करने के बाद कलाम ने वरिष्ठ वैज्ञानिक सहायक के रूप में रक्षा मंत्रालय के तकनीकी केंद्र में नौकरी की। इनको विभिन्न संस्थाओं और विश्वविद्यालयों द्वारा 46 डॉक्टरेट की उपाधियों से सम्मानित किया गया।

अब्दुल कलाम का वैज्ञानिक सफर:

कलाम के वालिद समुद्र किनारे नाव बनाने का काम करते थे। कलाम उनको खाना देने जाते थे समुद्र किनारे 8 साल का अबोध बालक पिता को नाव बनाते हुए और समुद्र के ऊपर उड़ने वाले हवाई जहाजों को देख कर सोचता था मुझे भी पायलट बनना है। कलाम अपनी आत्मकथा 'अग्नि की उड़ान' में लिखते हैं कि "बचपन से मैंने मशीन संभालने और उड़ाने का एक सपना देखा था। पायलट बनना मेरा प्रिय सपना था।"

इसीलिए स्नातक के बाद कलाम ने भारत सरकार के दो संस्थानों: वायुसेना और रक्षा मंत्रालय में आवेदन किया। इनके साक्षात्कारों के लिए उनको दिल्ली और देहरादून जाना पड़ा। दिल्ली में साक्षात्कार देने के बाद वो देहरादून गए वहाँ साक्षात्कार में पिछड़ गए जिसका उनको बहुत गहरा दु:ख हुआ। क्योंकि पायलट बनना उनका सपना था।

थके हुए मन से दिल्ली आ कर रक्षा मंत्रालय के तकनीकी केंद्र (उड्डयन) में वरिष्ठ वैज्ञानिक सहायक के पद पर 250 रुपए प्रति महीने के वेतन के साथ अपने वैज्ञानिक जीवन की शुरूआत करते हैं।

1. सन् 1960 ई. में भारतीय रक्षा अनुसंधान एवं विकास संस्थान से जुड़े।
2. सन् 1963 ई. में नासा के 'लैंग्ले रिसर्च सेंटर (LRC)' और 'गोराड्र स्पेस फ्लाइट सेंटर (GSFC) गए।
3. सन् 1972 ई. में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) से जुड़े।
4. सन् 1982 ई. में पुनः भारतीय रक्षा अनुसंधान एवं विकास संस्थान से निर्देशक के रूप में जुड़े।
5. सन् 1985 ई. में त्रिशूल, 1988 में पृथ्वी, 1889 में अग्नि आदि मिसाइलों का प्रक्षेपण।
6. सन् 1992-1999 ई. तक रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार।
7. सन् 1998 ई. पोखरण परमाणु परीक्षण।

इन्हीं सभी प्रमुख कार्यों के लिए डॉ. कलाम को 1981 में 'पद्म भूषण', 1990 में पद्म विभूषण और 1997 में भारत रत्न से सम्मानित किया गया।

राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलामः

सन् 1998 में अटल बिहारी वाजपेयी जी ने प्रधानमंत्री बनते ही अब्दुल कलाम को अपनी मंत्रिमंडल में शामिल होने का निमंत्रण दिया। कलाम ने अपने परमाणु परीक्षण के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए मंत्रिमंडल में शामिल होने से मना कर दिया। इसके दो महीने बाद कलाम ने राजस्थान के पोखरण में प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी और उनकी मंत्रिमंडल के सदस्यों के सामने सफल परमाणु परीक्षण किया। अटल बिहारी वाजपेयी जी ने ही प्रधानमंत्री रहते हुए 2002 में डॉ. अब्दुल कलाम के नाम को राष्ट्रपति के लिए प्रस्तावित किया। डॉ. कलाम नब्बे प्रतिशत मतों से भारत के 11वें राष्ट्रपति निर्वाचित हुए। इनका कार्यकाल 2002-2007 तक रहा।

डॉ. अब्दुल कलाम के विचारः

1. सपने वो नहीं जो नींद में आते हैं, सपने तो वो हैं जो नींद आने नहीं देते।
2. इंतजार करने वालों को सिर्फ उतना ही मिलता है, जितना कोशिश करने वाले छोड़ देते हैं।
3. अगर सूरज की तरह चमकना है तो पहले सूरज की तरह जलो।
4. एक छात्र की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषताओं में से एक प्रश्न करना है, छात्रों को प्रश्न पूछने दें।
5. जिस दिन हमारे सिग्नेचर ऑटोग्राफ में बदल जाएं मान लीजिए आप कामयाब हो गए।
6. हम सभी में समान प्रतिभा नहीं होती है। लेकिन, हम सभी के पास अपनी प्रतिभा को विकसित करने का समान अवसर है।
7. मनुष्य के लिए कठिनाइयों का होना बहुत जरूरी है क्योंकि कठिनाइयों के बिना सफलता का आनंद नहीं लिया जा सकता।
8. असफलता कभी मुझे पछाड़ नहीं सकती, क्योंकि मेरी सफलता की परिभाषा बहुत मजबूत है।
9. आकाश की तरफ देखिए हम अकेले नहीं हैं, सारा ब्रह्माण्ड हमारे लिए अनुकूल है, और जो सपने देखते हैं और मेहनत करते हैं उन्हें प्रतिफल देने की साजिश करता है।
10. विनाश से बचने के लिए बुद्धि एक हथियार है, यह एक आंतरिक किला है जिसे दुश्मन नष्ट नहीं कर सकते हैं।

कलाम की कविता:

राष्ट्रपति पद से सेवानिवृत होने के बाद कलाम ने अपनी मातृभाषा तमिल और हिंदी में कविताओं पर भी अपनी कलम चलाई।

हिंदी में लिखी एक उनकी कविता..

'अग्नि में मत ढूँढो
शत्रु को भयग्रस्त करता
शक्ति का स्तंभ कोई।
यह तो है एक आग
दिल में जो सुलगती
हर भारतीय के
सभ्यता के स्रोत सी।
एक छोटी सी प्रतिमा है यह
भारत के गौरव की
आभा से प्रदीप्त जो।'

कलाम का अंतिम सफर:

आईआईएम शिलांग (मेघालय) के निमंत्रण पर कलाम एक वक्तव्य देने के लिए 27 जुलाई 2015 को दोपहर 3 बजे इन्दरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से गुवाहाटी के लिए रवाना हुए। गुवाहाटी से कार के माध्यम से दो घंटे का सफर तय करते हुए शिलांग पहुंचे। जहाँ आईआईएम शिलांग के संगोष्ठी कक्ष में जिनसे उन्हें हमेशा प्यार रहा युवा छात्र-छात्राएँ उनका बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। मंच पर आसीन होने के बाद जैसे ही युवाओं के प्रिय डॉ. कलाम अपना वक्तव्य देने को खड़े हुए बहु-मुश्किल दो मिनट ही बोल सके। अचानक दिल का दौरा पड़ने से मंच पर ही गिर पड़े और फिर कभी वो खड़े न हो सके। 27 जुलाई 2015 के दिन हिन्दुस्तान का एक सूरज डूब गया।

संदर्भ

1. अब्दुल कलाम: जीवनी, मेहर चंद
2. अग्नि की उड़ान, डॉ. अब्दुल कलाम
3. मेरी जीवन यात्रा, डॉ. अब्दुल कलाम
4. महाशक्ति भारत, डॉ.अब्दुल कलाम
5. मेरे सपनों का भारत, डॉ. अब्दुल कलाम
6. विकिपीडिया

युवा यदि यत्न करें, तो क्या नहीं कर सकते हैं...

गुफरान
बी.ए. (प्रोग्राम) द्वितीय वर्ष

युवा शक्ति देश और समाज की रीढ़ होती है। युवा देश और समाज को नए शिखर पर ले जाते हैं। युवा देश का वर्तमान है और भविष्य है। युवा गहन उर्जा और उच्च महत्त्वाकांक्षाओं से भरे हुए होते हैं। उनकी आँखों में भविष्य स्वप्न देखने को मिलते हैं। समाज को बेहतर बनाने और राष्ट्र के निर्माण में सर्वाधिक योगदान युवाओं का ही होता है। युवा बेहतर भविष्य के लिए मतदान के माध्यम से ईमानदार और विकासपरक सोच वाले प्रतिनिधि को चुनने और भ्रष्ट लोगों के सामाजिक दुत्कार को पहली सीढ़ी मानते हैं। समाज में तेजी से आ रहे बदलावों के प्रति बड़ी संख्या में युवाओं का नजरिया सफलता प्राप्त करने की ओर होना जरूरी है।

किसी एक वर्ग का नहीं बल्कि युवाओं को समग्र विश्व का उत्थान करना है। स्वामी विवेकानंद की सोच भी किसी वर्ग विशेष को लेकर नहीं, बल्कि समग्र विश्व को उत्थान की ओर ले जाना था। आज की बिगड़ती सामाजिक स्थिति में युवा पीढ़ी को उनके विचार आत्मसात करने की जरूरत है। तभी युवा वर्ग समाज और देश को प्रगति की ओर ले जा सकेंगे। युवा देश का कर्णधार है, अतः उन्हें यह जिम्मेदारी समझनी होगी। युवा किसी भी राष्ट्र की शक्ति होते हैं और विशेषकर भारत राष्ट्र की ऊर्जा तो युवाओं में ही निहित है। यह बात बिल्कुल सत्य है कि अगर युवा प्रयत्न करे तो क्या नहीं कर सकता है? इस संसार में कुछ भी असंभव नहीं है। जब-जब युवाओं ने अपने कदम बढ़ाये हैं, उसने आसमान की बुलंदियों को भी पछाड़ा है। हमारे पास ऐसे बहुत से उदाहरण हैं। भारत इस समय बहुत सुनहरे दौर से गुजर रहा है। हमारे देश में इस समय युवाओं की संख्या ज्यादा है। जिस देश में युवाओं की आबादी जितनी ज्यादा होगी वह उतनी ही तेजी से तरक्की करता है। इतिहास इसका गवाह है। यह सुनहरा दौर 2025 तक ही रहेगा। क्योंकि उसके बाद यह युवा पीढ़ी वृद्ध हो जाएगी। ऐसे में यह सभी की जिम्मेदारी होनी चाहिए कि युवाओं की ऊर्जा नष्ट न होने पाए। उन्हें सभी क्षेत्रों में ज्यादा से ज्यादा अवसर मुहैया कराये जाने चाहिए। हमें उन्हें ऐसी शासन व्यवस्था देनी होगी जिसमें वे पॉजिटिव सोच के साथ राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका निभा सके। आज भारत में बेरोजगारी तीव्र गति से बढ़ रही है। यह हमारे देश की मुख्य समस्याओं में से एक है। इसके उन्मूलन के लिए हमें रोजगार दिलाने वाली शिक्षा का इंतजाम करना होगा। मेरा मानना है अगर युवा शक्ति को ताकत दें और उनके लिए जीवन को बदलने की सुविधा जुटाएँ, तो भविष्य उज्जवल होकर रहेगा।

दरअसल, युवाओं से देश के विकास में योगदान की अपेक्षा तो बहुत की जाती है, लेकिन विकास की नीतियाँ तय करने में उनकी सीधी भागीदारी नहीं होती। जाहिर है, अगर युवाओं के हाथों में देश की तकदीर तय करने

की ताकत दी जाए तो उन्हें भी एक दिशा मिलेगी और कुछ करने का उत्साह भी। हमारे देश में शिक्षा के मामले में भी सुधार की जरूरत है। हम स्वयं को तब तक एक विकासशील राष्ट्र नहीं कह सकते, जब तक तीन में से एक आदमी अपना नाम तक नहीं लिख सकता। शिक्षा के प्रसार-प्रचार के बिना एक सेहतमंद समाज की परिकल्पना नहीं कर सकते और बिना सेहतमंद समाज के एक गौरवपूर्ण राष्ट्र का ख्वाब नामुमकिन है।

युवाओं से यह उम्मीद की जाती है कि वे भारतवर्ष को उन्नत व विकसित देशों की कतार में लाने के लिए अपना कीमती योगदान देंगे, ताकि हमारा राष्ट्र विश्व में अपनी अनुपम व अमिट पहचान बना सके। देश के अमर शहीदों ने भारत के लिए जो सपने देखे थे, उन्हें साकार करने में हमारी अहम भागीदारी हो।

'युवा देश का विकास है और युवा ही देश की उन्नति है'

''जो तुम सोचते हो वो हो जाओगे। यदि तुम खुद को कमजोर सोचते हो, तुम कमजोर हो जाओगे, अगर खुद को ताकतवर सोचते हो तुम ताकतवर हो जाओगे।''

-स्वामी विवेकानंद

''चले चलिए कि चलना ही दलील-ए-कामरानी है
जो थक कर बैठ जाते हैं वो मंजिल पा नहीं सकते''

-हफीज बनारसी

इतिहास, इतिहासकार और धारणाएँ

आयुष कुमार पाल
हिंदी (प्रतिष्ठा) तृतीय वर्ष

"इतिहास जीविका के लिए मानव के संघर्ष की कहानी है" 'विश्व इतिहास की झलक' पुस्तक में पंडित नेहरू का यह उद्धरण वास्तव में अतीत की परिभाषा का बड़ा अंश पूरा कर देता है। सुविदित है कि इतिहास भूतकाल की गलतियों का दोहराव न हो इसी कारण लोक व्यवहार में पढ़ाया जाता है। अतीत ने हमें कई सबक दिए और संभवत: उसी का परिणाम है कि हमारी मानवीय सभ्यता उत्कृष्टता की हदें पार कर रही हैं। अतीत का विस्तार पहले भौतिक कण से लेकर हमारे हाल ही में बीते क्षण तक है। कुल मिलाकर इतिहास को बदला नहीं जा सकता। किन्तु आज यह यथार्थ से परे है, इतिहासकारों ने अपने स्वार्थों का ऐसा घालमेल किया कि मौलिक तथ्य ही छुप गए।

जीविका का संघर्ष वर्तमान की चरम सभ्यता का सृजन सोपान भी है, यह हमारे पुरातन वैभव, अतीत की इमारतों और धर्म विचारों का स्त्रोत है; जिन्हें हम नजरअंदाज कर वर्तमान का सुख नहीं भोग सकते हैं। सवाल यह उठता है कि इतिहास को बदलने की शुरुआत कहाँ से हुई थी? विदित है कि हमारे बुजुर्ग उनके समय का वृतांत कुछ बढ़ा कर सुनाते हैं, यही प्रवृत्ति इतिहासकारों में रही है। जब मानव ने लेखन शुरू किया तो तात्कालिक घटनाओं की बजाय उन्होंने बीती बातों पर ध्यान केंद्रित किया और इसी संदर्भ में छापेखाने के अभाव या उनके विकसित न हो पाने के कारण इतिहास लेखन की शृंखला में कई प्रकार के लिपिक या नकलवीस स्वयं अपने हाथों से पांडुलिपियों की प्रति कृतियाँ बनाया करते थे। इस क्रम में अमूमन यह होता होगा कि यदि द्वितीय स्तर के लिपिक अथवा नकलवीस को प्राथमिक स्तर के लिपिक की लिखावट समझ नहीं आती होगी कारणवश मूल लेख से दूसरे लिखित लेख में कई छोटे-बड़े अथवा महत्त्वपूर्ण अंतर हो जाते होंगे और यहाँ तक कि कई बार मूल इतिहास के लेखक भी अपने ही लेखन पर संशोधन भी किया करते थे। उदाहरणत: चौदहवीं शताब्दी के इतिहासकार जियाउद्दीन बरनी ने अपना वृत्तांत प्रथम बार 1356 ई. में और दूसरी बार 1358 ई. में लिखा था और दोनों में सामान्य स्तर से अधिक अंतर विद्यमान है।

किन्तु भारतीय इतिहास के सन्दर्भ में 'वेद' मौलिक माने गए हैं और इनकी सत्यता पर कम ही शक किया जाता है। बाद के अन्य ग्रंथों में भी कुछ अतिशयोक्ति के बाद सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन का प्रतिबिम्ब देखा जाता है, क्या यह अनुमान लगाया जा सकता है कि किसी काल विशेष में लिखने वाले लेखक की लेखनी तात्कालिक सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक आयामों से अछूती रही होगी? इतिहास लेखन में शुरू से लेकर अब तक धार्मिक और धर्मेत्तर साहित्य का भरपूर प्रयोग हुआ। (नोट –'यह

उल्लेख करना आवश्यक है कि अन्य धर्मों की अपेक्षा हिन्दू धर्म ग्रंथों का इतिहास में सर्वाधिक प्रयोग हुआ है, बावजूद इसके कि अरब और ब्रिटिश रूढ़िवादी लेखकों ने कहा कि भारतीय इतिहास लेखन में फूहड़ या अज्ञानी थे')।

यह सभी जानते हैं कि बाद के ग्रंथ देवताओं की बजाय राजाओं की प्रशस्तियां गाने लगे, (लगभग हर क्षेत्र में) भारत, अरब, यूनान सभी देशों में राजमहिमा का वर्णन बढ़ने लगा। यह सामंतवादी व्यवस्था के आरंभिक चिह्न थे, इसका अर्थ यह कतई नहीं है कि धार्मिक महत्त्व कम होने लगा बल्कि राजा स्वयं धर्म की रक्षा का भार खुद पर लादने लगे। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि समय के अनुसार इतिहास की जरूरतें बदलती रही है, चाहे फिर प्राचीनकाल हो, मध्यकाल हो या फिर वर्तमान का आधुनिक युग। इतिहास लेखन में यात्रा वृतांत की भूमिका विशेष महत्त्व रखती है। यदि किसी प्राचीन समाज का अध्ययन करने के लिए निरपेक्षता बरतनी हो तो यह लेखन हमारे लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है, किन्तु हमेशा नहीं; क्योंकि अधिकांश यात्रा वृतांतों में स्वयं के धर्मदेश आदि को श्रेष्ठ रखा जाता है। (यदि कुछ अपवाद छोड़ दें) उदाहरण के नमूने के रूप में हम भारत में मध्यकालीन इस्लामी इतिहासकार को ले सकते हैं जो पूर्वाग्रह और रूढ़िवादी विचारों से भयंकर रूप से ग्रसित थे। इनका पाठन करते समय हमें यह कभी भी नहीं भूलना चाहिए कि इन कृतियों में मध्य एशिया की नवोदित शक्तियों का प्रभाव है जो हाल ही में कबीलाई जीवन से मुक्त हुई थी। साम्राज्यवाद की नवीन ललक के साथ उनमें धन प्राप्ति और धार्मिक प्रचार की भावनाएं भी कूट-कूट कर भरी हुई थी, अंत: वह शायद ही नवीन समाजों से निरपेक्ष व्यवहार कर पाए हों।

यदि मुगलों के पतन के बाद इतिहास लेखन की नवीन शाखा का अध्ययन किया जाए तो हमें ज्ञात होगा कि अब रचनाएँ सामाजिक जीवन की ओर अग्रसर हैं। दुर्बल मुगल शासकों की बजाए दरबारी मंत्रियों और सांस्कृतिक कार्यों से जुड़े व्यक्तियों की ओर रुख करती इन रचनाओं में सामाजिक प्रभाव का अद्भुत वर्णन है। गंगा-जमुनी तहजीब की कायम होती नई धारा उपनिवेशवादी सत्ता से अनजान थी। अकबर के काल से जन्मी यह मिश्रित हिंद इस्लामी संस्कृति सन् 57 के महाविद्रोह तक अनवरत जारी रही थी, और आगे भी तब तक जारी रहेगी जब तक कि सांप्रदायिक एकता को अपने स्वार्थों की पूर्ति में रोड़ा मानने वाली औपनिवेशिक शक्ति यानी ब्रितानी हुकूमत ने इन्हें आपस में तोड़ने के लिए इनके अलग-अलग स्वार्थों की घोषणा न कर दी। यदि इस काल की कृतियों में देखा जाए तो हमें ज्ञात होगा कि मध्य एशियाई इस्लामी प्रभाव टूटने के बावजूद हिंदुस्तान में सांप्रदायिक सद्भावना का नए सिरे से आरंभ हो रहा था, यहाँ न तो औरंगजेब के कट्टर कदमों की कोई आहट सुनाई देती, न ही कोई सांप्रदायिक अलगाव की। किंतु मात्र कुछ वर्षों तक चरम पर रहने के बाद इन पर अलगाववादी बादल मंडराने लगे, जिन्हें औपनिवेशिक सत्ता प्रेरित कर रही थी।

आधुनिक काल में इतिहास की नई भारतीय शाखा यानी औपनिवेशिक -ब्रिटिश उपागम का उदय हुआ। यह स्वयं की सभ्यता की श्रेष्ठता को ही सर्वोपरि मानते, चाहे उन्हें इससे कई श्रेष्ठ सभ्यताएं मिलती थी। अपनी संस्कृति को ही इनका प्रेरक लिखते। विदेशी लेखकों ने इतिहास का ऐसा कंटेंट लिखा जो भारत में ब्रिटिश

हुकूमत बरकरार रखने में सहायक था। (देखें – 'प्राचीन भारत का इतिहास' रामशरण शर्मा) कुछ भारतीय इतिहासकार अब भी इस कार्य को जारी रख रहे हैं। भारतीय प्राचीन वैभव को ठुकरा कर उन पर श्रेष्ठ यूरोपीय सभ्यता के प्रभुत्व लादा गया। यहाँ यह जान लेना श्रेयस्कर होगा कि खुद को सभ्यता के पैरोकार कहने वाले, यह अंग्रेज मध्यकालीन यूरोपीय समाज का सच्चा स्वरुप लिखना भूल गए। जब भारत में घरेलू दासों के साथ घर के सदस्य जैसा व्यवहार होता, तब यूरोप में कृषक व गरीब तक पशुओं की भांति रह रहे थे, जब यूरोपीय महिलाएँ गंदगी में जीवन जीती तब अधिकांश भारतीय महिलाएँ अपेक्षाकृत अच्छा जीवन जी रही थीं। (देखें –'मध्यकालीन भारत– मुगल काल' सतीश चंद्र) ऐसा शोषण भारत में न था। जितना भेदभाव जातिगत या धर्मगत भारत में था, यूरोप का वर्गवादी भेदभाव उससे काफी क्रूर था। एक और अनिष्ट जो औपनिवेशिक लेखन ने किया वह भारतीय एकता को तोड़ने का था, वह स्वर्णिम युग जब पूरा उपमहाद्वीप एक संस्कृति में बंधा था, को नकार कर इस नवीन सत्ता ने विभिन्न संप्रदायों के स्वार्थों का बंटवारा कर दिया। उपमहाद्वीप की मिश्रित संस्कृति पर बंटवारे के कंटक बोने वाले कदम उठाए गए। प्रोफेसर बिपिन चंद्र के अनुसार जब बंगाल विभाजन के बाद सांप्रदायिक आधार पर निर्वाचन बंटवारे का कानून यानी कि मार्ले मिंटो सुधार लाया गया तो तात्कालिक भारत के वायसराय ने भारत के गृह सचिव को पत्र लिखकर भेजा कि हम वह विष के कंटक बो रहे हैं जिनका परिणाम घातक होगा। उपनिवेशवादी इतिहासकारों ने (मुख्य रूप से जेम्स मिल 1817 ई० में अपनी पुस्तक 'ए हिस्ट्री ऑफ ब्रिटिश इंडिया') भारत के वैभव पूर्ण अतीत को अस्वीकार कर भारतीय इतिहास को तीन भागों में बाँटा, पहला हिंदू सभ्यता पर आधारित प्राचीन काल था, दूसरा कथित तौर पर हिंदुओं पर इस्लामी बर्बरता और अत्याचारों पर आधारित मध्यकाल और इसी तरह आधुनिक काल के नायक खुद को बता कर उन्होंने यह तीसरा भाग संपादित किया और यह कहकर अंत करते हैं कि हम हिंदुस्तान को सभ्य बना रहे हैं। अतीत को मानवीय दृष्टि से पढ़ने वाला हर एक व्यक्ति समझ सकता है कि सभ्य वास्तव में था कौन!

कुल मिलाकर इन इतिहासकारों ने अपने देश की बुराइयों पर पर्दा डाल भारत की बुराइयाँ उधेड़, उनमें अपनी भड़ास की मिर्च डाल तीखा बनाया और इतिहास की किताबों के माध्यम से हमें इनमें हीनतर बना दिया। भारतीय सिविल सेवकों को ब्रिटेन में जो इतिहास पढ़ाया जाता उनका यह उल्लेख करना ही अनिष्ठ होगा। उन्होंने जो इतिहास पढ़ाया वह साम्राज्य को बरकरार रखने में सहायक था, यह वही इतिहास था जिसके बल पर अंग्रेजों ने भारतीय वैभव को लूट कर अपने संग्रहालय में सजा दिया। किंतु इतिहास को बदलने की या उपनिवेशवादी झूठ को प्रमाणित करने की कोशिशें अब शुरू हो चुकी थी। नवीन भारतीय बुद्धिजीवी वर्ग अपने पुरातन ग्रंथों की ओर लौटने लगे और समाज सुधारकों ने इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई, स्वामी दयानंद सरस्वती और स्वामी विवेकानंद का नाम इनमें अग्रणी हो सकता है। जब भारतीय धर्म संस्कृति को संबोधित करने स्वामी विवेकानंद शिकागो गए तो वहाँ के अखबार ने अगली सुबह यह लिखा कि इतनी विद्वता भरे राष्ट्र में ईसाई धर्म प्रचारकों को भेजना कितना मूर्खतापूर्ण कार्य है। यदि कल्पना की जाएगी इसी काल में भारत के कई व्यक्ति भारतीय समाज, संस्कृति और सभ्यता के प्रचार हेतु विश्व में गए होते तो आज विश्व का परिदृश्य काफी बदला हुआ होता। ऊपर वर्णित शब्द अतिशयोक्ति पूर्ण लग सकते हैं किंतु वास्तव में यही वे शब्द थे जिनके बल पर नए

भारत के बुद्धिजीवी वर्ग ने भारत के पुरातन वैभव को विश्व पटल पर सामने लाने के प्रयास शुरू किए।

प्राचीन भारत को इस तरह से प्रभावित करने का पहला महत्त्वपूर्ण कदम रमेश चंद्र मजूमदार ने उठाया। यह कदम न केवल भारतीयों ने उठाया बल्कि इनमें विदेशी बुद्धिजीवियों ने भरपूर योगदान दिया। इन्हीं में एक नाम ए.एल. बाशम का है जिन्होंने अपनी कृति 'द वंडर दैट वाज इंडिया' यानि 'अद्भुत भारत' के जरिए प्राचीन भारतीय वैभव को ब्रिटेन तक पहुँचा दिया। इसके उलट विसेंट स्मिथ जैसे पाश्चात्य पूर्वाग्रह ग्रसित व्यक्तियों ने भारतीय सभ्यता को हीनतर बताने में कोई कसर नहीं छोड़ी। ऐसा ही आगे एक विशेष प्रयास दामोदर धर्मानंद कोसांबी ने किया, 'प्राचीन भारत की संस्कृति और सभ्यता' नामक इनकी कृति ने भारत के मलिन वैभव को पुनः प्रकाश में लाया। न केवल बीसवीं सदी बल्कि 19वीं सदी में भी ऐसे कई प्रयास हुए। प्रोफेसर रामचरण शर्मा के अनुसार ''भारतीय विद्वानों के सामने यह शब्द एक बड़ी चुनौती के रूप में उभरा, खासकर उनके लिए जिन्होंने पश्चिमी शिक्षा प्राप्त की थी, वे प्राचीन इतिहास का जो उपनिवेश खंडन था उससे काफी दुखी थे और भारतीय सामंती समाज के विनिष्ठीकरण और ब्रिटेन के प्रगतिशील पूंजीवादी समाज के विरोधाभास को लेकर चिंतित भी है। (राष्ट्रवादी दृष्टि और उसका योगदान के संदर्भ में) प्राचीन भारत को लेकर एक विशेष कदम राजेंद्र लाल मित्र ने 19वीं सदी में उठाया, जिन्होंने वैदिक ग्रंथ प्रकाशित किए और इंडो आर्य शीर्षक से किताब भी लिखी। ऐसे ही दक्षिण भारतीय वैभव पर नीलकंठ शास्त्री ने एक अतुल्य पुस्तक लिखी।

स्वतंत्रता के बाद देश के इतिहासकार राष्ट्रवाद, उपाश्रय व मार्क्सवाद जैसी विचारधाराओं के आधार पर लेखन करने लगे। अपनी प्रिय विचारधारा को बल प्रदान करने के लिए इसके अनुकूल लिखा। आजादी प्राप्त हुए वर्षों बीत गए पर इतिहास लेखन को अब तक पूर्वधारणा और भ्रामक तथ्यों ने जकड़ा हुआ है (कुछ अपवाद छोड़कर)। पहले इस्लामी, बाद में ब्रिटिश और अब यह विचारों से प्रेरित इतिहासकार अतीत के तथ्यों को सत्यता से काफी दूर करने में संलग्न हैं।

इतिहास लेखन तथा उसके अध्ययन की पद्धतियाँ

इतिहास लेखन व इसके अध्ययन पद्धतियों का विश्लेषण शब्दों का मोहताज नहीं हैं, किंतु इसकी व्याख्या और अध्ययन के लिए इससे इतिहासविदों ने इसे हिस्ट्री और हिस्टोरियॉग्राफी में विभक्त किया है। हिस्ट्री यानी इतिहास, अतीत का एक संकलन है और हिस्टोरियोग्राफी यानी इतिहास विधा या ऐतिहासिकरण, इस बात का अध्ययन है कि इतिहास का विश्लेषण, लेखन और प्रस्तुतीकरण क्या होगा? इतिहास लेखन की पद्धतियों में मुख्य रूप से साम्राज्यवादी, कैम्ब्रिज धारा, राष्ट्रवादी, मार्क्सवादी, उपाश्रितवर्गवादी और अर्द्धमार्क्सवादी राष्ट्रवाद आदि की पद्धतियाँ देखी जाती हैं। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन और आधुनिक भारत के इतिहास के संदर्भ में निम्न पद्धतियाँ निम्न विचार रखती हैं–

साम्राज्यवादी पद्धति

साम्राज्यवादी पद्धति का सीधा संबंध ब्रिटिश शासन से है। इस पद्धति के अनुसार ब्रिटिश शासन काल भारत की झोली में ईश्वर द्वारा प्रदत्त वरदान है। इसका मुख्य उद्देश्य भारत की जनता के हित की रक्षा करना था।

इस कथन के अनुसार ब्रिटिशों द्वारा भारतीयों पर शोषण की बात निराधार है। इस पद्धति के अनुसार ब्रिटिशर्स ने पहले भारतीय समाज, सभ्यता, संस्कृति और भाषा का अध्ययन किया। यह अध्ययन करने वाला समूह ओरिएंटललिस्ट विद्वानों के नाम से जाना गया; विलियम जॉन्स तथा मैक्समूलर इस समूह के प्रणेता माने जाते हैं। उन्होंने अपने अध्ययन में यह बताया कि आर्य जाति का विस्तार भारत और यूरोप में मूल रूप से विद्यमान था। ओरियंटलिस्ट के पश्चात उपयोगितावादी समूह अध्ययन क्षेत्र में आया जिसके अनुसार यह तथ्य अप्रमाणिक है। उपयोगितावादी समूह मुख्य रूप से बेंथम के विचारों से प्रभावित था, उनका मानना था कि भारत की पुरानी सभ्यता अनेकानेक कमियों से ग्रसित है; इन कमियों को दूर करने के लिए वहाँ पर व्यक्तिवाद और बुद्धिवाद को बढ़ावा देना होगा। जेम्स मिल ने आगे चलकर इसी कथन को अपना आधार बनाया तथा इसी अध्ययन को आगे ले जाकर ब्रिटिश विद्वान रेगीनालड कूपलैंड और पर्सिवल स्पीयर ने बताया कि ब्रिटिश राज भारत के लोगों को सुशासन का मार्ग दिखा रहा था और अंत में भारत को हर क्षेत्र से भारत को सुदृढ़ और सशक्त करने के पश्चात सत्ता का हस्तांतरण भी कर दिया गया है। इसके बाद कई अन्यधारा के इतिहासकारों ने इसे साम्राज्यवादी सोच का उदारवादी पक्ष बताया।

कैंब्रिज धारा

साम्राज्यवादी पद्धति के बाद इतिहास लेखन की विकसित हुई कैंब्रिज धारा, साम्राज्यवादी पद्धति का ही एक दूसरा रूप थी। जिसे वहाँ के कुछ विशेष विद्वानों ने और आगे की दिशा दिखाई; इन विद्वानों में अनिल सील, गैलाधर ब्रूमफील्ड तथा जुड़ी ब्राउन का नाम प्रमुख है। इस पद्धति के अनुसार भारत कोई राष्ट्र था ही नहीं और न ही वह राष्ट्र बनने की प्रक्रिया में था। यह एक ऐसे लोगों का समूह था जो कौम, जाति और भाषा तथा धार्मिक समुदायों के आधार पर अलग-अलग समूह में बटे हुए थे और ब्रिटिशर्स ने इन्हीं समूह तथा समुदायों को संगठित किया, एक राजनीतिक ढांचा दिया और उनकी अर्थव्यवस्था को प्रबल किया।

संक्षेप में कहें तो यह दोनों धाराएं राष्ट्रवादी अध्ययन पद्धति के विरोध में स्थापित हैं और एक दूसरे के तथ्यों को पूर्णतया नकारते हैं। इस संदर्भ में भारत के प्रसिद्ध इतिहासकार एस गोपाल कहते हैं कि उपनिवेशवाद और राष्ट्रवाद की इस अध्ययन पद्धति ने तो भारत के राष्ट्रीय आंदोलन से सभी उच्च भावनाओं चरित्र इमानदारी नि:स्वार्थ सेवा भाव आदि को दरकिनार कर दिया है; वहीं तपन राय चौधरी इसका परिहास करते हुए इसे 'पाशविक राजनीति' की संज्ञा देते हैं।

राष्ट्रवादी पद्धति

साम्राज्यवादी इतिहास लेखन पद्धति की ठीक विरोधी राष्ट्रवादी पद्धति भारत में हुए राष्ट्रीय आंदोलन की उत्पत्ति का कारण मात्र नहीं बल्कि इसे सही स्वर देने के पीछे इसी पद्धति का हाथ है। इस पद्धति के प्रतिपादकों में प्राथमिक रूप से दादा भाई नौरोजी, आरसी दत्त, एस.एन. बैनर्जी, लोकमान्य तिलक, बिपिन चंद्र पाल, लाला लाजपत राय, स्वामी दयानंद, अरविंद घोष और स्वामी विवेकानंद हैं। आगे चल कर द्वितीयक रूप से इस पद्धति के समर्थक आर.सी. मजूमदार, ताराचंद विश्वेश्वर प्रसाद, बी.आर. नंदा तथा बी.एन. पांडे हैं।

इस धारा के इतिहासकारों का मानना है कि ब्रिटिश साम्राज्य भारत के गौरवशाली इतिहास का कलंक था। राष्ट्रवादी पद्धति के अनुसार ब्रिटिशर्स ने धोखाधड़ी से हिंदुस्तान पर कब्जा कर लिया और उसका सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और हर एक रुप से शोषण किया। इनके अनुसार भारत में स्थापित राष्ट्रवाद कोई विद्रोह नहीं था बल्कि वह प्राचीन सभ्यता और संस्कृति की गौरवमई एकता का प्रतीक था। एक राष्ट्र के निर्माण में आवश्यक प्रकल्प अर्थात प्रजातंत्र, मानवीय प्रतिष्ठा, समता, स्वतंत्रता और विश्व बंधुत्व आदि भारत में पहले से ही विद्यमान थे साथ ही भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन किसी एक विशेष वर्ग, वर्ण अथवा जाति का आंदोलन नहीं था बल्कि उसमें हर एक भारतीय ने अपनी भूमिका स्पष्ट की थी। राष्ट्रवादी पद्धति की तीव्र आलोचना करते हुए मार्क्सवादी अध्ययन पद्धति कहती है, यह राष्ट्रवादी सोच जमीनी सच्चाई की अवहेलना करती है। वास्तविकता तो यह है कि समस्त भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व विशिष्ट वर्ग के लोगों द्वारा संचालित किया गया था, वह मूलत: उन्हीं के हित के लिए था। हालांकि यह बात भी सच है कि उसमें वंचित वर्ग की जनता ने भी भागीदारी दी थी, पर ऐन मौके पर उनके हितों को नजरअंदाज कर आवश्यकता पड़ने पर फिर से उनका शोषण किया जाता है।

मार्क्सवादी पद्धति

इसी क्रम में मार्क्सवादी पद्धति दोनों विचारधाराओं अथवा पद्धतियों यानी साम्राज्यवादी तथा राष्ट्रवादी की आलोचना करती है। मार्क्सवादी पद्धति के अनुसार ईस्ट इंडिया कंपनी का भारत पर कब्जा करना, भारत पर पहले हुए आक्रमण से बिल्कुल अलग था। भारत में पहले हुए आक्रमण भारत की संस्कृति के सामने टिक नहीं पाए और भारत की संस्कृति से ही घुल मिल गए। किंतु ब्रिटिशर्स की भारत पर विजय की प्रकृति बाकी सभी प्रांतों से अलग थी क्योंकि उस समय ब्रिटेन में पूंजीवादी व्यवस्था की स्थापना हो चुकी थी और सामंतवादी व्यवस्था बहुत हद तक समाप्त भी हो चुकी थी। इस कारणवश ब्रिटिश राज का भारत पर दोहरा प्रभाव पड़ा – एक पक्ष विध्वंसात्मक था तो दूसरा रचनात्मक। ब्रिटिशर्स ने एक ओर तो भारत के ग्रामीण समाज को नष्ट किया तो वहीं दूसरी और पूंजीवादी व्यवस्था की नींव भी रखी। मार्क्सवादी पद्धति के प्रतिपादक रजनी पाम दत्त को माना जाता है। उनकी पुस्तक 'आज का भारत' और ए.आर. दिसाई की पुस्तक 'सोशल बैकग्राउंड टू इंडियन नेशनलिज्म' इस पद्धति के प्रामाणिक ग्रंथ माने जाते हैं।

इन ग्रंथों तथा मार्क्सवाद की मूल धारा के अनुसार मार्क्सवादी चिंतक राष्ट्र वादियों का समर्थन इस बात पर करते हैं कि नि:संदेह ब्रिटिश साम्राज्य के चलते भारत में बड़े पैमाने पर विध्वंस हुआ, लोगों में गरीबी, भुखमरी और कंगाली फैली किंतु दूसरी ओर यह पद्धति साम्राज्यवादी पद्धति का समर्थन करते हुए यह भी मानती है कि ब्रिटिशर्स ने भारत की सामंतवादी व्यवस्था को तोड़कर पूंजीवादी व्यवस्था की स्थापना की और विकास के क्रम में भारत का मार्ग प्रशस्त किया। राष्ट्रवाद तथा राष्ट्रीय आंदोलन की उत्पत्ति के संदर्भ में मार्क्सवादी विचार का मानना है कि इसकी उत्पत्ति ब्रिटेन और भारत के आपसी हितों के टकराव के कारण हुई।

उपाश्रितवर्गवादी पद्धति

उपाश्रितवर्ग वादी पद्धति को निम्न वर्गीय धारा के नाम से भी जाना जाता है। इसके प्रमुख प्रतिपादक और सिद्धांतकार रणजीत गुहा को माना जाता है। इसका प्रारंभिक और प्राथमिक बीजवपन उनकी पुस्तक 'सबाल्टर्न स्टडीज खंड-1' के आमुख में दिया हुआ है। इस अध्ययन के अनुसार अब तक जितना भी इतिहास लेखन हुआ है वह केवल एक विशेष तबके तथा वर्ग विशेष से संबंध रखता है। इतिहास की ऐसी पद्धति संपूर्ण इतिहास नहीं बल्कि वह इतिहास का आधा अधूरा भाग है। इस पद्धति के अनुसार कुलीन/अभिजात अथवा निम्न वर्ग को परिभाषित किया गया है। रणजीत गुहा के अनुसार कुलीन वर्ग का तात्पर्य देशी-विदेशी वर्चस्व वर्ग वाले लोगों से है। साम्राज्यवादी तथा राष्ट्रवादी दोनों पद्धतियों के इतिहास लेखन में कुलीन वर्ग का ही वर्चस्व रहा है। इस तरह की इतिहास लेखन पद्धति केवल कुलीन वर्ग की यश गाथा है और परिहास करते हुए वे यह भी जोड़ते हैं कि भारतीय राष्ट्रवाद के इतिहास की यह धारा 'कुलीन वर्ग की आध्यात्मिक जीवन गाथा' है इसके अलावा और कुछ भी नहीं। कुल मिलाकर यह पद्धति आम आदमी जिसमें किसान, मजदूर तथा अन्य निचले वर्ग के लोगों की संघर्ष की कहानी है; जिसकी अवहेलना साम्राज्यवादी तथा राष्ट्रवादी इतिहास लेखन की पद्धति करती है। दूसरे शब्दों में इसे 'नीचे का इतिहास' भी कहा जाता है।

इसके साथ ही इस पद्धति की कई स्तरों पर आलोचना भी की जाती है इसकी आलोचना का मूल कारण इसकी एकलवादी तथा अतिवादी स्थापना और मान्यताएं रही हैं। सुमित सरकार बिपिन चंद्र और रोमिला थापर इस पद्धति का पुरजोर विरोध तथा आलोचना करते हैं।

अर्ध-मार्क्सवादी-राष्ट्रवादी

इस पद्धति का प्रतिपादन मुख्य रूप से बिपिन चंद्र तथा उनके सहयोगी इतिहासकारों ने किया। वह हर सिरे से मार्क्सवादी तथा राष्ट्रवादी दृष्टि के मध्य तालमेल बैठाना चाहते थे, यह पद्धति मानती है कि ब्रिटिश सरकार का साम्राज्यवादी व उपनिवेशवादी हित और भारत के राष्ट्रीय हित के मध्य प्रारंभ से विरोधाभास था और भारत में व्याप्त वर्गों, वर्णों और समूह के बीच के अंतरभेद गौण रूप में विद्यमान थे; पर मुख्यधारा तो ब्रिटिशर्स की साम्राज्यवादी नीति के विरोध में थी। इस पद्धति का यह भी मानना है कि भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन एक बहूवर्गीय आंदोलन था इसलिए इसे स्वतंत्रता के लिए जन आंदोलन की संज्ञा देना ज्यादा तार्किक रहेगा। इस पद्धति के अनुसार 1947 में हुआ सत्ता स्थानांतरण भारत का ब्रिटिशर्स के साथ कोई समझौता नहीं था बल्कि यह ग्रामशी के शब्दों में स्थिति के युद्ध से बचने का समानार्थी था।

उपर्युक्त वर्णित इतिहास की सभी पद्धतियाँ एक विविधता को दर्शाती हैं, जो अपने आप में कहीं न कहीं अपूर्ण हैं; तो वस्तुत: एक पक्षीय भी है और किसी विशेष समूह की विशेष विचारधारा से संबंध रखती है। किंतु इतिहास की अवधारणा इन विचारधाराओं में ग्रसित होने की नहीं है। इतिहास का अध्ययन केवल किसी एक पद्धति के आधार पर करना असंभव तथा अधूरा रहेगा; इन सभी पद्धतियों को मिलाकर बहुआयामी दृष्टिकोण शायद इतिहास के अध्ययन को सरल और सटीक बना सकता है।

हालांकि स्वतंत्रता के बाद से ही इतिहास को नवीन दृष्टिकोण से देखने के विशिष्ट उपागम की शुरुआत हुई। सुमित सरकार (द मॉडर्न इंडिया), बिपिन चंद्र (द इंडियन स्ट्रगल फॉर इंडिपेंडेंस), शेखर बंद्योपाध्याय (पलासी से विभाजन) आदि इतिहासकारों ने भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष को नवीन दृष्टिकोण से देखने का कार्य किया। प्राचीन और मध्यकालीन भारत पर नए कार्य काफी पहले से शुरू हो गए थे, किंतु आधुनिक भारत पर हुए हालिया शोध अब महत्त्वपूर्ण लगने लगे हैं। आरंभिक इतिहासकार उपनिवेश उपागम से काफी कुछ प्रभावित थे किंतु यह नए उपागम 'नीचे से ऊपर' की ओर देखने का कार्य कर रहे हैं। यह बताने में काफी कामयाब हुए हैं कि जितना योगदान भारतीय बुद्धिजीवियों का स्वतंत्रता में था उतना ही आदिवासियों, दलितों और आम लोगों का भी था। अब यह आशा बंधने लगी है कि इतिहास के यह नवीन दृष्टिकोण धीरे-धीरे पूर्वाग्रहों को काट रहे हैं और इतिहास को भ्रामकता से बचाने का विशिष्ट कार्य करने में जुट गए हैं।

> ''इतिहास अद्वितीय ज्ञान है और यह मनुष्य के संपूर्ण ज्ञान का स्त्रोत है। यह सत्य ही प्रतीत होता है क्योंकि इतिहास में ही मनुष्य जाति का संपूर्ण अतीत समाया हुआ है।''
>
> **-कॉलिंगवुड**

> ''इतिहास अतीत की घटनाओं का उनके सभी पहलुओं का, एक सामाजिक समूह के जीवन में, वर्तमान घटनाओं के आलोक में वैज्ञानिक अध्ययन है।''
>
> **एन.सी.ई.आर.टी.**

टैक्सी ड्राइवर

मनीष कुमार
हिंदी (प्रतिष्ठा) द्वितीय वर्ष

दफ्तर से अपना काम खत्म करने के बाद जब अपने घर के लिए गुप्ता जी निकलने लगे तो उस समय उनकी घड़ी में तकरीबन रात के 9 बज रहे थे। हालांकि रोज गुप्ता जी शाम 7 बजे के लगभग अपने ऑफिस से निकल जाया करते थे लेकिन आज काम के दबाव के कारण कुछ देर हो गई थी। घर जल्दी पहुँचने की हड़बड़ाहट में गुप्ता जी ने आज बस की जगह टैक्सी पकड़ने का निर्णय लिया और फिर ऐप के माध्यम से तुरंत ही एक टैक्सी बुक कर डाली।

ठीक पाँच मिनट के बाद दनदनाती हुई एक सफेद रंग की चमचमाती मारुती डिजायर गाड़ी आकर उनके पास खड़ी हो गई। ड्राइवर तुरन्त नीचे उतरकर पिछली सीट साफ करने लगा।

''सॉरी सर जी, एक बुजुर्ग महिला के साथ कुछ छोटे बच्चे बैठे थे, कुछ खा रहे थे'' इसलिए सीट थोड़ी गंदी हो गई है और मैं उनको मना भी नहीं कर पाया... बच्चों को भला कैसे मना करता...ड्राइवर ने गुप्ता जी से कहा।

''ठीक है, ठीक है, कोई बात नहीं, जल्दी चलो'' ...गुप्ता जी ने अपनी जुबान चलाई।

गाड़ी का गेट खोलकर जब गुप्ता जी उसके अंदर बैठे तो देखा कि अभी कार की सीट का प्लास्टिक कवर भी नहीं हटा था और भीतर से नयी कार की खुशबू भी आ रही थी।

अब ड्राइवर ने अपनी रफ्तार पकड़ ली।

''बहुत बधाई हो तुम्हें नयी कार की, बहुत अच्छी कार है... नाम क्या है तुम्हारा?'' गुप्ता जी ने जानना चाहा।

''शुक्रिया सर जी, अभी तीन दिन पहले ही ली है। मेरे पुराने साहब ने ही दिला दी है। बोले, चलाओ अभी तुम्हें जरुरत है। मैंने कहा कि पैसे कैसे दे पाउंगा, तो बोले, चलाओ अभी पैसे की मत सोचो, मैं देख लूंगा... सर रमेश यादव नाम है मेरा'' ...ड्राइवर ने बहुत खुश होकर कहा।

''अच्छा ठीक है, तो फिर ये नई गाड़ी तुम्हारे पुराने साहब ने तुम्हें क्यों दिलायी?'' गुप्ता जी ने जानना चाहा।

''सर मैं उनकी कार चलाता था तकरीबन बीस साल से... रोज सुबह उनको दफ्तर ले जाता और फिर शाम को वापस घर। उसके बाद जब जहाँ जरूरत होती वहाँ जाता उनके साथ या फिर उनकी पत्नी के साथ '' ...ड्राइवर बोला।

ड्राइवर ने फिर अपनी बात आगे बढ़ाई... ''सर जी, कोविड में वर्क फ्राम होम होने के कारण काम बहुत कम हो गया, फिर वहाँ मेरी जरुरत ही नहीं रही क्योंकि साहब नौकरी से रिटायर हो गए। उसके बाद मैंने फूड कंपनी का काम पकड़ लिया... सर बहुत प्रेशर था उसमें''... ड्राइवर बोला।

''क्यों?'' गुप्ता जी ने कौतूहलवश पूछा।

''सर, पचासों फोन एक साथ आ जाते थे। लोग देर से अपना आर्डर देकर फिर 15 मिनट में डिलीवरी के लिए दबाव बनाते थे। कुछ भी गड़बड़ हुआ तो बहुत डांट सुनना पड़ता था। किसी को धीरज नहीं है सर। दो बच्चे हैं मेरे, काम के जबरदस्त दबाव के कारण 6 महीने कर के वहाँ छोड़ दिया'' ...ड्राइवर ने कहा।

''फिर?'' गुप्ता जी ने आगे पूछा।

''फिर सर, साहब ने ड्राइवर की एक वेबसाइट पर मेरा रजिस्ट्रेशन करा दिया। जब जिसको जरूरत पड़ती बुला लेता। अपनी सोसाइटी में भी उन्होंने सबको बता दिया था। 10-12 हजार महीने का कमा लेता था ,पेट भर जाता था ....मेरा और मेरे परिवार का।''

''फिलहाल मेरे दोनों बच्चे पढ़ रहे हैं सर, एक अगले साल दसवीं की परीक्षा देगा और दूसरा बी.ए. में है , आगे बोल रहा है कहीं से मैनेजमेंट की पढ़ाई करेगा। अब पढ़ाई में तो पैसा लगता है ना सर। मैं बहुत चिंता में था'' ...इतना कहकर ड्राइवर खामोश हो गया और उसकी आँखें भींग गई।

''फिर?'' गुप्ता जी ने ड्राइवर को कुरेदा।

''फिर, सर मैंने अपने साहब को पूरी बात बताई, तो वे बोले चिंता मत करो, चलो तुमको एक गाड़ी निकलवा देता हूँ, अब तुम खुद की गाड़ी चलाओ''।

मैंने बोला ''साहब, पैसे कहाँ हैं मेरे पास, तो वे बोले, मैं निकलवा देता हूँ। उन्होंने ही सारी बात की कंपनी से और अपने रिटायरमेंट के मिले पैसों से ये गाड़ी मेरे लिए खरीदी।''

''तो कार साहब के नाम है?'', गुप्ता जी ने पूछा।

''नहीं सर, मेरे नाम से'' ड्राइवर बोला

''फिर पैसे तो चुकाने पड़ेंगे, कैसे करोगे इतना सबकुछ?''

''सर, साहब ने कहा है कि तुम सिर्फ मेहनत और ईमानदारी से गाड़ी चलाओ, अपनी सारी जरूरतें, जिम्मेदारियाँ पूरी करो। पैसे अभी नहीं देने हैं, जब ये गाड़ी बेचोगे तब बताना...फिलहाल मैं सब देख लूंगा।''

अब तक उस साहब के बारे में गुप्ता जी की उत्सुकता चरम पर पहुँच चुकी थी। ऐसे भले लोग कहाँ आसानी से मिलते हैं इस दौर में भला।

''क्या करते हैं तुम्हारे साहब?''

''सर, वो एक बड़े दूरसंचार कंपनी में कार्यरत थे, बड़े ही भले लोग हैं वे, उनकी पत्नी भी गरीब बस्ती के बच्चों को खाली समय में अपने घर पर बिल्कुल मुफ्त पढ़ाती हैं।''

''क्या नाम है उनका?'' गुप्ता जी ने पूछा।

''जी, साहब का नाम है प्रफुल्ल शर्मा'' ड्राइवर ने कहा।

''मोबाइल नंम्बर याद है उनका तुम्हें?'' गुप्ता जी की उत्सुकता के बाँध पहले ही ध्वस्त हो चुके थे। ड्राइवर ने अपने साहब प्रफुल्ल शर्मा का नम्बर गुप्ता जी को बताया। फिर गुप्ता जी ने उन्हें एक भावनात्मक संदेश व्हाट्सऐप पर भेजा। साथ ही उन्हें बताया कि आपके पुराने ड्राइवर रमेश यादव की नयी गाड़ी में बैठा हूँ। आपने जो उसके लिए किया है उससे मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ...।''

दूसरी तरफ प्रफुल्ल शर्मा जी को अनजान नंबर से संदेश पाकर बड़ा आश्चर्य हुआ... ''क्या, यह मैसेज मेरे लिए है?'' उन्होंने वापस प्रतिक्रिया जाननी चाही। फिर गुप्ता जी ने विस्तार से प्रफुल्ल जी को पूरी कहानी बताई। पूरा संदेश आदान-प्रदान के बाद गुप्ता जी ने ये महसूस किया कि प्रफुल्ल साहब ने अपने ड्राइवर के लिए जो कुछ भी किया है, उसका रति भर भी श्रेय वे खुद नहीं लेना चाहते।

अंत में प्रफुल्ल बाबू ने गुप्ता जी को बस एक ही संदेश भेजा.... ''जनाब, रमेश मेरा ड्राइवर नहीं बल्कि मेरे लिए मेरे परिवार का एक अहम सदस्य है।"

गुप्ता जी की आँखें डबडबा गई और वे मन ही मन सोचने लगे..... ''यार, कौन कहता है बे कि इंसानियत मर चुकी है इस दौर में...''!!

अपने घर के मुख्य गेट पर पहुँचकर गुप्ता जी टैक्सी से उतर गए और ड्राइवर रमेश को उसके किराए के अतिरिक्त पाँच सौ रुपये का एक नोट थमाया और उससे कहा कि ''वापस अपने घर जाते समय बच्चों के लिए मिठाई खरीद लेना और उनसे बोलना कि एक अंकल ने भेजा है''...!!

ड्राइवर रमेश ने आँखों ही आँखों में गुप्ता जी को शुक्रिया कहा और फिर कुछ चिंतन करते हुए FM रेडियो का वॉल्यूम बढ़ाकर वहाँ से आगे बढ़ चला...!!

उस वक्त रेडियो पर गाना चल रहा था...
किसी की मुस्कुराहटों पे हो निसार...
किसी का दर्द मिल सके तो ले उधार...
किसी के वास्ते हो तेरे दिल में प्यार...
जीना इसी का नाम है...!!

''यदि गद्य कवियों या लेखकों की कसौटी है तो निबंध गद्य की कसौटी है।''

– **आचार्य रामचंद्र शुक्ल**

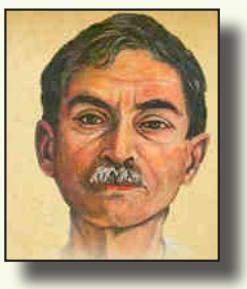

''मैं एक मजदूर हूँ, जिस दिन कुछ लिख न लूँ, उस दिन मुझे रोटी खाने का कोई हक नहीं।''

– **प्रेमचंद**

पद्य खण्ड

मेरे-तुम्हारे बारे में

अमन कमार झा
हिंदी (प्रतिष्ठा) प्रथम वर्ष

मैं नहीं रहा अब कोमल, शांत स्वभाव सा,
हो गया हूँ अब विच्छिन्न हिय के ताव सा,
कुछ निर्मल कंकड़ों ने मुझे झनकारा था,
मैं दूर भाग रहा था उन्होंने मुझे पुकारा था।

मैं सरल, सुबोध प्राण अब नहीं,
चाहते जिसे सब इंसान वे अब नहीं,
सब अपना चाहते हैं प्रवास,
मुझे अब भा गया है मेरा निज आवास।

मैं नहीं चाहता जाना अब उस जल में,
जिससे निकल कर आया था इस थल में,
तुम्हारा मेरा और मेरा तुम्हें सब कुछ स्वीकार है,
पर स्वयं तुमसे विलग हो जाऊं,
क्या कहीं इतना भी मुझे अधिकार है?

मैंने सदैव समर्पण चाहा,
अतुलित स्नेह निधि से उसे ब्याहा,
सोचा, रचा और बना साथ तुम्हें सौंप दिया,
बदले में कुछ न चाहने का अधिकार भी खुद को न दिया।

बस इस सौहार्द को स्वीकार लो,
मेरी प्रतिछाया में ओ प्रेयसी!
अपने ये अश्रु कण तुम संवार लो।

एस्पायरेंट ऑफ अखण्ड भारत

मृदुल सक्सेना
बी.कॉम (प्रोग्राम) प्रथम वर्ष

मैं उस मिट्टी से हूँ
जिस मिट्टी में स्वयं
भगवान श्री राम ने बीज लगाए हैं

मैं उस स्थान से हूँ
जहाँ द्रुपद कन्या समराग्नि का जन्म हुआ था

मैं उस भूमि से हूँ
जहाँ सम्राट युधिष्ठिर और अशोक जैसे राजा थे

मैं उस देश से हूँ
जो एक धर्म की नहीं
अपितु अनेक कर्मों की भूमि है

मैं उस देश का आकांक्षी हूँ
जहाँ कुछ मील दूर पर ही
रूप, लिबास, भाषा और मजहब के साथ-साथ
पकवान भी बदल जाते हैं

मैं उस देश का आकांक्षी हूँ
जो मुझे भारत माता की जय
कहने पर गौरव कराता है

मैं तो सिर्फ अखण्ड भारत का आकांक्षी हूँ
मैं तो सिर्फ अखण्ड भारत का आकांक्षी हूँ

मार्ग दर्शन

मृदुल सक्सेना
बी.कॉम (प्रोग्राम) प्रथम वर्ष

द्वापर में कहा था
मैं कलयुग में भी आऊँगा

अब तो बीत गई देखते राहें
हम को भी अपने दर्शन करवाओ ना

जैसे भक्ति में लीन हुए प्रहलाद
वैसा मैं कैसे बन पाऊँगा

मैं तो एक साधारण व्यक्ति हूँ
मुझको भी अपने दर्शन कराओ न

सुना है आपके अनेक रूप हैं
एक रूप मुझको भी दिखलाओ न

मैं तो एक साधारण व्यक्ति हूँ
मुझको भी अपने दर्शन कराओ न

जैसे अर्जुन को दिखाया ब्रह्म रूप स्वप्न में
मुझको बस उसकी एक झलक दिखलाओ न

मैं तो एक साधारण व्यक्ति हूँ
मुझको भी अपने दर्शन कराओ न

आया हूँ मैं आपके प्रेम द्वार में
मेरा भी मार्ग दर्शन कराओ न

भूल गया हूँ चलते-चलते जीवन की राह
मुझको भी एक नई राह दिखाओ न

मैं तो एक साधारण व्यक्ति हूँ
मेरा भी मार्ग दर्शन कराओ न

बिंदी

निशा कुमारी
हिंदी (प्रतिष्ठा) तृतीय वर्ष

यह तुम्हारी बिंदी उफ्फ
यह मेरी आँखों को तुम्हारे
चेहरे पर ठहरने के लिए
मजबूर न जाने कर देती है
न जाने किस प्रकार का
आकर्षण समाये हुए है
इस बिंदी में चाह कर
भी नजर फेर पाना
नामुमकिन सा लगता है।

''कष्ट और विपत्ति मनुष्य को शिक्षा देने वाले श्रेष्ठ गुण हैं। जो साहस के साथ उनका सामना करते हैं, वे विजयी होते हैं।''

-लोकमान्य तिलक

''ये हमारा कर्तव्य है कि हम अपनी स्वतंत्रता का मोल अपने खून से चुकाएं। हमें अपने बलिदान और परिश्रम से जो आजादी मिले, हमारे अन्दर उसकी रक्षा करने की ताकत होनी चाहिए।''

-सुभाष चन्द्र बोस

फर्ज

निशा
हिंदी (प्रतिष्ठा) तृतीय वर्ष

माँ ने अगर नौ महीने मुझे अपनी कोख में पाला है,
तो उसने भी मेहनत करके मुझे खिलाया है।
माँ की डांट और फटकार से,
उसने हमेशा मुझे बचाया है।
उसके शाम को घर आने से ही,
मेरा चेहरा खिलखिलाया है।
किराए के लिए दस रुपए मांगे,
तो उसने पचास का नोट हाथ में थमाया है।
उसने मुझ पर खुद की जान न्योछावर करके,
न जाने कौन-सा सुख पाया है।
बाबर अकबर का तो पता नहीं,
लेकिन मैंने उसे अपना बादशाह बनाया है।
फिर भी क्यों उसने माँ से कम दर्जा पाया है?
मम्मी की हूँ बेटी,
लेकिन उसने मुझे परी बनाया है।
जनाब....
मेरी माँ ने ही नहीं
मेरे पिता ने भी अपना फर्ज निभाया है।

नेता जी
(सुभाष चंद्र बोस)

ऋतिक रैना
हिंदी (प्रतिष्ठा) प्रथम वर्ष

रगों में जिसकी ताप था,
निडर था वो प्रचंड था।
विरोधियों के नाश का अभिन्न वो एक खंड था,
आजाद हिंद फौज का गठन था जिसने किया,
जय हिंद का नारा लिए आगे था चल दिया।
अंग्रेजों की गुलामी तो उसे कदापि न स्वीकार थी,
देख कर उसके हौसले अंग्रेजी ताकतें हैरान थी।
भारत की आजादी में महत्त्वपूर्ण उसका योगदान था,
हर एक भारतवासी की जुबान पर नेता जी-नेता जी ही नाम था।
पराक्रम व वीरता का जीता जागता वो उदाहरण था,
भारत माँ की सेवा का प्रण दिल में उसके धारण था।
उसे तो अपनी जान तक की परवाह न थी,
उसके कदमों ने न नापी हो ऐसी कोई राह न थी।
वह लड़ता रहा बढ़ता रहा देश की आजादी के लिए,
खुद वह अमर हुआ अंग्रेजों की बर्बादी के लिए।
उसने दिखाया था जो सपना आखिर वो पूरा हुआ,
पर क्यों उनकी मृत्यु का राज आज तक अधूरा रहा।
ऐसे देश भक्त पर हमें बहुत गर्व है,
उनके ही बलिदान से आज हर त्यौहार है हर पर्व है।
उनके इस बलिदान को व्यर्थ न हम जाने देंगे,
भारत के स्वाभिमान को ठेस तक न आने देंगे।
नेता जी के इस बलिदान को सिर झुका-झुका कर नमन है,
मेरा भारत विश्वगुरू बने यही मेरा स्वप्न है।

पिता जी की डायरी

गुलाम

रहीसुद्दीन अंसारी
हिंदी (प्रतिष्ठा) तृतीय वर्ष

एक दिन मैंने आलमारी खोली
देखी एक पुरानी डायरी
सन् 2000 था उस पर लिखा
पढ़ने की लालसा मे मैंने उठा ली
दर्ज था उसमें उन दिनों का हिसाब
जबसे पिता जी ने थी जिम्मेदारी संभाली
पहले पन्ने पर था दादा जी का नाम
बाकियों पर अपनी व्यथा उतारी
न उसमें सूखा गुलाब था कोई ,
न ही प्रेम पत्र - पत्रिकाएं थी
हाँ, उसमे बात थी पक्के घर की
जो उन्होंने कर्जे से बनाई थी
गाँव की मिट्टी की थी खुशबू
जो उस डायरी में समायी थी
जिक्र था उन स्याह रातों का भी,
जो बिना सोये गुजारी थी
जो ...बिन सोये गुजारी थी...
मेरा सारा बदन सिहर उठा
जब पन्ने पर आँसू की बूंद दिखाई दी
शब्दों की स्याही थी फैली
और टूटी टूटी सी लिखाई थी...
मैंने इस तरह पढ़ा उसे
जैसे हो आसमानी डायरी
एक दिन मैंने आलमारी खोली
देखी एक पुरानी डायरी।

क्या हम आजाद हैं?
क्या हम आजाद हैं नफरतो के जाल से?
या हम गुलाम हैं देश के इस माहौल में?
धर्म पूछ कर मौत देना ये कहाँ का कानून है
ये लहू जो बह रहा बेकसूर का खून है
इतना गुस्सा लोगों में किसने और क्यूँ भरा?
जवाब देदे कोई अगर तो यही सवाल है मेरा।
क्या हम आजाद हैं?

क्या हम आजाद हैं दिखावे की झूठी शान से?
भारत के लोग भी सोते हैं खुले आसमान में?
क्या यही वो हिन्दूस्तान है जिसे सपना बनाया था?
अम्बेडकर और भगत सिंह को रात भर जगाया था!
शहीदों की शहादत पर देश को गुमान है
ये मुद्दा अच्छा है क्योंकि अगले माह चुनाव है!!!
सरकारी दफतरों में बैठ कर देशभक्ति की बाते करते हैं
नोटो की चमक देख कर ही ईमानदारी भूल जाते हैं।
क्या हम आजाद हैं भ्रष्टाचार के इस खेल से?
या हम गुलाम हैं बेइमानी के जेल में?

क्या हम आजाद हैं? जाति धर्म के भेद भाव से?
या हम सवार हैं नफरतों की नाव में?
आजादी का दिन है आज तिरंगा फहराया जायेगा
फिर कल यही तिरंगा सड़क पर मिल जायेगा।
सवालों से भरा हूँ मैं जवाब की तलाश है
जो सोने की चिड़िया थी कभी उस भारत की मुझे तलाश है।
आजादी के 76 साल बाद भी सभी से ये सवाल है
क्या हम आजाद हैं? क्या हम आजाद हैं?

पिता

जीवन की संघर्षमयी आँधियों में
हौसलों की दीवार पिता हैं।।

ख्वाहिशें पूरी हुई वो खुशियाँ मेरी
पर उन खुशियों के द्वार पिता हैं ।।

जीवन की जिम्मेदारियों की राहों में
आशा रूपी रथ के सारथी पिता हैं।।

दिलाते सबको बराबरी का हक जो
वो ही मेरे आदर्श महारथी पिता हैं।।

मंजिल को पाने की राह मेरी है बस
पर मुश्किल राहों में विश्वास पिता हैं।।

दुनियां की भीड़ में खुद को पाने की
वो उम्मीद की एक धुधली आश पिता हैं।।

खिलौने तो बहुत सारे होते हैं बच्चों के
देख जिसे मुस्काते वो पिता हैं।।

बिखरते सपनों को देख जब टूटे वो, तो
उन सुकून भरे पलों में बिछौना पिता हैं।।

उन सपनों को हम पंख ही देते हैं बस
पर उन सपनों की ऊँची उड़ान पिता हैं।।

भाई बहन बंधु सखा सब रिश्ते निभाए
पर सब से रिश्तों की पहचान पिता है।।

बाहर से जो सख्त दिखे अंदर से है नर्म
जीवन के हर क्षण में खड़े रहे वो पिता हैं।।

ये वो भारत है

रितिका पांडेय
हिंदी (प्रतिष्ठा) द्वितीय वर्ष

ये वो भारत है...
पुराना अखंड भारत नहीं है ये
जिसका सिक्का एशिया में चलता था
जो कभी रचा गया था गृहयुद्ध से
न कुरुक्षेत्र वाला वो महाभारत है ये
इस भारत से परे एक भारत है जो
ये वो भारत है...
योग संदेश दिया जिसने जग को
यह वो महा अखंड भारत है जो
विविधता में एकता का ले आदर्श
पूरी दुनिया में आज आदर्श बना है जो
ये वो भारत है...
सोचने जीने का अलग है तरीका जहाँ
होके सदियों पुराना भी, जो समय के पार है
अंतर्निहित भावना यही है इसकी जग में
भाईचारा सरहद पे मानव व्यवहार हो
अपनेपन में समेटकर रखता सबको जो
ये वो भारत है...
प्रकृति रक्षा अहम अनिवार्यता इसकी
कटु न हो विनम्र आग्रह से भरा हुआ है
यह होके विचारों की बहुलता से युक्त
सर्वांगीण दृष्टि लिए हुए है जग में जो
ये वो भारत है...
बीते असंख्य पलों का इतिहास सजोए
भविष्य की दृष्टि का अद्भुत प्रतीक है ये

ये वो भारत है

रितिका पांडेय
हिंदी (प्रतिष्ठा) द्वितीय वर्ष

सभ्यता संस्कृति संस्कार खुद में पिरोए
सांस्कृतिक छत्रछाया में पला बढ़ा है जो
ये वो भारत है...
यह आशा रूपी भाषा की फुलवारी में
सजोए है भाषाओं की डाली डाली जो
वैदिक ज्ञान युक्त आधुनिक शिक्षा इसकी
है संस्कार सभ्यता की पहचान सजोए जो
ये वो भारत है...

वो पुराना समय

वो समय पुराना था
कपड़े नहीं थे पूरा तन ढकने को
फिर भी तन ढकने का लोग प्रयास करते थे
भंडार लगा है आज वस्त्रों का,
फिर भी लोग तन दिखाने का प्रयास करते हैं।।
समाज सभ्य जो हो रहा है...
वो समय पुराना था
साधन ही कम थे आवागमन के
फिर भी परिजनों से वो सदा मिलते थे
आवागमन के साधनों की भरमार है आज
फिर भी न मिलने के वो सदा बहाने बनाते हैं।।
समाज सभ्य जो हो रहा है...
वो समय पुराना था
पहले घर की बेटी पूरे गाँव की बेटी होती थी
आज के इस दौर का हाल देखो
घर की बेटी आज घर में ही असुरक्षित है।।
समाज सभ्य जो हो रहा है...
वो समय पुराना था
पहले लोग घर के बुजुर्गों का ही नहीं
नगर मोहल्लों में भी सबका हाल पूछते थे।
आज के इस दौर में बेटा ही,
वृद्ध माँ बाप को वृद्धाश्रम में खुद पहुँचाते हैं।।
समाज सभ्य जो हो रहा है...
वो समय पुराना था
खिलौनों की कमी थी उस वक्त
फिर भी मोहल्ले भर के बच्चे साथ खेलते थे
भरमार है आज खिलौनों की
फिर भी बच्चे मोबाइल से तारों में कैद हैं।।
समाज सभ्य जो हो रहा है...
वो समय पुराना था
घर के पशुओं के साथ-साथ ही,
गली मोहल्ले के पशुओं को भी रोटी दी जाती थी।
आज अन्न के भंडारे भी भरे हुए हैं
फिर भी मजबूरी में बच्चे भूखे ही सो जाते हैं।।
समाज सभ्य जो हो रहा है...
वो समय पुराना था
पहले दूसरों के मेहमान को भी अपना समझते
पड़ोसी के रिश्तेदार का भी पूरा परिचय पूछ लेते थे।
पड़ोसी के रिश्तेदार को तो छोड़ो
आज तो वो पड़ोसी का भी नाम नहीं जानते हैं ।।
समाज सभ्य जो हो रहा है...

कल को खूबसूरत बनाना है

शिवांश द्विवेदी
हिंदी (प्रतिष्ठा) द्वितीय वर्ष

आज जो ये है कल बीत जायेगा,
बाद में यही दिन तुझे याद आयेगा,

कल जब याद करेगा उसे तू,
बीता हुआ कल तुझे याद आयेगा।

बीते हुए लम्हें हैं, बीती हुई यादें,
बीते हुए पल, तुझे कल सताएगा,

आज जिसे कल के लिए ठुकरा रहा है तू,
वो बीता हुआ समय तुझे बहुत सताएगा।

बीता हुआ समय कभी लौट के न आयेगा,
ये बीता हुआ काल तुझे तड़पाएगा।

क्या हुआ जो कल तुम बिछड़ गए,
क्या हुआ कल को तुम भटक गए,

बीता हुआ समय कभी लौट के न आयेगा,
मगर आज जो है वो तुम्हारा कल बनाएगा।

क्या हुआ अगर तुमसे गलतियाँ हुई,
क्या हुआ अगर तुम टूट गए,
आसमान है ये धारा तुझे बताएगा,
आज के जो लम्हें जी रहे हो तुम,
ये ही तो भविष्य में तुम्हारा कल बनाएगा ।

बीता हुआ कल लौट के न आयेगा,
आने वाला कल आ ही जायेगा,

आज का काल जो है हाथों में ,
उसे सवार के हम यादें बनाएँगे।
बीता हुआ कल कभी लौट के न आयेगा,
बीता हुआ कल कभी लौट के न आयेगा...

आज मैंने कुछ देखा,
मैंने देखा लोगों को शहर छोड़ घर जाते हुए।

अपनी आशाओं को संजोते हुए, कर्म भूमि छोड़ घर जाते हुए मैंने देखा,
देखा उन्हें अटैचियाँ उठाते, पटरी किनारे सरपट भागते हुए देखा,
देखा उन आशाओं से भरी आँखों को, उन आराम मांगती बाँहों को मैंने देखा,

देखा कितना अकेला होता है इंसान पराए मुल्क में,
देखा उन अंजान निगाहों को घर का सुकून मांगते,
मैंने देखा कैसे बस्ते बैग झोले थैले लटकते हुए,
देखा उन बोझ भरी खूबसूरत आत्माओं को थक हारकर घर जाते हुए।

थकान बदन की कम थी, थकान बदन की कम थी
थी तो अपनो से बिछड़ने की
ये तन की थकान तो त्रिप्त हो जाती है
मन की थकान को कोई देखता तक नहीं।

भला हो उन लोगों का, भला हो उन लोगों का
जिन्होंने त्यौहार बनाए,

कल को खूबसूरत बनाना है

शिवांश द्विवेदी
हिंदी (प्रतिष्ठा) द्वितीय वर्ष

बहाना ही सही पर लोग छुट्टी मनाने अपने घर आए।
इन अनंत अटैचियो में बंद हैं जाने कितने तोहफे
और खुशी के पल, क्या खूब बनेंगी...

मतलबी मतलबों से मतलब तुम समझाओगे
मतलब भरी इस दुनिया में तुम मुझे अब क्या
दिखलाओगे,
क्या खाक समझाओगे तुम मतलब ही दिखाओगे
मतलब की दुनिया है तुम मतलब पूरा होने पर सो जाओगे

मतलबी है सारे यहाँ तुम नया क्या दिखाओगे
सारे खाके थूक गए तुम भी वो ही कर जाओगे
न अपना न पराया तुम तो पूरा चूस जाओगे
तुम भी अपना मतलब पूरा करके हमको भूल
जाओगे

अपना और पराया में ज्यादा है फर्क नहीं
ऐसा नहीं है कि में हूँ गलत तुम हो सही ,
क्या थी मेरी ख्वाहिश मैंने चाही सच्ची यारी
तुमने देखा मुझे और दिखादी तुमने दुनियादारी

दुनिया से टूट के आया था मैं तेरे पास
लगाई थी तुझसे सच्ची दोस्ती की आस
दोस्ती तो दूर तूने न निभाई दुनियादारी
तूने पूरा खाके डकार तक न थी खाई

समय समझता है ये सारी दुनियादारी
समय छोड़ देगा समाज तुझे ही रिहाई
जितना बुरा था मैं आज तक था नहीं
सारी दुनिया देखेगी और कहे मुझको ही सही

आने दे वो समय जब तुझे होगी मेरी जरूरत
भूलूँगा न मैं तेरी बनाई हर वो सूरत
जिससे दिलाया था आसरा तूने मुझे ये
दुनिया दे न दे साथ हूँ मैं ही तेरे

समय आने दे समय का है अभाव अभी तो
आज मैं रहा हूँ घिस अपनी हर वो सूरत
जिसको चमकाना है मुझे कल दिखाना है
आज ही तुझे अपना कल बनाना है।

''विश्वास वह पक्षी है जो प्रभात के पूर्व अंधकार में ही प्रकाश का अनुभव करता है और गाने लगता है।''

-रवींद्रनाथ ठाकुर

''हमें हार नहीं माननी चाहिए और समस्या को हमें हराने की अनुमति नहीं देनी चाहिए।''

-ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

माँ

अंजलि कुमारी
हिंदी (प्रतिष्ठा) द्वितीय वर्ष

खो जाऊँ अगर मैं आँचल में तेरे, तो मुझे खुदसे मिला देना माँ
और थक जाऊंगी जो चलते-चलते, मुझे अपने आँचल में ही सुला देना माँ

मैं नादान बहुत हूँ और समझदारी क्या होती है ये तू मुझे समझा देना माँ
और मैं गलतियाँ भी बहुत करूँगी, तू हँस के उन्हें भुला देना माँ

मैं डरती हूँ जमाने से, तू थोड़ा हिम्मत मेरे अंदर भी जगा देना माँ
और अगर कोई मुश्किल हल न हो मुझसे, तो मेरी मुश्किलों को अपनी एक मुस्कुराहट से भगा देना माँ

खो जाऊँ अगर मैं आँचल में तेरे, तो मुझे खुदसे मिला देना माँ
और थक जाऊँगी जो चलते-चलते, मुझे अपने आँचल में ही सुला देना माँ

एक शर्म का पर्दा

हर नजर की नजर से, हर पल खुद को बचाती बेटियाँ
एक शर्म का पर्दा है, उस पर्दे में खुद को छुपाती बेटियाँ

कौन कहता है पल-पल को मरती न बेटियाँ
सब कुछ सहती फिर भी आह तक न करती बेटियाँ

बाबुल के झरोखे से देखो इन्हें, न हँसती न रोती बेटियाँ
एक शर्म का पर्दा है, उस पर्दे में लिपट कर मुस्कुराती बेटियाँ

तुम क्या जानो कितनों ने इन्हें क्या-क्या कहा है
बेशरम हैं वो जिन्होंने बेटियों को कम समझा है

कदम बढ़ाती बेटियाँ

अंजलि कुमारी
हिंदी (प्रतिष्ठा) द्वितीय वर्ष

कदम-कदम पे मुश्किलें हैं राहों में, फिर भी कदम बढ़ाए चलती बेटियाँ
एक शर्म का पर्दा है, उस पर्दे में रहकर खुशी के गीत गुनगुनाती बेटियाँ

घर में सजाने की बेटियाँ कोई चीज नहीं
ये रीत पुरानी थी, ये रीत अब गई

घर से निकलकर दुनियाभर में राज करती बेटियाँ
एक शर्म का पर्दा है, उस पर्दे को अब हटाती बेटियाँ

फूल सी खिलेंगी खुशबू बन महकेंगी, इन्हें विश्वास तो दिलाओ
इन फूलों को थोड़ा आत्म-सम्मान का पानी तो पिलाओ

धीरे-धीरे सपनों की ओर कदम बढ़ाती बेटियाँ
एक शर्म का पर्दा है, पर्दा हटाकर नाम रौशन करती बेटियाँ।

''पेड़ों के झुनझुने, बजने लगे,
लुढ़कती आ रही है,
सूरज की लाल गेंद
उठ मेरी बेटी सुबह हो गई''

-सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

काश तुम चेत जाते

आयुष कुमार पाल
हिंदी (प्रतिष्ठा) तृतीय वर्ष

काश तुम चेत जाते
मैं भी खिन्न हो जाता हूँ कभी,
जवाब नहीं देते जब तुम कभी,
मेरे इंतजार का भी इम्तिहान है,
काश एक आह्वाहन से तुम आ जाते,
यूँ न इस पतित को पताते,
एक पल सोचने लगता हूँ,
कि कैसे समझूं,
और समझाऊँ तुम्हें,
मानो तुम मेरी सेवा समर्पित,
पल को आत्मसम्मान नहीं,
बस इतना जानकर मुझे कह जाते,
काश तुम चेत जाते,
मेरे प्रिय चेत जाते।

''जो आत्म अनुशासन नहीं रख सकता, वह दूसरों को अनुशासन का पाठ कैसे पढ़ा सकता है।''

-सूत्रकृतांग

ये कैसा न्याय है?

सुमन सिंह
हिंदी (प्रतिष्ठा) तृतीय वर्ष

पाल पोसकर अपना फर्ज निभाया था,
और जब हमारी बाजी आई तो,
हमें दूसरे घर भिजवाया था,
न जाने कैसा न्याय है ऐ ईश्वर,
ईश्वर मैं आपसे पूछती हूँ कि,
कोई लड़की अपने माता-पिता के पास हमेशा नहीं रुक सकती...
जब सुमन ने रुकने की ठानी तो
इस समाज ने तानों का बड़ा पोटला बनाया था,
यह कैसा न्याय है ईश्वर, यह कैसा न्याय है ईश्वर,
माना सिर्फ माँ बाप का फर्ज है पाल पोसकर बड़ा करना,
जरा हम बेटियों को भी मौका दीजिये
अपने माँ बाप के बुढापे का सहारा बनना,
ये समाज कहता है कि बुढ़ापे के सहारे तो सिर्फ लड़के होते हैं,
जरा ये समाज हम लड़कियों से भी तो पूछे क्या चाहते हैं हम,
हम लड़कियों को तो पराया धन बोलते हैं,
हे ईश्वर ये कैसा न्याय है, हे ईश्वर ये कैसा न्याय है,
हे ईश्वर पूछती हूँ मैं आपसे ये कैसी रीत बनाई है,
सिर्फ लड़कियाँ ही परायी हैं, लडके क्यों नहीं?
ये कैसा न्याय है ईश्वर, ये कैसा न्याय है!

शायरी

न जाने किस राह पे थी मैं,
न जाने किस राह पे थी मैं,
आपकी शुद्ध वाणी ने मुझे उस राह पे ला दिया,
जहाँ मुझे चलना चाहिए था।
हम आपके बारे में क्या कहें
जितना कहने की कोशिश करते हैं,
उतना ही कम पड़ जाता है।
मेरी इस प्यारी सी जिंदगी में,
मेरी प्यारी मैम ने आकर इसे और भी प्यारा बना दिया है,
ऐसा लगता है एक ख्वाब जिंदगी नहीं
माँ की तरह प्यार करती है वो,
मेरे चेहरे के हालात को भी पहचान लेती है,
और कोई नहीं मेरी प्यारी अवंतिका मैम हैं।
इतनी सुंदर वाणी है उनकी
इतनी सुंदर वाणी है उनकी
कि मन करता है सुनते जाओ,
बस सुनते जाओ
क्या आवाज है उनकी और क्या गीत गाती हैं
ऐसा लगता है कि कोई परियों के शहर से
कोई गायिका आई है
कसम से मोहब्बत हो गई है आपसे
मन करता क्लास-क्लास लेते ही जाओ,
क्लास लेते ही जाओ, क्लास लेते ही जाओ।
क्या चेहरा है उनका और क्या आवाज है उनकी
चेहरा है उनका और क्या आवाज है उनकी
माशाल्लाह एक बार सुन लो तो,
सीधा दिमाग से दिल पर उतरती है।

एम्स की हवा

शबनम बानो
हिंदी (प्रतिष्ठा) तृतीय वर्ष

रोज-रोज लगती है, लम्बी कतार।
हर ओपीडी पर होती भीड़ अपार।।

कदम-कदम पर एक नया रास्ता।
यहाँ किसी को नहीं किसी से वास्ता।।

हर चेहरे ने छुपा रखा है, दर्द-ए-जिंदगी।
खुदा से पहले यहाँ डॉक्टर से है बन्दगी।।

बिना पलक झपकाए होता सबका सबेरा।
गार्ड के डर से फुटपाथ पर होता रैन-बसेरा।।

हर रोज बदली सी लगती है 'एम्स की हवा'।
यहाँ पल में जिंदगी बनती है, पल में तबाह।।

> ''जीवित भाषा बहती नदी है जिसकी धारा नित्य एक ही मार्ग से प्रवाहित नहीं होती।''
>
> **-बाबूराव विष्णु पराड़कर**

संस्कृत से पालि, पालि से प्राकृत।
प्राकृत से अपभ्रंश, अपभ्रंश से आग्रत ।।

सरहपा से चली गोरख की ओर ।
गोरख से पहुँची देवसेन की ओर।।

देवसेन से अवहट्ठ ग्रहण की विद्यापति ।
चंदबरदाई ने खोजे खुसरो हिंदी-पति ।।

शंकराचार्य से मिल पहुँची नजदीक निंबाकाचार्य।
रामानुज और अलवार ने मिला दिया वल्लभाचार्य।।

तुलसी, मीरा, सूर और रहीम से हुआ विकास।
भक्तिकाल में चमका गए गंग और नंददास।।

चिंतामणि, केशव, भूषण और बिहारी ने किया रीतिलीन।
आलम, बोधा और घनानंद की संगति में डूबे रसलीन।।

भारतेंदु, प्रताप नारायण, बालकृष्ण भट्ट और ''प्रेमघन''।
महावीर, हरिऔध और पूर्ण से मिल कर हिंदी हुई सघन।।

मैथिलीशरण, माखनलाल और सुभद्रा ने भर दिया जोश।
प्रसाद की छाया में निराला, पंत, महादेवी को आया होश।।

प्रेमचंद, हजारी, रेणु, भीष्म और भंडारी ने हिंदी को पाला।
नाटक, कहानी, उपन्यास, निबंध और हरिवंश का हाला।।

गार्सा-द-तासी और उर्दू से हिंदी ने खूब लड़ी लड़ाई।
14 सितंबर 1949 को हिंदी ने राजभाषा की जगह पाई।।

मेरे सपनों का भारत

मनीष कुमार
हिंदी (प्रतिष्ठा) द्वितीय वर्ष

मेरे सपनों का भारत महान होता,
जहाँ प्रेम की निश्छल गंगा का गुणगान होता,
जहाँ लोगों में प्रेम एवं धार्मिक सौहार्द का सोपान होता,
हाँ वह मेरा भारत महान होता।

मेरे सपनों का भारत महान होता,
जहाँ गरीबी एवं भ्रष्टाचारियों का काम तमाम होता,
जहाँ बेरोजगारी एवं कुपोषण का न नाम होता,
हाँ वह मेरा भारत महान होता।

मेरे सपनों का भारत महान होता,
जहाँ घर-घर में स्त्रियों का सम्मान होता,
जहाँ लोगों में आत्मनिर्भर बनने का ज्ञान होता,
हाँ वह मेरा भारत महान होता।

मेरे सपनों का भारत महान होता,
जहाँ घर-घर में, गाँधी, नेहरू एवं कलाम होता,
जहाँ लोगों के मुख पर, सच और सिर्फ सच का नाम होता,
हाँ वह मेरा भारत महान होता।

मेरे सपनों का भारत महान होता,
जहाँ समाज में शिक्षा से भरा एक नया आयाम होता,
जहाँ लोगों के मुख-मुख पर राष्ट्र, प्रेम और बलिदान होता।
हां वह मेरा भारत महान होता।

मेरे सपनों का भारत महान होता,
जहाँ कृषकों के चेहरे पर वास्तविक मुस्कान होता,
जहाँ घर-घर में अन्न का सम्मान होता
हाँ वह मेरा भारत महान होता।
मेरे सपनों का भारत महान होता,
जहाँ रंग-रुप, ऊँच-नीच, अमीर-गरीब जैसी विभेदपूर्ण शब्दावलियों का न काम होता,
जहाँ सिर्फ और सिर्फ अमन और शांति का पैगाम होता।
हाँ वह मेरा भारत महान होता।

मेरे सपनों का भारत महान होता,
जहाँ लोगों में अपने अतीत के गौरव का गुणगान होता,
जहाँ के लोगों के रग-रग में भरा स्वाभिमान होता,
हाँ वह मेरा भारत महान होता।

''सुख तो धर्माचरण से मिलता है, अन्यथा संसार तो दुःखमय है ही! संसार के कर्मों को धार्मिकता के साथ करने में सुख की ही संभावना है।''

– जयशंकर प्रसाद

''ज्ञान का साहित्य मनुष्य किसी भी भाषा में लिख सकता है, जिसे उसने भलीभाँति सीख लिया हो। किन्तु रस का साहित्य वह केवल अपनी भाषा में रच सकता है।''

– रामधारी सिंह दिनकर

English Section

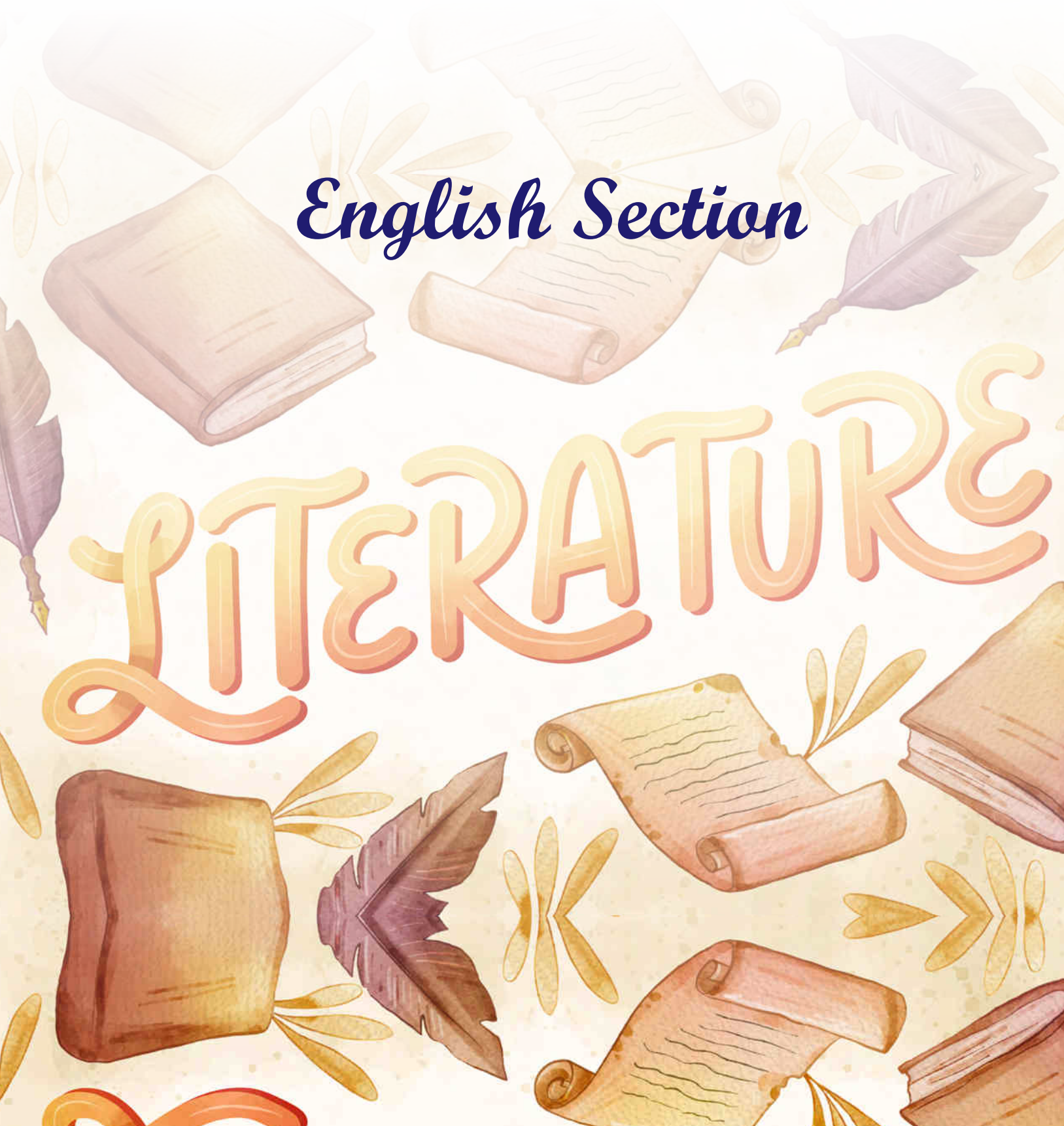

Editorial

Renu Kapoor
Department of English

I am delighted and honoured to present to you the English section of Ankur, the P.G.D.A.V College magazine. Language is the Promethean fire that sets humans apart from other animals. Man is the only animal to have mastered cognitive language communication. Words, the micro units of language, are not merely signifiers of objects, words are carriers of ideas, thoughts and feelings. Isaac Asimov was right when he claimed : "Writing to me is simply thinking through my fingers." Language encapsulates knowledge and knowledge is power. Besides this, language creates cultural ties and helps humans to forge relationships. Language is a quintessential part of our existence. What we speak, write and read defines who we are. It won't be incorrect to state – I write, therefore I am.

Ankur, in that sense, is a paean to the written word. However, in a world controlled more and more by Artificial Intelligence, many have sounded the death knell of the future of language. Doomsday prophets ask – Why write when AI can serve any linguistic dish on a platter within seconds? The entries we received for Ankur, are a heartwarming testimony to the fact that despite AI and Chat GPT, our young students continue to express themselves through their own words. They pursue and perfect the art and craft of wordsmithery to express and share what they feel and think. Their words give us the confidence that as long as our youth has the power and desire to express, there is hope for our world, hope for the future of mankind.

This edition of Ankur covers the entire spectrum of human experiences and expressions. It offers a mixture of joy, sorrow, anger, surprise, faith, doubt, love and much more. It also offers a variety of genres – poems, essays, short stories, travelogues, film reviews to name a few. This year, our student editorial team chose to focus on a very interesting form of communication – gossip, by conducting a survey. Like language itself upon which it rides, gossip can be weak or powerful, positive or negative, harmless or vindictive, innocent or subversive. Depending on its extent and degree, gossip can add fuel to fire, or it can douse a fire and be very therapeutic. I hope our readers will enjoy going through the findings of this survey.

Ankur is, and has always been, a team effort. It would not have been possible to put this edition together without the guidance and support of our Principal, Prof Krishna Sharma. My co-editors, and colleagues, Dr Anubhuti Mishra and Dr Reshma Tabassum, deserve my deep gratitude. Their enthusiasm and diligence is a source of inspiration, and I will always cherish the hours we spent together working on this creative project. Last but definitely not the least, I express my heartfelt appreciation for our students editorial team of Swastika, Vartika Singh, Vani Khera and Vaidehi Nautiyal. I am proud of my 'fabulous four'. They worked tirelessly and burnt the proverbial midnight oil. While they learned the work of editing, proofreading and publishing a magazine, we, the faculty, learned so much from them in the process, and the experience has definitely been an enriching one.

The English section of the magazine is now ready for its readers. Happy reading!

The World Is Heating Up: Are You Feeling the Burn

Shivangi Rawat
B.A. (Hons) English 1st Year

The world is getting hotter, that's no lie
We've got to act fast, or we'll fry.
The carbon in the air
Is causing quite a scare.

The glaciers are melting
And the sea levels are swelling,
But don't be too sad
There's something we can add.

Let's plant some trees
And take fewer overseas vacays
We can bike to work
And make sure our homes don't lurk.

Solar panels and wind turbines
Are much better than oil and coal mines
And recycling is a cinch
So, don't be a Grinch.

But it's not just up to you or me
We need a global effort, that's the key
From governments to businesses to everyday folk
We can make a difference, that's no joke.

So let's all work together, to make a change
And make sure our planet is not out of range.
For if we don't act now, it'll be too late,
And that's a future we can't contemplate.

Let's all do our part
And make climate change depart
For our kids and their kids too
Let's make a greener world, it's what we must do!

Life

Isha
B.A. (Hons) English 2nd Year

One word with different phases,
Happy, sad and infinite faces
Seeking unknown, searching something
We learn that without pain we have nothing.

This journey itself is full of fears,
But sometimes it makes us smile with tears
Humanity is not completely devoid
It can bring light even in Boötes Void.

We always compare our life with high society,
Let me share a look of grim reality
We might be craving a hot bath in Budapest
When someone spends a chilly night without a blanket.

We might be welcoming a new kitty,
Whereas someone might have just lost the only person,
Who deals with life's nitty gritty.
We might be planning to fly,
When someone might be collecting just enough coins to have a pie.

People are just as happy as they make up their minds to be.

-Abraham Lincoln

Vellichor: The Strange Wistfulness of Used Bookstores

Vani Khera
B.A. (Hons) English 1st Year

Have you ever walked in a place so welcoming?
Where a thousand scents lead you astray,
Of your determination to pick just one
One book with an old, dusty spine
Whose pages marred with handprints,
Tell a story unique to its author's mind.
At first, it's just touch,
But when the musty sweetness hits you out of nowhere
And you're transported to a space
Where everything feels like a safe place,
Your eyes consume the words with a ravaging hunger
As your brain interprets the bliss
Narratives of a world so dreamy,
Or just an evil universe,
Where everything unfolds in front of you
And you a spectator, let it run loose
For you cannot do anything to change it,
It's not your story to change.
It drums its way onto that accelerating heartbeat of yours,
Transfixed you lick your chapped lips,
When realization hits that the one hour you excused yourself for
Has turned to three
And your back resting against the lower shelf,
Feels as stiff as the book you just picked.
The unfinished story haunts you
As your mind ponders upon the possibilities of various outcomes,
A strange thought strikes you then
Of the people who came before you,
Whose hands rested on same place yours do
And who like you thought of that book in their own mind,
The time and perspective dominate the difference.
May be they left it in the middle,
Or maybe their tears soaked the crisp yellow pages
For they finished it and were overwhelmed,
By the daunting beauty of the two lovers' demise.
They sobbed because they couldn't relate
Or maybe, because they did too much
Maybe they fell in love with a character
A 'person' who never existed,
Yet whose death moved mountains.
Their fingers who've caressed
The pages as if it will provide some sort of relief,
To the ugly truths the author penned in those hardbound covers
And clasped the book shut,
Finalizing the fate of its characters and those who'd pick it up years on.
Those people would feel something invisible inside them stir
And it would bring miniscule change in their life of disdain.
Then they would keep on reading book after the other
And change will keep piling for worse or for better.
It's this strange wistfulness that draws me to old bookstores,
Where people laughed, cried and fantasized,
At and for a world they never lived in
And for a multitude of other reasons.
An activity so private yet so public,
That connects the unknown
By that thread sewn across their souls
Leaving its imprint,
Like the wet kiss planted by a mother on her child's forehead.

Haiku

Khushi
B.A. (Hons) English 2nd Year

Smile
It comes on your face
Which takes away all my pain
And that is your smile.

Heart
You came to my life
And filled it with endless love
I call you, my heart.

Rose
You look sweet from far
But near, I can feel your thorns
You are like a rose.

You

Anvi Mehrotra
B.A. (Hons) English 2nd Year

In this life full of ups and downs
From my smile to my frown.
You've always been by my side,
With you my emotions I can't hide.
You make me smile when I want to cry,
With you the universe I want to buy.
My every weakness becomes a strength,
With you my life I want to spend.
I love you to the moon and back,
Together I want to fill the lover's sack.
Thank you for always being there,
I see affection even in your glare
You as my partner is a blessing,
A day without you is so depressing!

Dive

Shivang Joshi
B.Com (Hons) 1st year

Let me take a dive,
Deep in the sea.
Where even sunlight fears to wander,
Let me explore the unexplored.
What is there that the eyes haven't seen?
In those dark corners where no one has ever been.
What if I find something mystical?
Something mysterious, yet magical?
For there is more than what is known,
There are tales that these tides wish to tell,
Stories that the sea surface won't sell,
And I want to know it all.
So, I will take a dive in the dark depths,
Where new adventures and opportunities await.
I'm all set for this escapade,
And when that wave of experience hits me,
I'll find light in the darkness.

Parallel Universe

Anamika Pandey
B.Sc. (Hons) Mathematics 1st year

Somewhere in the parallel universe,
I am freaking happy like never before!
Loving the dark and living the shining sun,
Opening my heart to strangers,
Holding hands of the people I love,
Revealing the concealed stories of mine,
Living to follow myself alone,
Sharing a walk on the dark bridge in dim lights of the city,
Living with little out of most.
Riding a bike straightaway to Leh,
Laughing as loud as a roar,
Wandering in the nights
Along the sea shore,
Wearing t-shirt and trousers at a party,
I don't care if you judge,
I can slay without a fancy saree.
Parallel universe it is
And it does exist!

One for My Paw Baby

Priyambada Soibam
B. A. (Prog) 1st year

The one who would never let me be in tears

Even when he himself would be in fear,

My little one is big enough,

As he sounds like an adult when he coughs.

He has been making me happy,

Ever since he was brought as a puppy

I would let him lie on my lap,

So that he could take a sweet nap.

He is the bosom buddy I could ever have,

A friend more loving than him one could never have.

Memories

Niharika Kumari
B.A. (Hons) English 1st Year

Memories are the gate.

When living life in pain,

In the gloomy days when we think about our fate,

Days spent in the past act like sunshine on this gate.

When thinking about childhood, the gate opens a path of endless love and meadows

Giving tranquility, while feeling the breeze.

Reminiscing days, when

Love was the only gate to every relationship.

When purity was common to every natural being

And having a sudden realisation 'that was the golden time'

For the memories are the gate!

Animals are such agreeable friends–
they ask no questions;
they pass no criticisms.

-George Eliot

The worst part of holding the memories is not the pain. It's the loneliness of it. Memories need to be shared.

-Lois Lowry

How Life Changes!

Anushka Sharma
B.A. (Hons) English 1st Year

Looking back at the time before turning eighteen,

Hitting adolescence,

Wondering how life turns apart.

The first day, which we consider as the most special day,

Gives us the surprising reality of life.

A reversal from carrying a bundle of books and waiting for a school van,

Holding a finger of support,

To standing alone with a notebook,

Waiting for the metro where there is only you.

From roaming around

And playing hide and seek

To facing the harsh reality of life's struggle.

All these things made us realize,

That we took our first step in real life.

Life changes and all the sweet memories,

Are left behind in pictures.

> Adolescence represents an inner emotional upheaval, a struggle between the eternal human wish to the past and the equally powerful wish to get on with the future.
>
> **-Louise J. Kaplan**

Obedience of Satan

If I hadn't disobeyed my creator,

Yeah! I know, I would have never fallen,

But in hope of heaven

I fell into the lake of burning hell.

I desire a home, though

I didn't fear the sin,

But in hope of hell

I knew no one would win.

The heat didn't burn my desire,

The desire did heal,

The hell is full of angels,

Yeah! I know, they are just doomed

If I hadn't disobeyed my creator

I would have never fallen.

Which way I fly is hell; myself am hell;
And in the lowest deep a lower deep,
Still threat'ning to devour me, opens wide,
To which the hell I suffer seems a heaven.

-John Milton
Paradise Lost

Don't Be a Fossil Fool

Nipush Tanwar
B.A. (Hons) English 2nd Year

Hey, you. Yes, you!

Don't be a fossil fool!

It's time to ditch those dirty fuels

And embrace the power of the sun.

You don't want to be the person still driving a gas-guzzling car,

While everyone else is cruising around in electric vehicles.

Not to mention, have you seen the price of fuel lately?

It's enough to make you want to ride a bicycle to work.

Don't even get me started on the practicality of coal,

It's so old school, it should be in a museum.

So, let's all be like a tree and leave the fossils in the ground where they belong.

The planet will thank us for it

And we'll be the cool kids on the block,

Driving our electric cars, powered by clean energy.

Don't be a fossil fool!

Oh, come on! Let's bring a renewable energy revolution today!

That's That, That's It!

Prachi Madaan
B.A. (Hons) English 3rd Year

That's that,

That's it!

No more "good morning or good night texts"

No more "Are you okay?"

No more "Can't wait to see you or kiss me slow"

No more talks about 'our' future

No more midnight stupid conversations or grave talks revealing our most vulnerable sides

No more 'This is what I had for dinner'

No more 'I wish you were here with me'

No more listening to you rant out

No more staring at you laughing

So, that's that,

Just like that!

My world came crashing down in front of my eyes,

Vanished into thin air like it never existed

The memories have started to fade,

But as they said,

"Pictures are what will stand the ravishes of time."

The love we thought will make us eternal, is now enveloped in these pictures,

These memories are indelible

The scars I don't wish to get rid of.

These memories and the scars are the proof of a soldier who died in the war of love,

And this poem pays a homage to the martyrdom,

To the person who opened his heart and loved fiercely,

To the dream they dreamed together,

To togetherness,

To their love,

To the person sitting alone by the window and staring at the moon

And telling the moon our tale

I wish you stayed!

So, that's that,

That's it!

The character whom you took as the protagonist of your 'happily ever after'

Turned out to be a mere sidekick in a chapter.

From mourning the lost love,

To bidding him goodbye,

I came a full circle

So, that's that,

That's me!

> Life always waits for some crisis to occur
> before revealing itself at its most brilliant.
>
> **-Paulo Coelho**

Forgive Me!

Hardik Sharma
B.A. (Prog) 3rd Year

You're a dream, I am useless
You're the moon, I'm like a stain
Why has time stopped,
Is this a new feeling or is it occurring again?

You're beauty, I'm the mirror
You're free, I'm a prisoner
You're the melody, I'm a singer
You're God, I'm like a beggar.

I'm ill, you are the cure
I'm stigma, you are so pure
You're my truth, I'm the deceit
You are the bird, I am insecure.

Then why is this heart scared?
Dreams are drowned in the eyes
You're here, I'm here,
But you can't hear my cries.

Grief, desperation
Wounds, intoxication
Desires endless
Everything is here, but it's meaningless.

My lips are silent,
My eyes are crying.
What kind of depth of love is this?
Loneliness is here and I'm saying I'm fine.

I may forget you,
But you're in my memories.
Wasn't I loyal,
And you so selfish?

Nowadays, I don't mention you,
The world is so beautiful even without you,
But whenever someone scratches the scars,
I can see all those broken parts.

Our journey ends here,
I'll no longer be impatient dear.
Don't talk and don't remember me,
Oh! My sweetheart just leave me, just leave me!

Why is this haunting me?
Why is havoc erasing me?
Why are my eyes blurred?
Why am I facing this painful flood?

What kind of torture is this?
How dark the future is!
Bury me now darling,
I may be alive, but I will live my next life.

When everything is over now,
Why am I hoping?
Is there any illusion,
That I'm nurturing?

Oh God! I swear to you,
Not any single sorrow could touch me,
It's okay to leave me unsheltered,
But I must remain respected.

Oh, disgraced bystander! Ignore me once again,
I've not enough strength to face this
immortal pain.
Forgive me, please forgive me.
Oh, my love! Just forgive me.

The Outside World

Vartika
B.A. (Hons) English 2nd Year

Every night my mother sings me a lullaby.
She tells me it is safe inside the four walls
she has spent years on decorating for me,
The paintings hide the dingy wall
And the main door is out of my sight,
But how do I tell her that I want to go outside,
See the world with my own eyes,
Wrestle and hustle and drink the night,
Sit in the yellow bus which always passes
by my half-shut window.

No. You cannot go away, she says
For darling, it's not safe outside.
The sun and the spring might be tempting,
But have faith in your mother,
She knows the world inside-out, it will eat
you alive.

She says that this house is safe,
But how do I tell my mother that it is already
eating me alive?
The way I decorate my body to hide the
damaged walls and empty space,
I am the house now, and trust me
Nobody wants to live inside.

It is not safe outside but the insides are
suffocating,
The glares of my father, the wounds on my
shoulder, the scream inside my brain-
Everything pointing towards the socks
hidden inside my blanket, wants to escape.

I know that the world is cruel but this house
is miserable,
I can manage swimming in ice-cold water,
But I can no longer stand barefoot on this
cold floor.

So, I beg and beg, and cry and cry
To my mother who sings me lullaby,
Unaware of the fact that my brain is crying
for help,
She turns off the light once it's dark inside.

The caged bird sings
with a fearful trill
of things unknown
but longed for still
and his tune is heard
on the distant hill
for the caged bird
sings of freedom.

-Maya Angelou
Caged Bird

Not Just Gory

Vartika
B.A. (Hons) English 2nd Year

I have been told to look for the light,
Write about the bright sand, hills and the blue sky,
But all I can write about is the dark clouds on the top of my hill,
Where exists pain out of all the feelings within.

I light my candle as the darkness engulfs me,
Waiting for my muse while I stare at the paper blankly.
Deep, confounded, unforgettable memories strike me,
Mocking at my miserable pen which can never be happy.

I am forced, forced again to bleed ink out of my body,
To carve glorious words when everything inside me screams aloud.
The world stops and the ink pours out of me,
As I watch, my pen turns into a knife.

Suddenly, they see the blood oozing out,
But the azure in my veins is not noticeable to them.
I extensively write dozens of metaphors on the paper,
But all they listen to is my hysterical scream.
The molten wax of my candle threatens me,
Write faster or I will ruin everything.
You are a poet and writing is your forte,
Stop bleeding and for once, write something which doesn't cover in gore.

I stop altogether, losing my vision,
I let my ink spill on the paper while the candle melts down with anger,
Drop by drop, the wax melts on my ink,
Poor paper just could not break it.

I swirl the ink and the paper tears out,
The wax when mixed with the liquid is forced to calm down.
The vowels, words, phrases and clauses,
Come together to build a vast blue ocean.

All my poetries and all my prose,
Finally, have an identity of their own.
They stream out of my heart and sink into the blue,
Knowing well enough that it is I, making the waves bloom.

I am a poet, but writing is not my forte,
I am merely a creature full of feelings,
Capable of embracing darkness to produce light,
While controlling my waves and throwing them out of my sight.

The world in front of me is in a trance,
The sand is finally there mixed with the ocean of my words.
So, I look at my furious candle and smile shortly,
For once, I have created something which is not just gory.

Maimed

Abhishek Riyal
B. A. (Prog) 2nd Year

In the darkness, they howl
Forsaken animals, they do not pray
Thus, God refuses to hear their sorrow and pain
Men and evil go hand in hand.
Love their dance as we cut and hurt,
In the name of wasted righteousness,
We sleep soundly.
While the pain of the creature does not recede,
Some contemplate, others complain but
Do not take any action, or ruminate.
Morality and Law, two mistresses are
Unaware at their threshold,
The kind apathy murmurs,
“Do not bear their pain, I will tell you a secret.
Think that they hold no feelings, or life.”
Mingle along with this melody as now you're free of the curse,
After all, their existence is just a plaything for us,
They are slaves of our arbitration,
who hold no voice in serene darkness.
So, cut the ties!
Raze the ground!
As we are hellish and divine,
But pain remains, so do the tears of the silent being.
Their crime is listed: "Why born with this destiny?"
This is a treachery to the modern world,
You can't subside this comedy,
Which is written for both of us.

The best and most beautiful things in the world cannot be seen or even touched – thy must be felt with the heart.

-Helen Keller

Taboo

Ananya Shrivastava
B.Com (Prog) 1st year

This is a topic
That should have been taken up
A lot earlier, but never mind,
I guess,
People have actually realised,
That mental illness is
Something for real
And not just in our mind.
It's high time that this country
Took mental health seriously.
People ought to be educated,
That depression is real,
Depression is not just unhappiness, stress and overthinking,
It's a lot more than that.
Okay!

It is too complicated.
It is the result of multiple intricate reasons:
There is biology
Initial upbringing
Bonding with parents
Consequences of choices
Rupture of relationships
Inability to handle inevitable betrayals.
Amateur advice is dangerous.
Loneliness is frightening,
Isolation is its hunting ground.
Please hang in there!
When it seems like things are unbearable,
This will change
Life always does
Hang in there!
Okay!

Make that phone call.
Remind yourself that those who love you deserve that fight.
It's pretty much social and psychological isolation
And we are species meant to bask in the sun,
But if you feel low more than usual,
Please do consider reaching out there
You are loved and desired.
Depression is a very common disorder,
Still so many can't accept help.
It's about time to break the 'taboo'.
Okay!

> There is no time for despair, no place for self-pity, no need for silence, no room for fear. We speak, we write, we do language. That is how civilizatons heal.
>
> **-Toni Morrison**

Body of Clay

Sanskriti
B.A. (Hons) English 2nd Year

Mirror, Mirror on the wall!
Who will you trap today in the delusional fall?
Oh, not me, I have been in this trance already
And I have danced long enough to know that those angels belong to hell.

I wish my body was made of clay
For once, I could mould it the way I wanted
Just to fit in society's enchanting moulds
From every Polaroid to the camera's roll.

They laughed at me, because I took a little more space than them
No, I wondered what is pretty in the end?
Are those flawless faces of magazines defining actual beauty?
Or is it enlaced in the serenity of my mother's tresses?

Nobody told me that I looked the best when I did,
I hated the weighing scales, for they felt heavier on me than I was on it
Even if I took a chance to put myself to justice,
The other's side eyes would blind me by the numbers on them.

Oh, but the people loved me always,
They called me names and compared me to the beauty of heavier animals,
They called me equivalent to the farmer's tractors,
I hated my body for what it did, for all the pretty clothes that never fit.

If my body was a temple, then I am an atheist,
Cursing it for how it looked and how it was perceived,
They made me believe that I was the one wrong,
That my body was at fault and pretty isn't an adjective for my call.

They lie when they say that beauty is skin deep,
Sweet faces dripping nectar, we live in an era where no matter
Who you kill or harm, but if you're blessed with some charm
You'll be scrolled all over the internet.

I have seen diets, even starved myself
Portioned the food, counted each bite and chew
To the day, my feet felt weak
And with a thump, I fell to my knees.

I knew I'd lost this war all against myself,
But at what cost, when there is nothing left of me?
My mother, dearest mother!
How do I tell her that her daughter lost a whole war against herself?

My mother, dearest mother!
How do I tell her that her daughter starves her every atom,
Not for a fast or any holy gain,
But to please the world she birthed her in?

That's the day I had enough, my body refuted and my soul screamed
I told myself darling you're a museum full of art,
But look at you, closing your eyes shut,
Before every passing mirror.

I am enough and I am feminine
And I am worthy, even if I carry a little bit of masculine.
I am myself,
No matter how thick the layer of my skin is.

There is no Yin without a little bit of Yang
And no Yang without a little bit of Yin.
So, how do we expect to fit all in the same pair of jeans?
This battle was long enough for me to break.

If my body is a temple, then I think I might be turning religious
After a long war, I was covered in my own red
And I look at my hands to see what I have done to myself
And I'm glad that I made it out alive.

Today I am free! I am free!
I am not just a body of clay and
Each day I become more of me.

Shame on the body for breaking down while the spirit preserves.

-John Dryden

Memories

Ishika Saxena
B.A. (Hons) English 3rd year

The rustle of fall leaves, the vibrant autumn sky, the cool breeze brushing against my frazzled face and the chatter around me freshens nothing, soothes nothing. Instead, it pushes me down a lane I fear visiting. Closing my eyes, relishing my pain, I let that invisible hand take me wherever it wants. The walk is through an endless path, dark and brooding, a maze composed of hazy images, ricocheting a headache until a bright light consumes me whole. Finally, throw me off the cliff.

I see someone, I see her. It's me, lost in her little world. Locked in between books and colours, her fingers soaked in different paints, but I know she is happy. I can tell by that perpetual beautiful smile adorning her innocent face and that smile forced me to half expect to see Michelangelo's sign lurking beneath her bottom lip. I move forward to stop the lavender stroke she is about to paint, to tell her that a blue one can tell a whole different story, but my forever wandering eyes land on a copy of 'Beauty and the Beast' hidden in a stack of books. Suddenly, I am hit by that realisation of how much she believed in fairy tales, how a small part of me still does, but life is no fairy tale. I want to rush towards her and let her know that the beauty and the beast both reside in her, that she has to fight the beast clawing her mind to let the beauty in her shine. I want to embrace her in a hug, I want to let her know that she is doing just great, to let her know, to let my inner child know that she is safe.

But I feel a tap on my shoulder, "Back to earth, sweetheart", a voice registers in my ears. The trance is broken, the dark alley, blurred images, the little girl, books, paints, the lavender and the blue, the beauty and the beast, all vanish into white light as if they were never there and I was back in fall, the season of the soul. Now, what I left behind are memories wrapped in a blanket of tranquility, slowly huddling me in its arms, providing the comfort my aching heart needs. The overpowering pining is at rest now because I know it's a part of me and I can revisit it anytime again.

Memories seem to be very time-defined notions, but they're not; they're emotions, they're feelings. They are me, you and every little thing which makes us happy. It feels like we will just pass away consumed by it, in it, hankering for one chance to hold it in our arms tightly, to have that feeling as ours for just a brief second, to engrave that moment in our fading breaths once and for all.

Believe me, we all are memories in each other's stories.

Love!

My Experience at the Placement Cell as a President

Gouri Nagpal
B.Com (Hons) 3rd year

Oprah Winfrey was right when she said that the key to realizing a dream is to focus not on success but on significance and then even the small steps and little victories along your path will take on greater meaning. As soon as I entered college life, I personally experienced the truth of her words as I began to strive for the corporate career I had always dreamt of. The zeal came from my father who has always persuaded me to be a better human being first and then build a career of my own. Thus, taking the flambeau ahead, I came in contact with the Placement Cell of P.G.D.A.V. College which is one of the most prestigious cells in the University of Delhi. Once I became a part of it after a rigorous process of interviews, slowly and gradually I learnt good communication skills which boosted my self-confidence. I invested a good amount of time toiling day in and day out with the intention of taking the cell to greater heights.

Driven by the desire to be a better professional, I climbed up the ladder when I was entrusted with the position of a Coordinator at the Placement Cell and it was an astounding experience to absorb the core working of the cell. While I was serving as a Coordinator, I worked on acquiring new skills like managing data, drafting emails, enhancing my pitching skills, collecting feedback and monitoring the requirements of both the students and the recruiters at regular intervals. This was the time I realized that there was much more to the cell than just bringing in the prospects. The broader aspect of the Cell has constantly been to serve the student community by training them and bringing the best of the opportunities available in the market to kickstart the careers of the students of P.G.D.A.V. College.

I don't lose my verve working for the cell for I believe that this work is not less than social service and thus I put forward the best of my capabilities to serve the college and its students. Fortunately, I got rewarded for my hard work and dedication on 29th June 2022, when I was chosen as the President of the Placement Cell. I could not have been more grateful to the management for having faith in my capabilities and for confidently placing such a huge responsibility on my shoulders. Despite my graph of growing responsibilities at the cell, I barely had to compromise on my studies, personal space and fun activities since one of the most crucial lessons from the cell has been multitasking and time-management.

Despite a lot of involvement in the Placement Cell, I have been able to go on multiple trips, personal gatherings and even cafe hopping like any other college student. Thus, the Cell has provided an environment to always enjoy tasks and take up challenges with pride. The

heterogenous mixture of all the skills and knowledge gained helped me in getting placed with EY GDS in the position of Audit Associate and, therefore, I am grateful for the nurturing environment and growth opportunities that the cell has provided to me as an individual.

Working as the President of the Placement Cell, I have had full support of Mrs Kiran Yadav ma'am, our Convenor, who has always motivated me to reach new heights. This year we have successfully secured a greater number of placements in reputed national and multinational companies. We even conducted a job fair for the specially-abled students to grab the best of opportunities available for them, leaving no stones unturned to serve all individuals without disparity. All of this was possible because of my team members at the Placement Cell, who have diligently worked to achieve their dreams and to take the cell to greater heights. I hope the cell continues to thrive and to strive for excellence and that future teams take it to the pinnacle of success by taking small steps to achieve bigger victories.

Men are wise in proportion, not to their experience, but to their capacity for experience.

-George Bernard Shaw

Experience is simply the name we give our mistakes.

-Oscar Wilde

People never learn anything by being told, they have to find out for themselves.

-Paulo Coelho

How to Build a Chair 101

Vani Khera
B.A. (Hons) English 1st Year

What does building a chair have to do with a college magazine?

I myself stand puzzled as to where I want to take this, but one thing is for sure that it does sound intriguing and catchy, much more than how to bake a cake in 10 minutes, or if you think that it is catchy as well, then let me tell you how both of these translate into what I'm trying to say. I will take up the example of the chair later in this article but let us go over the baking of a cake first. Now 'how to bake a cake in 10 minutes' is an allegory. When I go through the chair example you will understand how.

The first and most important step towards making a wooden chair from scratch is to choose your wood. The wood you see is the very foundation of how your chair is going to be. It will determine all necessary characteristics of a good chair. Now, you may want to go with walnut, cherry or oak as these make for some good sturdy furniture. Similarly, you would choose to be a wise, honest and hardworking individual as that is what makes a good, successful person.

The second step would be to peel the bark off the wood. The bark or the dead coarse wood doesn't really make for very comfortable seating. In order to have a nice, smooth surface that instantly makes one want to plant themselves into a chair, the bark has to go. In humans, it is the very same. In order to make yourself more receptive to a blessed fortune and new opportunities you have to peel from you the dead weight that you carry over yourself. This may be the negativity, unaddressed trauma, feelings of harboured hatred or anger that humans seem to collect over the years and fail or are too lazy to get rid of. It may also just be the walls of indifference that people have built around themselves.

The third step is to split parts of peeled wood so as to start with the creation of the chair. Without splitting the wood, it is impossible to transform it into a chair that can provide comfort. The wood not split remains wood, but is practically useless, except if used for burning and in that process the wood is lost. The wood split into parts is also still wood, but suddenly with a hundred new prospects of being a chair, a table, an almirah etc. The case with humans is the same. No, I'm not proposing for you to break yourself physically as that would just be plain tragic like the burnt wood, but rather mentally- the idea to break out of a stagnant mindset. Change is the need of time. You cannot possess only one identity and be proud of finding yourself: that's just limiting yourself to a single definition. For every opportunity that provides itself and aligns with that graph of growth you have for yourself, you have to split your limits to build new ones.

Step four is shaping the parts of the chair. In order for a chair structure to align in form it needs to be shaped. The four legs, the back and the seat all need vigorous shaping. All measurements of the legs need to be precisely equal. Similarly, the seat cannot be the same measure to the back. All needs to be proportionate in such a way, that in collection, it forms a coherent system. For a man to build himself into a new form after breaking into parts, he needs to shape himself accordingly to fit in place again. The qualities here are what need shaping. You pick what's desired and inculcate it within you in different proportions as per the need to take a cohesive approach to growth.

The fifth step towards building your chair is to steam and bend the parts. The chair needs a necessary lift and curve so as to ensure comfort and relaxed posture. Flat bench chairs are good for practicality but longer durations require the bend and curve. It is in this way that those humans who learn to bend themselves when it is required, go further than those who remain unrelenting. You bend yourself not to gain cooperation but to keep yourself humbled with continuous growth that is destined to come your way if you're willing to be flexible. Bending is not bowing; it never is. You bend yourself only till where your body allows you to and slowly and steadily you see even that flexibility increasing.

Step six is to glue and nail all parts together. The product will only be considered finished after it is brought together as a whole. You as a human would be the very embodiment of success only if you have the ability to bring all the components of the making of the chair together at once and incorporate them into your lifestyle instead of separately putting them into use. The rate of progress and improvement would be consistent and ever increasing only and only if you after going through all the pain and difficulties are able to hold yourself together and thrive seeing yourself complete and not in pieces. This is to get your life back in order when it turns to a mess.

The seventh and the last, though not the least, step is to laminate and polish the finished product. Although complete in itself, laminating and polishing your chair would bring to it that fine finish that would make it an attractive furniture, ready to be picked. For a person to shine, you must polish and laminate yourself with the spark of confidence and self love. It is what will give you that radiant shine such that every other person would want you in their ventures. You will then be a trusted, reliable candidate or friend or whatever you choose to be. Never shy away from the results of your hard work, accept them, be grateful and thank yourself only to tell yourself again that the door is still open and never closed.

The cake is a story for another time. It too is an allegory of values that translates into how to get your life back together in a short period of time. The ratio of sugar, cocoa powder, baking powder, oil, flour, milk all vary to make the perfect blend. This batter is your life and, in your hands, rests the recipe to build it. Care in stirring, maintaining the right temperature for baking and selecting the right quality ingredients can all make a difference. I leave it now for you to make on your own, your own chair.

Congratulations on graduating from the school of design!

Traverse

Sanskriti
B.A. (Hons) English 2nd Year

I had hardly begun packing when two hovering figures entered my room silently. I was sitting with my back towards the door, but I knew exactly who they were. I knew the footsteps for I had them memorised for years now and I have memorised them to the point where if they would stamp down anywhere in the whole world, I would know who it is. They were my siblings who entered the room and took a seat next to me and like every sibling we also had no rules for privacy. I threw a cold glance at them but that never seemed to work, did that? On the cold marble floor beside me, lay a pile of clothes, toiletries and all the things that I needed to travel. I didn't have the courage to tell my mother that I don't need more clothes and yes, that the shampoo that I will be keeping will be just enough. She is my mother and I don't have the courage to tell her many things in one go, because her cold glare works just better than mine ever will. I lazed on the floor, staring at the heap of clothes and the empty suitcase. My sister, who has always had a knack for organising things, takes this as an opportunity to begin the packing officially and just to distract my mind from this laborious task, my brother decides to play songs. Well, it's so weird that my brother would never listen to music that has lyrics in it, rather he would listen to tunes and my sister and I would make fun of him saying: "Arre yaar ringtone kyu sunn raha hai?" Anyway, he would still go on playing it. So there goes one ringtone after the other and we all talk about how this journey was going to be the best one ever for me.

It was a bittersweet moment just like the rains in the monsoon with soothing sights and messy mud, or it could even be like the last embrace of a lover when you know you would never get to meet again. We laughed for a few moments, fought for another ten and in the sprinkles of the last few moments we just looked at each other. It was neither a look of love, nor was it a look of hate.

These glances of ours were empty but my suitcase was finally packed. I didn't even realise when they kept every part of my young days in the crevices of the red box, stuffed tightly, making sure nothing of it was left to be lost. The earth had finally taken the eighteenth lap around the sun and suddenly I wasn't as young as I used to be. I felt my back hurt and my eyes did not see clearly. An eternity had passed and all I did was laugh, cry, have fun, land myself in problems, love, live and what not. I was bound to get old as I lived a whole life and look at me, standing dazed and confused as I am at the beginning of a whole new life.

I realised that the sun had gone down and that I would have to leave tomorrow. After eighteen years, two months and twelve days the heap of memories are packed and somewhere my room is filled with everything but it is missing its one third part.

Once, there were conversations that I used to be a part of as a family; now, I was the topic of those very conversations that they would have as a family. I could return home anytime I wanted and I made myself at peace with this, but the truth is that no person who ever walked out of the door returned to the same home ever. They would face just the walls. I have been cocooned for so long and maybe metamorphosis isn't so easy even if you're born a butterfly. In the enticing *kisse* and *kahaniyaan* that we shared, *ek kissa mera bhi tha*. *Ek kissa jo kitne logo se anjaan tha. Ek kissa jiski kahani bhi main hi thi and saare kirdar bhi mere hi the. Ek kissa jo saalo baad kabhi kahani banke kisi kitab mein chap jayega*. What could I say to make myself at ease and do justice to it, because the heart is where I made my home. The home is where I found my heart. I know that someday we all will have to leave home and yes, it is hard to leave home but it is hardest when you are the first one to leave the nest.

That is solemn we have ended,–
Be it but a play
Or a glee among the garret
Or a Holiday

Or a leaving Home; or later,
Parting with a world
We have understood, for better
Still to be unfurled.

-Emily Dickinson

From the Eyes of a Tree

Vartika Singh
B.A. (Hons) English 2nd Year

"One day, you will have wings of your own."

My mother has been saying this for fifteen years now. I do not know if she really believes it, or is lying to herself. We are non-existential beings whose existence keeps the world alive.

A lot of my friends come up to me to thank me for my existence and how the presence of my kind is important for the survival of their families. They never say it with a bad intention but the intensity with which it hurts me every time never seems to diminish.

Nobody asks me if this is what I chose to be. The last time I had a religious conversation with my mother, she told me that God gives everyone a chance to choose between the good and the bad. But what about me? I was never given a chance to choose. Rather, I was born with this ugly bark of mine with the sole purpose of doing good upon humanity as if I am some kind of Buddha.

Out of all, I am the most jealous of my human friends. They get so many opportunities everyday to choose between good and bad. All of them get a million chances to behave badly without caring about the world. Funny thing, nobody even expects anything from them either.

Do you remember how the disappointment (child) of the house is always free to commit blunders and even then, they do not surprise their parents? It's as if they can not stoop any lower than they already are, so everyone stops giving attention to the bad things they do. However, the one child who keeps doing things to make their parents proud is put on the pedestal and forced to stay there until they completely dry out like a stupid rusty blade and wish death upon themselves.

I think, for God, humans are the disappointed kids and my lot are the ones who are always expected to inherit good and bow down to the world in courtesy.

They had been coming for my father for hundreds of years. I once overheard my mother talking to the mail parrot when I was a kid. My father used to live some fifty miles away when my mom gave birth to me. He did not have a glorious privilege of living in the woods like us. He had to suffer from loneliness while living among the colony of humans. He thought he was loved by them because they watered him once in a while. But once he hit puberty and his bark started developing, it was all out.

My father did not have an ugly bark like I did. He had a beautiful trunk with a thick bark. The old owl once told me that he was a strong tree since his teen days and no human strength could cease his existence completely. So, they let him grow.

I never saw any of it myself but it is said that the level of human interruptions started increasing and my father's growth ceased until one day he was replaced by some swimming pool.

As I see all of it myself, it feels as if I can understand my dad on a deeper level and we would bond really well in heaven.

Fifteen years ago, when I was still a teenager and my mom was wrapped up in her beautiful youth, I had seen humans for the first time. I could not believe that these tiny creatures held enough power to destroy anything they wanted to. To me, they looked as small as ants. Their facial features were clearer and their eyes were visible unlike mine but that was all about them.

As they advanced, my heart started beating uncontrollably inside my chest. I do not know if they could listen to the thumping sound of my heartbeat but I swear, I had never felt the crippling pain of anxiety ever before. They cruelly cut some of my beautiful branches to make some cradles and I let it happen, helplessly.

The next time they came, it was a bit different. They looked smaller than earlier and their barks were different too. I think they call them hair instead of bark. Uncle parrot later told me that they were young couples who had come to the forest on a date. I have no clue what a date is but it was fun. They touched me again and again while playing with each other. They even mounted me and tried to use my branch as swings. It tickled me a little, but I was enjoying every moment of it. For the first time in my life, I understood the enchanting power of human touch.

The next time their breed came to the forest, they were talking about some marriage. The human dictionary is so vast that I am unaware of half of their words. My animal friends usually help me decode it but no one was there. Since humans were talking about using my branches to produce fire in the wedding, my friends ran away. Fire is the most terrible thing that can happen to us. I shuddered at the thought too. My mother calls it the punishment of God.

They took a lot of my branches and since then they have never stopped coming, just like it happened with my father. My mother used to cry every time they cut my beautiful branches and took them away from me and every time I used to caress her beautiful soil with my roots until they were not there anymore.

Today, as I stand here on my barren mother who does not have the power to bear grass anymore, I see them coming again probably for the last time. My mother is scared, because I am her only child left in this forest. Her soil is dried up and she can no longer nourish me like she once did.

I am nothing but a skeleton myself. The bark I once hated is long gone and my leaves have decomposed themselves to spend the rest of their lives with my mom. Now, I am just a tall stick, standing upright in this lonely forest, watching my death advance.

The humans look sad today. I look at the owl and ask him to decode what they are saying. It is the only bird left on my branch now. It looks at me in embarrassment and tells me that they are talking about 'death': "A human has died and they need you to burn with it so that the said man can go to heaven."

A teardrop falls from my eyes while the owl flies away to find a new home in the sky. They cruelly tear my body apart with their axe and I feel myself going away from my mother. My body embraces my mother for the first and the last time.

Her soil caresses me and I hear her talking: "Go fearlessly. In heaven, you will have wings of your own."

Film Review: *Gangubai Kathiawadi*

Priyanshi Gautam
B.A. (Hons) English 3rd Year

Prostitution, adultery, sex workers. These words might have made us uncomfortable at some point in our life, but the truth is we never get to or wish to hear the real stories of people who are buried under such words. And of course, why would we? Because all we do is synonymize them with vulgarity and grossness.

The movie *Gangubai Kathiawadi* very tidily focuses on the struggle that people face in the sordid profession of prostitution in a male dominated society. As the movie progresses, we see Gangubai rise to power fighting grief, misfortune, suffering, threats from rival gangs and the police, but she remains determined to protect the women under her care. In spite of the fact that she herself was forced to work as a prostitute, she decides to take control of her life and become a powerful woman.

The aim of the movie is not just to portray the life story of *Gangubai kothewaali* and how she became such an influential woman, but to question the double standards and hypocrisy of the society we live in. It is okay for men to go to a brothel whenever they wish to, but the same men find it unacceptable when a woman from one of those brothels steps out and tries to access basic human needs such as healthcare and education. Society does not treat them as normal human beings who need and deserve love, care, affection and most importantly acceptance.

The movie highlights the struggles and challenges faced by women in brothels. It also breaks the stereotype and stigma associated with women who work in brothels. It shows how these women are not just objects of desire, but also have their own dreams and aspirations- dreams of being accepted, dreams of being loved, dreams of living a normal and happy life.

Overall, the movie was successful in achieving its goal, which is to celebrate the life of a woman who fought against all odds and carved out her own identity in a society that looked down upon her.

Parasite: A Critical Analysis

Isha Smriti
B. A. (Hons) English 3rd year

Bong Joon Ho's 2020 oscar-winning production *Parasite*, released in 2019, is superlative in terms of its cinematography, storyline, and casting. The actors(Park So-Dam, Choi Woo-Shik, Song Kang-Ho, Jang Hye-Jin, and others) have done justice to their characters revealing the raw and bare face of societal class hierarchies and their loopholes.

The movie starts with a strikingly comic yet murky portrayal of the struggles of an unemployed family, residing in a dingy 'semi-basement', managing their way through livelihood on two pence. Kim Ki-Woo (Choi Woo-Shik), the son, manages to work his way into a job as an English tutor for the wealthy Park family and then pulls in the rest of his family into working at the mansion as well. Falsity, forgery, trickery, and deceit runs in the veins of the Kim family, induced by the familial conditions they are bound to live in and survive. Everyone is trying to be someone they are not, and the stakes are raised and complicated by a series of disclosures and twists. As the actual world splatters across the groomed lawn, comedy fades to tragedy and joys turn to grimaces.

Along with several twists and turns, many metaphors have also been employed. The landscaping stone, with its intermittent screen time and roleplay, cleanly executes its initially presumed metaphorical bit part in the climax of the movie and so does the basement which serves the purpose of drawing light upon social distinctions. One can take a look at the layered architecture of the movie through its motifs.

Greed

Director Joon Ho has successfully put forth a very stinging and realistic representation of how greed grows and starts leeching off the host bodies of others, here, the rich Park family while manifesting itself as mere daydreams and tantalising imaginations. The biting universal truth of 'money matters' is stripped naked wherein nothing else holds importance: not education

or university, not degree or knowledge, not career or marriage, but money. Where downstairs is a no-go, it is money that makes you walk up the social staircase.

Rich vs. Poor

Through the Kim family, Joon Ho presents the audience with a poor family's point of view about the rich being gullible. The concept of the rich being naive and nice in their behaviour because they have money is mockingly brought forth.

"Rich people are naive. No resentments. No creases on them." Money smoothens the creases whatsoever. To authenticate the same, the poverty-stricken characters in the film are presented as cunningly evil in intentions, parasitic and sly opportunists.

Paradoxically enough, the movie subtly hints at the merging of the rich and the poor too. Where upper-class folks seemingly despise the "taste of the lowly", they end up exploring and experimenting the same. There are parallels drawn in terms of the struggles faced by each class in their respective horizons of livelihood.

Men vs. Women

Bong Joon-Ho has made sure to draw light upon every little archetypal detail to accentuate the realism that oozes out of the movie. The film depicts the constricted role of husbands and wives where running the household is a wife's sole responsibility, demanding no exertion from the husband, and the husband is meant to be concerned with working outdoors and being serviced indoors.

Smell and Beyond

Among other significant themes highlighted in the movie, the divide between the people living above the surface and the inhabitants of "semi-basements" is made on grounds of a distinctive "smell". Incorporating smell, one of the five human senses, as a marker for emphasising upon existing class boundaries reflects strongly on the degree of its importance in the real world as well. It is this very sense of smell that proves to be one of the major driving forces for the unsettling twists in the movie's due climax.

To sum up, Bong Joon-Ho's *"Parasite"* is a bizarre, magnificent, radical, and dead-on brilliant dark satire narrative about social inequity and late capitalism's faux egalitarian insanity.

> No society ever thrived because it had a large and growing class of parasites living off those who produce.
>
> **-Thomas Sowell**

Can Gossip Be Therapeutic?

A Survey by Students' Editorial Team

Words have no wings, but they can fly a thousand miles. -A Korean Proverb

Humans or, as scientists like to say, Homo sapiens, have always been curious creatures. It is rightly believed that man invented language as an effective medium to communicate than the comfort that sign language could ever provide. Language became a necessity as man felt the need that information needed to be conveyed from one human to another, and it was often information about one human to another: a default of being a social creature. This led to the birth of a communication form that modern humans like to call 'gossip'. Indeed, all have their own assumptions and understanding about this term but according to the Oxford dictionary gossip means a casual or unconstrained conversation or reports about other people, typically involving details that are not confirmed as being true.

Gossip is rooted in our lives and has become so essential that even a code of conduct for the same has been established. For humans to know who can be trusted and who cannot is important and gossip makes a good way to ensure this as the subject of gossip is usually a third party that is not present when the first and second party talk about his/her affairs as a way to build social relationships and exchange experiences. This can also simply be a medium of entertainment as the tendency comes quite naturally to man.

As observed, one just enlists the movies they have seen recently to another and rating them tends to get rather boring, but talking about someone else is much more entertaining. We somehow relate more to a friend's ex cheating on his new partner or a neighbour and his colleague who worked on a project together and the latter took all the credit for it in a meeting with their boss, even when we haven't been through it ourselves.

Though largely focusing on wrongdoings and rumormongers leading the fourth estate, gossip is not always harmful. Both positive and neutral gossip also exist (far more than negative) and can be the medium of avoiding experiences that were uncharacteristically bad or could benefit none except for the serotonin boost it provides.

Gossip is seen as a medium to foster and nurture social bonds and thus facilitates the process of converting small groups of like-minded individuals to larger ones. It gauges cooperation and companionship, but care should also be taken so as to not hurt others and to not create false incidents, as with rumour, gossip usually tends to take an ugly turn.

If language is what differentiates the Homo Sapiens from other species, gossip is an important

differentiator too. Which other species indulges in gossip? Gossip is the warmth that human beings bask in and that brings us to another significant point about gossip. Besides exchange of information and acting as a facilitator so that human bonds can be formed through the act of exchanging gossip, there is the comfort it provides. Gossip does produce that feel good factor and often serves to calm our minds. In other words, we often seek solace through the act of gossiping about others.

Our focus, despite the fact that a couple of questions dealt with gossip that could hurt, was more on the harmless kind of gossip. In our 2023 edition of Ankur magazine, we bring to you the compilation of results from the survey which focused on finding out if gossip is therapeutic or not.

Gossip Survey Graph Analysis

1. Out of 158 responses 74% responded that they do enjoy gossip and 25.9% said they do not enjoy gossip.

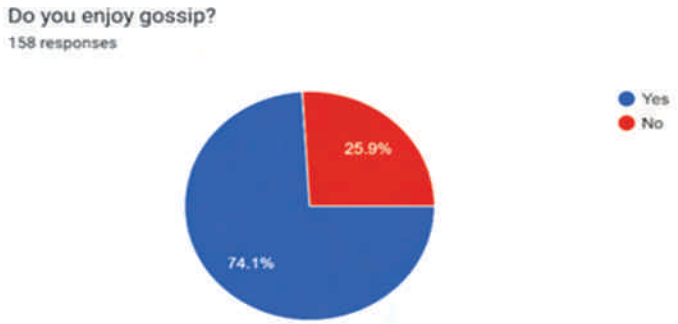

2. Out of 158 responses 98.1% respondents were aware of the term gossip and 1.9% were not aware about this term.

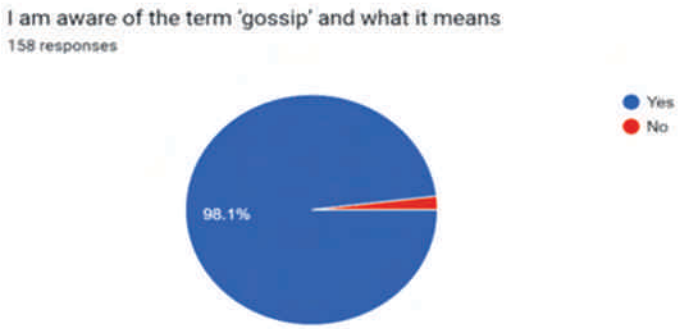

3. Out of 158 respondents 44.3% preferred to gossip with all of the above ,31.6% chose friends, 1.9% chose parents, 9.5 % chose their siblings and 12.7% chose none.

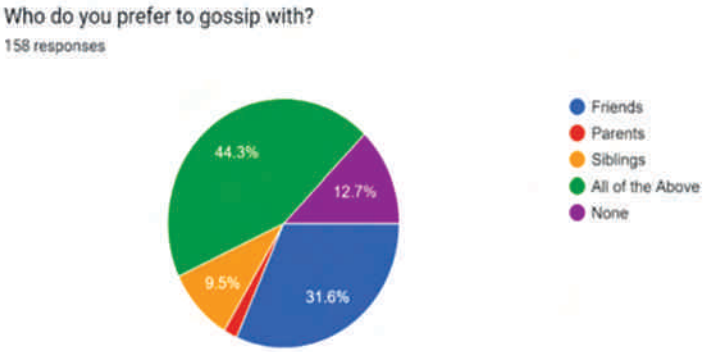

4. Out of 158 responses 70.9% respondents do not feel guilty after gossip while 29.1% do feel guilty.

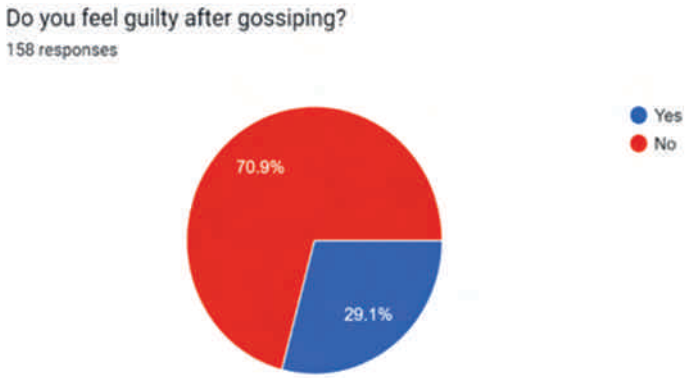

5. Out of 158 responses 74.7% respondents agreed that both men and women generally gossip while 25.3% believed that only women gossip.

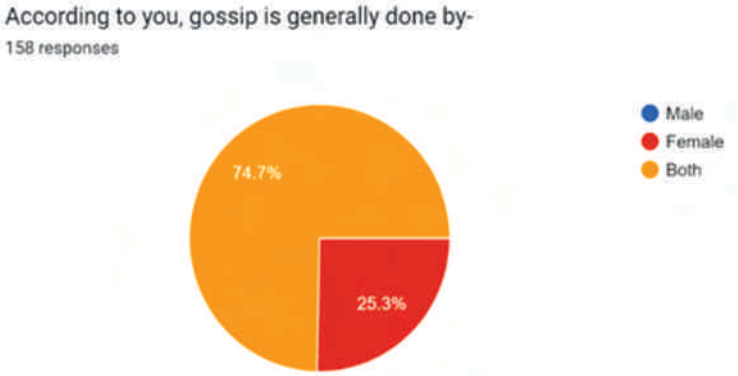

6. Out of 158 responses 79.1% respondents said that they would not gossip about their close friends while 19% might gossip and 1.9% respondents will gossip.

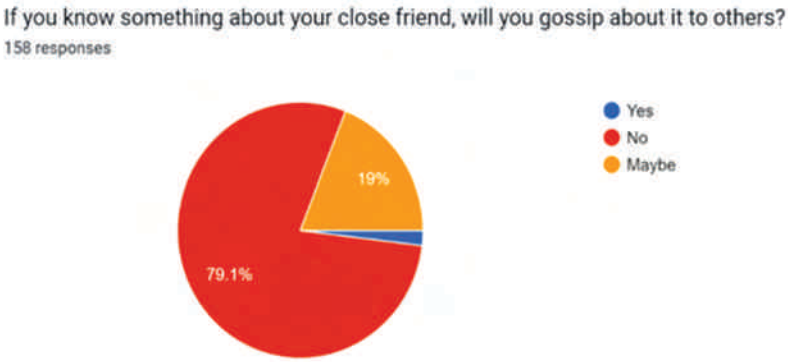

7. Out of 158 responses 39.2% respondents say that they participate in gossip about people they know to learn more, 36.1% ask people to stop and 24.7% stay silent to later inform the person who was the subject of gossip.

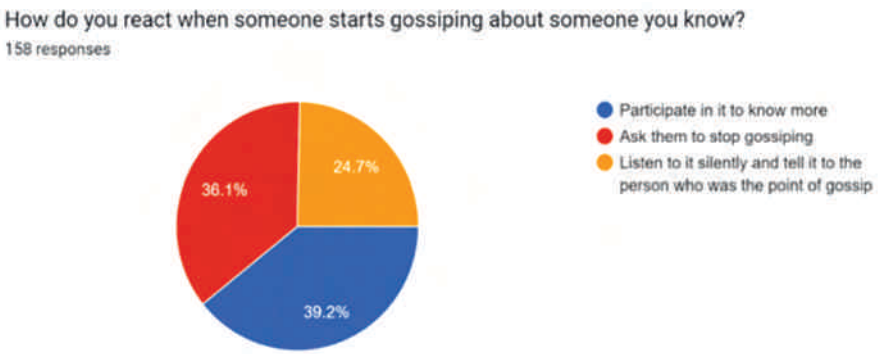

8. Out of 158 responses 62% respondents agree that the increasing use of technology promotes gossip, 13.3% disagree and 24.7% remain undecided.

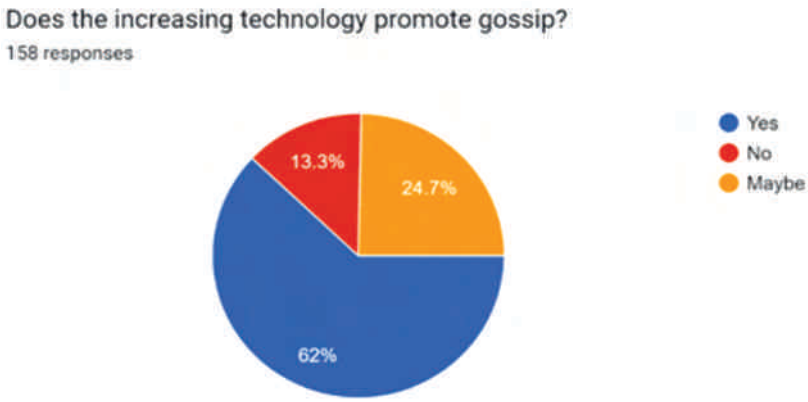

9. Out of 158 responses 77.8% respondents agree with gossip being therapeutic and 22.2% disagree.

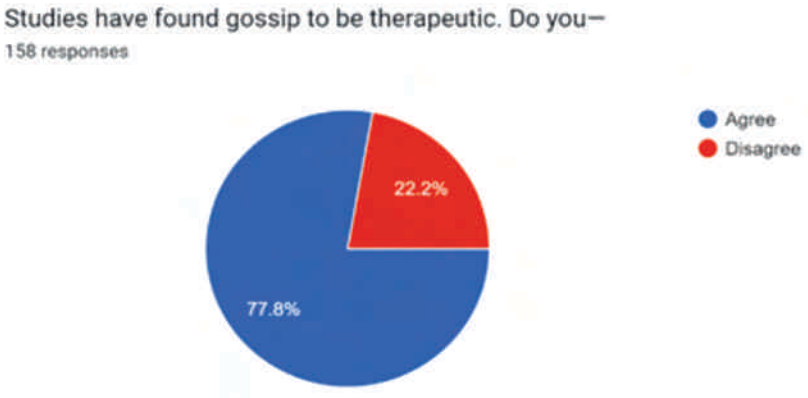

10. Out of 158 responses 51.3% respondents think that the tendency to gossip is innate, 12.8% disagree and 35.9% remain unsure.

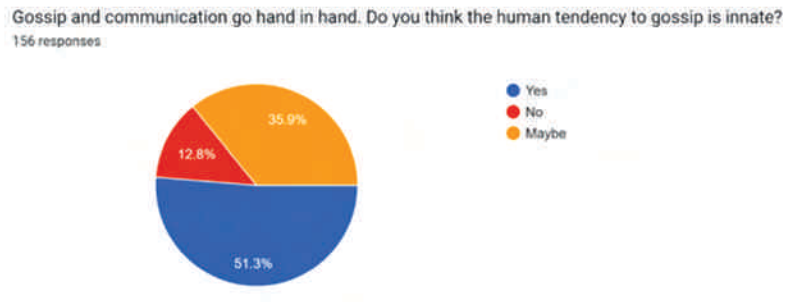

11. Out of 158 responses 58.9% respondents think that gossiping helps build social relationships, 15.8% think it does not and 25.3% remain undecided.

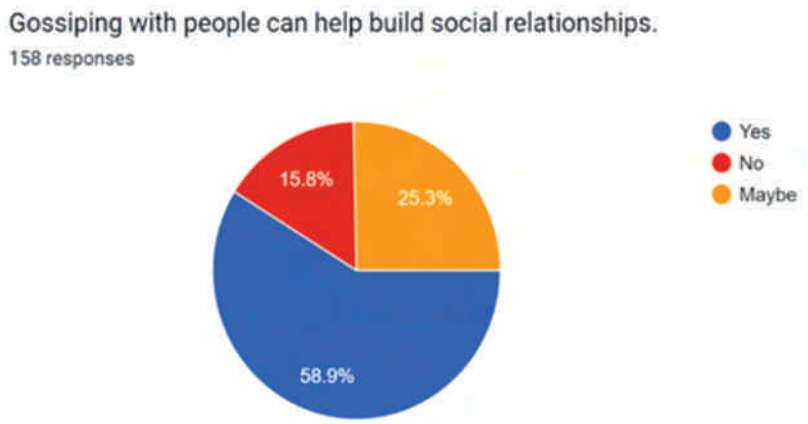

12. Out of 158 responses 55.8% respondents have benefited from gossip and 44.2% have not.

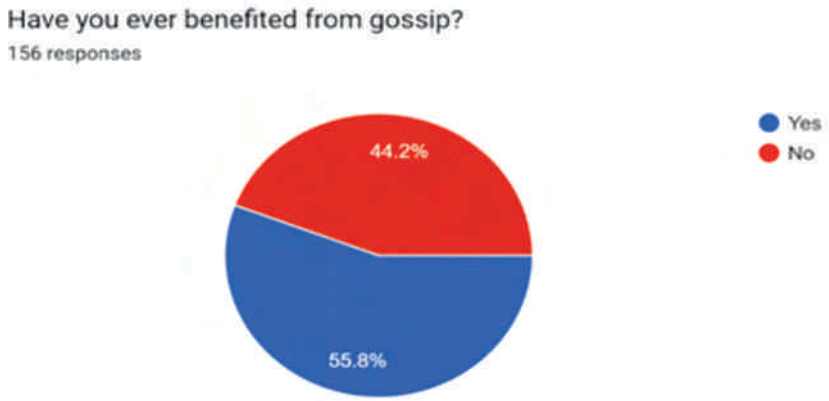

13. Out of 158 responses 72.8% respondents think that gossiping is both a positive and a negative habit, 16.5% think of it to be negative. Two small percentages remain. The smaller percentage of the two believes gossiping is a positive habit and the other remains undecided.

Conclusion

The survey produced results which supported the idea that 'gossip is therapeutic'. Almost all were aware of the term gossip and what it meant. The survey study showed that gossip is not only an activity that teens or young adults partake in, but it also goes around amongst all ages and is not gender specific ; both men and women participate in it. The topic of gossip, be it an individual or an experience that is known or unknown to the people gossiping, generates interest for all. Most people answered that they believe the ability to gossip is innate and that technology can only enhance it a little as it existed much before technology itself. People believe gossip to be a medium of social interaction and the majority have benefited from it. The respondents believe that gossip is an enjoyable activity and can have a positive impact if done within the healthy limits of communication and is not malicious or hateful towards others.

Survey conducted by the students' editorial team:

Questionnaire/Analysis: Swastika, Vartika Singh, Vani Khera and Vaidehi Nautiyal

Writeup/Conclusion: Vani Khera and Vaidehi Nautiyal

Zora 'the Joyful'

Dr. Anubhuti Mishra
Assistant Professor, Department of English

Who was Zora? Zora 'the Joyful'? She was none other than Zora Neale Hurston, the iconic African American female writer who suffered immensely as a victim of racism and sexism, yet strictly refused to be 'tragically coloured'. One of the most celebrated and prolific writers of the Harlem Renaissance, Zora, towards the end of her life faded into oblivion. Though she died penniless and in obscurity, she is remembered as one of the foremothers of black feminism. She has been an inspiration for a host of modern African American female writers. But if it had not been Alice Walker's efforts to resurrect her from unmerited oblivion, there would have been no pages devoted to this groundbreaking writer in the history of African American literature. Zora's grave remained unmarked until Alice Walker discovered it and placed a gravestone on it. It is ironic that most of her works are in print today while nobody recognized her at any point during her lifetime.

Zora, the 'black girl' from Eatonville, Florida, a small 'all black' township in the rural south of America, reached Harlem, the Mecca of African American culture in 1925. Brimming with enthusiasm, wit, and talent, she became a vital force within the cultural movement of the Harlem Renaissance. Intriguing readers with her tales of African American life in the rural south and her freewheeling sense of fun, Zora carved out a niche for herself in the antagonistic world of Harlem, predominated by African American male writers, artists, and musicians. Unfortunately, the community of African American intellectuals and the black press gradually alienated her for her non-conformist views.

Zora was full of life and mirth. She was always joyful, as nothing could crush her spirits. "When Zora was there, she was the party," the poet Sterling Brown once recalled. A dauntless woman, Zora fashioned herself according to her own will. In her autobiography, Dust Tracks

on a Road, she blurs fact and fiction to suit her sense of self. Zora's portrait photographer and friend Van Vechten recalls her as 'picturesque, witty, electric, indiscreet, and unreliable'. Zora preferred to play the trickster as she knew that open defiance in a hostile world where the enemy is stronger is nothing but the strategy of fools. She realised indirection and guile are rather crucial strategies for survival and victory.

Zora in her writings tactfully challenges the binary opposition of the colour line by embracing rather than mitigating differences. In 'How It Feels To Be Coloured' Me she writes, 'I feel most coloured when I am thrown against a sharp white background.' Interestingly, in The Characteristics of Negro Expression, she shows an opposition between those who can feel and those who cannot over the opposition between black and white. In response to the question, 'how does it feel to be coloured?' she holds a mirror to the inquirer and asks, 'how does it feel to be coloured, that is prejudiced?' With this mirror, which is more than a practical joke, she challenges binary opposition as a system of representation.

In many of Zora Hurston's writings, we come across protagonists who reflect the spirit of Hurston herself. We meet her in Isis, the protagonist of her semi-autobiographical short story, Drenched in Light. Published in 1924, Drenched in Light was Hurston's first printed piece. The protagonist is an adolescent who takes pride in her 'coloured self' and craves recognition as an artist. This girl is named Isis Watts and is as vivacious as the story's title suggests and known by everyone in her community as 'the joyful'. The fictional Isis, like the young Hurston in Eatonville, perches on the gatepost to watch travellers making their way to and from Orlando. The 'shell road' is her 'great attraction' for eventually she knows it will offer escape and adventure. The story seems to be Hurston's unapologetic tribute to the impudent, unrefined child she once had been. The story is rich in its verbal combat between Isis and her Grandmother Potts (who bears the name of Hurston's own grandmother) vying with Isis and the world for control. However, the mischievous Isis outwits her grandmother in both speech and actions. Like a trickster she slips away without punishment, lulled by the music she hears at a nearby barbecue and 'log-rolling event.' She steals Grandma's new red tablecloth to complete her metamorphosis into an exotic gypsy dancer, with a shawl. Her debut as a dancer for the barbecue crowd gives her momentary power in a sphere beyond Grandma's house.

Hurston's protagonists like Hurston herself raise their voices to affirm what is their birthright – an independent will to create their own beauty—a beauty of life that is guarded by their cunning and their sharp tongues. Like Janie of Hurston's novel *Their Eyes Were Watching God* they gather the horizon 'like a great fish-net...So much of life in its meshes!'

> There is no such thing as race. None. There is just a human race – scientifically, anthropologically.
>
> **-Toni Morrison**

In the Memory of Those Brave Men

Dr Anish Kumar. K
Assistant Professor, Department of English

Our country attained its long-cherished independence 75 years ago. For achieving this goal thousands laid down their precious lives. Their sacrifice was for creating an independent, prosperous and a democratic India for the benefit of coming generations. But do we really remember them? An attempt is made here to unravel the role played by a few revolutionaries in India's freedom struggle:

1. Shamji Krishna Varma inspired Indian youth who came to England for higher studies. In 1905 he started a newspaper titled The Indian Sociologist for propagating the cause of India's freedom. He was the one who set up the India House, a hostel for Indian students studying in England. Those who wanted to stay in the hostel had to take an oath that they would never ever serve the British. He travelled to France, America, Germany, Russia and Japan and worked with the Indians there to fight against the British administrators in India.

2. Aurobindo Ghosh started a secret revolutionary outfit called Yugantar. It increased the pace of movement against the British administration. The British passed 'The Black Law' in 1907 and a number of nationalist publishers were arrested and imprisoned. The brain behind the action was Judge Kingsford. The revolutionary group decided to kill Kingsford. Khudiram Bose and Prafulla Chaki were chosen to execute the mission. On 30th April 1908 they attacked a carriage thinking that it was Kingsford's, and destroyed it. Unfortunately, it was that of Mrs. Kennedy. Khudiram Bose was arrested on May 1st 1908, and Prafulla Chaki evaded his arrest by shooting himself. When the Judge announced Khudiram's execution and asked what his last wish was, Khudiram said that he wished to teach the Indians how to make bombs; he was the first Indian to throw a bomb at those who represented British authority. He walked to the gallows with a smile on 11th August, 1908.

3. Rajguru was the trusted friend of Bhagat Singh and was involved in the murder of S.P Saunders of Lahore. The killing was a revenge for the untimely death of Lala Lajpat Rai who led a mass demonstration against the Simon Commission in front of Lahore railway

station on 30th October, 1928. He was brutally assaulted by the police with lathis. He could not survive the attack and died on 17th November, 1928. The revolutionaries decided to kill Scott, a senior British officer who ordered the lathi charge. Rajguru volunteered to accomplish the task along with Bhagat Singh. Jaigopal, who was deputed to track down Scott, traced Saunders instead of Scott. It was a case of mistaken identity. Rajguru and Bhagat Singh were waiting outside Lahore police station. As the police officer drove his motorcycle out, Bhagat Singh realised it was not Scott and cautioned Rajguru but the latter fired bullets on him saying he was also responsible for Lajpat Rai's death. Rajguru was arrested in Uttar Pradesh and was imprisoned in Miyawati jail. He was hanged to death on March 24th 1931.

4. Ashfaqulla Khan of Uttar Pradesh was associated with the Hindustan Republican Association aimed at liberating the country through armed revolution. He and his associates were involved in looting the British treasury on August 9th, 1925. His friend Ram Prasad Bismil was arrested on September 26th, 1925. Ashfaqulla fled from place to place and reached Delhi with the plan to go abroad. He was planning to intensify the revolution by staying on safe turf but he was arrested. The officials forwarded an offer to release him on the condition that he testify against Bismil. He turned down the offer retorting: "I would rather die than live under British rule". Ashfaqulla, Ram Prasad Bismil, Rajendra Lahiri and Roshan Singh were sentenced to death for the Kakori case. Ashfaqulla was hanged to death on December 19th, 1927.

5. Beena Das, an outstanding graduate student at Chittagong College, was a member of Hindustan Republican Army. She wanted to assassinate Stanely Jackson, the Governor of Bengal, the brain behind crushing the freedom movement. Jackson was to award her B.A Degree at a grand convocation ceremony at Calcutta University. She chose this occasion to accomplish her cherished mission. On 6th February, 1932, Beena Das smuggled a pistol into the convocation hall and shot Stanely Jackson. Unfortunately, she could only seriously injure him. She was arrested and sentenced to nine years rigorous imprisonment to the Kalapani on the Andaman island. She was tortured to death by the British during the ninth year of imprisonment in 1941.

The revolutionaries valiantly fought for the freedom of the nation. They struggled and suffered in silence without expecting any public applause.

Travel Photo Feature

Nancy Khera
Associate Professor, Department of English

If there is something that is more distinctive of the Netherlands than windmills and tulips, it is the humble but ubiquitous cycle.

From dedicated cycle lanes throughout the city, to massive parking spaces for the same and the simple but innovative ideas to move them easily up and down ramps and stairs, I was absolutely fascinated by the Dutch love for the cycle!

Not only are they an environment-friendly form of transport, but parked anywhere and everywhere, they add such charm and colour to your holiday pics! And of course, sometimes they need to be fished out of the canals!

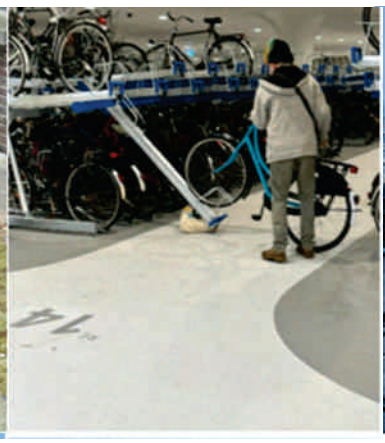

Musings on Masks

Renu Kapoor
Associate Professor, Department of English

Masks have acquired a topicality in Covid times which makes me reminisce about Venetian carnival masks that one sees all over Venice. These masks are the most recognized symbol of Venice, after the canals and gondolas of course.

Venetian masks have a long history and were worn during the carnival whose origins date back to the 12th century. Masks have been part of most cultures - think carnivals around the world or performing arts such as Classical Greek drama, Japanese Noh theatre, Indian classical dance form Kathakali and have deep symbolic significance too. Masks allow one to hide one's face, emotions and identity, granting a strange freedom (liberating as well as frightening) by rendering the wearer anonymous.

Once masked, one can be whatever one wants to be and that's how the words ‘mask’ and ‘unmask’ acquire multilayered connotations. These masks add so much colour to this city and are a photographer's delight too.

Forget Me (Not)

Dr. Om Prakash Gupta
Ex. Associate Professor, Department of Commerce

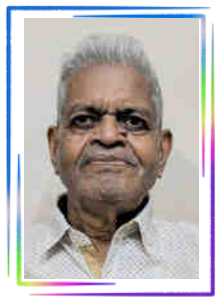

A long time back (more than half a century ago), the founder principal of our college, Late. Sh. R. N. Chopra purchased a car. I went to congratulate him. He offered me a trip to Shimla for a fortnight. I thanked him. The next day, we left for Chandigarh en route to Shimla. At lunchtime, we reached Chandigarh. The next morning, our principal sir decided not to take his car to Shimla because he had no experience driving in hilly areas. The next day, we reached Shimla in the afternoon. Principal sir stayed with his cousin brother, who was the director of the horticulture department in Himachal Pradesh. I stayed at a hotel.

The weather in Shimla was sunny and bright. I was keen to enjoy snowfall. But the Weather God was not in the mood to oblige me. Vacations were slowly coming to an end. We booked our tickets for the return journey. Luckily, on the eve of my departure from Shimla, there was moderate to heavy snowfall which I enjoyed and returned to Delhi happily.

I had completed three years of teaching at my college. I was eager to enrol myself for PhD in management. One of my senior colleagues, Mr Sushil Gupta, advised me to undergo training in Research Methodology before enrolling for a PhD. After a week or so, I read an advertisement in a newspaper that The Institute of Economic Growth, University of Delhi, had invited applications for the Research Methodology Training Course in Social Sciences. I regarded it as a God-sent opportunity and applied for admission to the Research Methodology course without wasting even a single day.

After a fortnight, I received a letter informing about my admission to the Research Methodology course. The letter also mentioned the date of the inaugural function. I reached the Institute on the day fixed for the inaugural function. The function was organized in the Mini Theatre of the Institute. Prof. P. N. Dhar, Director of the Institute of Economic Growth, was the Chief Guest. Prof. A.M. Khusro was on the mike. Prof Khusro welcomed the Chief Guest and the audience. He explained the importance of the Institute in the economic development of the country. He also emphasized the role of research methodology in research work going on in the country. Before the function came to an end, Prof. Khusro announced my appointment as the secretary of the Research Methodology Trainee Group. I thanked Prof Khusro for appointing me as the secretary of the Trainee Group and assured him of my full cooperation.

Prof. Khusro proposed a vote of thanks to Prof. P. N. Dhar. After the function was over, a girl, in her early twenties, met me outside the hall. She congratulated me for being appointed secretary of the trainee group. I thanked her and asked for her introduction. She introduced

herself to me as Ms Shashi Gupta, a post-graduate in Economics and a resident of Ahmedabad. I offered her a cup of coffee. However, she made a counter offer of a cup of coffee and said that she would accept my offer some other day. As such, I accepted her offer of a cup of coffee.

After a fortnight, she met me outside the library and asked whether I could take her on a sightseeing tour of Delhi. I replied that I would try. One day, one of our teachers was on leave, and there was no other class on that day. I regarded it as a God-sent opportunity to take Shashi sightseeing. I asked her and she readily agreed.

We hired an auto and reached Fountain Chowk in Chandni Chowk, Old Delhi, a historical and cultural place in Delhi. It is surrounded by Red Fort in the east, Gurudwara Sheeshganj Sahib in the south, Chandni Chowk Bazaar and Fatehpuri Mosque in the west, and Delhi Railway Station and Inter State Bus Terminal, popularly called ISBT, in the north.

It was breakfast time, and I asked Shashi what she would like to take. She expressed her desire for *Bangla* Sweets. I took her to Annapurna, an eatery specializing in *Bangla* sweets. We enjoyed Bengali *Rasgulla*, *Cham Cham* and other *Bangla* specialities.

When we were coming out of Annapurna, I noticed a signboard of Ghantewala Shahi Halwai. The signboard claimed his shop was three centuries old. I asked Shashi whether she would like to eat North-Indian Sweets. She agreed. We enjoyed *Gulab Jamun*, *Barfi*, and milk cake. It was winter season. So, we enjoyed a special preparation of the season, *Gajar Ka Halwa*, a preparation with carrots, milk, sugar and *ghee*.

After eating sweets, we felt to eat something salty. I, therefore, took Shashi to *Gali Paranthe Wali* Street in Moti Bazar, Chandni Chowk, where the famous shop of Kanwarji is situated. It is famous all over North India. We enjoyed *Kachori, Samosa* and *Dalbizi* (a preparation of gram flour, lentils and melon seeds).

Since our stomachs were full and there was no room to eat anything, we decided to skip our lunch and left for Red Fort. When we reached Dariba Bazar crossing, I noticed the famous shop 'Nem Chand Jalebi Wala'. I asked Shashi if she would like to taste Jalebis, which were very tasty. She agreed. After some time, the waiter brought one plate full of Jalebis. On seeing the waiter carrying one plate of *jalebis*, Shashi started shouting. I asked her what the problem was. She said that there was no relationship between her and myself and as such why I ordered one plate of Jalebis to be shared with her. I was stunned to hear this. I told her that our stomachs were full at the three eateries earlier. As such, we could not eat anything anymore. I ordered one plate of *jalebis* just to taste, not to eat. She cooled down and we left for Red Fort.

When we reached Red Fort, the booking window was closed for lunch. When it opened after 15-20 minutes, we booked our tickets and entered Red Fort. At the Red Fort, we visited Diwan-e-Aam, Diwan-e-Khas, Moti Masjid, etc. We also went on the rampart of the Red Fort from where the Prime Minister of the country unfurls the tricolour and addresses the nation. From

the rampart of the Red Fort, a clear view of Chandni Chowk and Fatehpuri Mosque could be grabbed.

After visiting the Red Fort, we left for Jama Masjid. There, we met Shahi Imam of Jama Masjid, Mr. Abdulla Bukhari. He explained the historical importance of the Jama Masjid. It was constructed on a very high platform. It has four minarets and a central dome. After Jama Masjid, we left for Raj Ghat.

At Raj Ghat, we visited the Samadhis of Mahatma Gandhi, the father of the nation, and other dignitaries. We left for Lotus Temple. Lotus Temple is worth seeing. It combines the art and culture of our country and the Bahai faith.

Finally, we left for Qutub Minar. It is a marvellous piece of art and culture. We could not climb the stairs of Qutub Minar, which were locked as several people had committed suicide by jumping from the Qutub Minar.

We packed up our tour after visiting Qutub Minar. Shashi left for her hostel, and I left for my home. When I reached my home, I found that my wife was very worried because I was very late. There were no mobile phones in those days by which I could inform her of being so late. Even the landline phone was installed at my home after a month of this incident.

After a fortnight or so, Shashi met me again and requested to take her to a movie. She was a fan of Nutan and Sunil Dutt as was clear from the songs she hummed in the classroom whenever a teacher was late or there was no class.

In those days, an advertisement for the Premier of the film 'Milan' starring Nutan and Sunil Dutt was doing rounds. I booked three tickets — one for me, one for my wife and one for Shashi.

My wife seated between me and Shashi as I was apprehensive of Shashi creating a scene just as she created in Chandni Chowk during the sightseeing trip earlier. However, the time passed incident- free. We liked and enjoyed the movie.

The summer season set in. Shashi met me and told me that it is very hot during summer in Delhi. She could not sleep and concentrate on her studies. I purchased a table fan for her, which cost me very dearly — more than half of my monthly salary. In those days, a lecturer used to get a meagre salary of ₹ 500.

The Research Methodology programme was going on a fast track. I organized several seminars and lectures on the subject selected by the candidates. I presented my research paper on ‘Capital Formation and Financing of Sugar Industry in India’. During the third Five Year Plan, it was published in 'News and Notes', a publication of the Dept. of Company Affairs, Ministry of Finance, Govt. of India.

My friend, Mr Raj Gopal Saxena, presented his paper on ‘Debt and Equity financing in Delhi Cloth and General Mills.’ His paper was also published in the same publication in which my paper was published.

Time was passing fast. The institute notified the date of the Farewell function. I arranged

a group photograph to keep our memories of the Research Methodology Training Course afresh in our minds. As soon as the photographer asked the audience to be ready for the photograph, Shashi hurriedly grabbed the chair next to mine. Although she had the option to sit (or even stand) elsewhere, she sat on the chair next to mine.

A short cultural programme was also organized. Members presented their favourite items. Shashi also presented her pet song from Sujata, Nutan and Sunil Dutt starrer '*Jalte hai Jiske liye tere ankhon ke diye dhund laya hu wo geet tere liye, tere liye*'. I presented a song from Bharosa - Guru Dutt and Asha Parik starrer, '*Wo dil kahan se laun jo yaad teri bhula de, mujhe yaad ane wale koi rasta bata de*'. The function ended with a dinner at a nearby restaurant on Bungalow Road in Kamla Nagar.

It was quite late at night. I, therefore, thought it proper to drop Shashi at her hostel. After reaching her hostel, she requested me to wait for five minutes. I, once again, became apprehensive as she may create a scene. Luckily, nothing of the sort happened. She returned, after 4-5 minutes, with the fan that I purchased for her when she complained of the hot summer in the hostel. I heaved a sigh of relief. Both of us bid a final farewell to each other. All is well that ends well. However, it was not so.

The next morning, when I was about to leave for my college, I asked my wife to replace my handkerchief. She brought one on the corner of which was embroidered "Forget me (not)".

Thou shalt not rob me, thievish Time,
Of all my blessings or my joy;
I have some jewels in my heart
Which thou art powerless to destory.

So, thievish Time, I fear thee not;
Thou'rt powerless on this heart of mine;
My precious jewels are my own,
'Tis but the settings that are thine.

-Charles Mackay
Thievish Time

Creativity doesn't wait for that perfect moment. It fashions its own perfect moment out of ordinary ones.

-Bruce Garrabrandt

Creativity is seeing what everyone else has seen, and thinking what no one else has thought.

-Albert Einstein

The object of art is to give life a shape.

-William Shakespeare

Fill your paper with the breathings of your heart.

-William Wordsworth

What is art? It is the response of man's creative soul to the call of the real.

-Rabindranath Tagore

Invention, it must be humbly admitted, does not consist in creating out of void but out of chaos.

-Mary Shelly

Department and Society Reports

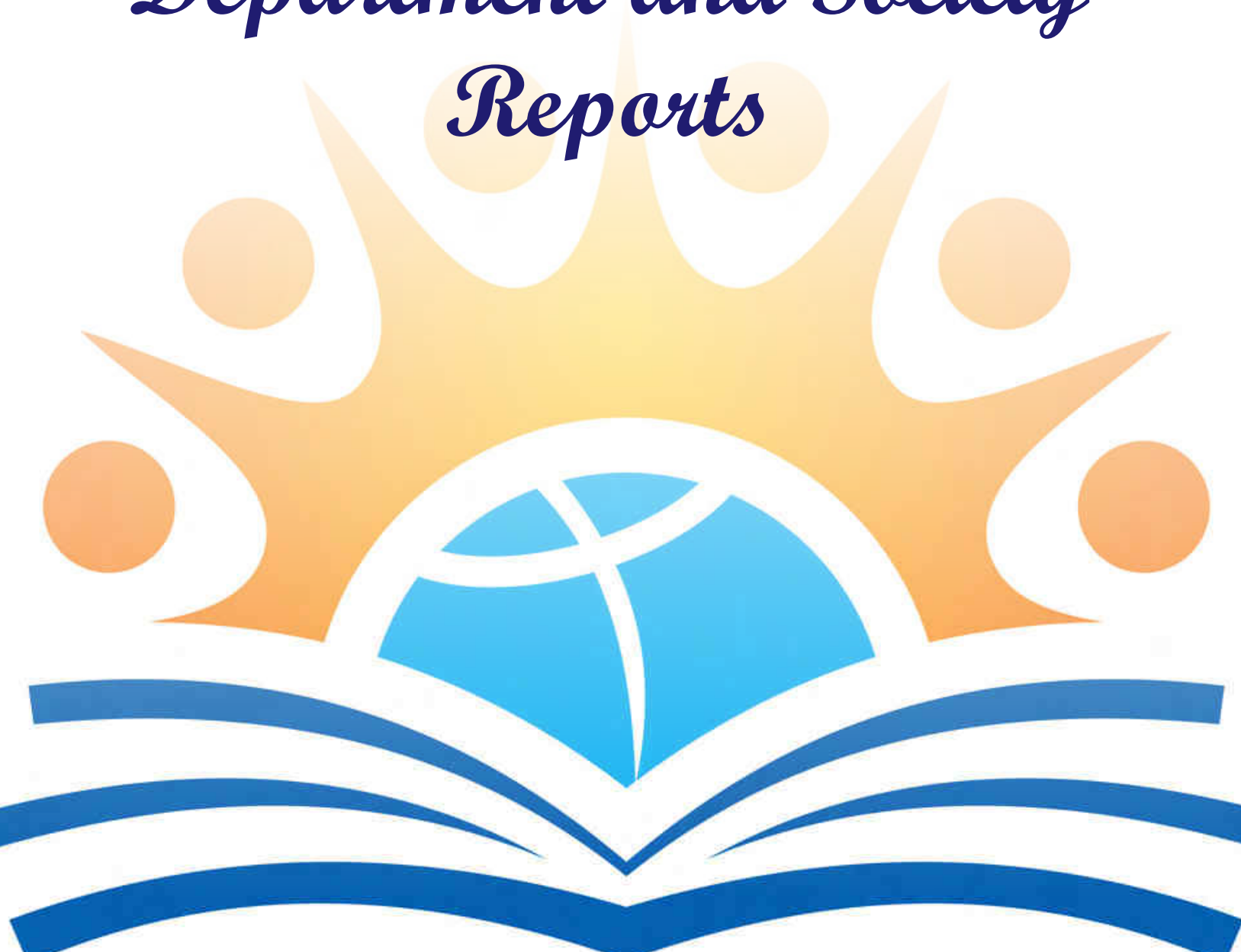

IQAC Report

IQAC has successfully submitted AQAR for the years 2016-17, 2017-18, 2018-19 with great effort and support from all colleagues. AQAR 2019-20 is also ready for submission. IQAC is proud of its progressive role in ensuring qualitative initiatives and facilitation of projects undertaken by the college principal, administration, societies, and departments.

This year onwards, IQAC has initiated systematic filling up of APAR forms by all faculty members for updated information on faculty progress and as a step towards academic audit.

IQAC contributed towards making the process of promotion of faculty members smooth and helped us in achieving promotions of many colleagues, including six to the level of professors.

Study Forums continued to function smoothly in every department where faculty members shared and discussed the latest research in their respective fields regularly at Study Forum Meets.

IQAC proposed and facilitated the formation of Research Cell to promote research culture among faculty members and provide incentives to publish their work in academic journals of repute. The library has also allocated a dedicated research room for this purpose with many facilities to enhance research work.

The college continued to provide opportunities to students to enhance their skills by organising Student Certificate Courses. Student Certificate Courses were held by the Department of Commerce and Economics. In addition to that, a Boot Camp was conducted by the Placement Cell to keep students ahead of the learning curve. A large number of students were registered and benefited immensely by this programme. All the departments were encouraged to conduct webinars and seminars throughout the year.

IQAC stressed on the need for a more updated, dynamic and user-friendly official college website. This task has been accomplished to the satisfaction of all users.

IQAC has also formed a Parent-Teacher Association and created a form for registration of parents. It leads to a more meaningful interaction between college and the stakeholders.

Keeping up with the notion of conscious responsibility towards society and environment, the college continued to increase its green cover.

As suggested by the Chairman, Governing Body, Shri Ajay Suri, IQAC took measures to strengthen the college alumni base. The college and various departments approached alumni, consolidated their data and successfully conducted Alumni Meets.

Anu Kapoor
IQAC, Co-ordinator

Library Report

College Library has a treasure trove of 1,03,907 books and 4534 bound volumes of journals. A total of 1871 books worth Rs.14,17,361 were purchased in this session. About 65 periodicals and 18 newspapers are regularly subscribed. Library is also treasured with the very valuable *Signature Edition Talking Gita* which is available in 15 Languages. Faculties and students have free access to both conventional as well as electronic resources like the e-resources of Delhi University Library System (DULS), DU E-Library, N-LIST e-resources, DELNET e resources etc.

This year, 1213 students and faculty members were linked to N-LIST resources with a total of 5624 member users from the college. They are highly benefited with this facility. Remote access to DULS e-resources is provided to all the faculty members and post-graduate students of the college where all the useful resources can be accessed at the click of a button from their remote locations. DELNET e-resources are open to all the students and faculty members of the college.

College e-library, a dedicated computer lab for the students of the college, functions to support the studies and maximise the use of e-resources and facilitate internet browsing for academic purposes. Two units of new OPAC are procured by the library. These have latest features like touch screens to enable users to locate library resources easily. The reference section (also a conference room) with is very welcoming and comfortable sitting is open for the academic events to take place. The library is fully computerised and is open on all working days from 9 am to 5 pm for the convenience of students and faculty members.

Library Book Bank - We have a very rich book collection of 12497 books for needy students; they can avail this facility twice a year.

Library Services to Differently Abled Users - The college library supports differently abled users through numerous assistive devices and softwares like Braille s/w JAWS, ANGEL DAISY Reader, MP3 Recorder, Laptops, Zoom Ex Instant Text Reader, Lex Portable Camera, etc. for teaching and learning. Access to the Braille library and sound recording facility is also provided to visually impaired students. Five computer workstations have been dedicated for this purpose. Library also subscribes to White Print, an English Braille magazine.

Library Activities - Continuous orientation programmes were conducted to guide students to use the library resources effectively. An Information Literacy Programme was conducted on 'Know Your Library and Learn to Access E Resources' for the newly admitted students of the college. The students were made aware about the available library resources, open educational resources, open text book sources, N-LIST resources and DELNET resources.

Celebrating 75 Years of India's Independence, college library organised a one-week Book Exhibition on the theme 'Azadi ki Kahani, Pustako ki Zubani' from 11-08-22 to 18-08-22. Books,

as per the theme, were displayed at several locations in the library to acquaint library users with the events of India's freedom.

12th August was observed as National Librarian's Day. This day is also celebrated in remembrance of Dr. S. R. Ranganathan, father of Library Science, for his immense contribution in the field of Library and Information Science.

To motivate library users and inculcate reading habits and provide a wider platform for book selection, the college library organised a Book Fair for two days on 18th -19th Jan, 2023. Many renowned publishers were invited to display their collection. An overwhelming response was received from the faculties and the students of the college.

Celebrating Azadi Ka Amrit Mahotsav, PGDAV College library has developed a special corner having a collection of books on India's struggle for freedom, its freedom fighters, and forgotten heros under 'Swatantra Sahitya Pustak Dirgha'. The programme was inaugurated by distinguished guests and dignitaries like Sh. Bharat Bhushan, Sangh Prant Karyavah, Delhi Wing and Dr. Bal Mukund Pandey, National Organising Secretary, Akhil Bhartiya Itihas Sankalan Yojna (ABISY).

Librarian : Garima Gaur Srivastava

National Cadet Corps (NCC)

Under the guidance of Lt. Renu Jonwall, SW cadets of 3 PGDAV troops have participated ànd won commendable awards in various camps such as CATC, TSC, EBSB, NWM, ALC, PMR, RDC and other various activities. A few of the achievements:

1. DG NCC Commendation awarded to JUO Ekta, a gold medal for masters of ceremony.
2. Second place in group discussion and singing competition.
3. An award for kho-kho.
4. Third position in Unity Run.
5. Bronze medal in 100m race.
6. Gold medal in tug of war.
7. NIAP presentation.
8. Campus ambassadors took part in the SVEEP event to make voter identity cards.

Report :

Being the largest uniformed youth organisation in the world, the NCC offers distinctive opportunities for youth development via varied activities and a diverse curriculum. This year, the SW cadets of 3 PGDAV troops had the chance to develop and pick up new skills while being supervised by Lt. Renu Jonwall and JUO Ekta.

The SW cadets of PGDAV showed that they have a strong desire to learn new skills through various camps by actively engaging in each venture.

JUO Ekta participated in Republic Day Camp (RDC)-2023 and received praise for her outstanding work. She received a DG NCC Commendation Card in recognition of her utmost sincerity and devotion. At the Prime Minister Rally (PMR) 2023, 4 cadets took part in the cultural event. In Nagrota, Jammu, two cadets participated in the Ek Bharat Shreshtha

Bharat (EBSB) camp, where they learned about the vibrant culture of Sikkim and Jammu and Kashmir. A member of our cadet programme also took part in National War Memorial Camp 2022. Two cadets went to Advance Leadership Camp (ALC) 2022 in Agra to improve their abilities and gain more leadership skills.

Our SW cadets participated in the Yoga Day event hosted by the college and 3DGBN unit to mark International Yoga Day and to promote the idea of a healthy lifestyle. Throughout the year, cadets participated in a range of activities, such as the Unity Run, Say no to Drugs Pledge, Tiranga Yatra Rally, etc. Our cadets not only took part in the activities and camps, but they also received several awards, medals, and certificates.

CPL Manasvi Kalra won a gold medal for Masters of Ceremony during the Cadre 1 of Thal Sainik Camp (TSC), while LCPL Ritika Yadav won silver in the group discussion competition and the singing competition. Cadet Vandana Kumari also received a certificate for kho-kho during the same camp. At the Unity Run, Cadet Kanishka came in third place and won a bronze medal. At a Combined Annual Training Camp (CATC), Cadet Bani took home the bronze medal in the race. Cadet Rachna Singh got a silver medal in Kho-Kho and a gold medal in the tug of war competition in the Ek Bharat Shreshtha Bharat (EBSB) camp, and LCPL Ritika Yadav won a gold medal in the National Integration Awareness Presentation (NIAP). After being selected as campus ambassador, CPL Manasvi Kalra had the chance to take part in SVEEP (Systematic Voters' Education and Electoral Participation) event and spread the word about the value of voting through several efforts.

A contingent of cadets also marched on the annual sports day of our college. SGT. Samiksha Kalra was the flag bearer and LCPL Ishika Rana was the contingent commander. Four of our cadets also went on duty at the World Book Fair held at Pragati Maidan.

Girls expressed special interest in joining the PGDAV Company this year, and sixteen of them were selected after ANO, Lt. Renu Jonwal, evaluated their personalities through a written test, physical exam, and interview.

Achievements of NCC :

S. NO	Camp	Date	Place	Name of Cadets	Achievement
1.	Republic Day Camp (RDC) 2023	31 Dec 22- 29 Jan 23	Delhi	JUO Ekta	DG NCC Commendation Card
2.	Prime Minister Rally (PMR) 2023	14 Jan 23 - 29 Jan 23	Delhi	CDT Preeti CDT Madhu CDT Diya CDT Arunima	
3.	Ek Bharat Shreshtha Bharat Camp (EBSB) 2022	11 Oct 22 - 20 Oct 22	Nagrota	LCPL Ritika Yadav CDT Rachna	Silver medal in kho-kho, Gold medal in tug of war and NIAP presentation
4.	Advance Leadership Camp (ALC) 2022	14 Dec 22 - 23 Dec 22	Agra	CPL Manasvi Kalra CDT Madhu	
5.	Thal Sanik Camp (TSC) Cadre-1 2022	17 June 22 - 26 June 22	Delhi	SGT Samiksha CPL Aanchal CPL Manasvi Kalra LCPL Ritika Yadav CDT Vandana	Gold medal for Masters of Ceremony, Silver medal in the group discussion competition and a singing competition
6.	Thal Sainik Camp (TSC) Cadre-2, 2022	06 July 22- 13 July 22	Delhi	SGT Samiksha CPL Aanchal CPL Manasvi Kalra	
7.	CATC 2022	02 Sep 22- 09 Sep 22	Delhi	CPL Riddhi Ravi LCPL Angela CDT Bani CDT Alisha CDT Arunima	Bronze medal in race
8.	Pre RDC-1 2022	17 Aug 22 - 25 Aug 22	Delhi	JUO Ekta LCPL Ishika CDT Preeti	
9.	Tiranga Yatra Rally	10 Sep 22	Delhi	JUO Ekta SGT Samiksha DI Bhumika CPL Aanchal CPL Riddhi CDT Pallavi CDT Rachna CDT Shivani CDT Sheetal CDT Puneeta	

10.	Ek Bharat Shreshtha Bharat (EBSB) 2022	31 July 22-16 Aug 22	Delhi	CDT Preeti	
11.	Yoga Day	21 July 22	Delhi	JUO Ekta DI Bhumika CPL Riddhi LCPL Ishika LCPL Angela CDT Rachna CDT Kanishka CDT Diya CDT Sneha CDT Madhu CDT Bani CDT Preeti CDT Sheetal CDT Shivani CDT Vanshita CDT Priyanka CDT Alisha CDT Sakshi CDT Aishwarya CDT Priyal CDT Shalnee	
12.	National Unity Run	31 Oct 22	Delhi	SGT Samiksha Kalra CPL Aancha Gupta LCPL Ritika Yadav LCPL Sakshi CDT Sneha CDT Alisha CDT Puneeta CDT Kanishka CDT Vandana CDT Shivani	3rd position by CDT Kanishka

Lt. Renu Jonwal

Azadi Ka Amrit Mahotsav

Azadi Ka Amrit Mahotsav (AKAM) continued in its second year with Dr. Rimjhim Sharma as its Nodal Officer. The college sincerely began with the distribution of our national flag under the 'Har GharJhanda' programme initiated by the Government of India.

A talk was organised to observe 'Partition Horrors Remembrance Day'. Prof. Abhay Pratap Singh of Political Science Department of PGDAV College spoke on the topic and the event was graced by Shri Mohan Lal, founder member and former principal of the college.

Later, a portrait making Competition was organised where students were asked to make portraits of our freedom fighters which was a huge success as students made portraits of Jhansi ki Rani Lakshmi Bai, Subhash Chandra Bose etc. The Department of History of the college dedicated its Annual Fest to AKAM holding various student related competitions such as quiz on the topic, 'Polity, Society and Social Movements during 1850-1950', and creative writing competition themed '1947 - The Day of Independence' etc.

The Economics Department too held a paper presentation programme to commemorate AKAM on the topic 'Vasudhaiva Kutumbakam: Contours of India's G20 Presidency'. Bhartiya Sanskriti Sabha also organised events in this regard such as a three-day lecture series on the topics 'आजादी के अमृतमहोत्सव में नए भारत का उदय', 'भारतीय संस्कृति के विविध आयाम और युवाशक्ति', 'भारतीय संस्कृति के आलोक में क्रांतिकारियों का साहित्य'। The North-East Cell of the college held an essay-writing competition on the topic 'Role of North-East in India's Independence' to commemorate AKAM. Along with these events, an Inter-College Paper Presentation on the topic 'Freedom Fighters: Tales of Unsung Heroes' was also organised which was much appreciated as these competitions encouraged students to explore and research on the contributions of lesser-known freedom fighters. Cash prizes and books on unsung heroes were given to the winners to bring more awareness amongst students about their country.

National Service Scheme (NSS)

The National Service Scheme (NSS) is a scheme of the Government of India, Ministry of Youth Affairs and Sports. It was established on the auspicious occasion of the Platinum Jubilee of the birth of Mahatma Gandhi in 1969. The sole aim of the NSS is to provide hands-on experience to young students in delivering community services.

NSS P.G.D.A.V. helps students to grow individually and as a group. It makes students confident, helps them develop leadership skills and enables them to learn about different people from different walks of life. Students also learn different skills that help them deal better with various situations.

The motto of the National Service Scheme (NSS) is "Not Me, But You".

NSS offers various departments to its volunteers to be a part of, and give in a helpful hand with four primary and six secondary departments:

Primary Department:

1. Women Development Cell
2. Rural Development Cell
3. Astitva Department
4. PWD Department

Secondary Department:

1. Promotion Department
2. Blogging Department
3. Organising Department
4. Anchoring Department
5. Technical Department
6. Creative Department

Key Achievements:

1. Ruhani from the NSS Unit was selected for the MYGOV Campus Ambassador Programme of MYGOV India, the world's largest engagement platform.
2. The NSS Unit runs a Voter's Literacy Club – a platform for students learning about being good voters and citizens, knowing the value of a vote and the role of voters in the country.

3. The NSS Unit has been running a centre for under privileged and weak students – Astitva Department.

4. The NSS Unit has successfully completed the initiative to impart computer training to fifteen girls in the month of March while celebrating International Women's Month.

Our Journey So Far :

Our journey so far has been really interesting and full of learning opportunities. We have covered various seminars, drives, rallies, talks, and many competitions. Here is a glimpse of them:

1. Seminar on 'Teachings of Sri Aurobindo' on 18th July, 2022.
2. Seminar on 'Awareness of World Nature Conservation Day' on 28th July, 2022.
3. Har Ghar Tiranga Campaign from 12th to 15th August, 2022.
4. Flag Collection Drive on 18th August, 2022.
5. Teacher's Day Celebration on 5th September, 2022.
6. Pledge Ceremony on International Literacy Day on 8th September, 2022.
7. Seminar on 'Hypertension Awareness and BP Camp' on 9th September, 2022.
8. Cleanliness Drive in P.G.D.A.V. College on 17th September, 2022.
9. Pledge Ceremony on National Peace Day on 21st September, 2022.
10. NSS Day Celebration on 24th September, 2022.
11. Online Documentary Screening on the Lives of Lal Bahadur Shastri and Mahatma Gandhi on 2nd October, 2022.

12. Celebrating the 91st birth anniversary of A P J Abdul Kalam through a seminar by IRS Officers on 15th October, 2022.
13. Various other competitions on the occasion of Diwali on 18th October, 2022.
14. Mega Swachhta Drive on 19th October, 2022.
15. Run for Unity on 31st October, 2022.

16. *Nukkad Natak* during Vigilance Awareness Week from 31st Oct to 6th Nov.

17. International Conference on 'Infrastructure, Information, and Innovations for Building New Bharat' on 10th November, 2022.

18. Children's Day Celebration and Food Donation Drive on 14th November, 2022.

19. Centenary Run on 18th November, 2022.

20. Centenary Celebration Culture Council Play on 30th November, 2022.

21. Webinar on 'Suicide Prevention on Human Rights Day' on 10th December, 2022.

22. Online documentary on 'Vijay Divas' on 16th December, 2022.

23. Book Donation Drive on 23rd December, 2022.

24. Seminar on 'Parakram Divas' on 23rd January, 2023.

25. Celebrating the Indian Constitution and Voters Day Pledge Ceremony on 25th January, 2023.

26. 74th Republic Day Celebration on 26th January, 2023.

27. Thalassemia Check-Up Camp on 31st January, 2023.

28. Blood Donation Camp on 6th February, 2023.

29. National Tribal Fest on 16th February, 2023.

30. Cloth Donation Drive on the occasion of Holi on 3rd March, 2023.

31. Celebrating International Women's Month with NSS P.G.D.A.V. 's Computer Crash Course for underprivileged female youth from 1st March to 31st March.

32. Seminar on the occasion of International Women's Day on 14th March, 2023.

33. Food Donation Drive on 22nd March, 2023.

34. Annual Fest 'Sevaarth'23'on 31st March, 2023.

We would like to extend our gratitude to our Principal Ma'am, Prof. Krishna Sharma for always encouraging us to do what is best for society. A wholehearted thanks to our Programme Officer, Dr. Ramveer Singh and our Co-Convener, Dr. Bhawna Miglani for guiding us throughout this journey of learning and becoming a better version of ourselves. A big thanks to the entire team of NSS P.G.D.A.V. for keeping up the good work and making this society a better place to live in.

Faculty Members :

Convenor - Dr. Ramveer Singh

Co-Convenor - Dr. Bhawna Miglani

Student Core Team :

President - Sneha Pandey

Vice President - Vaishnavi Singh

Secretary - Sudhanshu Upadhyay

Treasurer - Manish Kumar Chaurasiya

Joint Secretary - Fayeza Yasmin, Akanksha Pathak

Diligentia - The Entrepreneurship Cell

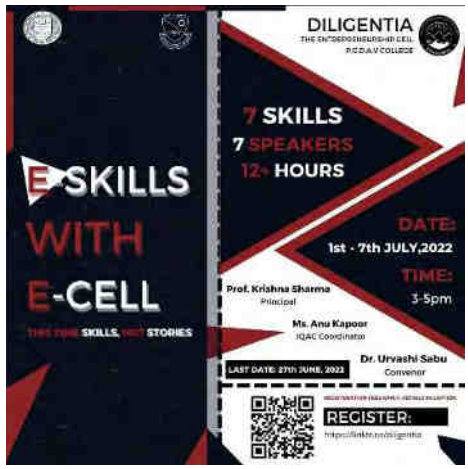

The 2022-23 session of Diligentia started with a 7-day Bootcamp session named as 'E-Skills with E-cell' from 1st to 7th July, 2022 where seven experts of various corporate and entrepreneurial fields held skill learning sessions to awaken the understanding and give essential knowledge required for an individual to start his career in any field.

Given below are the names of experts along with the titles of the skill sessions they organised: Shubhi Aggarwal, Power BI; Sanchit Jain, Personal finance and freelancing; Shivani Baig, SEO; Manoj Chakerwarti, MS Excel; Nandini Gupta, Product Management; Devansh Lakhani, Fund raising of a startup; and Priyank Ahuja, Business Plan Development.

More than one hundred fifty students participated in this 7-day skill learning session, gained knowledge and skills, and awarded with the certificate after a test. With overwhelming responses in the test, the Bootcamp session came to an end on a successful note.

Let's Taco About It: Fundamentals of Food Entrepreneurship

Diligentia hosted a speaker session named as 'Let's Taco About It: The Fundamentals of Food Entrepreneurship' sponsored by Barbeque Nation on 29th September, 2022 in the new seminar hall of the college where Pujneet Singh aka 'BhookhaSaand', a renowned YouTuber and a prominent influencer in the food industry and Nikita Verma aka 'iamdatingfood', a famous chef and an Instagram influencer graced the stage of PGDAV College as guest speakers where they shared their journey, hardships and emerging food entrepreneurial roles in the industry. The session was attended by more than three hundred college students. The session was a success and provided a lot of insights on the challenges of life and career that an individual faces.

Mentor Speak

Taking into consideration the overall development of the members of the society as well as the students of our college, the highly experienced and friendly faculty members of the society organised essential skill learning sessions which are the basic needs for students in every career. The following sessions were conducted by our society:

- ‘Communicate’ by Dr. Urvashi Sabu on 30th August, 2022 focused on the fundamentals and most important principles of establishing effective communication. The session was full of various practical exercises and activities which helped students boost their morale and improve their etiquettes involved in the process of communication.
- ‘Startup’ by Dr. Varun Bhushan and Dr. Anandita Goldar on 20th September, 2022 focused on the need of startups, innovation and invention in life and career.
- ‘Solve’ by Ms. Megha Mandal on 11th November, 2022 focussed on the problem solving skills of a person through case studies of various companies and multinational corporations.

Project Surbhi

Diligentia, which is known for its practical and on-field projects, conducted its much awaited Diwali Project named as ‘Surbhi’. The members of the society sold glass jar candles of various fragrances like vanilla, orange, lemongrass and rose. The students of the society sold more than three hundred pieces of glass jar candles in various markets of New Delhi like Khan Market and Connaught Place where people appreciated the efforts and the socio-entrepreneurial spirit and purpose of the project. The project was carried out from 10th October to 22nd October which included the research and execution of the project by the students of the society. In the last stage of the project, a stall was set up in the college premises where glass jar candles were sold to the students of the college at discounted prices. After the completion of the project, 30% of the revenue earned was donated to an NGO called D.A.W.G.S.

Ebullient: The Summit of Diligentia

Diligentia hosted its first ever E-Summit ‘Ebullient’ sponsored by Vivo on 4th February, 2023 which was a big success and one of the biggest milestones to be covered in the year. It consisted of two components: the competitions and the networking meet. There were two competitions-The Business Plan Competition judged by Dr. Rajni Jagota, Associate Professor and Ojas Aneja, Insights Analyst, McKinsey & Co. and the Case Study Competition judged by Dr. Aditi Bhateja, Assistant Professor and Vaibhav Kanwar, Founder & CEO, Clapbox. Both events had cash prizes up to Rs. 20000 each. The second half was the networking meet which consisted

of three segments: The Bidding Wars, The Conference and The Pitch Tank which were judged by Vikramjit Singh Sahaye, CEO and Founder of Hiring Plug and Ritvik Adlakha, Business Analyst. The main purpose of the networking meet was to create friendly relations and a healthy networking environment among participants of various college societies like Placement Cell, Entrepreneurship Cell and Finance and Investment Cell. The E-Summit turned out to be a huge success where each participant enjoyed to the fullest in all the three segments and networked with full enthusiasm and zeal.

Project Prakriti

PGDAV College has unveiled sustainable bamboo tumblers in the market. These tumblers are a step towards a waste-free environment, being reusable and durable, they have been launched with the G20 summit goals in mind, specifically the National Bamboo Mission.

The National Bamboo Mission is a vital step towards promoting sustainable living and reducing plastic waste. By adopting bamboo as a sustainable option, we can create a healthier planet for future generations. Prakriti aims to educate people on the harmful effects of plastic and inspire them to switch to eco-friendly alternatives.

Moreover, using bamboo tumblers has significant social and economic benefits. It generates employment opportunities for artisans and farmers who specialise in bamboo products and supports the local economy. The launch of Prakriti demonstrates the power of collaboration and community-led initiatives to create a sustainable future.

In conclusion, Prakriti is a remarkable initiative that shows the power of collective effort in promoting sustainable living. By choosing bamboo tumblers over plastic, we can make a positive impact on our planet and help build a more resilient future.

Prakriti, a novel initiative is introduced is by Diligentia and Enactus, two student societies of P.G.D.A.V. College.

Faculty Mentors:

Convener - Dr Urvashi Sabu

Co-Convener - Ms Anindita Goldar

Members - Dr Varun Bhushan, Ms Megha Mandal

Students Members:

President - Sujal Kansal

Vice President - Mehak Jhurani, Vineet

Secretary - Vidhi Vivek

Joint Secretary - Palak, Yash Rajpal

Treasurer - Yatharth Aggarwal

Co-Treasurer - Mayukh mangath

Hyperion - The Cultural Society

Hyperion: The Cultural Society of P.G.D.A.V. (M) has always bustled with multiple activities throughout the session. This year was also remarkable as we resumed our traditional method of offline learning and faced many challenges which helped us emerge stronger than ever. Hyperion started its work from the ECA admission process. We got nine admissions under ECA, but that was not a deterrent for the team and new students. We added over two hundred and fifty new students to the societies through college auditions.

Session 2022-23 was one of its kind for the cultural committee as both the faculty and core team put in their best effort to make our college proud. Hyperion undertook the challenge to organise multiple events:

Teacher's Day

The session started with the celebration of Teacher's Day on September 5, 2022. This was the first time in the history of the cultural committee to experience an event dedicated to our esteemed teachers which was conducted with excitement and zeal. The event was a kick start for the team Hyperion which further motivated us to organise more such events.

Agomoni 2022

To celebrate the homecoming of Maa Durga and seek her blessings, we hosted 'Agomoni 2022'. We celebrated the occasion with Indian classical music, Indian classical dance, and a handful of joyous performances with a full fledged Dhaker Baddi (the sound of Dhaak) to give the audience a taste of the traditional Durga Puja.

Orientation Programme

Hyperion also organised an orientation programme on 17th November, 2022 for the freshers to provide them with insights of the diversity that existed under Hyperion in the form of sub-societies. Every sub society took up this opportunity to attract juniors who wanted to join different societies according to their interests.

Our event diary does not stop here, and it is followed by two flagship events that are conducted every year and have been a legacy for long.

Exploranza 23

'Exploranza'23' was the first offline event after a gap of three years and the cultural committee took up the task to celebrate it with full confidence and commitment and a total of twenty-four events were held this session. Annual Freshers hunt for the session 2022-23 was held from 28th January, 2023 to 2nd February, 2023. The participation of freshers was eye-catching, and it made the event even more exuberant and special. Also, winners from each event were rewarded with exciting cash prizes. It provided freshers an opportunity to showcase their talents and secure their positions in their favourite societies. This event was a huge success under the management of the cultural committee.

Arohana (आरोहण)

The annual cultural fest of P.G.D.A.V. (M) underwent a change of its name from Aaghaz to Arohana (आरोहण). Arohana means 'rising upwards'. A name we gave to our annual cultural fest to symbolise the indomitable spirit and the unchecked growth of the young ignited minds. Apart from that, a three-day fest from 14th- 16th February did not just limit itself to college premises as there was a change in venue on the third day of the fest. We decided to organise the closing ceremony at Zorawar Auditorium, Manekshaw Centre, Delhi Cantt. Theme for Arohana'23 was 'G-20 Presidency: Emergence of आरोहण as the Global Leader'. Sh. Ramesh Bidhuri, Member of Lok Sabha, graced our fest on 15th February, 2023 as the honourable chief guest. This fest would have been incomplete without the limerick session by Mr. Arun Gemini.

The DJ night was the final event of day-2 where everybody tapped their feet with the rhythm of BEATCRUSH.

There were also a series of competitions ranging from music, dance, gaming, quizzing and many more which attracted towards itself the crowd from whole DU circuit and made Arohana's competition a spectacle. All these milestones covered by the cultural society would not have been possible without the support of our teachers and respected Principal ma'am.

Faculty Members:

Convener	-	Ms. Monika Saini
Co- Convener	-	Dr. Neerza
Treasurer	-	Mr. Jagannath Kashyap
Social Media Coordinator	-	Dr. Aparna Datt

Students Members:

President	-	Khushi Singh
Vice President	-	Vaibhav Jaiswal
Treasurer	-	Devashish Mishra
General Secretary	-	Rajat Jaiswal
Joint Secretary	-	Shail Goyal, Raunak Chhabra
Media and Tech Head	-	Jayanshu Badalani
Media Coordinator	-	Vartika Singh
Tech Coordinator	-	Ansh Mehra

Various sub-societies of Hyperion were equally responsible to make this event a grand success:

Rudra : The Street Play Society

Rudra had quite an eventful session that started with a workshop with a cybercrime lawyer to help in the annual production themed data ownership and was called 'लोगin'. It kicked off with its first performance in the annual cultural fest of IIT Roorkee. Then it had the honour of performing in the college right after the new session began. A three round audition was held where applications of over fifty students were received out of which more than thirty were selected. The new batch joined the team and engaged in numerous fun and theatrical sessions. Rudra successfully organised 'Exploranza' with over fifteen participants. After the fest season had begun, the team performed at different colleges like IIT BHU, BPIT, ARSD, DTU, etc. Then came the flagship event of Rudra 'Shor: the Annual Street Play Competition' where twelve teams performed with over two hundred participants. It had a footfall of around four hundred students,

mostly theatrical aspirants. Many renowned teams perform and witness the 'Shor Showcase' by Team Samagra of MAIMS College.

Core Team

Faculty Mentor	-	Mr. Manoj
President	-	Rhythm
Vice President	-	Khushi Garg
Treasurer	-	Yash Narang
Coordinator	-	Atharv Vashisht, Janvi Slathia

TechWhiz: The IT Society

With all the new torchbearers set to take charge of the society's legacy, the TechWhiz session 22-23 started in the month of June. Throughout the session, TechWhiz conducted two recruitment drives: one for second and third year students for its Graphic Designing and Web Development Club and the other for Exploranza'23. The team also played a substantial role in organising 'Agomoni', celebrating the homecoming of Maa Durga, for the first time ever in the month of October'22. Apart from contributing to the internal activities within the respective clubs of TechWhiz, the members of Web Development Club also undertook the ultimate and crucial responsibility of building and maintaining two of our college's most important websites: Hyperion's website and website for Arohana (आरोहण) -The Annual Cultural Fest.

Core Team:

Faculty Mentor	-	Mr. Akshay Chamoli
President	-	Prachi Tiwari
Vice President	-	Aryan Arora
Secretary	-	Pushpender Kadian
PR Head	-	Vanshika Tiwari
Coordinator	-	Sarthak Sharma, Anubhav Shukla, Sanjana, Ritik Narayan, Sukhmani Kaur

Impressions: The Fine Arts Society

Impressions - The Fine Arts Society is focused on helping students to develop their artistic skills. It gives them a platform to embrace their love for art. Impressions displayed its vibrant artistry throughout the academic year 2022-23. It began the journey in 2022 by painting *graffiti* on the walls of the canteen area, which one may observe when taking a break to eat some canteen food. Impressions participates every college occasion by embellishing the campus with *rangolies*. Impressions participated in Arohana: The Annual Cultural Festival by decorating the entire campus and organising competitions like 'EXHIBIT: Art Exhibition' where eight teams from various colleges were chosen to display their works of art - 'MAQUILLAGE: Face Painting' and 'RECYCLE: Good Out of Waste'. Members of Impressions also took part in competitions in over forty colleges in Delhi and at IIT BHU, Varanasi.

Core Team:

Faculty Mentor	-	Dr. Ravinder Kumar Meena
President	-	Manpreet Kaur
Vice President	-	Swastika
Coordinator	-	Shruti Gumber

Diversity : The Dance Society

As the name suggests, Diversity consists of diverse sub-dance societies such as Spunk -The Western Dance Society, Jalsa -The Bhangra Society and Natraj -The Indian Classical Dance Society. The reports of these societies are as follows:

Spunk : The Western Dance Society

Spunk - the Western Dance Society, organised Danzare (street battle), Dalliance (stage dance competition) and Querencia (stage solo competition).

Jalsa : The Bhangra Society

'Jashan', a Group Folk dance competition was organised by Jalsa Bhangra Crew of P.G.D.A.V. College that was held on 15th February, 2023 in the new seminar hall. It had approximately ten teams from colleges all over Delhi University competing against each other after being qualified through the online preliminary round consisting of twenty two teams. All styles of folk dance were presented like bhangra, giddha, luddi etc. The show lasted for 2-3 hours and filled the stage with incredible performances on music. The programme was judged by Parminder Singh who had been a coach for the society.

Natraj : The Indian Classical Dance Society

Natraj - The Indian Classical Dance Society organised a solo Indian classical dance competition, with two rounds, preliminary and final. We selected fifteen candidates from colleges like St. Stephen's College, Miranda House, Jesus and Mary College, Hansraj College, etc. The final round was held on 15th February, 2023, in the new seminar hall. For the final round we invited Ms. Ankita Gouda, a renowned Odissi dancer, and Ms. Reshmi S Mohan (our alumni), a specialised classical dancer in forms like Bharatnatyam and Mohiniyattam, for judgement.

Faculty Team:

Mentor (Spunk)	-	Mr. Nitin Kumar
Mentor (Jalsa)	-	Ms. Komal
Mentor (Natraj)	-	Mr. Akshay Kumar

Student Team:

President	-	Aashi Tyagi
Vice President	-	Kusha Vasudeva, Sulvi Shraddha
Coordinator	-	Chhavi (Spunk), Urvashi Tanwar (Jalsa), Pihu (Natraj)

Iris: The Film and Photography Society

Iris - The Film and Photography Society of P.G.D.A.V College organised its Annual Fest 'EBULLIENCE' on 14th- 15th February 2023. The society conducted four competitions and organised one photo exhibition called 'PHOTOBOOK' with the footfall of approximately twelve hundred students from different parts of India. 'Dark Room' was an on the spot photography competition which received the total participation from eighty teams. Mr. Sachin Chauhan who is a street photographer was the judge of this event. 'Last Frames' was an on the spot filmmaking competition which received the total participation of thirty-one teams. After this competition, the screenings of all the films were done and was judged by Mr. Manan Kathuria. 'Chitra Paheli', our online photography competition received the participation from seventy-two teams. This event was also judged by Mr. Sachin Chauhan. 'Cinema Paradiso' was our online film-making competition which received twenty entries. it was an open-themed competition and was judged by Mr. Manan Kathuria.

Core Team:

Faculty Mentor	-	Mr. Akshay Chamoli
President	-	Chaitanya Chugh
Vice President	-	Ambika Awasthi
Logistics Head	-	Subhasish Kumar
Photography Head	-	Ayush Kumar Gupta
PR Head	-	Aashi Gupta
Graphic Design Head	-	Mehak Jhurani
Productions Head	-	Ekansh Bajaj

Conundrum : The Western Music Society

Under this fest season, Conundrum hosted two wonderful events under the umbrella of Arohana (आरोहण) '23:

'FANTASIA – The Western Solo Singing Competition,' one of the very first events of Arohana (आरोहण)'23, was held in the old seminar hall in a breathtaking ambience.

'MERCURY FEVER – The Battle of Bands' is a live band competition in which various bands from different backgrounds perform a set of songs in different genres.

Core Team:

Faculty Mentor - Dr. Lalit, Ms. RVS Chuimila

President - Jai Mathur

Vice President - N Harshini

Coordinator - Saksham Khosla

Raaga : The Indian Classical Music Society

Raaga is a very well-known society in the Indian Music Society (IMS) circuit of Delhi University, emerging victorious in a variety of competitions, such as securing the 1st Position at IIT Varanasi BHU, Maulana Azad Medical College, Lady Hardinge Medical College & Institute of Home Economics etc. For the celebrations of Arohana (आरोहण) '23, we organised three different competitions catering to the interests of the Indian music societies, and we are proud to announce that we received an overwhelming amount of responses from all the three competitions.

Core Team:

Faculty Mentor - Dr. Harish Chandra

President - Priyam Tahabilder

Vice President - Bharat Tiwari

Coordinator - Adyasha Paty

Navrang: The Stage Play Society

Navrang: The Stage Play Society of PGDAV College, with its outstanding theatrical skills, has brought itself to the centre of attention. Navrang organised its Annual flagship event 'Abhivyakti: Stage Play Competition' at Zorawar Auditorium, Manekshaw Centre. This event provided an excellently organised stage to showcase the talents of societies participating from various colleges of Delhi University.

Core Team :

Faculty Mentor - Dr. Reshma Tabassum

President - Saubhagya Kukreja

Vice President - Baleshwar Kumar

Event Coordinator - Sourabh Mishra

Team Coordinator - Sushant

Rap Beats

RapBeats - The Hip Hop Music Society of P.G.D.A.V. College deals with rapping, beatboxing and music production. Rapbeats society has produced many artists who are currently ruling the hip hop scene in Delhi. Some of them are Kunal Grover (beatboxer and anchor), Monu (rapper), Sarthak (rapper). Rapbeats is also the first ever hip hop society in the whole circle of Delhi University. We as a team have also performed as featured artists in various fests . Recently, Kushagra (beatboxer) and Parthiv (rapper) were invited as featured artists in Jesus and Mary College.

Mentor - Dr. Mona Goel

President - Manav Sharma

Vice President - Karan

Coordinator - Kanav Sharma

Chanakya : The Intellectual Society

Chanakya- The Intellectual Society of PGDAV College is the buzzing centre of thoughts, anchoring, poetry writing, debating and quizzing in the college campus with the clubs Spectrum, Qafiya, Buzzer and Gray Matter respectively. Chanakya won over fifty prizes in colleges throughout the country in all disciplines that it coordinates. Chanakya continues to level upon their skills and

achievements with their creative brains. On 17th April, 2023 Chanakya organised a conventional debate competition under 'Yuva Utsav– India 2047', a multifaceted programme of Nehru Yuva Kendra Sangathan (NYKS), an autonomous organisation of Department of Youth Affairs. The initiative aims to rekindle the spirit of patriotism and to engage the youth in various socio-cultural activities and competitions based on the Prime Minister's *Panch Pran*.

Core Team:

Faculty Mentor	-	Mr. Rishikesh, Mr. Jaganath Kashyap, Mr. Ravi
President	-	Aayush Agarwal
Vice-President	-	Prachi Mukhija
Coordinator, Buzzer	-	Krish
Coordinator, Grey Matter	-	Pranav Pandey
Coordinator, Qaafiya	-	Sanskriti
Coordinator, Spectrum	-	Gaurika

Achievements of Hyperion 2022-23

Hyperion will always continue to strive for success and its endeavour to go against all odds and emerge as a winner. Our students are ceaselessly proving their mettle at university, state and national level competitions and bringing laurels to the college. This year, our students have won one hundred and forty prizes in various events.

Achievements of students in the year 2022-2023:

IRIS :

Name	Name of the Competition	Name of the College	Position
Chaitanya Chugh Ambika Awasthi Kanishk Sharma Mahtav Solanki Aayush Gupta Koshika Pandey	Cinescope on the Spot Filmmaking Competition-Effulgence Films SVC	Sri Venkateswara College, University of Delhi	2nd
Chaitanya Chugh Ambika Awasthi Kanishk Sharma Mahtav Solanki Aayush Gupta Ekansh Bajaj Rajat Jaiswal Vaibhav Jaiswal Siaa Sindhwani Srishti Sharma Akshat Taneja Tahoor Aaryan Jhambh Aashi Gupta	16 Frames Short Filmmaking Competition-Thomso IIT Roorkee	IIT Roorkee	1st
Raj	Deepawali Chayachitra Online Competition 'Picholics'	Shyam Lal College, D.U. Evening College	2nd
Raj	Online Halloween Photography Competition	Shyam Lal College, D.U. Evening College	2nd
Raj	Photography Competition by NSS PGDAV (M)	P.G.D.A.V. College (M), D.U.	1st
Ananya Aryan Arora Abhishek	On the Spot Fashion Photography-'VIPS OBSCURA'	VIPS	2nd

Techwhiz :

Name	Name of the Competition	Name of the College	Position
Anubhav Shukla	Code Escape 2.0, CurieUx	SGTB Khalsa, D.U.	1st
Anubhav Shukla	Load the Code, Ciencia'22, Ilustrado	Maitreyi College	1st
Anubhav Shukla	Codeavour, CompuAda	Miranda House	3rd
Anubhav Shukla	SyntaX Cybercept'22	St. Stephens College	2nd
Anubhav Shukla	Cipher-o-more	Dept of CS, University of Delhi	1st
Anubhav Shukla	Algoholics	Dept of CS, University of Delhi	2nd
Mohit Kumar Jain	Paper Presentation, Department of Mathematics	Vivekananda College, D.U.	2nd
Mohit Kumar Jain	TechWiz+Code-a-thon, Avgaahan,	Maitreyi College, D.U.	3rd
Mohit Kumar Jain	Math-e-Logic+Math Vlogger, Avgaahan,	Maitreyi College, D.U.	2nd
Mohit Kumar Jain	Stock-O-Nomics, Department of Statistics	Ramjas College, D.U.	2nd
Mohit Kumar Jain	Paper Presentation, Department of Statistics	Ramjas College, D.U.	All pre-senters (3) award-ed
Ritik Narayan	Code Escape 2.0, CurieUx	SGTB Khalsa, D.U.	2nd
Preksha Agarwal	Code Escape 2.0, CurieUx	SGTB Khalsa, D.U.	3rd
Mohit Kumar Jain	Paper Presentation, Department of Mathematics,	SVC	3rd
Khushi Aggarwal	Improverse, Aagaz	NSUT	3rd
Hardik Bhanot	Quizella-The Quiz Hunt	Parikalan	1st
Anurag Singh	Brand Aid 5.0, Moments	LSR	2nd
Shivansh Joshi	Brand Aid 5.0, Moments	LSR	2nd
Shivansh Joshi	Khel Gaon- Sports quiz	Maharaja Agrasen College, D.U.	3rd
Mohit Kumar Jain	Young Researchers' Forum, Sankhyiki	P.G.D.A.V College, D.U.	2nd
Mohit Kumar Jain	In-Q-Zite, Sankhyiki	P.G.D.A.V College, D.U.	2nd
Mohit Kumar Jain	Mindfest, AMS	P.G.D.A.V College	2nd

Mohit Kumar Jain	Vedic Gyan, Fundamenta'22,	P.G.D.A.V College (E)	1st
Prateek	E-Tambola	Maitreyi College	2nd
Anurag Singh	Paper Presentation, Department of Mathmatics	JMC	Best Inter-jector
Ayush	Tech Tambola	Maitreyi college	1st
Ayush	Treasure Hunt	Maitreyi college	1st
Vanshika Tiwari	Abey! W kaha hai? (Xenium'23)	P.G.D.A.V. College	1st
Preksha Agarwal	Abey! W kaha hai? (Xenium'23)	P.G.D.A.V. College	1st
Anurag Singh	Abey! W kaha hai? (Xenium'23)	P.G.D.A.V. College	1st
Khushi Aggarwal	Jashn-e-Tech (open mic)	P.G.D.A.V. College	1st
Kuldeep Choudhary	Meme Making Competition	IIEST, Shibpur	2nd

Navrang :

Name	Name of the Competition	Name of the College	Position
Pranjal	Monologue	NIIT, Neemrana	2nd
Vedant	Monologue	NIIT, Neemrana	2nd
Soubhagya, Mansi, Divyanand, Richika, Vedant	Ad-mad	GL Bajaj	1st
Soubhagya, Devashish	Logos	JDMC	2nd
Soubhagya, Sourabh	Ad-mad	DME	2nd
Soubhagya, Sourabh	Ad-mad	Technia IOAS	2nd
Team	Mood I (multicity)(3rd bell)	DTU	2nd
Team	Mood I (finals)(3rd bell)	IIT BOMBAY	2nd
Pranjal	Monologue	I.T.S	2nd
Pranjal	Monologue	N.A.I.M.S	2nd

Chanakya :

Name	Name of the Competition	Name of the College	Position
Abhyuday Kalyani	Conventional Debate	Atma Ram Sanatan Dharma College	3rd Best Interjector
Pooja	Youth Parliament	Delhi University Student Union	Special Mention
Pranav Pande	Youth Parliament	Hansraj College, DU	Special Mention
Pranav Pande	MUN	IIT Rorkee	Hon'ble Mention
Shubhi Walia	Ram Lal Anand college, DU	Inter-College Debate Competition	2nd
Rishita Lamba	Faculty of Fine Arts, North Campus	Debate Competition	Best Interjector
Vartika	Creative Writing Competition	Tecnia Institute of Advanced Studies	2nd
RaunakChabbra	Extempore Competition	Apeejay School of Management	1st
ArishthaMohnot	Extempore Competition	Apeejay School Of Managememt	3rd
Shivansh Joshi	Comquest	JMC x JIMS	3
Abhyuday Kalyani	Comquest	JMC x JIMS	3
Shivansh Joshi	Conoscenza	ZHDC	2
Ayon Jyoti Nath	North-East Quiz	Maharaja Agrasen College	2
Khushi Aggarwal	Improvese, Aaghaz	NSUT	3rd
Hardik Sharma	Creative Writing Competition (Hindi)	Dayal Singh College	2nd
Hardik Sharma	Qafila- Shabdotsav (Hindi poetry)	SGTB Khalsa	
Hardik Sharma	Qafila- Hiraeth (English poetry)	SGTB Khalsa	
Sanskriti	Poetry Novella	Daulat Ram College	Special Mention

Manohar Parashar	Poem and Kahaniya open mic		Top 5 Performers (1,2 announced)
Manohar Parashar	Poetry Competition on Bhagat Singh	Maharaja Agrasen college	Special Mention
Manohar Parashar	Poem and Kahaniya open mic		Special Mention
Prachi Mukhija	Elocution	IIIT Pune	1st
Prachi Mukhija	Declamation	Maharaja Agrasen Institute of Management Studies	3rd
Prachi Mukhija	Declamation	Maharaja Agrasen Institute of Management Studies	2nd
Prachi Mukhija	Elocution	IIT BHU- Kashi Yatra	1st
Prachi Mukhija	Shipwreck	IIT BHU- Kashi Yatra	3rd
Pranav Pande	JAM	IIT BHU- Kashi Yatra	3rd
Pranav Pande and Chyanika Duhan	Paper Presentation	Sri Venkateswara College	3rd
Sanskriti	Calliope- Online Creative Writing Competition		Special Mention

Rudra :

Name	Name of the Competition	Name of the College	Position
Team	Darpan	IBS	2nd
Soniya	Street Stopper	PGDAV College	1st
Soniya	Confront Conflicts	PGDAV College	2nd
Soniya	Alag Nazariya	NMIMS Mumbai	Best Performance
Soniya	News Hours	NMIMS Mumbai	Best Argument
Soniya	Kitne Offensive The	NMIMS Mumbai	Best Performance
Soniya	Leiothrixx'22 Mono act	ANDC	2nd

Soniya	Enact NSS PGDAV	PGDAV College	1st
Soniya	Tamasha	IIT Delhi	Special Mention
Atharv	Street Stopper	PGDAV College	1st
Yash Narang	Street Stopper	PGDAV College	3rd
Yash Gambhir	Memezaar2.O	PGDAV Satark	3rd
Yeshassavi Pandita	Oratoria	PGDAV Spectrum	1st
Payal santuka	RJ hunt	PGDAV Spectrum	2nd
Team	Aloha	DME Noida	1st
Team	Nazariya	GD Goenka	2nd
Team	Nukkad Natak	DPG Institute of Technology and Management	1st
Team	Nukkad Natak	Kamla Nehru College	1st
Janvi	Spandan	NDIM	Best Actress

Impressions :

Name	Name of the Competition	Name of the College	Position
Karan singh	Illustration Art Comp.	Maitreyi College	1st
Team	Street Stopper	PGDAV College	1st
Swastika, Sweety & Geetanjali	Newspaper Dress Design	Ram Lal Anand College	2nd
Team Representatives: Sweety, Karan & Mehak	Art Exhibition	Saheed Rajguru College of Applied Science for Women	1st
Sweety	Canvas Painting	Dr. Bhim Rao Ambedkar	2nd
Sweety, Mehak	Face Painting	N.S.S PGDAV [M]	3rd
Karan singh	Poster Making	Zakir Hussain College	1st
Karan Singh	Live Sketching Competition	Aryabhatta College	1st
Sweety	Cloth Painting	New Delhi Institute of Management	3rd
Karan singh	Sketching Competition	Dayal Singh (E) College	2nd

Rapbeats :

Name	Name of the Competition	Name of the College	Position
Mayank Grover	Beatboxing Competition	IIT, Kanpur (org.in Delhi)	2nd
Shivang Shukla	Ambience	Jamia Hamdard	2nd
Shivang Shukla	Reverb	IIT, Gandhi Nagar	3rd
Manav Sharma	Chemotsav Rapbattle	Rajdhani College	1st
Parthiv Dwivedi	Non-stop Rap Battle	Atma Ram Sanatan Dharama College	1st

Raaga :

Name of the Event	Organisers	Category	Position
Tarana	Maulana Azad Medical College	Classical Choir	1st
Bandish	Lady Hardinge Medical College	Semi-Classical Choir	1st
Raagsamar, Bandish	IIT BHU, Varanasi	Classical Choir	1st
Sur Taal	Institute of Home Economics	Classical Choir	1st
Quo Vadis	IIFT Delhi	Group Singing	3rd
Swaranjali	Dyal Singh College (Evening)	Classical Choir	3rd
Sur Sangam	P.G.D.A.V. (Evening)	Classical Choir	3rd
Taleem	ARSD	Classical Choir	2nd
Anunaad	Miranda House	Classical Choir	Special Mention
Raagmala	Shaheed Sukhdev College of Business Studies	Classical Choir	3rd

Enactus

Enactus is an international organisation run by students that works to create a positive social and environmental impact through innovation and entrepreneurship.

पीजीडीएवी कालेज ने संकल्प से 'वेस्ट' को 'गोल्ड' में किया तब्दील

जागरण विशेष

The P.G.D.A.V. College Chapter of Enactus has aimed to transform lives and shaped a better and more sustainable world. Ever since its establishment, the society has climbed the ladder of success from just a single project i.e., 'Project Korakagaz' to four projects, namely Nistaaran, Sugandh, Project Hope and Korakagaz.

Achievements are what keep us going for they are the building blocks of a successful society. We saw enormous development in our projects. From extending our support to the women victims of gender-based violence through Project Nistaaran to trying to make a waste-free environment through Project Sugandh, we have done it all. Some of the achievements for the session 2022–23 is as listed here:

Our first and greatest achievement is under Project Korakagaz where we helped one of our community members, Ruksar, to launch her own independent enterprise under the brand name 'Abhilasha' by producing hand-made notebooks and diaries at Kushalta Vikas Kendra, managed by the NGO Shakti Shalini. She was trained by our team. The team also conducted a very successful waste collection drive in June 2022. On 13th August, 2022 a flag distribution drive was organised to commemorate the Independence Day. A monthly newspaper collection drive was started which gained a lot of support from the staff members to collect waste paper for recycling. During the Diwali season, our team set up stalls and sold our products made out of waste materials such as kitchen waste, flower waste from temples and the citrus rinds and peels obtained from juice shops. We also sold Diwali hampers, including our dhoop-cones made out of flower waste collected from our college campus and from nearby temples, essence oils, and diyas. The women from our communities were trained to make dhoop-cones from flower waste under the Project Sugandh and were trained to make bio-enzymes from citrus peels and compost from kitchen waste.

During the annual fest of our college Arohana'23, a stall showcasing our products was set up

in the college premises. The proceeds obtained from the sales were given to the community members and were used to buy raw materials and apparatus required for the production. In the months of March and April, Enactus P.G.D.A.V. worked with the South Delhi Municipal Corporation (SDMC) for Project Nistaaran. Our work was featured in Dainik Jagran City Newspaper dated 29th January, 2023. Adding feathers to our caps, the team qualified for the top eight in Enactus Nationals 2022 in the group of Early Category 2023. The E-Cell of our college, Dilligentia, collaborated with us on Project Prakriti. It was an initiative to promote sustainability, particularly in light of India's G20 chairmanship.

Team Members 2022-23:

Faculty Team:

Convenor	-	Dr Richa Agarwal Malik
Co-Convenor	-	Dr Gaurav Kumar
Co-Convenor	-	Dr Aparna Datt
Co-Convenor	-	Dr Pardeep Singh

Student Team:

President	-	Kavish Chaudhary
Vice President	-	Aryan Dev Chauhan
Secretary	-	Mohit Kumar Sharma
Treasurer	-	Vedika Arora

Satark

The first step towards change is awareness **– Nathaniel Branden**

Keeping this as our motto, Satark - The Consumer Club of PGDAV College completed another year full of events and awareness drives. It was launched in 2011 and is a constituent of Consumers Forum, a non-profit organisation registered in 1980 under Government of Indian Societies Registration Act 1860. It is a member of Consumers International London and Consumers Coordination Council, New Delhi. The motive of Satark is to make consumers aware about their rights and frauds happening in the world. The Club helps to seek redressal against unfair trade practices and unscrupulous exploitation of consumers.

The first knowledge sharing session was held on 30th September, 2022 where the speakers from the team explained the topic of Cybercrime and Grievance Handling with some recent examples and how we can report on these crimes.

To keep the awareness high among the students, we organised an offline seminar on the topic 'Insurance, Awareness and Redressal' on 18th October, 2022 where Mr. Pawan Kumar Bhalla, Managing Director at Raksha TPA, took a session on how to tackle insurance fraud and its redressal mechanism.

E-waste is perilous to humans and the ecosystem. With our long-standing partner, E-PARISARAA which is India's first e-waste recycler, Satark, conducted two e-waste drives in the session 2022-23 where we collected 25 kg of e-waste from students and faculties.

Many consumers are still unaware of their rights and consumer acts under which they can seek redressals. We organised our second offline knowledge-sharing session on the topic of 'The Consumer Protection Act and Redressal' on 17th January.

To disclose the ugly side of cosmetics industry, Satark organised an Inter-college online poster-making competition from 6th January, 2023 to 20th January, 2023 in collaboration with Consumers India on the topic 'SAY 'NO' TO COSMETICS' in which approximately ninety entries were received.

The new budget was released and many people were not aware of the benefits and rights they could claim under it. So, we organised our 3rd offline knowledge-sharing session on the topic 'Budget 2023- Impact on Consumers' on 21st February, 2023. The speakers threw light on the changes that the 2023 budget made and how the consumers will get affected by it.

Considering the issue of scarce resources and increasing pollution we need to switch to renewable resources. So, to spread the word, we organised an intra college cover page designing competition from 11th February to 25th February, 2023 in collaboration with Consumer Forum on the topic 'EMPOWERING CONSUMERS THROUGH CLEAN ENERGY TRANSITIONS'. We received over thirty entries.

Satark organised its 4th knowledge sharing session on the topic 'Quality and Standardisation' on 24th March, 2023 where speakers shed light on topics like advantages and importance of quality standards, significance of standardisation, the BIS Act 2016 and applicable redressal mechanism.

Satark always brings something new to the table for consumers- new sessions, new ways and new ideas to spread awareness amongst more people. For the first time in the history of Satark, we organised a Consumer Fest in our college on 10th April, 2023 in collaboration with Consumers India and Consumer Forum where we conducted four big inter-college competitions, namely, Ad-Mad, Battle of Words, Lights! Camera! Caption and Best out of E-Waste. We had the opportunity to invite Mr Sunil Prakash, President of Consumer Forum; Dr. Jayashree Gupta, President of Consumers India and Ms. Amita Gupta, Convenor Youth activities Consumers India to judge and grace the occasion.

Faculty Team:

Founder and Advisor	-	Vandana Aggarwal
Convenor	-	Dr. Anuradha Gupta
Member	-	Ms. Sakshi Verma, Dr. Ritu Tanwar, Ms. Nisha Goel, Ms. Megha Mandal, Ms. RVS Chuimila

OB Team:

President	-	Shivani Arora
Vice President	-	Ritvik Bhayana
Secretary	-	Khushi Sardana
Joint Secretary	-	Aryan Maan

Core Team:

Content Head	-	Achint Arora
Content Executive	-	Kajal Mehta
Content Executive	-	Akshita Jain
Technical Head	-	Divyanshi Singh
Technical Executive	-	Vishal Raj
Technical Executive	-	Gautam Kanojia
Fine Arts Head	-	Sharad Sharma
Promotion Executive	-	Aditya Sahu
Fine Arts Executive	-	Drishti Kingrani
Organising Head	-	Khushi Gupta
Organising Executive	-	Shreya Bhogal

Kaizen - Career Counselling Club

The greater we learn, the more our ignorance unfolds- John F. Kennedy

Keeping with the same motive, KAIZEN- The Career Counselling Club of P.G.D.A.V. College aims to make students aware of emerging career opportunities, assist them in identifying careers best suited to their own strengths and to foster their skills. It is a student-led community with convenors Ms Geetika Jaggi and Dr Deepika Kandpal who provide overall guidance and assistance in terms of obtaining logistical support for its activities

Events/Sessions :

The club holds two types of activities: In-house Sessions and Speaker Events. This year our speaker sessions have been focused on making our members accustomed to the new opportunities available like:

- Dr. Ritika Gugnani, Associate Professor & Chairperson PGDM-Marketing, Jaipuria Institute of Management, enlightened the students on the topic of 'Careers in the VUCA World' on 30th September, 2022.
- Mr. Anshu Choudhary, an alumnus of P.G.D.A.V. College currently studying at IIM Kozhikode, gave guidance about the CAT examination by providing insights about his journey to IIM on 13th October, 2022.
- AECC Global provided an insightful session on 'Career Paths for Higher Education Overseas'. Mr. Avadhesh Singh along with Ms. Kausani Shukla discussed the benefits of studying abroad, how to plan your overseas career, and what it takes to study abroad, on 15th November, 2022.
- 'International Education Reimagined' webinar was hosted in collaboration with AECC Global on 24th March, 2023.

Kaizen organised 'Shastraarth: The Battle of Words', an inter-college group discussion and extempore competition. The theme of the competition was 'World 2050'. We received a huge number of paid registrations from students across various universities. All in all, the events were a beautiful blend of fun and learning.

In-house Sessions include a variety of activities such as Vocabulary; Book Reviews on Wonderful Books like *Ikigai, Do Epic Shit, Aashaad Ke Din, and Metamorphosis;* Travel Updates on Maldevta, Kempty Falls, Ram Jhula, Udaipur; Current Affairs like GDP, Budget; Historical Updates including discussions on various art forms of India, Sanskrit *Shlokas* and many more. In addition to that, our Convener and Co-Convener give continuous feedback to the students and encourage them to perform better. Through these activities, students get an opportunity to brush up their skills and showcase the best version of themselves.

Career Prospectus:

For the purpose, this year we took a new initiative of posting informational content on Instagram about career opportunities from different fields. Careers discussed were Actuary, Blockchain Development, UI/UX Designs, Researchers, Economists, Careers in Geography, Careers for Travel Enthusiasts, and Career as a Metaverse Expert.

Since its inception, Kaizen has been diligently working to ensure that our students are observant of coming-to-age professions and improving their philosophy towards self-exploration.

Our Team:

Convenor - Geetika Jaggi

Co-Convenor - Dr Deepika Kandpal

President - Ashish Surana

Vice-President - Anant Agarwal

Secretary - Ekamjeet Singh

Joint Secretary - Aanchal Bansal and Subhanshu

Treasurer - Aditya Grover

Placement Cell

Our Motto

With immense joy and pride, the Placement Cell turns dreams into reality; the cell not only helps students to grab dream opportunities with ease, but also sources new opportunities for them and assists in building their overall personality by conducting various seminars, webinars, career fests, training programmes, job melas etc., throughout the year.

Initiatives Taken by the Cell

The journey of this session started on 3rd August, 2022 with the Placement Cell Orientation Programme where students were made aware of the working of the Cell and its objectives. Further, the Cell conducted a seminar on 'Designing Resume and Curriculum Vitae' which was organised with Dr. Nidhi Tak, Academic Coordinator at ICFAI Business School, Gurugram. We also organised a Career Fest on 14th September, 2022 in association with IQAC P.G.D.A.V and Clever Champ, where renowned universities like O.P. Jindal Global University, Bennett University and Pearl Academy came to cover all the career-related doubts that final year students faced. A three-day training-cum-recruitment programme from 19th September, 2022 to 21st September, 2022 was held to further enhance the students' preparedness towards launching their dream careers and brush upon their personal development and communication skills. Students were trained by appearing in a free mock interview to make them feel at ease with the recruitment interviews of reputed companies such as American Express, Paytm, Policy Bazaar and many more. Adding a feather to our cap, an offline workshop by Mr. Rishabh Garg, CEO and Co-Founder at Quantel, was conducted on building a preparation strategy for landing various job roles.

Career Readiness Boot Camp: 2nd edition

The Cell, in association with IQAC P.G.D.A.V. 'organized the second edition of the 'Career Readiness Boot Camp' from 6th February, 2023 to 16th February, 2023' which was an eleven-day workshop where more than hundred and thirty students successfully completed an all-inclusive soft skills training programme. Experts in eleven diverse fields made our students learn, develop and testify a new soft skill each day.

Placements and Internships

In the academic session 2022-2023, a total of ninety-three renowned companies were onboard such as PWC, EY GDS, Infosys, Accenture, Wipro, Genpact, ICICI Prudential, TravClan etc. with a total of sixty-six students getting their dream internships and hundred and seventy-eight students being placed in reputed companies. The maximum stipend observed was

1.5 LPA and the mean stipend was 10.4 K. The highest package offered was 36.5 LPA and the mean package was 5.65 LPA.

The seventh edition of the Annual Summer Internship Fair, 'Converge 23', saw an overwhelming footfall of over two thousand five hundred registrations and more than a thousand attendees with over thirty companies onboard offering a wide range of more than fifty diversified profiles. The highest stipend observed was 40K per month.

Opportunities for placements and internships have been overwhelming in the past sessions, and our aim is to increase these opportunities in the upcoming sessions.

Faculty Members:

Convenor	-	Kiran Yadav
Co-Convenor	-	Dr. Awadhesh Kumar Jha
Coordinator	-	Dr. Shikha Daga
Member	-	Ms. Lallianpuii Ralte, Dr. Kavita Singla, Dr. Charu Puri, Dr. Pramita Mishra, Dr. Hira Singh Bisht, Mr. Bhanu Kumar, Dr. Parmanand Sharma, Dr. Reena Talwar, Dr. Ritu Tanwar, Mr. Akshay Chamoli and Ms. Charvi Jain

Student Core Team:

President	-	Gouri Nagpal
Vice President	-	Satya Thadani
General Secretary	-	Vidushi Singh
Joint Secretary	-	Rohan Sachdeva
Coordinators	-	Apoorv Porwal, Shreya Jain, Swata Dey, Sahil Agarwal, Sejal Jain, Khushi Singh, Anjali Srivastava, Safoorah Khanam, Nancy Jain, Akshay Barbaria, Mukul Yadav
Executive Members	-	Shivangi Rawat, Siddharth Singh, Anushka Lal

Bharat Ratna Dr. B.R. Ambedkar Memorial Lecture Series, 2023

To commemorate Dr. Bhim Rao Ambedkar's birth anniversary, a lecture-series is organised every year by P.G.D.A.V. College. This year also it was organised on 18th April, 2023 in the new seminar hall on the topic 'Bharat Ratna Baba Saheb Dr. B.R. Ambedkar's Contribution in Nation Building'. The talk was delivered by Sh. Hitesh Sankar, Editor, Journalist and Writer. In his lecture he briefly described the indelible contributions of Dr. B.R. Ambedkar to India's progress. Our Principal, Dr. Krishna Sharma also highlighted the contribution of Dr. B.R. Ambedkar in nation building. A documentary based on the life of Dr. B.R. Ambedkar was also shown to the students. On 17th April, 2023 essay writing, elocution and poetry competitions were also organised on the topic 'Bharat Ratna Baba Saheb Dr. B.R. Ambedkar's Contribution in Nation Building' in which the students who got first, second and third positions were rewarded with mementoes, certificates and cash prizes by the chief guest and speaker of the lecture, Mr. Hitesh Shankar and Prof. (Dr.) Krishna Sharma. The credit for success of the lecture series goes to our Principal Prof. (Dr.) Krishna Sharma ma'am who provided unconditional support and encouragement throughout the planning & execution process.

Convener - **Dr. Shamsher Singh**

संस्कृत विभाग

''संस्कृत-समवाय''

वार्षिक रिपोर्ट 2022-23

संस्कृत भाषा के महत्त्व को प्रचारित कीजिए- प्रो. कृष्णा शर्मा

संस्कृत की महिमा को शब्दों में आँका नहीं जा सकता। मुझे एक ही कमी खलती है कि अभी तक संस्कृत के महत्त्व को जनसाधारण तक नहीं पहुँचाया जा सका है। आप सबसे इसके प्रचार-प्रसार के लिए आह्वान करती हूँ। आप सबके हाथ में मोबाइल फोन है, और सभी सोशल मीडिया पर सक्रिय हैं, वहाँ पर संस्कृत के महत्त्व को प्रचारित कीजिए। इस तरह का प्रेरणादायक उद्‌बोधन पी.जी डी.ए. वी कॉलेज में आइ.क्यू.ए.सी., संस्कृत विभाग की अकादमिक ईकाई संस्कृत समवाय और संस्कृत भारती दिल्ली प्रांत के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित दस दिवसीय संस्कृत संभाषण शिविर के समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में कॉलेज की प्राचार्या प्रो. कृष्णा शर्मा ने दिया। प्राचार्या महोदया ने अपने संबोधन में यह भी कहा कि हम सब संस्कृत के महत्त्व की चर्चा इसलिए नहीं करते कि संस्कृत को लेकर हीनभावना के शिकार होते हैं। विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि संस्कृत के अध्ययन को डिग्री तक सीमित नहीं रखें और न ही स्वयं अपने तक रखें। मैकाले की शिक्षा पद्धति ने हमारी ज्ञान परम्परा को ही ध्वस्त कर दिया है। अथाह ज्ञान के सागर से ही हम सबको दूर कर दिया था। अब राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बाद बहुत अंतर आ गया है। इसलिए हम सबको व्यक्तिगत रूप से अध्यापकों के साथ महाविद्यालय से लेकर घर परिवार में भी इसकी महत्ता का प्रचार-प्रसार करना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि भले ही वो हिंदी पढ़ाती हैं लेकिन उनका संस्कृत के प्रति अथाह स्नेह है और कई बार संस्कृत विभाग के कार्यक्रम का संचालन भी कर चुकी हैं।

गौरतलब है कि यह संभाषण शिविर 1 फरवरी 2023 को बहुत ही गरिमामय तरीके से शुरू हुआ था। उद्‌घाटन के विशेष अवसर पर संस्कृत भारती, दिल्ली प्रांत के वरिष्ठतम दायित्ववान महामंत्री सुशील कुमार जी उपस्थित थे। इस अवसर पर अपने शुरुआती संबोधन में संस्कृत विभाग, पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज के विभागाध्यक्ष प्रो. दिलीप कुमार झा ने कहा कि देश-विदेश में संस्कृत का पठन पाठन कैसे हो इसके लिए सुशील जी लगातार प्रयास करते रहते हैं। जिसके कारण आज यह दस दिवसीय संभाषण शिविर शुरू हो रहा है। भाषा के महत्त्व को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि अंग्रेज 75 वर्ष पहले चले गए लेकिन उनके द्वारा बनाए गए दासता के प्रतीक अभी भी काफी संख्या में बचे हुए हैं। अभी हाल ही में राजपथ का नाम बदलकर कर्तव्यपथ किया गया है, शब्दों में कितना आकर्षण होता है यह देखिए कि पूरा का पूरा भाव बदल गया।

छोटा-सा देश इजराइल है। जिसका अस्तित्व ही खत्म हो गया था, फिर दुनिया भर से यहूदी एकत्रित होकर देश को स्थापित किए। वहाँ की ऑफिसियल भाषा हिब्रू है जिसको सर्वाधिक नोबेल पुरस्कार मिला है। उनका

समस्त ज्ञान, विज्ञान और अनुसंधान हिब्रू में ही होता है। अपने संबोधन के अंत में प्रो. दिलीप झा ने कहा कि भारतवर्ष से संस्कृत और संस्कृति को निकाल दे तो इंडिया में कंक्रीट ही बचेगा। भारतीयता की बात करते हुए उन्होंने कहा कि बाबा रामदेव का पतंजलि दो सिद्धांत पर आधारित है- योग, और आयुर्वेद। जिसके कारण करोड़ों का आर्थिक साम्राज्य खड़ा हो गया है।

इस अवसर पर सुशील कुमार ने कहा कि आज प्रथम दिन है संस्कृत में बोलिए आपका भाषा का संस्कार बनेगा। देश के पहले कानून मंत्री, बाबा साहेब भारत रत्न भीमराव अंबेडकर ने 1947 में कहा था कि भारत की राजभाषा संस्कृत ही होनी चाहिए। भारत को भारत से जोड़ने की भाषा केवल संस्कृत है। सुशील जी ने यह भी कहा कि जानकारी का अभाव हमारे सम्मान को लुटवा सकता है। सामने वाला कमरा अपना है, उसकी देखभाल, साफ-सफाई हमारा दायित्व है। जब यह पता नहीं है कि वह कमरा भी अपना है तो उसके प्रति हम उदासीन हो जाते हैं, वही स्थिति संस्कृत भाषा की हो गई है। भारतीय ज्ञान परम्परा की क्या दुर्गति हो रही है, उसकी चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि मैसूर की लाइब्रेरी में हजारों पाण्डुलिपियाँ हैं लेकिन उस पर कोई काम नहीं हो रहा है। जानकारों का कहना है कि बहुत सारी पाण्डुलिपियाँ विज्ञान से संबंधित है लेकिन विज्ञान वालों को संस्कृत नहीं आती और संस्कृत वालों को भी विज्ञान नहीं। संविधान में यह प्रावधान है कि नए शब्द संस्कृत से ही आएंगे केमिस्ट्री में भी कोई नया शोध विदेश में भी हुआ हो तो भारत में किस तरह के शब्दों से उसको जाना पहचाना जाएगा यह काम संस्कृत के जानकारों का ही है।

पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज संस्कृत विभाग के वरिष्ठ प्रोफेसर गिरिधर गोपाल शर्मा ने अंत में कहा कि आप जितना पढ़ोगे भाषा में उतनी ही निपुणता एवं दक्षता आएगी। इस संभाषण शिविर को विभाग की तरफ से संस्कृत भारती के द्वारा प्रत्येक शैक्षणिक वर्ष में आयोजित किया जाता है। कोरोना काल में भी संभाषण शिविर का इस आयोजन ऑनलाइन माध्यम से किया गया था। प्रथम वर्ष एवं द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम में लगे हुए पेपर को पढ़ने में इस संभाषण शिविर से बहुत सहायता मिलती है। इस दस दिवसीय संभाषण शिविर का संयोजन संस्कृत विभाग की डॉ. वंदना रानी ने किया।

हिंदी विभाग

'हिंदी दिवस' के उपलक्ष्य में 13 सितंबर 2022 को हिंदी विभाग की समिति 'चिंतन' की ओर से एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। 'हिंदी संभावनाओं के आयाम' विषय पर आयोजित इस संगोष्ठी में दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर अनिल राय मुख्य वक्ता थे। कार्यक्रम का आरंभ दीप प्रज्ज्वलन एवं सरस्वती वंदना से किया गया।

'चिंतन' संयोजिका डॉ. सुषमा चौधरी ने समिति का परिचय देते हुए इसकी गतिविधियों का ब्यौरा दिया। उन्होंने विद्यार्थियों को चिंतन के कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया।

प्राचार्य प्रोफेसर कृष्णा शर्मा ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि हिंदी हमारे आत्मगौरव का प्रतीक और भारतीय अस्मिता का प्रमुख लक्षण है। उन्होंने हिंदी के विषय स्वामी विवेकानंद के प्रेरक प्रसङ्ग को उद्धरित किया। प्राचार्य महोदया ने कहा कि हिंदी के प्रति सम्मान का भाव हम सभी के हृदय में होना चाहिए।

हिंदी विभाग के वरिष्ठ शिक्षक प्रोफेसर अवनिजेश अवस्थी ने बीज वक्तव्य देते हुए कहा कि हिंदी भारतीयता का पर्याय है। अपने वक्तव्य में प्रोफेसर अवस्थी ने साहित्य और संस्कृति के अनेक प्रसङ्गों को उद्धृत किया। उन्होंने कहा कि हिंदी का वैश्विक विस्तार अत्यंत गौरव का विषय है।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रोफेसर अनिल राय ने 'हिंदी संभावनाओं के आयाम' विषय पर बोलते हुए हिंदी के विविध पक्षों पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने हिंदी में रोजगार के अनेक अवसरों से विद्यार्थियों को अवगत कराया।

कार्यक्रम का संचालन विभाग के प्रभारी अरुण मिश्र ने किया। इस कार्यक्रम में हिंदी विभाग से डॉ. वीणा, डॉ. मनोज कैन, डॉ. बन्नाराम मीणा, डॉ. परमानंद शर्मा, डॉ. वेदप्रकाश, डॉ. चैनसिंह, डॉ. भारत पवार, डॉ. संदीप कुमार रंजन, डॉ. अवन्तिका सिंह, डॉ. शीतल, श्री नरेंद्र, डॉ. ऋषिकेश कुमार सहित अनेक विभागों के प्राध्यापक एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में डॉ. कपिल निषाद ने सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

13 सितम्बर 2022 को ही कार्यक्रम के दूसरे चरण में 'आजादी के 75 साल : उपलब्धियां और चुनौतियाँ' विषय पर छात्रों के लिए एक निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें विद्यार्थियों की भागीदारी उत्साहपूर्ण रही। डॉ. संदीप कुमार रंजन इस प्रतियोगिता के संयोजक रहे।

14 सितंबर 2022 को 'हिंदी दिवस' के उपलक्ष्य में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। प्राचार्य प्रो. कृष्णा

शर्मा ने इसका उद्घाटन करते हुए कहा कि हिंदी का देश और विदेश में निरंतर हो रहा विकास, हम सभी के लिए गर्व का विषय है। उन्होंने रेखांकित किया कि हिंदी आज ज्ञान विज्ञान के सभी आयामों को अभिव्यक्त करने में सक्षम है। इस संगोष्ठी में शिक्षकों एवं विधार्थियों ने हिंदी के विविध पक्षों पर अपने विचार व्यक्त किये। विद्यार्थियों ने हिंदी की कुछ कविताओं को भी प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम में हिंदी विभाग की डॉ. वीणा, प्रोफेसर अवनिजेश अवस्थी, डॉ. सुषमा, डॉ. मनोज कैन, अरुण मिश्र, डॉ. बन्नाराम मीणा, डॉ. कपिल देव निषाद, डॉ. परमानंद शर्मा, डॉ. वेदप्रकाश, डॉ. चैनसिंह, डॉ. भरत पवार, डॉ. अवन्तिका सिंह, डॉ. शीतल, श्री नरेंद्र, डॉ. ऋषिकेश कुमार सहित अनेक विभागों के प्राध्यापक एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे। डॉ. संदीप कुमार रंजन के धन्यवाद ज्ञापन से कार्यक्रम का समापन हुआ।

भारतीय संस्कृति सभा

शैक्षणिक सत्र 2022-23 में भारतीय संस्कृति सभा ने अपनी सक्रिय भूमिका के द्वारा महाविद्यालय के छात्रों में सर्वांगीण गुणों का विकास और संस्कृति के प्रति नवचेतना का प्रचार-प्रसार कर उन्हें सच्ची देश भक्ति की भावना से ओत-प्रोत करने का दायित्व निभाया है।

सभा का प्रथम कार्यक्रम श्री अरबिन्दो की 150वीं जयन्ती पर आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम "Teachings of Sri Aurobindo & quot" विषय पर 18 जुलाई, 2022 को Eager to Forge Ahead (India) और महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के साथ मिलकर आयोजित किया गया। कार्यक्रम की मुख्य वक्ता सुश्री लिपिका रानी रहीं।

दूसरे कार्यक्रम के रूप में सभा ने आज़ादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में 8 अगस्त, 2022 से 13 अगस्त, 2022 तक साप्ताहिक व्याख्यानमाला का आयोजन किया।

8 अगस्त, 2022 को उद्घाटन सत्र का विषय ''आज़ादी के अमृत महोत्सव में नए भारत का उदय'' रहा। महाराजा अग्रसेन महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. संजीव कुमार तिवारी ने मुख्य अतिथि के रुप में अपना वक्तव्य दिया। प्रो. तिवारी ने आजाद भारत से लेकर आत्मनिर्भर भारत की ओर सबका ध्यान आकर्षित करते हुए कहा कि यह वर्ष स्वतंत्रता सेनानियों को याद करने का अमृत वर्ष है। यह महोत्सव आत्मनिर्भरता का अमृत वर्ष है। यह वर्ष हर घर तिरंगा, हर मन तिरंगा का अमृत वर्ष है। आज़ादी की लड़ाई में हर घर और हर समाज ने अपना योगदान दिया है। उन सभी के योगदान को याद करने के लिए अमृत महोत्सव मनाया रहा है। जिनका इतिहास के पन्नो में जिक्र तक नहीं मिलता, उनके त्याग को नयी पीढ़ी को बताने का यह अमृत वर्ष है। यह वर्ष भारत को विश्वगुरु के पद पर पुनः स्थापित करने का अमृत वर्ष है। आजाद भारत से आत्मनिर्भर बनते भारत का अमृत महोत्सव हम मना रहे हैं। नए भारत के उदय के सन्दर्भ में उनका सारगर्भित व्याख्यान रहा। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो. कृष्णा शर्मा ने की तथा उनके उद्बोधन के रूप में आशीर्वाद व साधुवाद की प्राप्ति विद्यार्थियों और शिक्षकों को हुई।

12 अगस्त, 2022 का व्याख्यान 'भारतीय संस्कृति के विविध आयाम और युवा शक्ति' विषय पर रहा। प्रमुख वक्ता श्री निखिल यादव (प्रांत युवा प्रमुख उत्तर प्रांत, विवेकानन्द केन्द्र, दिल्ली) के विचार युवा शक्ति में जोश, उत्साह, उमंग के साथ-साथ उनमें धैर्य, हिम्मत, अडिग विश्वास के प्रेरणा की स्रोत का आधार बना। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. सुरेन्द्र कुमार, वाणिज्य विभाग एवं कोषाध्यक्ष, पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय ने की। उन्होंने भारतीय संस्कृति की विरासत का जिक्र करते हुए छात्रों को शाश्वत सत्य से परिचित कराया।

समापन सत्र का आयोजन 13 अगस्त, 2022 को हुआ, जिसका विषय ''भारतीय संस्कृति के आलोक में क्रांतिकारियों का साहित्य'' था। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता संघ के राष्ट्रीय विचारक प्रो. अवनिजेश अवस्थी (हिंदी विभाग, पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय) थे। उन्होंने कहा कि क्रांतिकारियों के साहित्य का सृजन जिसको वे विपरीत परिस्थितियों में, साधन रहित रह कर भी मौखिक रूप से और दीवारों पर पत्थरों व नाखूनों से कुरेदकर काल-कोठरियों में निरंतर करते रहे। भारतीय संस्कृति की रक्षा व सेवा, भारत माता की सेवा में सदैव अडिग रहकर अपने प्राणों की परवाह किये बगैर करते रहे। आज हमें उनके जीवन और साहित्य से नए विचारों और शक्ति का संचार अपने अन्दर करना चाहिए। शिक्षकों व छात्रों को क्रांतिकारियों का साहित्य पढ़ना चाहिए और आगामी पीढ़ी तक हस्तांतरित करना होगा तभी भारतीय संस्कृति व सनातन सत्य का सतत प्रवाह रह सकेगा। प्रो. अश्विनी महाजन, अर्थशास्त्र विभाग, पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय ने समापन सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने अपने विचारों और ज्ञान के अथाह स्रोत से श्रोताओं को प्रोत्साहित करते हुए उनमें देश भक्ति, समाज सेवा का जज्बा भरा। उनके भाषण के सकारात्मक प्रभाव ने शिक्षक, छात्रों, छात्राओं के जीवन को जीने का उद्देश्य स्पष्ट किया। विद्यार्थियों ने संकल्पित हो निष्ठा व श्रद्धा का परिचय दिया।

5 सितम्बर, 2022 को शिक्षक दिवस का आयोजन भारतीय संस्कृति सभा और राष्ट्रीय सेवा योजना ने मिलकर किया। प्रो. डी. एस. रावत, अधिष्ठाता, परीक्षा, दिल्ली विश्वविद्यालय को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया था। प्रो. रावत ने वर्तमान समय में गुरु की गिरती गुणवत्ता पर चिंता जाहिर की और माना कि इससे विद्यार्थियों के जीवन पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, क्योंकि योग्य शिक्षकों की कमी भारत देश को भी नकारात्मक रूप से प्रभावित करेगी। कार्यक्रम की रूपरेखा डॉ. चन्द्रपाल सिंह, इतिहास विभाग ने रखी। प्राचार्या प्रो. कृष्णा शर्मा ने स्वागत भाषण देते हुए गुरु की गरिमा और महत्ता को रेखांकित किया और गुरु के दर्जे को माँ की तुलना में सर्वोपरि माना। विद्यार्थियों को शिक्षकों के प्रति सम्मान व कृतज्ञता का भाव रखने के लिए प्रेरित किया। महाविद्यालय के कोषाध्यक्ष डॉ. सुरेन्द्र कुमार ने शिक्षा और शिक्षक की भूमिका पर जोर दिया। राष्ट्र निर्माण में शिक्षक की भूमिका पर प्रकाश डाला। एक सच्चा शिक्षक राष्ट्र निर्माण में सहयोग कर देश के भविष्य को उज्ज्वल बनाता है।

2 नम्बर 2022 को प्रथम वर्ष के नवागंतुक छात्रों का स्वागत वैदिक हवन द्वारा प्राचार्या महोदया के करकमलों से हुआ। महाविद्यालय के प्रांगण में वैदिक मंत्रों की ध्वनि गुंजायमान रही। हवन उपरान्त भारतीय संस्कृति सभा के छात्र-छात्राओं द्वारा नवागंतुक छात्रों को चंदन तिलक लगा कर सभागार में बैठाया गया।

सभागार में उपस्थित सभी विद्यार्थियों को विभिन्न विभागाध्यक्षों व विभिन्न समितियों के अध्यक्षों के माध्यम से महाविद्यालय की गतिविधियों व आगामी कार्यक्रमों के विषय में विस्तार से समझाया गया। प्राचार्या प्रो. कृष्णा शर्मा ने स्वागत भाषण के दौरान अनुशासन पर बल दिया। अनुशासित जीवन ही अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। विद्यार्थियों को अनुशासित बनने का उपदेश दिया।

12 जनवरी, 2023 को सभा ने सत्र के अन्तिम कार्यक्रम के रूप में राष्ट्रीय युवा दिवस का आयोजन किया।

मुख्य वक्ता श्री निखिल यादव, प्रांत युवा प्रमुख, उत्तर प्रांत, विवेकानन्द केन्द्र, दिल्ली ने सभी छात्रों को प्रेरित व अभिप्रेरित कर देश शक्ति और समाज की शक्ति को सकारात्मक कामों में संचालित करने का प्रयास किया। युवा शक्ति को समाज के निर्माण में सकारात्मक सोच रखनी चाहिए। युवा शक्ति को विवेकानंद जैसा जीवन-संकल्प लेकर आगे बढ़ना चाहिए। जिस प्रकार स्वामी विवेकानन्द ने शिकागो धर्म सम्मेलन में भारतीय संस्कृति व सनातन धर्म का परचम लहराया। उसी का अनुसरण छात्रों को करना चाहिए। विश्व के हर देश को भारतीय संस्कृति व सनातन धर्म से प्रकाश मिल रहा है क्योंकि भारतीय संस्कृति का कार्य है, निर्माण और संयोजन करना। जोड़ने के साथ समाज में चेतना जागृत करना तथा मन में अटल विश्वास की दीवार का निर्माण कर देश सेवा, समाज सेवा व नर से नारायण सेवा का भाव भारतीय संस्कृति से मिल रहा है।

राष्ट्रीय युवा दिवस के कार्यक्रम में विद्यार्थियों व शिक्षकों ने आगे बढ़कर कार्यक्रम में हिस्सा लिया व कार्यक्रम को सफल किया। कार्यक्रम में महाविद्यालय के वरिष्ठ शिक्षकों ने भी बैठकर अपने ज्ञान में वृद्धि कर लाभान्वित अनुभव किया।

मैं (रामवीर) अध्यक्ष, भारतीय संस्कृति सभा, सभा के सभी सदस्यों की वर्ष भर रही उपलब्धता के लिए आभारी हूँ। महाविद्यालय में भारतीय संस्कृति सभा ने कार्यक्रमों का लगातार आयोजन कर अपनी पहचान को और मजबूत किया है। सभा की ओर से महाविद्यालय की प्राचार्या महोदया का आभार व्यक्त करता हूँ। आपका साधुवाद व आशीर्वाद कार्यक्रमों की स्वीकृति के रूप में ही वर्ष भर बना रहा। प्रत्येक कार्यक्रम में आपकी उपस्थिति ने छात्रों व शिक्षकों को कर्मठता का सबक सिखाया। सभा महाविद्यालय के प्रत्येक छात्र, छात्रा, शिक्षक और कर्मचारियों का भी हार्दिक आभार व्यक्त करती है। आगामी सत्र में भी आप सभी की अनुकम्पा की कामना के साथ अपनी कलम को विश्राम देता हूँ।

Eclectica: Department of English

Eclectica- The English Literary Society of PGDAV College (M) continued its legacy of supporting literary pursuits and giving students a stage to express themselves. In the academic year 2022-23, Eclectica organized back-to-back successful events.

The society began its journey with the Freshers' Orientation Programme where the faculty and the core team collectively welcomed the new batch of English Honours and introduced them to the New Education Policy (NEP '20). The event was followed by an ice breaker session where the freshers were given a chance to communicate with seniors. The freshers' party, 'Once Upon a Ball,' was organised in November where many cultural societies collaborated with Eclectica and made the event enjoyable.

Eclectica organised 'Pen Chant: The Annual Self Written Poetry Recitation Competition' where the talented poets of the English department presented their pieces on stage.

Illumni - The Alumni Association of English Department was launched by Eclectica and the team hosted its first Alumni Talk session in January. Mr Amit Bharadwaj and Mr Gaurav Chauhan, the alumni of the English Department, felicitated the first-ever speaker session and enlightened the audience with their powerful words.

One of the major events of the year was the Annual Literary Fest, 'Eglantine', which was held in February 2023. The fest was inspired by John Keats' love for spring, and it featured a plethora of literary activities, such as Book Exchange Event: Bring Your Own Book; 'Poema'- 'The Poem Writing Competition' in collaboration with Iris - The Film and Photography Society of PGDAV College; What If'...? The Alternate Ending Creative Writing Competition; and an Academic Writing Workshop. It attracted a large audience from all over the University of Delhi, and the participants showcased their creativity and talent.

Apart from this, the society also hosted two workshops on Creative Writing and Publishing in March. The famous author of *Samsara*, Mr Saksham Garg, was invited. He was accompanied by Mr Bijit Sinha, A Senior Ex-Cambridge Editor. Additionally,

Eclectica was quite active on social media where it maintained the participation of over one thousand users.

In conclusion, Eclectica had a fruitful and prosperous academic year in 2022–2023. In the upcoming years, the team intends to keep up the efforts to support and develop literary skills in students.

Core Team

Core Team 2022-23:

Convenor	-	Dr Urvashi Sabu
Co-Convenor	-	Ms Lallianpuii Ralte
President	-	Isha Smriti
Vice President	-	Sanskriti
General Secretary	-	Harshita Tyagi
Joint Secretary	-	Vartika Singh
Creative Head	-	Aruna Bajaj

Commercium - Department of Commerce

Department of commerce P.G.D.A.V. organised a series of seminars, workshops and drives during the academic session 2022-23. A brief summary of some of them is mentioned below:

1. A short term certificate course titled 'The Indian Contract Act-1872 & Remedies for Breach of Contract' held from 16th January to 3rd February, 2023.
2. A seminar titled 'DEMYSTIFYING MBA' held on 29th August, 2022.
3. A seminar on 'Financial Literacy Among India's Youth' held on 23rd September, 2022.
4. A seminar on 'Risk Management' held on 11th January, 2023.
5. A visit to SEBI on 7th September, 2022.
6. SEBI visited P.G.D.A.V. College to celebrate 'World Investor Week 2022' on 12 October, 2022.
7. 'Youth Conclave 4.0: Rediscovering Bliss' on 19th January, 2023.

Commercium :

Live as you were to die tomorrow and learn as you were to live forever. - Mahatma Gandhi

Commercium- The Commerce Society of PGDAV College is one such society with the motto of 'Where Ignited Minds Thrive' which stands as the biggest society in the college and one of the top ten big departmental societies of Delhi University. With years of legacy, Commercium aims to inspire intellectual and social activities among students and leaves no stone unturned to harness their skills with the help of seminars, orientations and excursions:

1. Seminars :

a. Career Launcher conducted a seminar 'Demystifying MBA' on 29th August, 2022, which provided progressive career options in the business domain and helped increase the brand value of the candidate before potential recruiters.

b. A seminar on 'Financial Literacy Among India's Youth' conducted by Booming Bulls on 23rd September, 2022 provided an in-depth deliberation on the importance of having financial literacy towards achieving financial freedom from an early age. They touched upon the concept of the power of compounding which was noteworthy.

c. A seminar on 'Risk Management' was held on 11th January, 2023 by GRMI Institute. The motive was to educate students about the prominent field of risk management.

d. A seminar on 'Integration of Business Analytics with Undergraduate Courses and Scope of Jobs in Markets' was held on 6th April, 2023. The guest speaker was Mr. Anup Kumar, Principal Consultant & Director, ABSC Analytics.

2. We visited the SEBI on 7th September, 2022 with over forty students. The resource person guided the students to build their capacity as investors and develop awareness.

We were taught to take investment decisions by SEBI which is called 'Har Investor ki Taaqat'.

3. A visit by SEBI to celebrate World Investor Week 2022 on 12th October, 2022 in our college premises with the financial education initiatives of 'Investors Resilience- A Smart Investor Conducts Research Before Investing and Diversifies His Portfolio.'

4. Organised a Public Awareness Initiative on 22nd September, 2022 in collaboration with Reserve Bank of India and Central Bank of India on 'Be(a)ware- Be Aware and Beware! And EASE 5.0' where Mr S. N. Jha, Deputy Ombudsman, RBI and Mr Keshav Khanna, AGM, Ombudsman, RBI, along with other officials, made the audience aware of the modus operandi and precautions to be taken against fraudulent transactions.

5. A freshers' Welcome and an Orientation Programme was arranged on 4th November, 2022. It was a memorable event for the freshers and existing members. It provided insightful information to balance academics with extra-curricular activities. Students enjoyed Kathak performance by Natraj Society, Bhangra and Rap-song performance by the Jalsa Society as well as an excellent Ad-mad act from the Navrang Society.

6. A felicitation ceremony was organised on 9th December, 2022 for the members of the society. The main intent of the ceremony was to congratulate the executive team, heads of departments and introduce freshers to the entire commercium family.

7. Annual fest 'YOUTH CONCLAVE 4.0: Rediscovering Bliss' was organised on 19th January, 2023 with great zeal. The event witnessed four eminent personalities from different fields :

I. An IAS officer Sonal Goel who completed her journey from a C.S. to a civil servant, narrated her stories from dealing with pessimistic relatives to being an AIR 13 in 2007. She believes that we all can contribute to society in a big or small form.

II. Captain Shivani Kalra, an Airline pilot, TEDx speaker, and a Vogue face who loves heights, worked on Operation Ganga and showed exemplary courage by evacuating Indian students from Ukraine during the war.

III. A finance expert and an entrepreneur Mr Anmol Sharma, founder and CEO of Finlight, also attended the annual fest.

IV. Gaurav Mankoti aka Void, a writer, dancer and eminent rapper, inspired the inquisitive young minds and created an atmosphere of incredible learning.

8. We also publish blogs on financial scoops. Not only this, but also when it comes to fun, we organise intergroup meets, games, gatherings and whatnot!

Core Team:

Convenor	-	Shri Varun Gautam
Co-Convenor	-	Ms Gitu Nijhavan
President	-	Sree Hari Nair
Vice President	-	Tarang jain
Secretary	-	Samay Jain
Joint Secretary	-	Harsh Sharma
Joint Secretary	-	Isha Agarwal
Treasurer	-	Muskan Advani
Treasurer	-	Virang Gupta
Student Coordinator	-	Surabhi Tiwari

Ecolibrium - Department of Economics

Ecolibrium : The Economics Society of PGDAV College, University of Delhi is a team of dedicated students and faculties who work towards creating an intellectual and inclusive space for discussions around national and international economic issues and events. The society organises guest speaker events, research support seminars, debates and various academic college and inter-college events to promote an environment of inquisitiveness and to create awareness about recent economic issues. The society also publishes an annual newsletter comprising contributed articles from the students.

The team of young and exuberant students and faculty made this year a raging success by conducting numerous academic events which saw a participation of many scholars and students from across the city. The details of the sessions organised in the current session are as follows:

Research Paper Writing Session

Ecolibrium organised an interesting session on Research Paper Writing on 3rd February, 2023 to introduce students to research and to hone the art of writing and presenting research papers. It was inaugurated by Bursar Sir. The lecture was delivered by Ms Surily Sahay, a renowned independent scholar and a prestigious alumni of PGDAV college from the batch of 2019. The session was attended by several other faculty members and undergraduate students who found it to be a great opportunity to gain knowledge about the skills of research paper writing.

Ecolligence 2023

Ecolibrium organised Ecolligence, The Annual Economics Festival of the economics society of P.G.D.A.V. College on April 03, 2023 to celebrate and create awareness about India's G20 presidency with the help of talk, debate and paper presentation on the theme of 'Vasudhaiva Kutumbakam: Contours of India's G20 Presidency'.

Ecolligence commenced with a lamp lighting ceremony along with *Saraswati Vandana* by Raaga,- The Indian Music Society of PGDAV College, after which our Principal felicitated the speaker with a sapling. The event, after a speaker session with Dr. Sanjaya Baru, was followed by intercollege paper presentations and conventional debate competitions. It was attended by faculty members, undergraduate students, postgraduate students and research scholars from prestigious educational and research institutions. The event involved discussion by young minds on the priority issues of G20, such as Green Development,

Climate Finance, Inclusive Growth, Accelerating progress on Sustainable Development Goals, Technological Transformation, Women-empowerment, Multilateralism, etc.

The speaker session by Dr. Sanjaya Baru, Economist and Policy Analyst, focused on discussing the pressing global economic issues. Dr. Baru provided insights about the history of G20 as well as the importance of its role in promoting international cooperation and coordination among the world's leading economies. He also highlighted a range of global economic issues, including trade policies, climate change, and the impact of the pandemic on the global economy.

One of the key takeaways from the session was the importance of multilateralism and collaboration in addressing complex global economic issues. The speaker emphasised the need for coordinated efforts to promote sustainable economic growth and development, reduce income inequality, and address the challenges posed by climate change. The audience actively participated in the session, asked questions and shared their perspectives on the topics discussed. Altogether, it was a highly informative and engaging event that provided valuable insights into some of the most pressing issues facing the global economy today.

Invited Speaker Session

Ecolligence 2023 witnessed a research paper presentation by invited scholar Dr. Srishty Kasana and Mr. Naveen Kumar. Dr. Srishty Kasana, Assistant Professor, Daulat Ram College presented her research on the dynamics of climate change. Mr. Naveen Kumar, Research Scholar, Delhi School of Economics, presented his research paper on the 'Macroeconomic Impact of Climate Change on Total Factor Productivity Using 'CS-ARDL Model.' The engrossing and interactive presentation by the speakers enlightened the audience about the recent research in the field of sustainable development and climate change.

Research paper presentation by Dr. Srishty Kasana

Research paper presentation by Mr. Naveen Kumar

Paper Presentation Competition

Paper presentation competition on the topic of 'Vasudhaiva Kutumbakam and the Contours of India's G20 Presidency' witnessed participation by nine undergraduate and postgraduate students from esteemed colleges, including Lady Shriram College, Hindu College, SGGSCC, ARSD College, among many others. These papers were cherry picked from a pool of over fifty papers received from educational institutions across the country. The presenters showcased their research on various priority issues of G20 such as green construction, green development, education and land development. The presentations were impressive and reflected the extensive research undertaken by the participants. The competition was judged by Dr. Indranil Chowdhury, Ms. Rimpy Kaushal, Dr Varun Bhushan, Dr. Deepika Kandpal from the Department of Economics, PGDAV College (M) and Dr Srishty Kasana from the Department of Economics, Daulat Ram College, University of Delhi.

After careful evaluation, the judges declared Madhavi Sawhney from Sri Guru Gobind Singh College of Commerce the winner of the competition for her paper presentation on the 'Education Model in Delhi'. The second prize was awarded to Anubhava Singhala from ARSD College for his presentation on the 'Land Restoration Economy.' The third prize was awarded to Prerna Bhatia from PGDAV College (M) for her presentation on 'Green Construction'. Overall, the competition' was a raging success in demonstrating contemporary research on the economics of G20 and its priority areas.

Conventional Debate Competition

Ecolligence also hosted a conventional debate competition on the topic 'G20 Contributes to Inclusive and Sustainable Development with Strengthened Multilateralism'. Thirty-five debaters from various colleges of the University of Delhi, including Delhi School of Economics, Sri Venkateswara College, Lady Shriram College and Hindu College participated in the competition. The competition was judged by Ms. Tanishi Kalra, Mr. Ankush Garg from Department of Economics, PGDAV College (M) and Ms. Vandana Rathore from Department of Economics, Vivekanand College, University of Delhi. Rachit Kapoor from Sri Venkateswara College and Devashish Rakshit from the Delhi School of Economics were awarded the best debater. The award for the best interjector was won by Sharanyam Singh from PGDAV College (E). The conventional debate competition turned out to be highly productive and fruitful in highlighting a variety of opinions and viewpoints on the economics of G20.

Winners of paper presentation competition and debate competition with the judges

Newsletter

The theme of 7th edition of Ecolibrium Newsletter 2022-23 is 'Vasudhaiva Kutumbakam and India's G20

Presidency'. The newsletter focuses on a rich set of issues related to inclusive development and green growth. The articles and news reels cover a wide variety of areas ranging from climate action, climate finance, women empowerment and economic growth. The issue also provides insights about the research by Prof. Bina Agarwal, an Indian Development Economist and Professor of Development Economics and Environment at the Global Development Institute.

With the encouragement and support of our Principal Madam, Prof. Krishna Sharma, faculties and exuberant participation by the students, Ecolibrium has succeeded in achieving its goal of enhancing the understanding of modern economics and its problems and providing students a platform to showcase their research, debating skills and other academic skills through numerous informative and thought-provoking sessions and competitions. Ecolibrium looks forward to hosting more such sessions in the following years.

Team Ecolibrium 2022-23

Our team for the session 2022-23 includes forty-five academically enthusiastic and motivated students from BA (Hons), Economics and BA Programme. The faculty advisors and core committee members are:

Faculty advisor:

Convenor- Dr. Deepika Kandpal

Co-Convenor- Dr. Lalit Rajput

Students Core committee members:

President- Tanay Gupta

Vice President- Gaurika Wahal

Secretary- Raunak Chhabra

Joint Secretary- Raj Rajeshwari Batra and Harsh

Treasurer- Rick Sunder Jena

Newsletter Editorial Team:

Editor-in-Chief - Mehak Vohra

Editor- Vidhi Vivek

Cartoonist- Muskan Chauhan

Sankhyiki - Department of Statistics

The Statistics Department of P.G.D.A.V. College organised its annual festival, SKEWSION'23, on April 11, 2023 where we conducted a host of activities like a talk with a prominent statistician, paper presentation competition, chess competition, a statistics guessing quiz, and an anime quiz. These events were aimed at providing a platform for students to showcase their skills and talents in various fields.

The fest began with the ceremony of lamp lighting and *Saraswati Vandana.* Prof. Anish Sarkar from the prestigious Indian Statistical Institute, Delhi, delivered a talk on the topic 'From the Real World to the Statistical World'. He provided valuable insights on how to apply theoretical knowledge to practical situations.

In the Young Researchers Forum, a paper presentation competition was held in which students from various colleges and universities presented their research papers on topics related to statistics, mathematics, computer science, and economics. The competition provided a platform for students to showcase their research skills and encouraged them to think critically.

In addition to that, 'Battle of the Kings', a chess competition; 'Taboo De Statistica', a statistics quiz; and 'Otaku's Rumble', an anime quiz, were held successfully. The winners were awarded special prizes.

The event was an excellent opportunity for students to engage in various brain-stimulating activities and further enhance their academic and professional growth. The Statistics Department is looking forward to organising more such events in the future to promote academic exposure.

Core Team 2022-23

Alumni Meet Report of Statistics Department

On March 25, 2023 The Statistics Department of P.G.D.A.V. College organised an Alumni Meet in the old seminar hall of the college. The event was aimed to connect former students of the department with the faculties and current students and share their enriched experiences.

The Alumni Meet began with the traditional Saraswati Vandana and lamp lighting. Our Principal ma'am, Prof. Krishna Sharma, motivated the students and appreciated the Statistics department for its contribution to the college.

The Alumni Meet was well-attended by more than seventy former and current students of the department. The alumni were from diverse backgrounds including academia, industry and government. Most of the alumni are successful professionals who have achieved notable accomplishments in their respective fields.

All the alumni interacted with students on various topics related to statistics, data analysis, statistical modelling, data science, machine learning, and artificial intelligence.They shared their knowledge related to career guidance, job opportunities, and how to excel in the field of statistics. The meet provided an opportunity to the alumni to relive their memories.

Core team members of Sankhyiki 2022-23:

Convenor	-	Ms. Neetu Jain
President	-	Amishi
Vice President	-	Sajal Bhasin, Preksha Agarwal
Treasurer	-	Aishna Agarwal
Programme Coordinator	-	Nighat
Secretary	-	Anurag Singh
Joint Secretary	-	Jaskaran Saini, Om Rastogi
Executive Head	-	Mitshi Midha

Dharohar - Department of History

A two-day annual fest, Qafila, was organised by Dharohar: The History Society on 7th and 8th February 2023. The fest was dedicated to Azadi Ka Amrit Mahotsav this year. The first day began with a welcome ceremony and auspicious lamp-lighting. Various student-related events were held. It started with a paper presentation competition Monologue on the topic 'Role of Cinema in Representation of Indian History to Society'. This was followed by a quiz competition called Fact Hunt on the topic 'Polity, Society and Social Movements During 1850-1950'. Other programmes organised were a creative writing competition 'Ink and Quill' themed '1947 - The Day of Independence' and a sketching competition 'History Through Strokes' on the topics 'Freedom Fighters of 1857', and 'Sardar Vallabh Bhai Patel'. A large number of students participated from within the college and also from other colleges of Delhi University which made these events academically rejuvenating and successful. Cash prizes and certificates were given to all the winners as well as to the participants.

On the second day of the fest, a talk by Prof. Makkhan Lal was organised on the topic 'Controlling History - From Distortions to Unsung Heroes'. The event started with welcoming the guest of honour Prof Sanjeev Kumar Tiwari, Principal of Maharaja Agrasen College; speaker of the day Prof. Makkhan Lal; and our respected Principal Prof. Krishna Sharma. The programme started with motivational words by Principal ma'am, followed by the introduction of the guest of honour by Dr. Kundan Kumar, the society advisor. Prof. Tiwari spoke at length on the topic and enlightened the audience. Dr. Rimjhim Sharma, Teacher-in Charge of the department, introduced the speaker Prof. Makkhan Lal who delivered an insightful lecture on the topic 'Connecting Students and Teachers with the Past and Present of History Writing'. The Talk captivated the audience and brought forth many questions from the students. Later, the students also showcased a documentary prepared by them on Subhash Chandra Bose and the INA. The talk ended with a vote of thanks by President of the History Society, Hridaya N. Singh.

One-Day National Seminar

The department also organised a one-day National Seminar in collaboration with ICHR and Akhil Bharatiya Itihas Sankalan Yojana on 22nd February, 2023 on the topic 'Tomar evam Chauhan Rajvansh ke Antargat Gauravshali Dilli'. The programme began with *Saraswati Vandana* and lamp-lighting followed by introduction of the guests, and the speech by the Convener of the seminar, Dr. Shatrujeet Singh. Our keynote speaker was Prof. Dharmchand Chaube who enlightened the audience with important facts about the Tomar and Chauhan dynasties. It was followed by the speech of chief guest Shri Bharat Bhushan. The chief speaker, Dr. Balmukund Pandey, highlighted the importance of the Tomar and Chauhan dynasty in Indian History. As chairperson of the seminar, Respected Principal of the college, Prof. Krishna Sharma gave an insightful talk. The seminar ended with a vote of thanks by Dr. Rimjhim Sharma. The seminar was well steered by Dr. Ankit Agarwal.

The History Society was headed by:

Convenor	-	Dr. Rimjhim Sharma
Co Convenor	-	Dr. Kundan Kumar
President	-	Hridaya Narayan Singh
Vice President	-	Sakeb

Anant - Department of Mathematics

The session 2022-23 has been quite eventful for the Mathematics Department, from the introduction of NEP2020/UGCF2022 to the permanent appointments of assistant professors. Following are the various activities of the Anant Mathematics Society:

One Day National Workshop on Vedic Mathematics was organised in collaboration with Shiksha Sanskriti Utthan Nyas on 30th August, 2022. Eminent speakers from Shiksha Sanskriti Utthan Nyas like Dr. Rakesh Bhatia, Dr. Anil Thakur, and Dr. Deepak Vashishtha took very interactive sessions. The workshop was organised on the topic 'Vedic Mathematics' which is a much useful and interesting topic at the time when Vedic Mathematics has become a part of the NEP syllabus. Teachers were trained and motivated for the forthcoming Vedic Mathematics (VAC) paper under UGCF 22/NEP 20.

The Internal Study Forum of the department had its regular monthly meetings where faculty members had good discussions on the topics delivered by colleagues.

The 1st year batch of new students admitted under UGCF 22/ NEP 20 started with a Departmental Orientation in Nov 2023. It was a pretty lively, informative, and interactive session of about one and a half hours.

The department conducted interviews on 12th Jan, 2023 for office bearers in the Anant Mathematics Society. The New leadership started off by organising a Freshers' Welcome function on 16th January, 2023 which involved interesting activities related to the field of mathematics.

The Department of Mathematics is delighted to share that a long pending demand for regularisation of the posts of assistant professors paved the way for the appointment of eleven permanent positions.

To foster and strengthen the college–alumni bond, the department organised its first alumni meet, Confluence 2023. In the meet, former and current students interacted with each other. Some of the alumni were quite well established and by sharing their stories and perspectives

they inspired and guided the aspiring students. Students got the opportunity to know the experience of their seniors and also about the new insights, ideas, and ways of dealing with things that could serve them well in the years to come.

On 13th April Anant : The Mathematics Society organised its annual inter-college mathematics fest, 'Spectrum2023', where we celebrated the spirit of learning and creativity. The event consisted of a series of fascinating mathematics games. These maths-based games challenged the students' problem-solving skills, logical reasoning, and creativity. The best part about these games was that they were not just about competing but were also about learning and collaboration.

Department also organised two Counselling Sessions for students of the college: one was for JAM, the IIT entrance exams and the other one was counselling for the civil services examinations (IAS/ IPS/UPSC) preparation. Speakers shared their wisdom and expertise with the students and gave useful insights on practical tips and strategies that students can use to prepare for these exams, how to manage their time effectively, the importance of practice tests and how to stay motivated throughout the process.

Lastly, we bid farewell to our final-year students who were to embark on the new journeys in their lives. It was a bittersweet moment as we said goodbye to these bright minds who had contributed so much to our college community, and we are excited to see what the future holds for them.

Core Team:

Convenor	-	Savitri Rawat
President	-	Paritosh Awasthi
Vice President	-	Divya Narayan Mishra
Secretary	-	Divya Rawa
Joint Secretary	-	Varsha
Coordinator	-	Sunil Toxia, Shivam, and Nikhil Singh
Treasurer	-	Yash Ruhela

Samvaad - Department of Political Science

Samvaad, The Political Science Society of P.G.D.A.V College, is among the most consistent, active, and renowned societies of the college. It has proactively been organising a plethora of events and competitions over the year for the overall development of our students. It has been giving our students a platform to develop, explore and hone their skills through the organisation of extracurricular and co-curricular activities. The Political Science Department at P.G.D.A.V. College was established in 1972 and in 2022 the department celebrates its Golden Jubilee year. In the past five decades, the department has been flourishing with every passing year and has produced some of the best students and professionals.

On 28th September, 2022 Samvaad successfully organised a guest speaker session which was graced by Prof. Sanjay Kumar who enlightened us with the knowledge related to the topic 'Recent Electoral Trends and Changing Voting Behaviour in Indian Politics'.

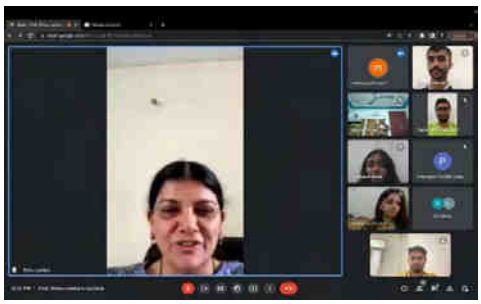

"If I seem to take part in politics, it is only because politics encircles us today like the coil of a snake from which one cannot get out, no matter how much one tries. I wish therefore to wrestle with the snake." Following this quote of Mahatma Gandhi, Samvaad in collaboration with Gandhi Study Circle, P.G.D.A.V. College (M) organised a lecture on 30th September, 2022 by Dr. Rinku Lamba, Associate Professor, National Law School of India University, Bengaluru on the occasion of Gandhi Jayanti.

7th October, 2022 marked the beginning of yet another initiative of Samvaad which aimed at creating an intellectual space and platform to produce ideas and solutions to contemporary issues. We call it 'Friday for Samvaad'. It runs every Friday with preset agendas put to debate and discussion. Till now, we have completed eighteen deliberative and informative sessions.

Students visited the Parliament of India on November 10, 2022. It was quite an enchanting

experience for all the students to see the houses of the parliament in person. On 16th November, 2022 Samvaad organised its Orientation Programme to officially welcome and induct the Freshers who joined the Political Science (Hons.) course in the 1st year. The orientation was held under the guidance of Dr. Duryodhan Nahak and was attended by all the esteemed members of the faculty of the department of Political Science, who addressed the freshers warmly, and introduced them to the department.

Samvaad organised a two-hour intense speaker session on 29th November, 2022 on the topic 'Constitutional Moments in Indian Democracy' and invited the most renowned Professor of the Centre for Political Studies (CPS), Jawaharlal Nehru University(JNU), Prof. Anupama Roy.

On 24th and 25th January, 2023 Samvaad organised its hallmark event 'Know your Republic' (KYR) on the occasion of Republic Day. The two-day celebrations included an inter-college debate competition, policy analysis competition, open mic competition and a treasure hunt competition. The KYR celebrations were graced by Sudhanshu Ranjan, a senior journalist of Doordarshan, who gave a highly insightful speech on the Independence of judiciary and the collegium system.

On 6th February, 2023 Samvaad organised 'Parichay '22' the official freshers' party to welcome our first year students to the college. Our newcomers set the stage on blaze. Smouldering in ferocious, spooky characters, they turned the atmosphere into a pit of sparkling stardoms. On February 10, 2023 Samvaad conducted a general body meeting of faculty members and students of the department of political science in which we welcomed new faculty members and also discussed the upcoming events of the department.

Learning is a ubiquitous process which is not limited to the four walls of the classroom. There fore, Samvaad organised an educational departmental trip for the students to Dalhousie and Khajjiar from 06th April to 09th April, 2023. A visit to some spectacular places like Gandhi Chowk, Panjpulla and Switzerland of India- Khajjiar where we enjoyed several adventurous activities like horse riding, paragliding, zorbing etc.

College life can be overwhelming, especially when you combine study with co-curricular activities. Samvaad is one such platform where you can develop, explore and progress your skills through organising extra-curricular activities. College had a successful academic year 2022-2023, marked by growth and innovation.

We remain committed to providing high-quality education to our students and create a welcoming environment that fosters learning and personal growth. We look forward to continuing to serve our students and community in the years to come.

Core Team:

Convenor	-	Dr. Duryodhan Nahak
President	-	Yashasvi Bhati
Vice President	-	Dhanish Choubisa
Secretary	-	Manya Joshi, Rohan Chopra, Shweta Kumari, Ritika Yadav
Treasurer	-	Ayush Sankrit, Yashika Sharma, Akanksha Sahu, Mubarak Ali

Geo-Crusaders - Department of Environmental Studies

The Department of Environmental Studies PGDAV (M) College is working flawlessly towards creating an intellectual and inclusive environment for study and research. This year, the EVS department organised many international/national seminars and workshops. It also observed environmentally important days in collaboration with different institutions. Some important events were Nadi Ko Jano, International Biodiversity Day, World Ocean Day, National Bird Day, World Day to Combat Desertification and Drought, World Ozone Day, etc.

The department invited many eminent speakers from India and abroad, some of the famous personalities present were Prof. Kashyap Dubey, JNU, India; Dr. Anwesha Borthakur, Belgium; Vaishnavi Verma, USA; Dr. Dilip Kumar, GGSIPU, India and many others. The Department of Environmental Studies conducted green activities on college campuses, contributing to the celebrations of World Environment Day on 5th June, 2022.

Apart from that, the department is also engaged in management of solid waste and converting waste into valuable products like dhoop cones, Vermi-composting and Bio Enzymes etc. The initiatives taken under Swachhta activities were building outdoor classrooms, reinforcing greenery and showcasing the green decisions of the institutions. Certificates of appreciation from Mahatma Gandhi National Council of Rural Education, Department of Higher Education, Ministry of Education, Govt. of India, were also awarded.

Geo-Crusaders

Geo-Crusaders - The Environmental Society of PGDAV (M) College is a team of dedicated students and faculties who work towards creating an intellectual and inclusive space for discussions around national and international environmental issues and events. The society organises many events and activities to promote an environment of inquisitiveness and to create awareness about recent environmental issues.

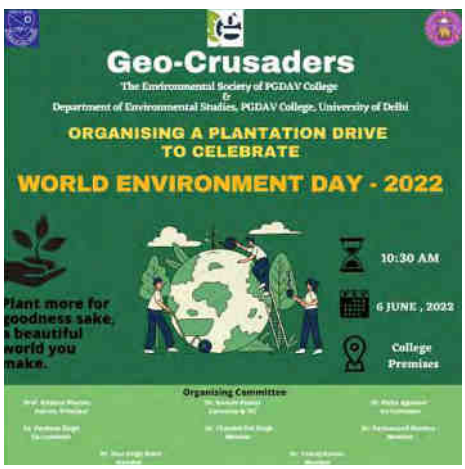

Following are the activities that we conducted this year:

International Webinar on World Environment Day

The Department of Environmental Studies and Geo-crusaders society have organised an international seminar (virtual mode) on June 5, 2022 to celebrate World Environment Day with the objective to educate students of the environmental crisis and e-waste that harms our mother earth. The seminar was graced by the speaker Dr. Anwesha Borthakur, Research Fellow at KU Leuven, Belgium; Dr. Gaurav Kumar, Convenor; Dr. Richa Agarwal and Dr. Pardeep Singh, Co-Convenors. Dr. Anwesha Borthakur discussed the issue of climate change and its impact on the

world. She raised the issue of how adversely e-waste could impact on our health and nature and also laid down the possible solutions for combating this contingency that engulfs our earth. Her presentation through various slides was interactive and engaging for the participants. The webinar was attended by hundred participants who gave a positive response and raised their queries on the issues of e-waste.

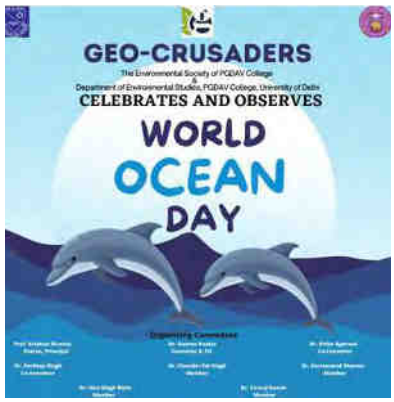

World Ocean Day

On June 8, 2022 we celebrated World Ocean Day to make people aware of the importance of taking care of the oceans and marine wildlife.

World Day to Combat Desertification and Drought

On June 17, 2022 Team Geo-Crusaders observed World Day to Combat Desertification and Drought to popularise the importance of taking care of the deserts and preventing droughts.

Say No to Plastic

On July 3rd, 2022 Team Geo-Crusaders observed the Say No to Plastic event to spread the awareness of banning the usage of plastic and the degradation that comes along with excessive plastic use.

Van Mahotsav

Van Mahotsav is an annual one-week tree-planting festival in India which is celebrated in the first week of July. Team Geo-Crusaders also celebrated Van Mahotsav week from 1st July to 7th July with multiple social media posts and informational sessions.

Visit to the Climate Justice Library

On 14 July, 2022 the Geo-Crusader Society visited the Climate Justice Library located at the South Extension, New Delhi. The aim of this visit was to discover the undiscovered environmental resources for the general public. The library has a comfortable ambience along with around three hundred and fifty myriad environmental books for research purposes. The library contains a heterogenous content of books. Books from ICEL (International Council of Environmental Law) can also be found here which usually are not available to the public. Thus, making climate education accessible to all.

International Tiger Day

Global Tiger Day is celebrated every year on July 29th as a way to raise awareness about this magnificent but endangered big cat. The day was founded in 2010 when the 13 tiger range countries came together to create Tx2 – the global goal to double the number of wild tigers by the year 2022. Team Geo-Crusaders observed and celebrated the event in full spirits.

International Mangrove Day

World Mangrove Day is celebrated on 26th July every year. It is officially referred to as the International Day for the Conservation of the Mangrove Ecosystem. Team Geo-Crusaders had the opportunity to observe the event via online campaigns.

World Elephant Day

The day is observed with the aim to reach out to people and educate them on the plight of elephants. World Elephant Day observed on August 12 is one way of recognising the importance of elephants.

International Day for Preservation of the Ozone Layer

On September 16, we observed International Day for the Preservation of the Ozone Layer. The event was organised as a one-day international seminar with Vaishnavi Verma, a Graduate Teaching Assistant at the University of Kansas. The event saw the participation of over fifty students and academicians. Ms. Verma talked about the importance of the ozone and ways for its preservation.

One-day Workshop on 'Extraction and Restoration of Ficus Tree Saplings'

On 22nd November, the Geo-Crusader society organised a one-day workshop on 'Extraction and Restoration of Ficus Tree Saplings' to celebrate the centenary year of University of Delhi. The workshop was held on the college campus. The event was conducted under the guidance of Mr. Vineet Vohra, the resource person from Give Me Tree Trust. It is also administered by our Convener, Professor Gaurav Kumar and Co-Convenor, Professor Richa Agarwal. The objective of the event was to educate students to perform necessary activities for the plantation of Ficus saplings and also to make them aware of the importance of environmental activities. Students took part in the extraction of the saplings around the corners of the college campus enthusiastically. They were well-guided by the resource person on the proper method of extraction of such saplings by their roots. The students were informed about the use of aloe vera in the growth of saplings and were shown the mixing process as well. The

workshop helped in gaining the knowledge for the proper extraction and plantation of saplings so that students can use this experience in the future for the proper plantation.

World Zebra Day

On January 31, people around the world celebrate International Zebra Day. The purpose of the day is to spread knowledge about how you can support the conservation of this animal.

World Wetlands Day

On February 2, 2023, the Environmental Society of PGDAV College (M) organised an in-house event on World Wetlands Day conducted by the Convener of the Society Dr Gaurav Kumar. The event started with a lamp-lighting ceremony and *Saraswati Vandana*. Dr. Gaurav Kumar began the seminar on the theme 'Our Consumption Is More than Recharge'. Then he proceeded further by introducing the students to topics related to World Wetlands Day. He explained wetlands as a distinct ecosystem that is flooded or saturated by water, either permanently or seasonally. He also made the students aware of the Ramsar Convention named after Ramsar, a city in Iran. The Ramsar Convention, an International Treaty signed on 2nd February, 1971, provides a framework for the conservation and use of wetlands and their resources for sustainable development. India has a total number of seventy-five Ramsar sites covering an area of 13,26,677 ha. Tamil Nadu has the maximum number of Ramsar sites (14) followed by Uttar Pradesh(10). Not only this, but he also spelled out the qualifying criteria to be a Ramsar site. Dr. Gaurav Kumar went into the detail of seaweed which is the common name for countless species of marine plants and algae that grow in the ocean as well as in rivers, lakes, and other water bodies. The theme for this year's World Wetlands Day was 'It's Time for Wetlands Restoration'.

Cleanliness Drive

On February 8, 2023, the Environmental Society of PGDAV College (M) organised a cleanliness drive on the college campus. The drive was conducted under the patronage of the Convener of the society Dr. Gaurav Kumar. The cleanliness drive was a wonderful experience for students as they are the major role players to raise awareness on the issue of cleanliness in one's neighbourhood. The event saw the participation of around twenty-five students. We were overwhelmed with the response and decided to keep working towards the environmental causes in future also.

World Wildlife Day

On March 3, 2023, the Environmental society organised an in-house event on World Wildlife Day. It was conducted by the Convener of the Society, Dr. Gaurav Kumar and our Co-Convenors, Dr. Richa Aggarwal and Dr. Pardeep Singh. Dr Gaurav Kumar began the seminar by making the students aware about wildlife and asked them to join the society since saving the environment is the need of the hour. The theme for this year's World Wildlife Day was 'Partnerships for Wildlife Conservation'. The talk was highly insightful and students learnt about the major different endangered species and also the ways in which governments around the world are trying to maintain their population levels. The event saw the participation of around twenty-five students and the outcome of the event was very satisfying and motivating.

World Water Day

World Water Day is a global United Nations observance day celebrated every year on 22nd March to raise awareness about the value of fresh water and a call for the wise use of freshwater resources. Team Geo-Crusaders celebrated this event with online posts and informational sessions on social media.

International Day of Forests

The International Day of Forests is celebrated to raise awareness of the importance of all types of forests. This year, the theme for 2023 was 'Forests and Health'. The event was headed by Mr Sahil from Give Me Trees Foundation. He spoke on how forest sustainable management and their use of resources are key to combating climate change, and how they contribute to the prosperity and well-being of current and future generations. Forests also play a crucial role in poverty alleviation and in the achievement of the Sustainable Development Goals (SDGs). Despite all these priceless ecological, economic, social and health benefits, forests are end angered by fires, pests, droughts, and unprecedented deforestation.

The team of Geo-Crusaders is also active in its campaigning. Till now it has done two events related to Coal Mining and Climate Strikes for providing awareness to people so they can take action on contingent issues.

Faculty Advisor:

Convenor & TIC	-	Dr. Gaurav Kumar
Co-Convenor	-	Dr Richa Agarwal, Dr. Pradeep Singh
Member	-	Dr. Chander Pal Singh, Dr. Hira Singh Bisht, and Dr. Parmanand Sharma

Students Core Committee Members:

President	-	Mehak Vohra
Vice President	-	Sanchita
Secretary	-	Isha Bhatter

Parikalan - Department of Computer Science

The Department of Computer Science organised various activities and events this year. A two-day online international webinar on 'Breakthroughs in Computer Science' was held on 19th and 20th Feb, 2023 with a participation of more than hundred students. The distinguished speakers were: Ms. Sunita Gulati, Sr. Director, VISA, United States; Dr. Chandrika Kaushik, Director General, DRDO; Dr. Kalpana Johari, Director, CDAC; Mr. Munish Bhasin, Director, Channels and Alliances, F5 India; Mr. Sourabh Tiwari, Director, WIPRO Technologies, United States; and Ms. Shikha Malhotra.

The department was established in 1995 and this year the first batch completed 25 years. An alumni meet C.A.P. Computer Science Alumni of PGDAV was organised on 25th Feb, 2023 where the alumni who had graduated more than twenty years ago were felicitated. On this day, teaching and non-teaching staff who worked with the department in the past were also invited. Alumni enjoyed the games, shared their experiences, and some of them also received their degrees that day. For them, it was like walking back on the same path they all had once carved together. The whole event helped them to fall into reverie and become nostalgic.

Different clubs under the Parikalan Society, namely Quiz Bot, Net Weavers, RISE, Graphics, EWS and Code Bots, conducted many activities throughout the session. The Merchandise Designing Competition was held in February. Workshop on Advanced CSS was conducted by students and a seminar on 'Future of Tech' was organised by IIITD students. The students of research club-RISE- have been working diligently in the emerging fields with the intention of creating new algorithms and publishing papers.

The Google Developer Students Club of P.G.D.A.V conducted various workshops and lectures on technical topics like GitHub, Web Development, Block chain etc. The students lead is chosen by Google and this year Jyoti of B.Sc. (Hons), Computer Science was the student lead.

Xenium 23.0

The annual technical fest was organised on 15th April, 2023. Students across the colleges from University of Delhi participated in technical events like Quiz Khalifa, E Tambola, Treasure

Hunt, Jashn E Tech. The faculty also participated and enjoyed the event ETambola.

Core Team:

Convenor	-	Mrs. Geeta Gupta
President	-	Kartik Joshi
Vice President	-	Sayesha Ali Khan
Secretary	-	Jitisha Bhaumik
PR Head	-	Aditya Maran Basari

Department of Physical Education & Sports Science

1. P.G.D.A.V. College is the first college in Delhi University that has a 400m synthetic track with the concrete base polyurethane. The track has 100% EPDM colour granules and colour play which is compiled with the requirements of International standards.
2. PGDAV College is the only college to have LED flood lights placed at 30m height (100ft) which is the prescribed height approved by International Cricket Council (ICC).
3. The light is 3000 lux at the centre wicket equal to that of the Arun Jaitley Stadium (Feroz Shah Kotla Stadium).
4. PGDAV College has 3 international centres, turf wickets, 3 turf practice wickets and 2 Astro turf practice wickets.
5. The College Football Team has won many tournaments and the previous tournament was 'The Reliance Foundation Youth Inter College Football Championship'.

6. The College Cricket Team has won its 1st Swami Dayanand Saraswati T-20 cricket tournament.

Achievements :

S.No.	Name	Course	Level	Event	Agency	Gold	Date & Place
1	Sahil Singh	B.A (Prog)	38TH Judo Championship	68KG	Delhi Judo Council		Delhi
2	Anshu	Pol Sci (H)	All India University (North Zone)	Hockey 19TH Dec-24 Dec	UOF Delhi		Patiala, Punjab
3	Keshav Singh	Hist (H)	U-25 Delhi State	Col.CK Nayudu Trophy	DDCA		All India
4	Himanshu Singh	B.A. (Prog)	U-25 Delhi State	Delhi State	DDCA		All India
5	Ankit Rajesh Kumar	Eng(H)	U-19 Delhi State	Cooch Bihar Trophy	DDCA		All India

6	Kavya Gupta	B.Com(H)	U-19 Delhi State	Cooch Bihar Trophy	DDCA		All India
7	Raghav Singh		U-19 Delhi State	Cooch Bihar Trophy	DDCA		All India
8	Himanshu Singh	B.A. (Prog)	U-25 Delhi State	Col.CK Nayudu Trophy	DDCA		All India
9	Raghav Singh	English (H)	U-25 Delhi State	Col.CK Nayudu Trophy	DDCA		All India
10	Keshav Singh	History (H)	North-Zone University	Cricket	University of Delhi		Kurukshetra University
11	Kavya Gupta	B.Com (H)	North-Zone University	Cricket	University of Delhi		Kurukshetra University
12	Raghav Singh	English (H)	North- -Zone University	Cricket	University of Delhi		Kurukshetra University
13	YashikaTokas	B.A. (Prog)	A.I.U	Boxing	University of Delhi		26-01 Jan, 2022-23, MDU, Haryana
14	Ishika Rana	B.com (Prog)	A.I.U	Boxing	University of Delhi		26-01 Jan, 2022-23, MDU, Haryana
15	Shashank	B.A. (Prog)	A.I.U	Boxing	University of Delhi		26-01 Jan, 2022-23, MDU, Haryana
16	YashikaTokas	B.A. (Prog)	Khelo India Youth Games	Boxing (57KG)	Govt. of India		Bhopal, 31st Jan to 4th Feb
17	Aman	B.A. (Prog)	North-Zone University	Football	University of Delhi		16th to 24th Dec, GNA University, Punjab
18	Jaspreet Singh	B.A. (Prog)	North -Zone University	Football	University of Delhi		16th to 24th Dec, GNA University, Punjab

19	Anmol Adhikari	B.A (Prog)	North -Zone University	Football	University of Delhi		16th to 24th Dec, GNA University, Punjab
20	Avantika	B.A (Prog)	2nd Khelo India Zonal Women's League 2022-23	Judo			DSA Indoor Stadium, Kurnool, Andhra Pradesh,29th Jan to 2nd Feb 2023
21	Sahil Singh	B.A (Prog)	Repre-sented University of Delhi	Wrestling	University of Delhi		Shivaji University, Kolhapur, 22nd JAN -26th JAN
22	Phool Singh	B.A (Prog)	North -Zone University	-74 KG	University of Delhi		3-6 JAN, 2023-24, GNDU, Punjab
23	Manjeet Singh	B.A (Prog)	North -Zone University		University of Delhi		21-25 DE, M.J.P Rohilkhand, (U.P)
24	MadhurTyagi	B.A (Prog)	North -Zone University		University of Delhi		21-25 DE, M.J.P Rohilkhand, (U.P)
25	Reliance Cup		Delhi State	Football	Reliance Youth Foundation Sports	City Champ ions	Delhi State
26	1st Swami Dayanand Saraswati T-20 Crcicket Tournament		Inter-College	Cricket	PGDAV College	Winner	15-28th March, 2023
27	4TH Shri Guru Nanak Dev Khalsa Inter-College T-20 Cricket Tournament		Inter-College	Cricket	SGND Khalsa College	Winne rs	26th March-12th April, 2023

Yashika Tokas (Gold Medalist) - Khelo India Youth Games 2022-23

Champions of 1st Swami Dayanand Saraswati T-20 Inter-College Cricket Tournament

Champions of 4th Shri Guru Nanak Dev Khalsa Inter-College T-20 Cricket Tournament

U-19 English Cricket Team of Test Players with their Coach

Alumni Association

PGDAV College (M) Alumni Association organised an Alumni Meet on September 10, 2022 to bring all its alumni together on one platform. A general body meeting of Alumni Association was organised on October 16, 2022 to elect the office bearers and executive members of the Alumni Association 2022-23. The Alumni Association organised an Annual Alumni meet on February 12, 2023 to celebrate the 200th Birth Anniversary of Swami Dayanand Saraswati. Mr. Shrikant Sharma who is an Ex-Minister, BJP MLA, Mathura, Vrindavan (UP) and Mr. Guman Singh Damor, a Member of the Parliament from Ratlam, Jhabua, graced the occasion as chief guests.

The session highlighted the contribution of Maharishi Dayanand Saraswati in the field of education and social upliftment of women. Maharishi emphasised the importance of Vedic education and removal of social evils like child marriage, sati pratha etc., that led to social transformation and nation building. The Alumni Association also celebrated bicentenary year of Swami Dayanand and unveiled Dayanand Ji's *prastar pratima* on March 28, 2023. Shri Ajay Suri, Shri Shivaraman Gaur and Prof. Balram Pani also graced the occasion. The event was a grand success.

PGDAV College (M) Alumni Association had organised an Alumni meet on September 10, 2022 to bring all alumni on one platform. A general body meeting of PGDAV College Alumni Association was held on October 16, 2022 to elect the office bearers and executive members of the Alumni Association in which for the Executive Committee following office bearers were elected:

Office Bearers:

President	-	Mr. Manoj Verma
Vice President	-	Mr. Rudresh Narayan and Mr. Rajiv Bhalla
Secretary	-	Mr. Jagannath Kashyap
Treasurer	-	Dr. Varun Bhushan
Joint Secretary	-	Ms. Bhawana Miglani and Mr. Yograj

North-East Cell

The North-East Cell (NEC) had a productive year after two rather inactive years due to the COVID pandemic. NEC started its events with a freshers' welcome and orientation on 5th May, 2022. Though the first-year students had already finished their first semester, the get together served as the much needed first gathering of members in full strength after two years. This event was beneficial to get all members acquainted with each other and to plan future activities.

On 5th November, 2022, NEC got together to have a photoshoot session in our respective traditional attire all around the college campus. We were graciously supported by Iris, the photography society.

We visited the National Gallery of Modern Art, Jaipur House on 11th February, 2023 to learn more about the history and evolution of the rich and diverse arts and artists in India. Some of our own members being prolific painters and illustrators, we were filled with awe and inspiration coming face-to-face with timeless and poignant art pieces and the philosophy of the men and women behind them.

Our events concluded on 24th April, 2023 with our annual cultural festival called Heritage. Author and Associate Professor of the Department of English, Dr. Veio Pou had a beautiful conversation with our students about the culture, literature and history of North-East India through his written works. Besides this, we also had exciting talent hunt, essay, and photography competitions. A visual gallery showcasing various aspects of our rich cultural heritage were displayed in the main lobby and a photobooth with traditional costumes from various communities in the North East were available to be worn and photographed with. The programme was a big hit with many participants.

NEC represented, performed and competed for the college in various cultural fests organised by colleges across the university throughout the year. We also collaborated with the students of PGDAV Evening College to represent the college in various NESSDU events.

Conveners:

Ms. Lallianpuii Ralte

Ms. RVS Chuimila

Core Team:

President	-	Zosangzuala
Vice President	-	Afrina Yasmin
General Secretary	-	K. Jeibila
Finance Secretary	-	Khanimpam Ningshen
Member	-	Matthew Khwairakpam, Ayon, Nijara

पत्रिका संबंधी विवरण

फार्म नियम - 04

फार्म

(नियम - 04 देखिए)

1.	प्रकाशक स्थान	:	पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय) नेहरू नगर, नई दिल्ली
2.	प्रकाशन की अवधि	:	वार्षिक
3.	मुद्रक का नाम	:	गरिमा गौड़ श्रीवास्तव
4.	क्या भारत के नागरिक हैं यदि विदशी मूल है तो देष्ठा का पता	: :	हाँ .....
5.	सम्पादक का नाम यदि विदेशी मूल है तो देश का पता	: :	सुषमा चौधरी .....
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार-पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूँजी के एक प्रकाशित से अधिक के साझेदार हों।	:	प्रो. कृष्णा शर्मा पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय

मैं, गरिमा गौड़ श्रीवास्तव, एतद्द्वारा घोषित करती हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवम् विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

प्रकाशक के हस्ताक्षर

स्वामी दयानंद सरस्वती

सौजन्य : पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय (प्रातः) पूर्व छात्र संघ